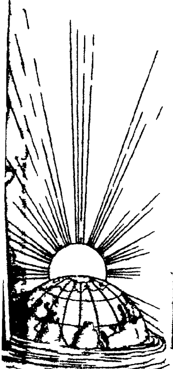
ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सार्वदेशिक



धर्म कभी मत छोड़ो

मन या रा याग्य है क्र राम से अ यान भृ म रामना सिद्ध ान क रारण म ा ान ा ान आि क भय से भी धम र याग रभी न कर आर न लाभ से चाह भृठ (आर) अ मस चक्रवर्ती र य भी मिलता हा तथा र धम रा छोड कर चक्रवर्ती रा य रा भी म ग ा कर चाह भानन ादन जलपान आदि का जीविरा भा अ रम स हा सक व प्राण जाते हा परन्तु जीविका क लिए भी धम का रभी न ाड यो क जाव आर रग ानय है त र मुख दुख दोनों आनय ह। अनि य र लिए ानय को ोडन अतीव ्प कम है स धम का तु क जिस शरार आद स धम होता है वह भी अनि य है। ध य व मनुष्य है जा आन य शर र और सुख द ख्वादि क यवहार मे वतमान होकर नि य रम रा य ा रम न ा करत

महाष द द सर वती

सम्पादक—सभा मन्त्री
सहायक सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

मूल्य स्वदेश ५)
विदेश १० शिलिङ्ग

फरवरी १९५९

विषय सूची

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम उपहार

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थाई बनाने के लिए आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके हाथों में है। क्या आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान समाज में सम्मान प्राप्त करे यदि हां ! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्त्तव्य है।

किस प्रकार ? यह जानने तथा अपने कर्त्तव्य से परिचित होने के लिए

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

पुस्तक मगा कर अवश्य पढिये। पुस्तक पढ़कर आप अनुभव करेंगे कि "पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी, गौर या श्याम वर्ण की।" सन्तान का निर्माण तथा बर्थ कन्ट्रोल अपने ही हाथों में है। इसकी महत्ता पढने से ही विदित होगी।

सजिल्द मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक- लेखक —वीरेन्द्र गुप्त

प्राप्ति स्थान—वीरेन्द्रनाथ अश्विनीकुमार, प्रकाशन मंदिर, बाजार चौक, मुरादाबाद

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

(सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष ३३ | फरवरी १९५९ माघ २०१५ वि, दयानन्दाब्द १३४ | अङ्क १२

वैदिक प्रार्थना

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥

यजु० ३२।१०॥

व्याख्यान—वह परमेश्वर हमारा "बन्धु" दुःखनाशक और सहायक है तथा "जनिता" सब जगत् तथा हम लोगों का भी पालन करने वाला पिता, तथा हम लोगों के कामों की सिद्धि का विधाता पूर्ण काम की सिद्धि करने वाला वही है। सब जगत् का भी विधाता रचने और धारण करने वाला एक परमात्मा ही है अन्य कोई नहीं। "धामानि वेदेत्यादि" "विश्वा" सब धाम अर्थात् अनेक लोक-लोकान्तरों को रचके अनन्त सर्वज्ञता से यथार्थ जानता है। वह कौन परमेश्वर है ? कि जिससे देव अर्थात् विद्वान् लोग (विद्वाꣳसो हि देवा" शतपथब्रा०) अमृत, मरणादि दुःखरहित मोक्ष पद में (अर्थात्) सब दुःखों से छूट के सर्वव्यापी पूर्णानन्दस्वरूप परमात्मा को प्राप्त हो के परमानन्द में रहते हैं। "तृतीयेत्यादि" एक स्थूल (जगत् पृथिव्यादि) दूसरा सूक्ष्म (आदिकारण) सर्वदोषरहित अनन्तानन्दस्वरूप परब्रह्म उस धाम में 'अध्यैरयन्त" धर्मात्मा विद्वान् लोग स्वच्छन्द (स्वेच्छा) से वर्त्तते हैं। सब बाधाओं से छूट के विज्ञानवान् शुद्ध होके देश काल वस्तु परिच्छेदरहित सर्वगत "धामन्" आधारस्वरूप परमात्मा में रहते हैं उससे दुःख सागर में नहीं गिरते ॥

सम्पादकीय

कल्याणकारी राज्य

आज संसार भौतिक सभ्यता की ओर दौड़ा जा रहा है। इस दौड़ ने मानव जाति का भविष्य अन्धकारमय बना दिया है जिस पर संसार के विचारशील व्यक्ति चिन्तित हैं यहां तक कि भौतिकवाद के उपासक और प्रशंसक भी विचलित हुए देख पड़ते हैं। वे अनुभव करते हैं कि भौतिक जगत् पर विजय प्राप्त करने वाला मनुष्य अपने पर विजय प्राप्त नहीं कर सका है। मनुष्य का सांस्कृतिक और नैतिक उत्थान कुंठित हो गया है। सर्वतोमुखी विघटन के वातावरण में धर्म का संयम और प्रतिबन्ध जाता रहा है जिसके परिणामस्वरूप सभ्यता में एक प्रकार की मानसिक विकृति व्याप्त हो गई है। समाजवाद में थोड़ी सी नैतिक प्रेरणा है परन्तु इसने जो सामाजिक और राजनैतिक ढांचा ग्रहण किया हुआ है उससे मानव स्वभाव की कई मौलिक आवश्यकताओं की अवहेलना हुई है इसने मानव की स्वतन्त्रता को कुचल कर और जीवन के नैतिक और धार्मिक पहलू की घृणापूर्वक उपेक्षा करके मनुष्य को व्यवहार की विशिष्ट मर्यादाओं और विशेषताओं से वंचित कर दिया है। इसने हिंसा के साथ गठबन्धन करके मानव में एक दुष्प्रवृत्ति को भी बहुत प्रोत्साहित किया है। समाजवाद जब हिंसा और बल प्रयोग का प्रत्यक्ष आश्रय नहीं लिए होता तब उसकी भाषा और विचार धारा हिंसा का रूप लिए होती है। इस प्रकार समाजवाद ने विघटन की प्रक्रिया को बढ़ा दिया है। पूंजीवाद भी जड़वाद पर अवलम्बित है और जड़वाद नैतिकता के लिए बड़ा घातक होता है। अतः पूंजीवाद ने भी नैतिक दिवालियापन की स्थिति उत्पन्न की है और की हुई है। समाजवाद और पूंजीवाद की विचार धारा में इतना ही अन्तर है कि पूंजीवाद नैतिकता और मानव की स्वाभाविक प्रवृत्तियों और विशेषताओं से इन्कार नहीं करता। इतना होते हुए भी यह मानव समाज को अन्धकार की ओर धकेलने में अग्रसर रहा है। ऋषि की यह उक्ति कि 'मारा हुआ धर्म प्रजा को नष्ट कर देता है' स्यात् ही कभी इतनी चरितार्थ हुई हो जितनी आज चरितार्थ हो रही है। संसार का कल्याण न तो समाजवाद से संभव है और न पूंजीवाद से जीवन की योजना में धन सम्पत्ति का स्थान है परन्तु एकमात्र यही जीवन का ध्येय नहीं है। इस समय यही जीवन का ध्येय बना हुआ है इसीलिए गड़बड़ और अशांति व्याप्त है। धन के धर्म के अधीन रहने से ही व्यवस्था ठीक रहती है। जीवन में उन्नति भी विशेष स्थान रखती है परन्तु भौतिक उन्नति के साथ २ धार्मिक उन्नति भी हो तभी वह उन्नति श्रेयस्कर होती है।

आज के प्रायः सभी देश कल्याणकारी राज्य की दुहाई देते हैं परन्तु कल्याणकारी राज्य की भावना और स्थापना का आदर्श दूर खिसकता जाता है। क्यों? इसलिए कि राजनीति धर्म से अनुप्राणित नहीं की जा रही है। जब राज्य का आधार धर्म और उत्तम आचार होता है तभी राज्य फलता फूलता और कल्याणप्रद बनता है अन्यथा नहीं। कल्याणकारी राज्य का स्वरूप राजा अश्वपति की निम्नांकित घोषणा में निहित है—

> न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
> नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

मेरे राज्य में कोई व्यक्ति यज्ञ-रहित तथा मूर्ख नहीं। सब लोग कर्मकांडी तथा साक्षर हैं। कोई मनुष्य दुराचारी नहीं। कोई पुरुष पराई स्त्री की अभिलाषा करनेवाला नहीं तो स्त्री व्यभिचारिणी कहां? कोई चोर नहीं, कोई शराबी नहीं।

राजा अश्वपति स्वतन्त्र आर्य राजा था। उसने अपनी धर्म नीति से अपने को योग्य

और सफल राजा सिद्ध कर दिखाया था। आज जन साधारण का शासन है राज तन्त्र पर कुछ सत्ता धारियों का प्रभुत्व है। राजनीति धर्म के क्षेत्र मे भी अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए है। वह न तो धर्म को सुशोभित कर रही है और न धर्म उसको ऊंचा उठाए हुए है। सर्वत्र स्वार्थ और पशु बल का बोलबाला है। तभी समाज शास्त्रियों की यह धारणा प्रबल होती जा रही है कि वह समय दूर नहीं है जब संसार मे राजाओं का पुन बोल बाला होगा जो धर्म और ईश्वरकेप्रति अपनी उत्तर दायिता समझकर प्रजा का आचार विचारवान बना कर उसे हर प्रकार से सम्पन्न सुखी और सुरक्षित बनायेंगे उसी समय कल्याणकारी राज्य का स्वप्न पूरा होगा।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

महात्मा नारायण स्वामी जी की स्मृति में

बसंत पंचमी का पर्व हमें उस दिन का स्मरण कराता है जिस दिन स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी का जन्म जौनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के एक कायस्थ परिवार मे हुआ था। स्व महात्मा नारायण स्वामी जी आर्य समाज की उन इनी गिनी महान हस्तियों में से एक थे जिन्हें आर्य समाज ने उत्पन्न किया और जिन्होंने उसके भाग्य का निर्माण किया है।

एक साधारण स्थिति के परिवार मे जन्म लेने और बचपन में ही पिता की छत्रच्छाया से वंचित हो जाने के कारण उन्हें उच्च शिक्षा का अवसर प्राप्त न हो सका था फिर भी उन्होंने अपने प्रयत्नों से अपने को एक अच्छा विद्वान् और प्रौढ़ लेखक बना लिया था। उनके 'मृत्यु परलोक, 'योग रहस्य' 'विद्यार्थी जीवन रहस्य' उपनिषदों की टीकाएं आदि २ ग्रन्थ आर्य समाज में बहुत पढे जाते हैं और उनके अब तक अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

उनका व्यक्तित्व बड़ा ऊंचा था। जब वे मुरादाबाद मे कलक्टर के पेशकार थे और दोनों हाथों से घूस ले सकते थे तब भी उन्होंने वेतन के अतिरिक्त ऊपरी आय को हाथ न लगाया। यही कारण था कि उच्च से उच्च अधिकारी भी उनकी ईमानदारी से प्रभावित रहते थे। कलक्टर महोदय ने उनकी सर्विस बुक मे लिखा था कि 'मुंशी नारायणप्रसाद ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हैं।' जब उन्होंने गुरुकुल बृन्दावन का कार्यभार अपने ऊपर लेकर सर्विस से त्याग पत्र दिया तो कलक्टर ने उन्हें बुलाकर कहा 'मैंने आपको तहसीलदार नियुक्त किया है, आप उस स्थान को ग्रहण करें।' स्वामी जी ने इस पद को स्वीकार करने में असमर्थता प्रकट कर दी। इस पर कलक्टर ने कहा अपनी पेंशन का हक मत छोडो और इनवैलिड का प्रार्थना पत्र देकर पेंशन प्राप्त करलो। यह भी स्वामी जी ने यह कहकर अस्वीकार करदी कि 'मै शरीर मे सर्वथा समर्थ हू इसलिए झूठ लिखकर सरकार को धोखा नहीं दे सकता' उनके जीवन की यह पवित्रता ही थी कि उनके मित्र और विरोधी सभी उनका आदर करते थे। उन्होंने उत्साह और निस्स्वार्थ भाव से आर्य समाज की सेवा की। उनकी सेवाओं का रिकार्ड बड़ा लम्बा और विशद् है। गुरुकुल वृन्दावन को उन्ही की अनथक सेवाओं और कुशल प्रबन्ध के कारण स्थिरता और ख्याति प्राप्त हुई। वे गुरुकुल मे अपना व्यय स्वय वहन करते थे। उनके रुपए का १०) मासिक ब्याज प्राप्त होता था। उसमें से ७) मासिक भोजन के देते थे और ३) मासिकमें अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यश और कार्य के विस्तार में श्री स्वामी जी का बहुत बड़ा योग

है। जब वे मुरादाबाद में रहते थे तब सार्वदेशिक सभा के मन्त्री थे। सार्वदेशिक सभा का कार्यालय वर्षों तक उनके घर के एक भाग में रहा। सार्वदेशिक सभा का नाम लोगों ने व्यापक रूप से तब जाना जब मथुरा शताब्दि के पश्चात् १९२५ में दिल्ली में उसका कार्यालय परेड ग्राउन्ड स्थित अपने भवन में स्थापित हुआ। उन्होंने १४ वर्ष तक निरन्तर सभा के प्रधान के रूप में उसकी स्थिति को दृढ किया। आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जो कुछ है उसका बहुत बड़ा श्रेय श्री स्वामी जी को प्राप्त है।

सरकारी सहायता के बिना मथुरा शताब्दि का सुप्रबन्ध जिसमें लगभग ४ लाख आर्य नर नारी सम्मिलित हुए थे उनकी प्रबन्ध चातुरी का उत्कृष्ट नमूना और उनकी साधना का उत्तम प्रति फल था। भारत के आर्य जनों ने उसी समय उन्हें अपना भावी नेता वरण कर लिया था।

आर्य समाज सदैव आड़े समय में उनके नेतृत्व और मार्ग-प्रदर्शन की ओर देखता था। उन्होंने हैदराबाद और सिंध के स्मरणीय सत्याग्रहों का सफल नेतृत्व किया।

उनका व्यक्तित्व छाया हुआ व्यक्तित्व था। वे बड़े स्वाध्यायशील, कर्मठ, व्यवस्थित और नियन्त्रित थे। वे काम करना और काम लेना जानते थे। उनका खान पान और रहन सहन बड़ा सरल और नियमबद्ध था। स्वभाव में क्रोध था परन्तु हृदय मे निष्कपटता और उदारता थी। नियमों और विधान का बहुत सम्मान करते थे।

वे पूर्ण वय्यारी के पश्चात् आर्य समाज में प्रविष्ट हुए थे। स्वामी जी की जीवनी और ग्रन्थों को मनन पूर्वक अध्ययन करने पर आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त अपने को आर्य आदर्शों पर ढालने का प्रयास जारी रखा।

वे आर्यसमाज के उद्देश्य को भलीभांति समझते थे। उन पर दयानन्द की कल्पना का आर्य समाज सुस्पष्ट था। इसीलिए वे अवसरवादिता से पृथक् थे और जो मार्ग अपनाया उसी पर जीवन पर्यन्त आरूढ रहे। उससे एक इंच भी विचलित न हुए। उन्होंने आर्य समाज से भिन्न किसी सभा सोसाइटी की वेदि को न अपनाया। उनके इस सुस्पष्ट दर्शन ने उनसे आर्य समाज की उल्लेखनीय सेवा कर दिखाई। इसी के कारण आर्य समाज की शक्ति और लोकप्रियता में उनका योग बढा चढा रहा। इसी कारण से आर्य समाज जब २ अत्यन्त महत्त्व के निश्चय करने लगता है तो उनका सहज ही स्मरण हो आता है। निस्सन्देह उनका जीवन और उनका कार्य चिरकाल पर्यन्त स्मरणीय और प्रेरणादायक बना रहेगा।

ये सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्वतन्त्र भारत में राजकीय स्तर पर भलाई के नाम पर जिन बुराइयों का प्रचार हो रहा है उनमें से एक बुराई 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' के नाम पर फैलाई जा रही है। इन कार्यक्रमों की विद्यमानता में हमें वेश्याओं के नृत्य और गान की निन्दा करने का अधिकार नहीं रह जाता है। इन कार्यक्रमों से हमारी शिष्ट भावना को ठेस लगती और नैतिकता को भारी धक्का लगता है। क्या हमारे जन साधारण मुख्यतया मान्य अतिथियों के समक्ष हमारी संस्कृति की वरिष्ठता दिखाने के लिए नर्तकियों के नाच-गान ही रह गए हैं? देश के विचारशील नर नारियों को इस तथ्य पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

नृत्य और गान की वास्तविक भावना बुरी नहीं है परन्तु यह स्त्रियों तक सीमित है जिसके लक्ष्य में कला की अभिव्यक्ति और स्वास्थ्य की रक्षा है। पुरुष वर्ग के समक्ष प्रदर्शन के रूप मे स्त्रियों का नाच गान सदैव से ही सभ्य समाज में तिरस्कृत और निरुत्साहित रहा है क्योंकि इस प्रकार का प्रदर्शन सामाजिक-आमोद-प्रमोद का निकृष्टतम

स्वरूप माना जाता है

हमारे राज्य के कर्णधारों को इसप्रकार के अश्लील कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने की भूल न करनी चाहिए और यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि राजतन्त्र निधनता से और गणतन्त्र विलासिता के इस प्रकार के आयोजनों से नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं।

एक विचारणीय बात

बगाल के एक तान्त्रिक महात्मा ने वहा की सरकार के गृह विभाग को 'जवा कुसुम' के कुछ फूल भेजे और लिखा कि "मैंने अपने राज्य के मन्त्रियों में आध्यात्मिक बल लाने के लिए एक यज्ञ किया है उसका प्रसाद भेज रहा हूँ।"

तान्त्रिक के इस पत्र की एक २ नकल और जवा कुसुम' के थोडे २ फूल सरकारी लिफाफे में राजकीय ढग से रख कर गृह विभाग के एक २ मन्त्री के पास भेज दिए गए।

इस प्रकार के प्रसाद से आध्यात्मिक बल नहीं आता। आध्यात्मिक बल तो सदाचार कर्तव्य परायणता एव आत्मा की उच्च साधना से आता है। बिना पढ लिखे अज्ञान ग्रस्त व्यक्ति इस प्रकार के पाखण्ड का शिकार हो जाय तो यह बात समझ मे आने वाली है परन्तु राज्य के पढे लिखे और उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तियों का इस प्रकार के पाखड से मूर्ख बनाया जाना और उनका पाखण्ड के प्रसार में हाथ बटाना बड़ा शोचनीय है। हमारे अधिकाश राज्य मन्त्री अपनी प्रशासकीय अयोग्यता का परिचय दे चुके हैं। इस अयोग्यता का परिचय देने मे जो कमी रह गई है उसकी पूर्ति उनकी इस प्रकार की बेहूदगियों से सहज ही हो जाती है।

भावात्मक एकता

मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ में दीक्षान्त भाषण देते हुए केन्द्रीय मन्त्री प्रो० हुमायू कबीर ने एक बडे मर्म की बात कही। उन्होंने कहा ईरान के लोग मुसलमान हो कर भी देश के पुराने महापुरुषों रुस्तम, सुहराब, नौशेरवा आदि के गीत गाते चले आ रहे हैं। मलयदेश तथा जावा-सुमात्रा आदि देशों की जनता ने पहले युग की भारतीय सस्कृति को अपना लिया था। यद्यपि वहा की जनता अब मुसलमान हो चुकी है तथापि वह आज दिन तक रामायण, महाभारत और पुराणों पर आधारित अपनी राष्ट्रीय सास्कृतिक भित्ति को पहले की भाति ही सम्भाले हुए है। उन्होंने भारत के मुसलमानों को प्रेरणा की कि वे भी इसी प्रकार भारत के पुराने इतिहास और साहित्य को शेष जनता के सदृश अपनी बपौती समझते हुए उसके सरक्षण और सवर्धन में अभिमान पूर्वक भाग लें। भारत का राष्ट्रीय इतिहास और साहित्य उसकी समूची जनता की सम्मिलित सम्पत्ति है। उसके सग्रह और निर्माण में अतीत युग के सभी भारतीयों ने भाग लिया है। इसी प्रसग में उन्होंने उक्त विश्वविद्यालय के सस्थापक स्व० श्री सर सय्यद अहमद खा के विषय में कहा कि यदि वे भारत के मुसलमानों को शेष जनता की सास्कृतिक एकता का सन्देश भी सुना जाते तो भारत का नया राष्ट्रीय इतिहास कुछ अधिक सुन्दर और पूर्ण स्वरूप को धारण कर सकता था।

श्री प्रो० हुमायू कबीर की भावना प्रशसा के योग्य है। यदि भारत के मुसलमानों और हिन्दुओं मे भावात्मक एकता होती या उनका पथ प्रदर्शन ठीक ढग से हुआ होता तो 'पाकिस्तान" की स्थापना न हुई होती। प्रोफेसर महोदय का अभिप्राय यही प्रतीत होता है जब वे यह कहते हैं कि भारत का नया राष्ट्रीय इतिहास कुछ और अधिक सुन्दर और पूर्ण स्वरूप को धारण कर सकता था। अगरेजों की नीति यह थी कि मुसलमानों को हिन्दुओं से पृथक् रखा जाय। इस नीति की सफलता के लिए उन्होंने अलीगढ विश्वविद्यालय को लक्ष्य बनाया। यह नीति सफल हुई और इसकी सफलता में उन नेताओं का हाथ रहा जिनका

मुस्लिम हितों के संरक्षण और संवर्धन के लिए अंगरेजों की ओर झुकाव था। इस साम्प्रदायिक परन्तु राष्ट्रहित घातक नीति के अवलम्बन से स्वयं मुसलमानों का कितना हिताहित हुआ यह तो समय ही बतायगा। भारत के हिन्दुओं और मुसलमानों की भावात्मक एकता कभी न हो सकेगी यह तो नहीं कहा जा सकता। परन्तु वर्तमान में इसके लक्षण नहीं देख पड़ते। इस प्रसंग में कमाल पाशा के एक भाषण की कुछ पंक्तियों का उद्धृत किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है जो उन्होंने अपने जीवन काल में (१९३४ में) टर्की के मुसलमानों के समक्ष एक विराट सभा में दिया था। उन्होंने कहा था —

"आप लोग अपने धर्म पर दृढ़ रहें और अपनी मातृ भूमि से प्रेम करें क्योंकि अपनी मातृभूमि से प्रेम करना प्रत्येक मुसलमान का फर्ज है सदैव स्मरण रखो आप तुर्क हैं और आपके बुजुर्गों की यह भूमि आपकी मिल्कियत है।

श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी

श्रीयुत स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज के निधन का समाचार देते हुए बड़ा दुःख होता है श्री स्वामी जी का पूर्व नाम पं० गंगादत्त जी था। उनका लगभग समस्त जीवन आर्य समाज की सक्रिय सेवा में व्यतीत हुआ। ११ जनवरी को ८१ वर्ष की आयु में अबोहर नगर में गायत्री महा यज्ञ के प्रारम्भ होने के ५वें दिन सहस्रों नरनारियों के समक्ष हृदय की गति बन्द हो जाने के कारण कुछ ही क्षणों में उनकी इहलीला समाप्त हो गई। उनका जीवन बड़ा क्रियाशील और यज्ञमय था। उन जैसी मृत्यु विरले ही व्यक्तियों को मिलती है। वे शय्या पर पड़े २ नहीं मरे। स्वामी जी महाराज आर्य समाज के उन भक्तों में थे जो अहर्निश आर्य समाज के कार्य में निरत रहते हैं जिनके विचार और प्रक्रियाएं आर्य समाज पर केन्द्रित रहती हैं। वे बिजनौर जिले के निवासी थे। उनका कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, बंगाल और मुख्यतया पञ्जाब रहा। अबोहर वह स्थान था जहां उन्होंने गृहस्थाश्रम के समय निरन्तर १५, २० वर्ष बैठ कर कार्य किया था। अबोहर की आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं उनकी सेवाओं से उपकृत हैं। उनमें से कई संस्थाओं के वे ही जन्मदाता थे। घटनाचक्र कैसा विचित्र है कि जिस अबोहर में उन्होंने अपने जीवन को आर्य समाज रूपी यज्ञ के अर्पण कर रखा था वहां ही उसकी पूर्णाहुति हुई।

परमात्मा से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें

कानूनी समाधान

दक्षिण प्रान्त के एक सज्जन लिखते हैं

यहां पर एक समस्या बनी हुई है कृपया इसकी निवृत्ति का उपाय बताएं।

लगभग १॥ मास पूर्व एक १२ वर्षीया हिन्दू लड़की एक मुसलमान के साथ बम्बई चली गई। वहां उसे मुसलमान बनाकर उसके साथ शादी करली गई। पुलीस की सहायता से वह लड़की उसके अभिभावक को वापस मिल गई। आर्य समाज में उसकी शुद्धि करली गई। अब समस्या यह है कि उस मुस्लिम के साथ हुई शादी का कैसे विच्छेद और उसका विवाह हिन्दू के साथ कराया जाय। आप कोई ऐसे कानूनी फैसले का हवाला देवें जिससे लड़की के परिवार वालों को सान्त्वना दी जाय। क्या ऐसा कोई ऐक्ट है जिससे शुद्धि हो जाने पर पहली शादी समाप्त हो जाय?

यदि मुस्लिम पति पत्नी दोनों में से कोई इस्लाम का परित्याग कर देता था तो मुस्लिम शरीअत के अनुसार उनका विवाह टूट जाता था जब बहुत सी मुस्लिम देवियों ने अपने पतियों का परित्याग करके हिन्दू धर्म अंगीकार कर लिया और मुस्लिम पति कुछ न कर सके तो मुसलमानों में बड़ी हलचल मच गई। फलतः १९३९ में 'मुस्लिम

विवाह विच्छेद' नाम का ऐक्ट ७ बना जिसकी प्रस्तावना में लिखा गया —

"मुस्लिम शरीअत के अनुसार विवाहित मुस्लिम महिलाओं के विवाह विच्छेद विषयक अभियोगों के विधान की धाराओं का स्पष्टीकरण और सगतिकरण करने तथा विवाहित मुस्लिम देवी द्वारा इस्लाम का परित्याग करने की अवस्था में उसके विवाह सम्बन्ध पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध मे सन्देहों का विवरण करने के लिए कानून बनाया जाता है।"

इस कानून की प्रासगिक धारा स० ४ नीचे दी जाती हैं —

'यदि कोई विवाहित मुस्लिम स्त्री इस्लाम का परित्याग करती है या धर्म परिवर्तन करती है तो इससे उसका विवाह सम्बन्ध न टूट सकेगा।'

परन्तु इस प्रकार के धर्म परित्याग या धर्म परिवर्तन के पश्चात् स्त्री धारा स २ मे उल्लिखित किसी भी आधार पर तलाक प्राप्त करने की अधिकारिणी होगी। धारा स० ४ की व्यवस्थाए उस स्त्री पर लागू न होंगी जो अन्य किसी धर्म को छोड़ कर मुसल्मान बनी हो और पुन अपने धर्म में वापस चली गई हो।

इस धारा के अनुसार मदरास की उपयुक्त हिंदू लड़की किसी भी हिंदू के साथ विवाह करने मे स्वतन्त्र है। ऐक्ट की प्रस्तावना तथा धारा स० ४ मूलत इस प्रकार है -

The Dissolution of Muslim marriage Act 7 of 1939

(The preamble States as under

An act to consolidate and clarify the provisions of Muslim law relating to Suits for dissolution of marriages by women married under Muslim law and to remove doubts as to the effects of this renunciation of Islam by a married Muslim woman on her marriage tie

Section 4

Effect of converstion to another faith

The renunciation of Islam by a married Muslim woman or her conversion to a faith other than Islam shall not by itself operate to dissolve her marriage

Provided that after such renunciation or conversion the woman shall be entitled to obtain a decree for the dissolution of the marriage on any of the grounds mentioned in section 2

Provided further that the provisions of this section shall not apply to a women converted to Islam from some faith who reembraces her former faith

आर्य धर्म प्रेमी का सम्मान

शनिवार २४ जनवरी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दयानन्द भवन (राम लीला मैदान नई दिल्ली स्थित) में बम्बई के सुप्रसिद्ध आर्य धर्म प्रेमी व्यवसाय विशारद श्री धरमसी खटाऊ के सम्मान में चाय गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। श्री धरमसी खटाऊ काठियावाड़ के निवासी और बम्बई के बहुत बड़े मिल मालिक है। इस गोष्ठी मे दिल्ली के गणयमान्य आर्यों ने भाग लिया। श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने उपस्थित सज्जनों का मान्य अतिथि को परिचय कराया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल जी ने सर्वप्रथम पुष्पहार पहना कर उनका अभिनन्दन किया इसी प्रकार श्री जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से अभिनन्दन किया। श्रीयुत पण्डित अलगूराय जी शास्त्री सभा उपप्रधान ने अपने अत्यन्त सारगर्भित भाषण में आर्यसमाज और सार्वदेशिक सभा का मान्य अतिथि को परिचय कराया। श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने सभा की ओर से चुना हुआ आर्य साहित्य तथा महर्षि दयानन्द का मढा हुआ चित्र भेंट किया। यह सब आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के मन्त्री श्री वेणीभाई के उद्योग का फल था।

श्री खटाऊ जी ने अपने सक्षिप्त अग्रेजी भाषण मे आर्यसमाज और उसके कार्य की प्रशसा

करते हुए कहा कि आर्यसमाज हिंदू समाज का सैनिक अंग है जिसने हिंदू धर्म की रक्षा और उसकी काया पलटने का प्रशसनीय कार्य किया है। आर्यसमाज ने समाज और देश को योग्य नेता प्रदान किए हैं। इसने कठिन परिस्थितियों में से गुजरते हुए भी अपना मार्ग प्रशस्त करके अपने को एक बड़ी सस्था और शक्ति बनाई है।

श्रीयुत पं० अलगूराय जी शास्त्री का भाषण

"हमारी उत्कट इच्छा है कि हमारे मध्य इसी प्रकार की उच्चात्माएं आती रहें। पिछले दिनों मैं प्रचार यात्रा पर टंकारा गया था। वहा श्रीयुत वेणी-भाई जी से खटाऊ जी के विषय में ज्ञात हुआ। जब मैं बम्बई गया और श्री खटाऊ जी से भेंट हुई तो मुझे ऐसा लगा मानो वर्षों से हमारी उनकी घनिष्ठता है।

श्री खटाऊ जी में आर्य-भावना भरी हुई है। आप बड़े उद्योगपति हैं। बड़े २ राज्याधिकारी आप से परामर्श का लाभ उठाते हैं। आपकी गणना देश के इने गिने व्यवसाय-विशारदों में है।

आप हिंदू समाज के नव-निर्माण मे बडा रस लेते और उसमें योग देना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि आज हिंदूसमाज के ऐसे हितैषीका अभिनन्दन करने का हमें अवसर प्राप्त हुआ।

सार्वदेशिक सभा जिसका अंग्रेजी नाम International Aryan League है भूमण्डल के आर्य नर-नारियों की शिरोमणी सभा है। देश और विदेश में कई प्रतिनिधि सभाए हैं जो सार्वदेशिक सभा के नियन्त्रण में हैं। परन्तु जैसा नियंत्रण मै चाहता हूं वैसा नहीं है।

आर्यसमाज के सगठन को कभी भी सरकारी योग न मिला जबकि गत १२०० वर्षों में मुसल्मानों और ईसाइयों को प्रचुर मात्रा में प्राप्त रहा यही कारण है कि इस देश में स्थान २ पर मस्जिदें और गिरजे खड़े हुए हैं। आर्यसमाज ने हिन्दू जाति को समाप्त करने की ईसाइयों और मुसलमानों की चालों को समझा और इनसे हिन्दुओं की रक्षा के लिए कोई वैध प्रयत्न उठा न रखा।

कुछ भाई आर्यसमाज को सम्प्रदाय समझते हैं। आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है। इसकीआधार शिला वेद और वैदिक परम्पराए हैं। आर्यसमाज की शिक्षाओं के दायरे में नस्ल, लिंग रंग और धर्म के भेदभाव से शून्य समस्त मानव समाज आ जाता है। आर्यसमाज सदैव अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है।

आर्यसमाज में जो व्यक्ति आ जाता है वह फिर निकलकर नहीं जाता। क्यों ? इसलिए कि इसका आदर्श और लक्ष्य बहुत ऊंचा है। यह समाज ऋषि दयानन्द की भावना पर खड़ा है। कोई सस्था अपने सदस्यों की शक्ति से नहीं अपितु उसे देखने वालों की शक्ति से विजयी होती है। चने की शक्ति छिलके में अधिक है। उसकी दाल को बोकर चना पैदा नहा किया जा सकता इसी प्रकार भूसी रहित चावल से चावल की उत्पत्ति नहीं हो सकती। बहिरग अन्तरग से अधिक महत्त्व पूर्ण है अत आर्यसमाज की शक्ति का रहस्य हिंदू समाज है। इससे हमें बहुत शक्ति मिल सकती है।

आर्यसमाज, बुझी हुई राख नहीं अपितु धधकती आग है। इसमें डालने के लिए ईंधन चाहिए।

महाविद्यालय ज्वालापुर

महाविद्यालय ज्वालापुर के सम्बन्ध में ११ आर्य नेताओं और विद्वानों से समर्थित सहयोग की अपील अन्यत्र प्रकाशित की जारही है जिसमें महाविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती आयोजन और महोत्सव को सफल बनाने के लिए आर्य जनता

(शेष पृष्ठ ६२३ पर)

वैदिक आशावाद

[श्रीयुत प० अलगूराय जी शास्त्री उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]

यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युषसश्च केतून् ।
एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रं कृत्याकृता कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि ॥१०-१-३२

ऊपर के मन्त्र मे जो चित्रण है वह मनुष्य के लिये आशा का एक उज्ज्वल सदेश है ।

सूर्य जिस प्रकार अधकार के समुद्र मे डूब कर भी पुन बन्धन मुक्त हो जाता है—रात्रि के अधकार को नष्ट कर उषा काल के भरण्ड पताके गिरा देता और ऊपर उठकर चमक जाता है इसी प्रकार मैं भी अपने समस्त दुष्कृत्यों के कुप्रभाव को टालकर उनसे ऊपर उठता हू और जैसे हाथी पर पडी धूल से हाथी का मूल्य नहीं घटता उसी प्रकार मेरा वास्तविक मूल्य अपनी की हुई छोटी मोटी भूलों से नहीं घटता मै फिर सम्भलकर अपने वास्तविक मूल्य मे प्रकट हो जाता हू और चमक उठता हू ।

वेद का यह सदेश अत्यन्त दुरवस्था में पड हुए सिसकते मनुष्य को भी एक बार पुन उठ खडे होने का आह्वान है ।

समय परे सुपुरुष नरहिं लघु कर गनिय न कोय ।
नायक पीपर बीज सम बचै त तरुवर होय ॥

यह कवि चेतावनी इस मन्त्र के सारगर्भित आशय पर ही अवलम्बित है । बडे से बडे मनुष्य फिसल जाते हैं—गिर जाते है । परन्तु चेतते ही यदि उनमें साहस धैर्य और क्षमता है, तो वह उठ खडे होते हैं । सूर्य जैसी चमकती शक्ति भी ग्रहण ग्रस्त होती है-प्रतिदिन रात्रि के अधकार मे छिप जाती है, परन्तु फिर वही समय पाकर चमक उठती है । इस कारण किसी भी सच्चे मूल्य रखने वाले व्यक्ति को निराश नहीं होना चाहिये । उसे अपने सकटों का सामना करना चाहिये और पतितावस्था से उठकर अग्रसर हो उन्नति का पथ अपनाना चाहिए ।

रत्नाकर एक डाकू था—वही सप्तर्षियों के सम्पर्क में आकर वाल्मीकि महामुनि और कवि बन गया । महान् बनने के बीज और अकुर उसमें उपस्थित थे । समय पाकर वह फूटे और एक महान् व्यक्तित्व उस गिरे प्राणी मे से निकला ।

यदि एक महान आत्मा परिस्थितियों के कारण आज हीन दशा मे है तो उसे नगण्य मान त्याग नहीं देना चाहिये, न उसका अपमान करना चाहिये । पीपलका बीज नन्हा सा होता है । भीतर उसके शून्याकाश के अतिरिक्त कुछ भी ठोस नहीं । उस पर भी उसे पक्षी उसके फल के साथ खा जाते है । पक्षी के बीट में से निकला और बचा हुआ वह सुतुच्छ बीज—तुच्छेनाभ्वपिहितम् सुतुच्छता और शून्यता से भीतर पोला-मन्दिरों के शिखर पर कगूरों की ईंटों के बीच के अवकाश पर उग जाता है विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेता है । तब भला यह मानव काया मे केन्द्रित आत्मशक्ति छोटी मोटी भूलों के कारणक्या सर्वथा मिटाई भी जा सकती है ? कदापि नहीं —

हम त कहीं हम ही पर बीती—
राम लखन दोउ बन को सिधारे ।
बनवा गये उनहू पर बीती ॥

हम समझते हैं कि हमीं पर अपदा आयी हैं, किन्तु राम लक्ष्मण बन गए, तब उन पर भी तो अपदा ही थी । कवि ने इस वचन से वही आश्वासन दिया है कि-गिर २ के उठे हम कभी उठ २

के गिरे हम—हम उठते भी हैं, गिरते भी हैं— निराशा नहीं होनी चाहिए।

—वन स्टेप फार्वर्ड टू स्टेप्स बेकवर्ड—का महत्वपूर्ण वचन लेनिन का है। क्रान्तिकारी व्यक्तियें और शक्तियें समय पर एक पग आगे बढा दो पग पीछे हटने मे हिचकती नहीं नदी का प्रवाह इसी कारण टेढा मेढा होता जाता है। अपने मोड़ों से सरिता वक्रगा होती जाती है और व्यापक क्षेत्र को सींचती जाती है। इस उदाहरण से हमे स्पष्ट शिक्षा मिलती है कि हम उतार चढाव के द्वारा खोते कुछ नहीं हैं। केवल हमारी छिपी शक्तियों का उदय ही होता है। इस कारण वेद भगवान् ने कहा है कि मैं सूर्य की नाई सकट के कुहरे और अधकार में पड़कर भी पुन उससे ऊपर उठ जाता हू—हाथी की काया पर अपने आप डाला हुआ धूल भी उसका मूल्य कम नहीं करता, इसी प्रकार जाने अजाने अपनी भूलों के कारण मै अपना वास्तविक मूल्य नहीं खोता।

बाजे दिन बाजि हाथ, बाजते नगारे साथ,
बाजे दिन कर कुदाल खेत गोडि रहिये।
बाजे दिन शालन दुशालन की ढेरी लाग,
बाजे दिन टूक कामरो की ओढि रहिये॥
बाजे दिन हुकूमत हजारन पर हासिल होति,
बाजे दिन हजार बात पाजिन की सहिये।
हारिये न हिम्मत बिसारिये न ईश नाम,
जाही विधि राखें भगवान् ताही विधि रहिये॥१॥

इस कविता ने यही कहा है कि कर्त्तव्य पथ मे डटे रहने की शक्ति है तब कुछ बिगड़ता नहीं—उतार चढाव आते जाते रहते हैं।

यह अपहत आत्मा पाप मुक्त है। शुद्ध बुद्ध मुक्त बनने की क्षमता रखता है। इसे निराशा से ऊपर उठ कर्त्तव्यारूढ होना चाहिये।

पापों से मुक्त होने के लिए साधना अपेक्षित है। उन साधनाओं में इन्द्रिय सयम ही सर्व श्रेष्ठ है। जीवन में अपना अस्तित्व तथा उस अस्तित्व मे सक्रियता यही दो बातें हैं। हम हैं, यह सत्य है हम कुछ करते हैं, यह भी सत्य है। हमारे कार्य कलाप का साधन हमारी इन्द्रियें हैं। जिस रथ के घोड़े सयम की रस्सी मे बन्धे हैं, वही रथ ध्येयधाम पर ले जा सकता है। अत इन इन्द्रियों से युक्त जिस काया मे आत्मा चल रहा है उन इन्द्रियों का इसके वश मे होना आवश्यक है। यस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथे। स तत्पदमवाप्नोति यस्मात् भूयो न जायते—का वचन इसी सत्य को दर्शाने के लिये उपनिषदों मे आया है। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभ मन—की सत्यता भी हम जानते हैं कि दुर्धर्ष इन्द्रियें वश के बाहर हो जाती हैं। यह सत्य न होता तो हमारे गुरुकुलीय आचार्य यह न कहते कि-यानि यानि अनवद्यानि तानि त्वयोपासितव्यानि—कि जो हमारे आचरण मे ठीक है उसीका आचरण करना तात्पय यह कि भूलों का नहीं। अर्थात् भूल उनसे भी सभव थी। अत पूर्ण प्रयत्न पर भी भूलें हो जाय तो सम्भल कर उनसे ऊपर उठना सम्भव है। और उन भूलों के कारण हम सर्वथा मिट नहीं जाते।

ऋग्वेद ने कहा है कि—

यच्चिद्धि ते विशो यथा प्रदेव वरुण व्रतम्-
मिनीमसि द्यवि द्यवि-कि हे वरुण देव हम तुम्हारे व्रत का पालन उसी प्रकार दिन दिन करते हैं जैसे प्रजा राजा के नियमों और विधाना का परन्तु फिर भी स्वाभाविक दुर्बलता से यदि भूल हो ही जाती है तब लज्जा से हमारा मस्तक स्वय नीचा हो जाता है। अत न मुझ पर क्रोध करो न मुझे मारो-यही उसी सूक्त मे इस प्रकार कहा है—

मानो वधाय हत्नवे जिहीडानस्य रीरिध।
मा हृणानस्य मन्यवे॥

फलत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मनुष्य भूलों का शिकार बन जाता है। उन भूलों से वह ऊपर उठ सकता है। और उसका वास्तविक

अद्वैत विचार धारा व दयानन्द

(ले० प्रो० वेद प्रकाश रिसर्च स्कालर ३६ शीशमहल मेरठ)

उपनिषदों में अद्वैतवाद का प्रतिपादन है या द्वैतवाद अथवा बहुवाद का यह एक ऐसी समस्या है जिस पर विद्वानों ने गम्भीर विवेचन किया है। लेकिन यह तो स्पष्ट है कि उनमें बहु-देवतावाद का लेशमात्र भी नहीं बल्कि इसके प्रबल पुष्ट प्रमाण स्थल २ पर मिलते हैं कि पार्थिव देवता उसी ब्रह्म की शक्तियों का प्रदर्शन हैं। परन्तु जगत् व ब्रह्म का सम्बन्ध क्या है यह प्रत्येक दार्शनिक ने अपने दृष्टिकोण से सोचा है। श्री भर्तृ प्रपच ने बृहदारण्कोपनिषद् की यथार्थवादी दृष्टिकोण से व्याख्या करते हुए जीव व जगत् को उसी एक ब्रह्म से अग्नि से चिन्गारिया के सदृश निकला हुआ माना है।

शकर स्वामी ने भी उपनिषद् भाष्य मे अपने पूर्ववर्ती भाष्यकारो का अनुकरण किया, परन्तु तिस पर जगत् की यथार्थता को नहीं माना। इसका कारण शकर स्वामी पर श्री गौड़पादाचार्य का प्रभाव हो सकता है। उन्होंने जिस आदर्शवादी अद्वैतवाद (Monistic idealism की स्थापना की वह हमे न तो उपनिषदों मे ही स्पष्ट मिलता है, और ना ही ब्रह्म सूत्रों मे। शकराचार्य जी का मत है कि ब्रह्म ही एक सत्ता है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं अपने इसी विचार को उन्होंने उपनिषदों में खोजने की चेष्टा की। उपनिषदों में ऐसे अनेकों स्थल हैं, जहा पर द्वैतवाद का स्पष्ट वर्णन है। ऐसे स्थलों पर शकर स्वामी सत्ता द्वय (पारमार्थिक व व्यवहारिक) की कल्पना पर व्याख्या करने की चेष्टा करते हैं। केवल उपनिषदों मे ही नहीं बल्कि ब्रह्म सूत्रों के भाष्य में भी श्री शकराचार्य जी जहां पर द्वैतवाद होता है, वहा पर व्यवहारिक व पारमार्थिक सत्ताओं पर ही चलते हैं। वह जीव व जगत की सत्यता को बौद्धों के समान समाप्त नहीं कर देते, बल्कि व्यवहारिक सत्ता में उन्हें मान लेते है, जो कि माया के प्रभाव से ब्रह्म पर आधारित है। माया क्या है ? व्यवहारिक सत्ता क्या है ? और परमार्थ का चेतन ब्रह्म कैसे व्यवहार का आधार हो सकता है ? ये सब प्रश्न ऐसे हैं जो कि अद्वैतवाद (ब्रह्माद्वैत) के आधार पर नहीं सुलझाए जा सकते। इन के लिए हमें स्पष्ट यथार्थवाद का रूप ग्रहण करना पड़ेगा। शकर स्वामी विज्ञानवादी बौद्धों का खण्डन करते हुए यथार्थवादी से जान पड़ते हैं परन्तु फिर वह यही कह देते हैं, कि जाग्रत के पदार्थ स्वप्न के पदार्थों के समान मिथ्या हैं।

बौद्ध पण्डित नागार्जुन का विचार था कि इस

सच्चा मूल्य रत्ती भर भी कम नहीं होता।

मुसलमान हुआ हिन्दू, ईसाई हुआ हिन्दू, पुन वाचते शुन्वामि-आदि की प्रक्रिया से शुद्ध बनाया जा सकता है।

ऋषि दयानन्द ने इस सत्य को देखकर ही विधर्मी हुए हिन्दुओं को अपनाने का सदेश दिया था —

हीरा पड़ा बाजार में रहा छार लपटाय।
बहुत क मूरख चलि गये-पारखलिया उठाय ॥

छार मे लिपटे हीरे को पारखी उठा लेते हैं धो पोंछकर उसका सच्चा मूल्य प्राप्त कर लेता है। मूर्ख उसे छार के कारण छोड देता है।

आइये आत्मा के इस अक्षुण्ण बने रहने वाले मूल्य को पहचान कर हम सोत्साह उठें और कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर हों।

लोक के सारे पदार्थ संवृति ज्ञान के समान हैं जैसे मिथ्या संवृति में मृगतृष्णा व आकाश का पुष्प इत्यादि। संवृति का अर्थ है "अज्ञान" या "ढका वा"। उनका कहना है कि लोक के सारे पदार्थ अज्ञान से हैं और इसी प्रकार मिथ्या है जिस प्रकार स्वप्नादि के पदार्थ। हम किसी भी पदार्थ का सच्चा रूप नहीं देख सकते, कि उनमे कैसे कार्य कारण सम्बन्ध है, फिर कोई भी पदार्थ क्षण के बाद नहीं रहता। बौद्धों के अनुसार तथ्य यह है कि सब कुछ हमें अज्ञान के आवरण से ढका दिखाई पड़ता है अत यह परमार्थ सत्य नहीं हो सकता। परमार्थ सत्य क्या है बौद्ध इसे शून्य मानते हैं।

परन्तु प्रश्न तो यह है कि शून्य से पदार्थ उत्पत्ति कैसे ? यहीं पर शकर स्वामी में और बौद्धों मे भेद हैं। जगतगुरु ब्रह्म को संवृति व मिथ्या संवृति (व्यवहारिक व प्रातिभासिक सत्ता) का आधार मान लेते हैं।

ब्रह्म को जगत् का आधार माने, जो कि इसका अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं, या शून्य को लेकिन जगत् अभी भी एक पहेली है। जगत् को हम तात्त्विक रूप में मिथ्या कहकर नहीं टाल सकते शंकर स्वामी अपने ब्रह्मसूत्रों के भाष्य में कहते हैं कि हम अविद्या से अन्य में अन्य का आरोप कर लेते हैं। जैसे रस्सी में अज्ञान से सर्प की भ्रान्ति कर ली जाती है जबकि वास्तव में सर्प का रस्सी में कोई अस्तित्व ही नहीं। इसमें स्मृति का स्थान भी होता है, जिससे अन्य वस्तु के गुण धर्म व स्वभाव का अन्य में आरोप हो जाता है। इसको अध्यारोप कहते हैं। ऐसे ही जीव से ब्रह्म में जगत् का अध्यारोप कर लिया जाता है और जिससे यह अध्यारोप होता है वह अविद्या है जो कि माया ही है। अब सारा झगड़ा माया पर आ जाता है। शंकर स्वामी के पास माया का इससे उत्तम कोई हल नहीं कि वो उसे सत् असत् विलक्षण अनिर्वचनीया मानें

देखा जाय तो माया की इसी कल्पना पर आने वाले अनेकों शाकर वादियों ने तथा रामानुजाचार्य आदिकों ने माया की अनेकों प्रकार से व्याख्यायें की हैं। श्री पद्मपाद (सन् ८२० ई०) ने शकर के वेदान्त भाष्य के प्रथम चार सूत्रों पर की गयी व्याख्या में माया को एक शक्ति का रूप दे दिया है। श्री पद्मपाद के मतानुसार माया से शकर का यही तात्पर्य था कि यह एक ऐसी शक्ति है, जो कि हमारे मानस पटलों को एक तरफ ब्रह्म से और एक तरफ हमसे जोड़े रखती है। यह एक तरफ ब्रह्म के सत्य ज्ञान को हमसे छिपाती है, तथा दूसरी तरफ स्वयं यह (संवृत) जगत् बन पाती है। यद्यपि अब माया बौद्धों की तरह अज्ञान मात्र नहीं रह गयी वरन् एक शक्ति हो गई इसी शक्ति को श्री प्रकाशात्मन् (सन् १२०० ई०) ने जगत् सामग्री बना दिया परन्तु ब्रह्म के आधीन होने से तथा सत्य ज्ञान की बाधा होने से यह स्वतन्त्र नहीं बल्कि ब्रह्म की एक शक्ति है श्री अप्पय दीक्षित (सन १५५० ई०) तथा सिद्धान्त मुक्तावली के लेखक का विचार है कि माया ही जगत् का उपादान कारण है ब्रह्म तो उसका आश्रय स्थान होने से उपादान कारण कहा गया है। श्री दीक्षित कहते हैं कि माया जड़ जगत् का कारण है तथा ब्रह्म से जगत् की सत्ता है। श्री वाचस्पति मिश्र (८४० ई०) का भी यही मत है कि ब्रह्म अविद्या के साथ मिलकर जगत् का उपादान कारण हैं (अविद्या सहित ब्रह्मोपादानम्, भामती टीका १ १ २)

एक ही सम्प्रदाय में विचारों की यह भिन्नता इस बात का द्योतक है कि शंकराचार्य जी का अनिर्वचनीय माया का सिद्धान्त बाद के शांकरवादियों को पसन्द नहीं आया। परन्तु इनमें से एक भी अद्वैतवाद के छोड़ने की बात नहीं करते। तथ्य तो यह है कि जगत् का अस्तित्व बिना स्पष्ट द्वैतवाद (द्वैत से अर्थ एक से अधिक सत्ता) के माने हमारा काम नहीं चल सकता है। क्योंकि आखिर हम

क्यों शुद्ध, नित्य, मुक्त व अपरिणामी ब्रह्म में जगत् जीव की अवस्था में अशुद्धता, अनित्यता बन्धन व परिणामी पन को मानें ? क्या इससे श्रुति वाक्यों का बाध नहीं हो जायगा ? फिर ब्रह्म में भ्रमों का आरोपण कौन करता है ? यदि वह जीव है तो भी ठीक नहीं क्योंकि जीव तो बनेगा ही तब जबकि जगत् का अविद्या से अध्यारोप हो जायगा। इस प्रकार जगत् जीव की उत्पत्ति मे अन्योन्याश्रय दोष आ जाता है।

सबसे मुख्य प्रश्न तो वही पुराना प्रश्न माया का है कि यदि गुण है तो किसका और यदि तत्व है तो स्पष्ट द्वैत मत है। यदि किसी का गुण है, तब वह सत्ता कौन है, जिसका गुण है, यदि वह ब्रह्म है, तब ब्रह्म सदैव भ्रष्ट व अज्ञानी रहेगा। इससे कोई हल निकलने वाला नहीं।

अविद्या शब्द का अर्थ अज्ञान अर्थात् ज्ञान का अभाव अथवा मिथ्या ज्ञान हो सकता है। दोनो अवस्था में यह जगत् की उपादान सामग्री नहीं हो सकता।

इन्हीं कठिनाईयों को विचार में रखकर स्वामी दयानन्द इस मत पर पहुँचे कि अद्वैतमत सही मत नहीं और ना ही उपनिषदों का मत है। उनके मत में उपनिषदों मे प्रकृति के लिये माया शब्द का प्रयोग भी हुआ है। यह माया या प्रकृति त्रिगुण मयी है, जिसे सांख्यों ने प्रकृति माना है। यह प्रकृति ब्रह्म से पृथक है, परन्तु ब्रह्म के अधिकार में है, जैसे धन का स्वामी धन का अधिकारी होने पर धन नहीं होता, और ना ही धन उसका कोई शरीर का भाग ही है। दृश्यमान् जगत् के भेद ना तो स्वप्नवत मिथ्या है और ना ही मृगतृष्णावत् निस्सार है, बल्कि सत प्रकृति के कार्य हैं जो सत् है। जगत् की परिवर्तन शीलता का यह अर्थ नहीं कि यह भ्रम है, या इसका आधार ही नहीं है, बल्कि जगत है तथा इसकी सामग्री में अवयव सयाग वियोग से परिवर्तन होते है। स्वामी दयानन्द जी जीव को भी ब्रह्म से पृथक् ही विचारते हैं उनका यह मत तार्किक है। ब्रह्म शुद्ध होने से क्यों बन्धन में आयेगा। फिर जब अविद्या ब्रह्म को प्रभावित नहीं कर सकती क्योंकि यदि वह प्रभावित करने मे समर्थ है, तब ब्रह्म की सर्वज्ञता व शुद्धता का बाध हो जाता है। जहा तक प्रश्न प्रतिबिम्बवाद का है कि जीव ब्रह्म का प्रतिबिम्ब है तो भी यह ठीक नहीं क्योंकि अनन्त प्रसार वाले निराकार तत्व की यह कल्पना ही नहीं की जा सकती कि वह कहा नहीं है जहा उसका प्रतिबिम्ब पड सके। निष्कर्ष यह है कि शाकरमत हमे इस समस्या का कोई उत्तम सन्तोषजनक हल नहीं दे सकता। परन्तु दयानन्द के त्रैतवाद मे इन्हीं दार्शनिक समस्याओं को एक भिन्न स्तर पर हल किया गया है कि ब्रह्म के अतिरिक्त जीव व प्रकृति भी अनादि तत्व हैं।

वचनामृत

गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि ।
न हि मानुषात श्रेष्ठतरं हि किंचित ॥

—व्यास

अर्थात्—यह भेद की बात मै तुमको बताता हूँ कि मनुष्य से बढकर ससार में अन्य कुछ नहीं है।

घोर प्रतिक्रिया के पुजारी

(श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति)

नई दिल्ली के प्रधान मन्त्री भवन से श्रीमती इन्दिरागाधी की कृपा से एक पुस्तक प्राप्त हुई है। पुस्तक की छपाई, कागज, आकार प्रकार आदि का क्या कहना है? भारत के प्रकाशनों में सर्वोत्कृष्ट कोटि का कह सकते हैं। पुस्तक 'जनहित निधि' नाम की संस्था की ओर से प्रकाशित हुई है। प्रतीत होता है कि यह हमारे प्रतिभासम्पन्न प्रधान मन्त्री जी की क्रियाशीलता का नवीनतम परिणाम है।

पुस्तक में सरदार के० एम० पानिक्कर का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है "प्रति क्रिया का खतरा" किसी विद्यमान क्रिया अथवा गति का विरोध करने के लिए जो क्रिया अथवा गति की जाती है अथवा होती है उसे प्रतिक्रिया कहते हैं। सरदार पानिक्कर ने प्रतिक्रिया के जो दृष्टान्त दिए हैं उन्हें पढ़कर यह आश्चर्य होता है कि उन्होंने जिन्हें प्रतिक्रिया कहा है वे प्रतिक्रियायें हैं अथवा पानिक्कर साहब का अपना लेख प्रतिक्रियाओं का पुलिन्दा है।

सरदार पानिक्कर ने देश की जिन बातों को प्रतिक्रिया का नाम दिया है वे ये है। आप लिखते हैं कि इन दकियानूसी विचारों मे से सब से मुख्य अपनी जाति के किसी बीते हुए स्वर्णिम युग का विश्वास है। पानिक्कर साहब की राय है कि जो लोग यह मानते हैं कि उनका भूतकाल सुन्दर था वे भविष्य को कभी सुन्दर नहीं बना सकते। भूतकाल के स्वर्णयुग में विश्वास रखने के परिणामों के बारे में सरदार पानिक्कर की अद्भुत राय है। आप लिखते हैं कि हाथ की कारीगरी पुराने दवादारू, खद्दर आदि के सब आन्दोलन प्राचीनतावाद के ही परिणाम हैं। सरदार साहब की राय में ग्रामों की दशा पर अधिक ध्यान देना भी प्रतिक्रियावाद का परिणाम है।

आगे चलकर आप लिखते हैं कि हमारे प्राचीनतावाद का एक बड़ा खतरनाक पहलू यह है कि आध्यात्मिकता को भारत का विशेष गुण माना जाय। आपकी राय है भारत की दरिद्रता और दासता का कारण आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता में विश्वास ही है। प्रतिक्रियावाद का एक भयानक दृष्टान्त सरदार पानिक्कर की राय में शराबबन्दी का आन्दोलन है। गौ के लिए पूजा का भाव शराब बन्दी से भी अधिक दोषयुक्त है क्योंकि वह आर्थिक दृष्टि से हानिकारक है। यह स्थापना करके सरदार पानिक्कर ने इस बात पर बहुत दु:ख प्रकट किया है कि भारत में गोमास के खाने को बुरा माना जाता है। आपका मत है कि मनुष्य जाति में गोमास का भक्षण बहुत प्रचलित है उसे बुरा मानना निरी मूर्खता है।

आगे चल कर पानिक्कर साहब लिखते हैं कि दो और बहुत विस्तृत भ्रमात्मक वस्तुओं की ओर निर्देश कर देना भी यहा जरूरी है, वे है—(१) ज्योतिष और (२) आयुर्वेद। उनकी राय में ये दोनों अव्वल दर्जे के वहम हैं। 'नेशनल' नाम से सरदार पानिक्कर को बहुत चिढ़ है। आयुर्वेद से सबसे बड़ी शिकायत उन्हें यह है कि उसे 'नैशनल सिस्टम आफ मेडीसन' समझा जाता है। इस प्रकरण के अन्त में वे लिखते हैं कि आयुर्वेद का सुधार करने की बात उठाना भी केवल राष्ट्रीय हिमाकत का परिणाम है क्योंकि सुधार होने के पश्चात आयुर्वेद 'एलोपेथी' में ही समा जायेगा। प्रतिक्रियावाद के अन्य दृष्टान्तों में सरदार पानिक्कर ने देश की कई अन्य भावनाओं को सम्मि-

लित कर दिया है यथा सन्यासियों तथा पण्डितों के लिए आदर का भाव, त्याग की प्रशंसा कल कारखानों की उन्नति से भय आदि। हिन्दूसमाज के पतिभक्ति और पत्नीव्रत आदि के आदर्शों का उपहास करते हुए नवीनता के इस पुजारी ने उन्हें भी प्रतिक्रियावाद का नमूना बताया है।

अन्त मे सरदार पानिक्कर ने लिखा है कि हमारे देश मे सबसे अधिक खतरनाक प्रवृत्ति यह हो रही है कि शिक्षा को राष्ट्रीय बनाया जाये। वे इस प्रवृत्ति को लम्बी राजनीतिक दासता का परिणाम मानते है। उनकी राय में यह भी घोर प्रतिक्रियावाद का फल है कि शिक्षा मातृभाषा द्वारा दी जाय। राम और कृष्ण के प्रति भक्ति की भावना को पानिक्कर महोदय मानसिक दासता की पराकाष्ठा समझते हैं।

हम गेंद को दीवार की ओर फेंकते है। गेंद दीवार की ओर क्रिया करती है। दीवार से टकरा कर वापिस लौटती है तब उस की गति कोप्रतिक्रिया कहते हैं। भारत सदियों तक राजनीतिक और मानसिक दासता मे ग्रस्त रहा। उसे नीचे की ओर गति या क्रिया कह सकते हैं समय ने पल्टा खाया और हमारे देश ने दासता की चट्टान से टकरा कर ऊपर की ओर उठना आरम्भ किया। राष्ट्रीय चेतना आरम्भ हुई जिसकी सहायता से हमने अपने आप को समझा, अपने व्यतीतकाल के महत्त्व को पहचाना और तब स्वाधीनता प्राप्त कर ली। यह दासता की ओर क्रिया को प्रतिक्रिया थी।

आत्म ज्ञान और स्वाधीनताका प्रारम्भ प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था पर जब हमने उसे प्राप्त कर लिया तब वह प्रतिक्रिया न रही, 'स्वय क्रिया' बन गई। सरदार पानिक्कर ने आत्मज्ञान और राष्ट्रीयता को प्रतिक्रिया बतलाया है परन्तु यदि सत्य के दृष्टिकोण से विचार किया जाय, सरदार पानिक्कर के विचारों का परीक्षण किया जाय तो प्रतीत होगा कि वही स्वय प्रतिक्रियावादी है क्योंकि देश में बढती हुई स्वात्माभिमान और स्वाधीनता की प्रवृत्तियों से डर कर वे उसे पश्चिम की दलदल में घसीटना चाहते हैं। यदि सरदार पानिक्कर के दृष्टिकोण से देखा जाय तो महात्मा गाधी सब से बडे प्रतिक्रियावादी थे। यदि उनके सब विचार इतने हानिकारक थे जितने सरदार पानिक्कर उन्हें समझते है तो उनसे बचने का शायद एक ही उपाय है कि भारत की किश्ती को इग्लैंड या रूस के जहाज के पीछे बाध दिया जाय। स्वाधीनता में तो कुछ न कुछ भारतीयता रहेगी ही और भारतीयता से पानिक्कर साहिब को चिढ है। स्वाधीनता प्राप्त होने के पश्चात् देश के अनेक पाश्चात्य विचारों के पुजारियों में यह भावना पैदा हो गई है कि कहीं सचमुच हमे भारतीय ही न बनना पडे। इस भय ने जो प्रतिक्रिया पैदा की है सरदार पानिक्कर का लेख उस । एक नमूना है। लेख में विचारों की उलझन इतनी स्पष्ट है कि उसे सिद्ध करने के लिए युक्ति की आवश्यकता नहीं। आश्चर्य यही है कि यह लेख श्रीमती इन्दिरागाधी द्वारा सपादित और प्रधान मन्त्री के भवन से प्रकाशित ग्रन्थ में सपादकीय टिप्पणी के बिना कैसे प्रकाशित हो गया।

वचनामृत

An institution is the lengthened shadow of one man

कोई सस्था केवल एक व्यक्ति की विस्तृत प्रतिच्छाया मात्र होती है।

—इमर्सन

स्वाध्याय का पृष्ठ

आर्य राज्य का बल सदाचार और न्याय रहा है ?

इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत के ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों का संसार के राज्यों पर कभी वही प्रभाव था जो युरोप के राज्यों पर कभी रोम के पोपका था। भेद यही था कि रोम के पोप का राज्य शासन तर्क शून्य धर्म्मान्धता के साथ चलता था और भारतीय शासन तर्क युक्त आचारात्मक धर्म्मानुसार।

आर्य धर्म राज्य में आजकल की धर्म निरपेक्षता की भावना का प्रयोजन पूर्णतया सिद्ध हो जाता था। ब्राह्मण और साधुओं का तप, त्याग स्वार्थ और अन्याय को दबाता तथा जनता को अपनी ओर आकृष्ट किए रहता था। महान् वैदिक धर्म इतना उदार, विस्तृत तथा पूर्ण है कि उसमें संकीर्णता और संघर्ष को स्थान न था।

आजकल आभ्यन्तर में स्वार्थी अभिमानी राष्ट्र के नेताओं के ऊपर कोई शक्ति नहीं है। उससमय तपस्वी ब्राह्मण और सन्यासी थे। आजकल आर्थिक संकट इसलिए नहीं मिटता कि प्रत्येक का हृदय अर्थ-लोलुप है। कम्यूनिस्ट जिस अर्थ को बुरा कहता है उसी को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है। उस समय ब्राह्मण और सन्यासियों ने अर्थ के प्रति अपने तपत्याग से जनता के हृदय में उपेक्षा उत्पन्न करा रखी थी।

इस समय रूस और अमेरिका का शीत-संघर्ष चल रहा है। भीतर ही भीतर आग सुलग रही है। प्रत्येक यह चाहता है कि मेरी जीवन प्रणाली सर्वोपरि रहे। इस कामना को पूर्ण करने के लिए दोनों ही शस्त्रास्त्रों पर भरोसा रखते हैं। इसके विरुद्ध आर्य राजा संसार को अपने प्रभाव में रखने का साधन आचरण बनाते थे। अशोक ने शील के शस्त्र से ही अनेक देशों को विजय किया। शस्त्रों की विजय मिट गई परन्तु संस्कृति की विजय अब तक स्थापित है।

आर्य साम्राज्य या आर्यों का सार्वभौम राज्य कभी भी आतंक पूर्ण तथा संकीर्ण नहीं रहा। आर्य सत्ता का बल केवल सदाचार और न्याय रहा है।

महा फासिस्ट और उद्दंड शिशुपाल ने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में स्वीकार किया कि 'युधिष्ठिर का राज्य भय, लोभ और चापलूसी का राज्य नहीं है। केवल सदाचार और धर्म का राज्य है। इसलिए हमने प्रसन्नता से युधिष्ठिर को सम्राट माना है।"

उस समय जो राजा सबसे अधिक न्यायप्रिय तपस्वी और सदाचारी होता था उसी को सब अपना प्रधान बनाकर उसके शासन को मानते थे और यह सौभाग्य ईश-कृपा से भारत के आर्यों को सहस्रों वर्ष पर्यन्त प्राप्त रहा।

आज भी संसार को शान्ति और सुख के लिए एक सार्वभौम प्रजातन्त्र शासन की आवश्यकता है जिस पर सदाचार और अन्याय का अंकुश रहे।

(चुने हुए फूल पृ० ९७-९८)

मूर्ति पूजा के पक्ष में दी जाने वाली युक्तियों का खण्डन ?

(१)

युक्ति—परमात्मा अनन्त है और हम सान्त है सान्त के लिए अनन्त का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना

कठिन है। मूर्ति पूजा के द्वारा सान्त जीव अनन्त परमेश्वर के निकट पहुचकर उसकी एक झाकी प्राप्त करने मे समर्थ हो जाता है।

इस युक्ति की असंगतता सुस्पष्ट ही है। पूजा का उद्देश्य था अनन्त प्रभु का ज्ञान प्राप्त करना। सर्व प्रथम अनन्त को सान्त के स्तर पर घसीट लाना सम्भव नहीं है। अनन्त हमारे इशारों पर नहीं नाचता है और वह अपने को हमारी प्रसन्नता या सुविधा के लिए परिवर्तित भी नहीं कर सकता है। दूसरे इस रीति से हमे जो झांकियां देखने को मिलती है वे अनन्त की नहीं अपितु हमारे सामने रखे हुए स्थूल पदार्थ की झांकियां होती है। यदि मूर्ति को पूजा करने से आपको परमात्मा का साक्षात्कार करने का सन्तोष हो जाय तो यह आप का मति-भ्रम है जो तनिक से आत्म—निरीक्षण से सहज ही जाना जा सकता है। मनुष्य अपने को विद्वान राजा मान सकता है भले ही वह इन दोनों मे से कोई न हो। ऐसा करने से उसे कौन रोक सकता है? परन्तु सत्य यह है कि मूर्ति पूजक आजन्म मूर्ति पूजक बना रहता है और जरा भी ऊंचा नहीं उठता।

यह कहना कि सान्त अनन्त को प्राप्त नहीं कर सकता जुबानी जमा खर्च है। आप कहते हो कि हम अनन्त का ज्ञान प्राप्त कर सकते है तब तो आप उसे सान्त बना डालते हो। परन्तु वास्तविकता यह है कि सान्त अनन्त की अनन्तता की अनुभूति प्राप्त करने के योग्य नहीं है। पक्षी आकाश मे उड़ता है और सोचता है कि वह शीघ्र ही उसके निकट पहुंच जायगा परन्तु जब वह थक जाता है और आकाश का छोर दूर हटता चला जाता है तब वह सोचता है कि आकाश अनन्त है। इसी भांति परमात्मा का दर्शन करने का यत्न करते हुए जब आत्मा को यह अनुभूति होती है कि मैं कितना ही ऊंचा क्यों न चढू मैं उसका अन्त नहीं पा सकता तब उसे अनन्त की अनन्तता का आभास मिल जाता है। उपासक का उद्देश्य परमात्मा को जानना होता है न कि उसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना बच्चे को माता के सम्बन्ध मे इतना ही ज्ञान होता है कि वह उसकी मा है। माता के सम्बन्ध मे समस्त ज्ञान प्राप्त कर लेना बच्चे के लिए असम्भव है और यह अनावश्यक भी है। मैं जानता हूं कि परमात्मा मेरा परमात्मा है उसे जान नहीं सकता। उसे न जानने की मेरी असमर्थता का अभिप्राय है कि वह अनन्त है और मुझे उसकी अनन्तता की झांकी प्राप्त होती है। इस अनुभूति के मार्ग मे मूर्तियां बाधक होती है।

(वर्शिप wo ship पृ ११३-११४)

धर्म जीवित क्यो है?

धर्म के दो काम होते हैं पहला काम तो समाज को कायदे कानून में बांधकर रखना और दूसरा काम विश्व की गुत्थी को सुलझाना। कायदे कानून के लिए सत्य की सृष्टि हुई। विश्व की गुत्थियां विज्ञान सुलझाने लगा है। मजहबों में क्षुद्र दृष्टि से काम लिया जाता है न कोई सूर्य कैसे बना, पृथिवी की आयु क्या है—इन बातों को समझने के लिए धर्म की तरफ देखता है। फिर धर्म अब भी क्यों जीवित है? धर्म की आज के युग मे क्या आवश्यकता है? यह कहना कि सिर्फ मूर्ख लोगो के लिए धर्म बचा हुआ है गलत धारणा है। धर्म का मुख्य काम समाज को कायदे कानून में बांधना या विश्व की गुत्थियों को सुलझाना नहीं है। धर्म यह काम करता रहा है इसमें सन्देह नहीं परन्तु इसका मुख्य काम मनुष्य को क्रिया के लिए प्रेरित करना है मनुष्य में दो मानसिक प्रक्रियाएं है ज्ञान तथा कर्म। ज्ञान भी तो कर्म के लिए है। जो ज्ञान केवल ज्ञान बना रहता है वह किस काम का? ज्ञान का परिणाम होना चाहिए—कर्म। आज हम ज्ञानी हैं, परन्तु वह ज्ञान हमारे कर्म मे नहीं दिखाई देता। धर्म का काम मनुष्य को 'कर्म' के लिए प्रवृत्त करना है। धर्म के क्षेत्र में सही या गलत, जो कुछ ज्ञान था उसका उद्देश्य

शंका समाधान

महर्षि जीवन

(१)

मांस भक्षण वेद विरुद्ध

मुल्तान मे एक दिन स्वामी जी ने मास भक्षण को वेद-विरुद्ध बताया। इस पर महाशय कृष्ण-नारायण ने कहा 'इसके खाने में कोई हानि तो नहीं है।' स्वामी जी ने कहा 'परमात्मा की आज्ञा का न पालन करना यही एक बड़ी हानि है।'

तब कृष्ण नारायण ने कहा 'मैं मास खाता हूं। यदि इससे कोई हानि होती तो मै उसको अनुभव कर लेता।

स्वामीजी ने कहा 'आज्ञाएं दो प्रकार की होती है-एक शरीर के साथ सम्बन्ध रखने वाली और दूसरी आत्मा के साथ। शरीर के साथ सम्बन्ध रखने वाली आज्ञा को भग करने से रोग-शोक आदि दु ख होते हैं। आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली आज्ञा के लोप से शारीरिक दु ख तो नहीं होता परन्तु आत्मा उच्च पद को प्राप्त नहीं होता। मास खाना आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली परमात्मा की आज्ञा को भग करना है इसलिए मास खाने वाले को योग-विद्या नहीं आती। उसे योग की सिद्धिया नहीं होतीं।

पौराणिकों के प्रश्नों के उत्तर

(२)

सूक्ष्म परमाणुओं से स्थूल सृष्टि कैसे बनी

जो परम सूक्ष्म है उसी को परमाणु और अव्याकृत आदि नामों से पुकारा जाता है। ऐसे परमाणु अनादि और सत्य है। कारण के जो गुण समवाय सम्बन्ध से हैं वे कारण में नित्य हैं और कार्यावस्था मे भी नित्य बने रहते है। परमाणुओं मे संयोग और विभाग का गुण भी नित्य है। इस

भी केवल मनुष्य को कुछ करने के लिए प्रेरित करना था। आदि-काल से मनुष्य में यह भावना यह विश्वास कि ससार में मनुष्य से भी कोई ऊ ची शक्ति है, ऐसी शक्ति जिसके दरबार में अन्याय की कोई सम्भावना नहीं मनुष्य को भिन्न २ सकटों में सहन-शीलता तथा साहस देती रही हैं, इसी विश्वास पर मनुष्य अब तक जिन्दा है, इसी विश्वास के आधार पर वह आत्मघात नहीं कर बैठता। इसमें सन्देह नहीं कि आज के मानव को वर्षा से बचने के लिए, उत्तम खेती के लिए, रोग से मुक्त होने के लिए धर्म की आवश्यकतानहीं परन्तु अन्याय से चारों तरफ से पटे हुए इस विश्व में यदि कहीं प्रकाश की किरण दीखती है यदि मनुष्य अत्याचार की शक्तियों के साथ जूझता है तो इसी आशा से और इसी विश्वास से कि विश्व की सचालक शक्ति संसार को असत्य से सत्य की ओर और अन्याय से न्याय की ओर ले जा रही है। यही निष्ठा यही विश्वास जो मनुष्य को कर्म करने की बुराई के साथ लड़ते चले जाने की प्रेरणा देता है, धर्म है, और इस निष्ठा को जागरूक रखने के लिए, मनुष्य मे सत्कर्म करने की भावना बनाए रखने के लिए धर्म जीवित है और जीवित रहेगा ?

(समाज-शास्त्र के मूल तत्त्व पृ० ४०३)

लिए इनके मिलने और बिगड़ने से इनके स्वरूप में अनित्यता नहीं आती। परमाणुओं मे गुरुत्व और लघुत्व दोनों का सामर्थ्य भी नित्य है। गुण गुणी का समवायसम्बन्ध है। (३९३)

मनुष्य और ईश्वर का क्या सम्बन्ध है ?

(३)

क्या ज्ञान से मनुष्य ईश्वर बन सकता है? क्या ईश्वर और जीव नित्य हैं? यदि दोनों चेतन है तो जीव ईश्वराधीन है या नहीं? आधीन हैं तो क्यों ?

मनुष्य और ईश्वर का राजा प्रजा, स्वामी सेवक का सम्बन्ध है। अल्पज्ञ होने से ईश्वर जीव नहीं हो सकता। जीव और ईश्वर में व्याप्य और व्यापक सम्बन्ध है। जीवात्मा सदा ईश्वराधीन रहता है। कर्म करने में स्वतन्त्र परन्तु फल भोगने मे परतन्त्र है। ईश्वर का सामर्थ्य अनन्त है और जीवात्मा का स्वल्प इसलिए जीव का परमात्मा के अधीन होना आवश्यक है।

क्या संसार की रचना और प्रलय होती है?

(४)

हम सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय मानते हैं। ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव अनादि है। इस लिए सृष्टि भी प्रवाह से अनादि हैं। यदि ऐसा न माना जाय तो रचना से पूर्व ईश्वर को निकम्मा मानना होगा। परमेश्वर की तरह प्रकृति और जीव भी अनादि हैं। जैसे इस कल्प की सृष्टि के आदि मे अनेक स्त्री पुरुष पैदा हुए वैसे ही पूर्व कल्पों मे होते रहे और आगामी कल्पों में होते रहेंगे। जीवों के कर्म भी अनादि है। जिन ४ आत्माओं में परमात्मा ने वेद का प्रकाश किया उनके सदृश अथवा उनसे अधिक किसी के भी पुण्य न थे। इसलिए परमात्मा मे पक्षपात का दोष नहीं आता।

कर्म फल

(५)

एक तीसरा प्रश्न यह किया गया कि जब कर्म न्यूनाधिक होता है तो मनुष्य स्वतन्त्र कैसे हुआ? परमेश्वर का जैसा ज्ञान है जीव वैसा ही कर्म करेगा इसलिए स्वतन्त्र न रहा?

स्वामी जी ने इस शंका का समाधान इस प्रकार किया —

कर्म-फल न्यूनाधिक कभी नहीं होता। जिसने जैसा और जितना कर्म किया उसे वैसा और उतना ही फल न दिया जाय तो अन्याय हो जाता है। ईश्वर मे भूत, भविष्यत काल का सम्बन्ध नहीं है। ईश्वर का ज्ञान सदा एक रस है। जैसे ईश्वर अपने ज्ञान में स्वतन्त्र है वैसे ही जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने मे परतन्त्र है।

मोक्ष क्या पदार्थ है ?

(६)

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महाराज ने कहा 'सब अशुभ कर्मों से रहित होकर केवल शुभ कर्म करना ही जीवन मुक्ति है और दुःखमात्र से छूटकर आनन्द पूर्वक परमेश्वर मे रहना मुक्ति है।

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फार स्फुरिततेजसा॥ —नीतिशतक

जिस प्रकार अकेला तेजस्वी सूर्य सारे जगत् को प्रकाशमान कर देता है उसी प्रकार एक ही अकेला शूरवीर सारी पृथ्वी को जीतकर वश में कर लेता है।

उदयति दिशि यस्यां भानुमान सैव पूर्वा-

जिधर सूर्य उदय होता है उसी को लोग पूर्व दिशा मानते हैं। —उपनिषद्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के

(महत्त्वपूर्ण निश्चय)

आयसमाज का उद्देश्य वैदिक धर्म के सिद्धान्तो का विचारात्मक तथा क्रियात्मक प्रचार करना है। वैदिक धम के सिद्धान्त इतने व्यापक हैं कि मनुष्य जीवन का कोई अ ग उनसे बाहर नहीं रह जाता, इस कारण आर्यसमाज का स्थिर कार्यक्षेत्र भी ससार व्यापी है। फिर भी समय २ पर विशेष अवस्थाओं की दृष्टि से कार्य क्षेत्र के विशेष अ गों पर जोरदेना और उस पर शक्ति को केन्द्रित करना आवश्यक हो जाता है। इस कारण वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टि मे रखकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सब आर्य समाजों तथा आर्यजनों को आदेश देती है कि वे अपने वर्तमान कार्यों को भली प्रकार चलाते हुए निम्नलिखित कार्यों पर विशेष बल दें -

(१) इस समय देश के सामने सबसे बडी समस्या यह है कि बढती हुई चरित्र भ्रष्टता को कैसे रोका जाय, चरित्र के बिना न व्यापार उन्नत हो सकता है और न स्वतन्त्र राज्य का सचालन ही हो सकता हैं। आर्य समाज देश मे चरित्र भ्रष्टता के प्रवाह को रोकने और नैतिक स्तर को ऊ चा करने के लिए निम्नलिखित उपाय करे, इसके लिए आर्य जन अपने जीवन को वैदिक आदर्शानुसार सर्वथा पवित्र बनाए ।

(क) अपने शिक्षणालयों मे चरित्र-शिक्षण की विशेष व्यवस्था करें तथा अन्य शिक्षणालयों में वैसी व्यवस्था को प्रचलित कराने का भर सक प्रयत्न करें।

(ख) नागरिकता के शिक्षण तथा चरित्र निर्माण के लिए उपयुक्त उत्कृष्ट श्रेणी की प्रामाणिक धार्मिक पाठ्य पुस्तकें तय्यार कराए और उन्हें देश के शिक्षणालयो मे व्यवहृत कराने का प्रयत्न करें।

(ग) धार्मिक तथा सास्कृतिक दृष्टि से यह अत्या वश्यक है कि सामान्य रूप से भारतवासी मात्र को और विशेषरूप से आर्यजनों को सस्कृत भाषा का ज्ञान हो। आर्य समाजो को यह व्यवस्था करनी चाहिए कि दो वर्षों के अन्दर प्रत्येक साक्षर आर्य जन को सस्कृत का बोध करा दिया जाय। इस कार्य के लिए समाज मन्दिरोम सस्कृत पढने की व्यवस्था की जाय।

(घ) देश मे प्रौढ शिक्षा का प्रचार अत्यन्त आव श्यक है। जैसे आर्य समाज ने अन्य सब प्रकार की शिक्षा में मार्ग प्रदर्शन का कार्यकिया है उसी प्रकार से उसे प्रौढ शिक्षा के प्रसार में मार्ग-दर्शक बनना चाहिए और प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में प्रौढ शिक्षा देने की व्यवस्था कर देनी चाहिए। इस कार्य के लिए रात्रि पाठशालाओं का खोलना उपयुक्त होगा।

(च) सार्वदेशिक सभा शिक्षा विज्ञों के एक ऐसे सम्मेलन का आयोजन करें जो आर्य समाज के दृष्टिकोण से ,शिक्षा सुधार के सम्बन्ध मे निश्चित योजना बनाए।

(२) इसके अतिरिक्त यह सभा आर्य जनों का ध्यान अपने काय क्रम के निम्न लिखित अ शों की ओर विशेषरूप से आकृष्ट करती है। इसके सबन्ध में विस्तृत और निश्चित आदेश सभा शीघ्र सचारित करेगी—

१—पिछड़ी हुई जातियों में प्रचार व उनके उत्थान का कार्य।

साहित्य

समालोचना

—इस स्तम्भ में केवल महत्त्वपूर्ण पुस्तकों तथा अन्य साहित्य की ही समालोचना होगी —

सपादक—सार्वदेशिक

प्राप्ति स्वीकार

	लेखक	प्रकाशक	मूल्य
(१) प्राणायाम	आचार्य भद्रसेन जी	आदर्श साहित्य निकेतन अजमेर	।।।)
(२) योगासन	,,	,,	।।≈)
(३) योग और स्वास्थ्य	,,	यौगक व्यायाम सघ अजमेर	२।।)
(४) प्रार्थना लोक	जगदीश चन्द्र विद्यार्थी	आर्य कुमार सभा किंग्सवे दिल्ली	१० नए पसे
(५) मुक्ति सोपान	श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी		२० ,,
(६) आदर्श जीवन	श्री स्व० स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ	आर्य साधु आश्रम लाढवा	१८ ,,
(७) निर्माण की कहानिया		भारत सेवक समाज नईदिल्ली	१।।)
(८) गावों मे नारी कल्याण	सरोजिनी सिन्हा	, ,,	२५ ,
(९) आर्यसमाज का महत्त्व पूर्ण कार्य	वैद्यराज प० रुद्र प्रकाश भारद्वाज	सत्यव्रत शास्त्री काव्यसाख्य तीर्थ मन्त्री आ०स० जबलपुर	-)
(१०) सत्य सनातन धर्म	भानीराम लडढा बोरी अरब जि० यवत माल	भानीराम लड्ढा बोरी अरब	१,३७

२—भ्रष्टाचार-विरोधी भावना को जाग्रत करना।

३—रेडियो व सिनेमा के गानों व चित्रो से अश्लीलता का निर्वासन।

४—अन्तर्जातीय विवाह।

(साधारण सभा २८-४-१९५२)

धारा सभाओं के निर्वाचन और आर्यसमाज

केन्द्रीय असेम्बली और प्रान्तीय असेम्बलियों के लिए देश मे जो निर्वाचन होने वाले हैं उनके सम्बन्ध में अपना कर्त्तव्य निश्चित करने के लिए अनेक सज्जन इस सभा की नीति जानना चाहते हैं। उनकी तथा आर्य समाजों और आर्यों की जानकारी के लिए यह घोषणा की जाती है कि आर्य समाज का सामूहिक रीति से इन निर्वाचनों से कोई सम्बन्ध नहीं है और उन्हें किसी पक्ष के सम्बन्ध मे कोई सम्मति न देनी चाहिए परन्तु व्यक्तिगत स्थिति मे प्रत्येक आर्य स्वतन्त्र है कि वह जिसके लिए भी चाहे सम्मति दे, इसके लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है। उसे अपना वोट देते समय यह देखना चाहिए कि वह जिस उम्मीदवार को अपना वोट दे रहा है उससे आर्य सस्कृति और आर्य जाति के अधिकारों की रक्षा हो सकेगी या नहीं। आर्य समाजों को यह भी चेतावनी दी जाती है कि आर्य समाज का कोई विषय निर्वाचन प्रोपेगैन्डा मे वर्णित न किया जाय।

(अन्तरग सभा २०-९-१९५३)

(११) Inspiring thoughts of Emerson		S C Dass 3206 Dassan St Delhi	२)
(१२) आर्य रत्न मंजूषा	सम्पादक और प्रकाशक पं० अवध बिहारीलाल एम० ए० दक्षिण कलकत्ता आर्यविद्यालय		।।)
(१३) A concise History of Mauritius	Esnoo Babajee	Hind Kitab Limited 32|34 veer Nariman Road Bombay	३)
(१४) प्रार्थना पुस्तक			१)
(१५) दयानन्द गुणगान	संग्रह कर्त्ता पन्नालाल पीयूष संगीत रत्न सिद्धान्त शास्त्री	प्रकाश साहित्य प्रकाशन आर्यसमाज अजमेर	।।।)
(१६) प्रकाश भजनावली	पं० प्रकाशचन्द्र कविरत्न	,, ,,	१।।) सजि० २)
(१७) गायत्री गौरव	ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' एम०ए० सम्पादक तपोभूमि	श्री मद्दर्शनानन्द ग्रन्थागार २० कृष्ण गगा मथुरा	।)
(१८) ईशोपनिषद् रहस्य	रामेश्वर प्रसाद गुप्त	हरेन्द्रपाल स विद्याप्रकाश सदन नुरुद्दीनगज पटना सिटी	२)६५
(१९) मानव धर्म	डा० मक्खनलाल शर्मा ५१ एफ कमला नगर दिल्ली		१।)
(२०) योग प्रकाश (कन्नड)	सुधाकर जी	नारायणराव ४० नरसिंहराव रोड बंगलूर २	५)
(२१) सनातन शुद्धि शास्त्र और आर्यों का चक्रवर्ती राज्य	गोविन्द प्रसाद शास्त्री	रघुनाथचन्द्र आर्य स्टूडेन्ट बुक डिपो रोशनपुरा नई सड़क दिल्ली	२)
(२२) चुने हुए फूल	श्रीयुत पं० बिहारीलाल जी शास्त्री	श्री मद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार २० कृष्णगगा मथुरा	।।)

आर्य कन्या की आवश्यकता

फर्स्ट क्लास फर्स्ट एम० एस० सी०, रिसर्च स्कालर अपने भांजे (सक्सेना) कुमार के लिए एक १६ वर्षीया, अति सुन्दरी, शिक्षिता कन्या की आवश्यकता है।

जन्म की जाति और दहेज का कोई बन्धन नहीं है।

इच्छुक सज्जन कन्या के चित्र तथा विवरण के साथ नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार करें —

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०

मन्त्री, सार्व० विद्यार्य सभा, रायबरेली (यू० पी०)

आर्य समाज का परिचय

(दिसम्बर के अक से आगे)

[ले०—रघुनाथ प्रसाद पाठक]

शुद्धि

आर्य समाज ने वैदिक धर्म के द्वार उन सब के लिए खोल दिए हैं जो उसे अपनाना चाहें।

वैदिक धर्म दिव्य धर्म है अत इसके प्रसादों से कोई भी व्यक्ति वचित न रखा जाना चाहिए।

हमारे कट्टर पथी हिन्दू भाई शुद्धि का विरोध करते रहे हैं परन्तु सनातनी नेताओं यथा स्व० प० मदन मोहन जी मालवीय आदि ने १९२४ मे विधर्मियो की शुद्धि स्वीकार करली थी।

बहुत से हिन्दू भाई बहन जो ईसाई या मुसलमान बन गए थे पुन आर्य समाज द्वारा शुद्ध किए जाकर हिन्दू समाज मे वापस आ गए हैं। जन्म के अनेक ईसाई और मुसलमान तक हिन्दू धर्म में दीक्षित किए जा चुके है।

आगरा और मथुरा के बहुत से मलकाने और राजस्थान के मेव भी—पुन अपने हिन्दू धर्म मे वापस आ गए हैं जिनके पूर्वज मुस्लिम काल मे बलात मुसलमान बना लिए गए थे।

आर्य समाज, भारत धर्म महामण्डल और हिदू महा सभा उन्हें हिन्दू धर्म में वापस लाने के लिए उद्यत हैं अत अब किसी भी हिदू को इस आदोलन का विरोध न करके इसे सहायता देनी चाहिए

सन्तोष का विषय है कि शुद्धि का विरोध अब प्राय नहीं रहा है और यह क्रम जारी है। इससे हिदू समाज दृढ और सगठित होने लगा है।

दलित वर्ग

वैदिक धर्म बलात् किसी को दलित बनाने की अनुमति नहीं देता। यह प्रत्येक को अपना सुधार करने और उन्नति करने का समान रूप से अवसर प्रदान करता है।

दलितों और अन्त्यजो के प्रति हिन्दुओं का दृष्टिकोण बदलने का आर्य समाज भरसक यत्न कर रहा है। वह कह रहा है कि जन्म के आधार पर कोई भी अछूत नहीं होता।

आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द उनको वेद पढने का भी अधिकार प्रदान करते हैं और आर्य समाज उन्हें योग्य बनाकर ऊ चा उठाने का शानदार कार्य कर रहा है। उनकी शिक्षा की अवस्थाए उत्पन्न करना, गुरुकुलों आदि मे नि शुल्क शिक्षा की सुविधाए देना, उनके वैयक्तिक जीवन का सुधार करना उनके साथ समानता का व्यवहार करना आदि २ आर्य समाज के वे कार्य हैं जिनसे उनकी दशा बहुत उन्नत हुई और वे मनुष्य समझे जाने लगे है।

सरकारी जनगणना की रिपोर्ट के अनुसारभारत में लगभग ६ करोड दलित भाई हैं जिन्हे ईसाई और मुसलमान खा जाने के लिए मुह खोले रहते हैं। ब्रिटिशकाल में ईसाई मत की शरण मे जाने वाले हिन्दुओं की प्रतिदिन की औसत सख्या ३०० थी। स्वराज्य के इन दिनों में ईसाई मिशनरियों को प्रचार की खुली छुट मिल जाने से यह सख्या दुगुनी तिगुनी हो गई है। हिन्दुओ! खबरदार हो जाओ! अछूतों से घृणा करना छोडो और उनकी रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाओ अन्यथा हिदूसमाज को बडा घातक धक्का लगेगा।

महात्मा गाधी ने अपील की थी 'जब तक तुम हिन्दू अछूतों को अपना भाई न समझोगे तब तक स्वराज्य प्राप्त न कर सकोगे।" गाधी ने अछूतोद्धार

का उल्लेखनीय कार्य किया। भारत की स्वतन्त्र सरकार ने ' सविधान में 'अस्पृश्यता' को अपराध उद्घोषित करके, और उन्हें आर्थिक स्थिति को ऊंचा करने की सुविधाए प्रदान करके अस्पृश्यता के निवारण के लिए क्रियात्मक कदम उठाए हैं। परन्तु जब तक हिन्दुओं का दृष्टिकोण अच्छा नहीं बनता और अछूतों के मन से हीन भावना दूर नहीं होती तबतक समस्या का हल सभव नहीं होसकता। अछूतों और सवर्णों के गुण कर्मानुसार पारस्परिक विवाह और खान पान के सम्बन्ध से ही समस्या हल हो सकेगी और यह कार्य आर्यसमाज और उसके गुरुकुल ही कर सकते हैं।

आर्यसमाज मे इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

आर्यसमाज में अछूतों के घरों में उत्पन्न ऐसे अनेक नर नारी हैं जिनके रहन सहन, आचार विचार शिक्षा दीक्षा और सामाजिक स्थिति को देखकर कोई भी यह नहीं समझ सकता कि वे अछूत घरों मे उत्पन्न हुए होंगे। स्वय वे भी हृदय से यह अनुभव न करते होंगे कि वे अछूत घरों में जन्मे थे। सरकार को गुरुकुलों मे उनके पठन पाठन को प्रोत्साहित करना चाहिए।

शिखा और सूत्र

प्रत्येक हिन्दू को चोटी रखनी होती है और प्रत्येक द्विज (ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य) का यज्ञोपवीत धारण करना धर्म होता है।

शिखा (चोटी) आर्यों का जातीय चिन्ह है। इसका प्रयोजन है वैदिक सभ्यता की रक्षा में अपना तन मन और धन लगा देना। शिखा एक प्रकार का धर्मध्वज है और प्रत्येक शिखाधारी सेना की ध्वज थामने वाला समझा जाता है।

यज्ञोपवीत ३ तार का धागा होता है इन तीन तारों का प्रयोजन है पितृऋण, ऋषिऋण और देवऋण से उऋण होना।

जो शूद्र उन्नति कर के द्विज बन जाते हैं उन्हें यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी

हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है जो राज्य भाषा बनने की अधिकारिणी थी। हर्ष है यह स्वतन्त्रभारत की राज्य भाषा बन गई है।

स्वामी दयानन्द ने ऋषि जैसी अपनी दिव्य दृष्टि से यह अनुभव कर लिया था कि हिंदी ही राज्य भाषा बनने के योग्य है। अत उन्होंने जन्म से गुजराती होते हुए भी अपने ग्रन्थ हिन्दी मे लिखे और आर्यसमाज तथा उसके सदस्यो के लिए यह आवश्यक ठहराया कि वे अपनी शिक्षा दीक्षा काम काज और व्यवहार मे हिंदी को अपनाए। गुजरात के दूसरे सुपुत्र महात्मा गाधी ने अपना मूल्यवान् योग दिया और हिन्दी प्रचार को स्वराज्य योजना का अग बनाया।

आज भारत के प्रमुख नेता यह अनुभव करते है कि अग्रेजी विदेशी भाषा है और राज्य एव राष्ट्र भाषा के रूप में देश के जन साधारण को एक करने की इसमे क्षमता नहीं है।

हिंदी की लिपि देवनागरी है और यही लिपि सविधान में स्वीकार की गई है। हिंदी के अतिरिक्त सस्कृत और मराठी की लिपि भी देवनागरी लिपि ही है। यह इतनी सुगम और वैज्ञानिक है कि १ सप्ताह मे हो सीखी जा सकती है।

मुक्ति

मुक्ति का शाब्दिक अर्थ है बन्धन से छूटना अर्थात् भौतिक शरीर धारण करने से मुक्त होकर पूर्णानन्द स्वरूप परमात्मा के आनन्द का उपयोग करना।

मुक्तात्मा मुक्ति के आनन्द का उपभोग परिमित समय के लिए करता है जिसके पश्चात् वह पुन कर्म क्षेत्र में आ जाता है।

मुक्ति की अवधि

मुक्ति की अवधि ३१'०४००'००००० ० वर्ष

की है। इस लम्बी अवधि के बाद जीवात्मा मुक्ति से लौट आता है।

(देखो सत्यार्थ प्र० स० ९)

मुक्ति कैसे प्राप्त होती है ?

१—योग साधन (चित्त की एकाग्रता)

२—धर्माचरण

३—ब्रह्मचर्य

४—सत्कर्म

५—शुभ विचार

६—साहस

७—सत्ज्ञान

८—ऋषियों और महात्माओं की सगति।

निष्काम कर्म और ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। परमेश्वर को जानने से ही मनुष्य ज्ञानी हो सकता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन करने, अधर्म, अविद्या, कुसस्कार और व्यसनों से पृथक रहकर तथा सत्य भाषण परोपकार विद्या, पक्षपात रहित न्याय, धर्म की वृद्धि और परमात्मा की विधि पूवक स्तुति प्राथना उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढने, पढाने और धम से पुरुषार्थ करके ज्ञान की उन्नति करने से मुक्ति प्राप्त होती हैं इस प्रकार जो कुछ काम करे, वह सब पक्षपात रहित न्याय और धर्मानुसार ही करे। मिथ्या ज्ञान के दूर हो जाने से जीव के सब दोष दूर हो जाते और अधर्म के विचार चले जाते हैं।

मोक्ष किसी स्थान विशेष या किसी वस्तु विशेष का नाम नहीं है अपितु ब्रह्म के साथ आनन्द में रहने को मोक्ष पद या परम गति कहते हैं। मुक्त जीव यह भौतिक शरीर धारण नहीं करता, किन्तु उसके स्वाभाविक शुभ गुण नष्ट नहीं होते। जब सुनना चाहता है तब कान आदि शक्तियों कोइच्छानुसार प्रयोग मे लाकर आनन्द भोग कर सकता है।

नित्य कर्म

प्रतिदिन किए जाने वाले ५ यज्ञों में से ४ का सम्बन्ध कर्म से और १ का सम्बन्ध उपासना से है।

ये ५ यज्ञ इस प्रकार हैं -

१ ब्रह्मयज्ञ—

सन्ध्या, उपासना अर्थात् परमेश्वर की प्रार्थना और स्तुति।

२ देवयज्ञ—

प्रात काल और सायकाल सूरज निकलने के बाद और छिपने के पहले हवन यज्ञ करना।

३ भूत यज्ञ—

भोजन से पूर्व पशु पक्षियों और भिखारियों को अन्न देना और अग्नि में आहुति देना।

४ पितृ यज्ञ –

माता पिता तथा गुरुजनों की सेवा करना।

५ अतिथि यज्ञ—

विद्वानों और महात्माओं को भोजन कराना जो अकस्मात बिना सूचना दिए आ जायें।

गृहस्थ को इन पाचों यज्ञों का अनुष्ठान करना होता है। ब्रह्मचारी पहला और वानप्रस्थी पहला और दूसरा यज्ञ कर सकता है परन्तु सुविधा और सामर्थ्य हो तो पाचों यज्ञ कर सकते हैं।

अप्प केनापि मेधावी पामतेन विचक्खणो।
समुट्ठा पेति अत्तान अणुं अग्गिं व सन्धम ॥

जातक

जिस प्रकार लोग थोडी सी भी आग को फूककर बढा लेते हैं उसी प्रकार मेधावी पुरुष थोडे से मूलधन से भी अपने की उन्नत कर लेता है।

महिला जगत

प्राचीन भारत मे नारी–शिक्षा

(लेखक० श्रीयुत वेकट कृष्ण राव)

भारत मे आधुनिक महिला के समक्ष जो महत्त्वपूर्ण समस्याए समुपस्थित है उनमें से एक समस्या यह है कि वह स्वतन्त्र और परम्परागत वैवाहिक जीवन मे से किसको पसन्द करे। आधुनिक महिलाए विविध परीक्षणों और स्वतत्र जीवन के प्रलोभनों मे से गुजरने पर भी अन्त मे वैवाहिक जीवन को ही प्राथमिकता देती है। प्राचीन भारत मे इस समस्या का हल किस प्रकार किया गया था, यह जान लेना उपयोगी होगा क्योंकि हजारों लाखों वर्षों के पश्चात भी प्रतिक्रिया एक जसी ही होगी।

यह समस्या दो पहलुओं म परिणत हो जाती है—एक विद्यार्थी जीवन और दूसरा गृहस्थ जीवन बृहदारण्यक उपनिषद् में गार्गी और मैत्रेयी की चर्चा की गई है। ये दोनों परम विदुषी और ब्रह्म विद्या में निष्णात थीं। जब याज्ञवल्क्य ने मत्रेयी को यह कहा कि सासारिक सपदा प्राप्त करके वह अमरत्व प्राप्त करने की आशा न कर सकेगी तो उसने उस सपदा को लेना अस्वीकार कर दिया। भवभूति के उत्तर राम चरित्र नाटक में भी इस स्थिति की झाकी देखने को मिलती है। वासती और ऐत्रेयी दो ब्रह्मचारिणी इस बात की शिकायत करती है कि वे लव और कुश प्रभृति अपने साथी विद्यार्थियों की बराबरी नहीं कर सकीं जो गुरु के पाठ को अधिक सुगमता से समझ लेते हैं। ये उदाहरण इस बात के द्योतक हैं कि प्राचीन काल में लडकिया उच्च से उच्च ज्ञान प्राप्त करती थीं और उन्हें उस ज्ञान से वचित न रखा जाता था।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि लडकियां विवाह हो जाने तक ही पढें अथवा वे जीवन पर्यन्त अपनी पढाई स्वतत्र रूप से जारी रख सकती हैं या नहीं ? इस प्रश्न का उत्तर कालिदास के सुप्रसिद्ध शकुतला नाटक के नायक दुष्यन्त ने शकुन्तला की सखिया से यह प्रश्न करके दे दिया है कि 'क्या शकुतला का तापसव्रत (ब्रह्मचर्य व्रत) विवाह के साथ समाप्त हो जायेगा या जीवन पयन्त उन मृग छौनो के साथ रहेगी जिन्हें वह भाईयों के समान प्यार करती है ? दूसरे शब्दों में पुरुषों के समान स्त्रिया भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके विद्याध्ययन करती रहती थीं। कालिदास के मालविकाग्नि मित्र नाटक की पाडता कौशिकी की तुलना अध्यात्म विद्या के साथ की जा सकती है जिसने अपने पति की हत्या के पश्चात् सन्यास ग्रहण कर लिया था और जो वेद विद्या मे बड़ी निपुण थी। इतना ही नहीं वह सगीत तथा अन्य ललित कलाओं की भी ज्ञाता थीं। बाण कवि ने कादम्बरी में महाश्वेता का वर्णन करते हुए लिखा है कि वह यज्ञोपवीत धारण किए हुए थी। इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल मे लडकों के समान ही लडकियों का उपनयन सस्कार होता था। अब भी पारसी देवियों का यह सस्कार नियम से होता है। वस्तुत प्राचीन वैदिक युग मे बडी आयु की अविवाहित लडकियां यत्र तत्र देखने को मिलती हैं।

इस युग में स्त्री आकर्षण का इस सीमा तक केन्द्र होती थी कि वह घर की साम्राज्ञी कहलाती थी। वह दाय भाग की भी अधिकारिणी होती थी परन्तु कालान्तर मे उसके अधिकारों का अपहरण हुआ और उपनयन सस्कार भी विवाह सस्कार मे

विलीन हो गया जो नई समाज-व्यवस्था मे अनिवार्य बन गया है।

अलबेरुनी के समय अर्थात् १०३० तक स्त्रिया अपने अधिकारों का निर्बाध गति से उपभोग करती रहीं। उसने लिखा है कि अरब के एक खलीफा ने भारत से एक महिला चिकित्सिका को अपने असाध्य रोग की चिकित्सा के लिए बुलवाया। इस सफल महिला चिकित्सिका को राज्य के चिकित्सा विभाग को व्यवस्थित करने के लिए चिकित्सा शिक्षा सचालक बनने के लिए प्ररणा की गई। उसने आयुर्वेद के बहुत से सस्कृत ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद किया। परन्तु दुर्भाग्य से ये सब ग्रन्थ अब अप्राप्य हैं। ११९४ ई० के प्रसिद्ध गणितज्ञ भास्कराचार्य ने अपनी पुत्री लीलावती को उच्च गणित की शिक्षा दी और उसकी मृत्यु के बाद भी अपने ग्रन्थ का नाम 'लीलावती' रखा। प्रसिद्ध कवि राजशेखर की पत्नी भी एक सुप्रसिद्ध कवियित्री थी। उसने लिखा कि मैंने अपनी पत्नी की सन्तुष्टि के लिए ही अपना 'कर्पूर मन्जरी' नाटक लिखा है। उसने यह भी घोषणा की कि प्रतिभा एक मात्र पुरुष में ही नहीं होती, स्त्रिया भी पुरुषों के समान उच्च कोटि की कविता कर सकती है। बौद्धकाल में गगादेवी (१३८० ई० के आस पास) ने 'मधुर विजय' नामक एक उत्कृष्ट एतिहासिक काव्य की रचना की। वह लिखती है कि 'मै अपने पति के साथ युद्धभूमि मे गई थी और मैंने अपने पतिदेव की अनेक विजयों को अपनी आंखों से देखा था।'

अपने पति के साथ समस्त धार्मिक अनुष्ठानों में पत्नी भाग लेती थी इसीलिए उसे धर्म पत्नी, नाम प्राप्त हुआ। साधारणत पत्नी की अनुपस्थिति में पति उन अनुष्ठानों को न कर पाता था। गार्हस्थ जीवन में पत्नी की सर्वोपरिता व्यापक रूप लिए हुए थी, तभी कालिदास इस प्रकार की पत्नी की प्रशंसा करते हुए उसे 'गुप्त मन्त्री' 'प्रिय मित्र' और ललित कलाओं में प्रिय शिष्य' की सज्ञा प्रदान करते हैं। वीर क्षत्राणियों के पराक्रम हमें यह स्मरण कराते हैं कि वे भी योद्धा का कठोर जीवन व्यतीत करती थीं और अपने पतियों या भाईयों के साथ कन्धे से कन्धा भिडाकर लडती थीं। अपनी वीरता और जौहर से वे इस बात को सिद्ध करती थीं कि वेद रामायण एव महाभारत कालीन देवियों की वीर गाथाए अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। इतिहास हमारे समक्ष झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा अन्य अनेक राजपूत वीराङ्गनाओं के चारु चरित्र प्रस्तुत करता है जो वीरता पूर्वक लडने में कभी न न झिझकीं और जिन्होंने इ सते २ जौहर की आग मे अपने को जलाकर अमरपद प्राप्त किया। बाण कवि लिखता है कि वीर क्षत्राणी के हृदय की साध वीरजा, वीरजाया वीरजननी (वीरपुत्री, वीरपत्नी और वीर पुत्रों की माता) बनने की रहती थी। पतञ्जलि शक्तिकि यष्टिकि नामक वीराङ्गनाओं की चर्चा करते हैं जो भालों और लाठियों से लडती थी। कौटिल्य ने भी सम्राट की महिला रक्षकों का वर्णन किया है जो अपने हाथों मे धनुष और बाण लेकर सम्राट की रक्षा करती थीं। दूसरी शती मे वात्स्यायन ने लिखा कि विशेष प्रदेश में केवल स्त्रिया ही शासन कर सकती है पश्चिमी समुद्रतट पर आज भी उत्तराधिकार का एक ढग पुत्री के द्वारा ही प्रचलित है।

स्त्रिया राज सभाओं मे भी व्यापक रूप से भाग लेती थीं। पाणिनी का 'आयुधेयी' शब्द आधुनिक काल मे लोक सभा या विधान सभाओं की महिला-सदस्याओं का सूचक है। माता पिता यह कामना किया करते थे कि हमारे यहा ऐसी पुत्रिया जन्में जो राज सभाओं मे चतुरतापूर्वक बोल सकें। स्त्रियों ने राजनैतिक सत्ता भी हस्तगत की थी। उपयोगी सार्वजनिक कार्यों के लिए 'यथा सडकों की मरम्मत और उद्यान निर्माण जिनमें पास पडोस के ग्रामों का सहयोग अपेक्षित होता

उड़ीसा प्रचार

आर्य समाज रउरकेला में ता० ८-११-५८ से ता० १०-११-५८ तक समाज भवन में यज्ञ, उपदेश और वेद कथा हुई। ता० १० को ऋषि निर्वाण दिवस समारोह में बडे धूम धाम से विशेष अधिवेशन हुआ। माइक द्वारा ३ रोज तक महीपुर प्लाण्ट साईट एव समस्त प्लान्ट एरिया में प्रचार होता रहा। समाज भवन मे आर्य विद्यालय का उद्घाटन श्री सेठ बनवारीलाल जी के करकमलों द्वारा किया गया है। विद्यालय कोष में उसी समारोह में ८११) धन प्राप्त हुआ, इस विद्यालय में हिन्दी कक्षा ५ तक शिक्षा दी जावेगी। गुरुकुल अयोध्या के स्नातक प० श्री हरमित्र टुडु जी को मुख्याध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया है। साथ में उडिया भाषा मे शिक्षा देने के लिये भी एक अध्यापक नियुक्त होने वाले हैं। इस विद्यालय का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दी प्रचार के साथ साथ आर्य समाज के सिद्धान्तो को बच्चों मे प्रवेश कराना। इस विद्यालय के लिये निम्न आर्य व्यक्तियों को लेकर कमिटि गठन किया गया है।

प्रधान श्री रघुसहलचन्द कोहली
मन्त्री श्री अमिलाल आर्य
उपमन्त्री श्री जगदीशचन्द्र कोहली
कोषाध्यक्ष श्री ज्वालाप्रसाद आर्य
व्यवस्थापक स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

आर्य समाज होराकुद

आर्य समाज हीराकुद मे ता० ८-११-५८ से ता० १२-११-५८ तक ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्षमे प्रभात फेरी,यज्ञ,प्रार्थना व्याख्यानादि होता रहा। इस उत्सव मे श्री स्वामी शिवानन्द तीर्थ जी महाराज श्री स्वामी आत्मानन्द सरस्वती (आन्ध्र प्रदेश) ने अपने अमृतमय वेदोपदेश किये थे। सम्बलपुर और हीराकुद दोनों स्थानो में कथा होती रही समाज मन्दिर में आर्य कुमार पाठशाला खुल गई है जिसमें ६० से अधिक छात्र छात्री पढ रहे है।

था, महिलाओं की सक्रिय सेवाए प्राप्त की जाती थीं और वे उस सेवा के कार्य मे गौरव अनुभव करती थीं।

इस समय आदर्श समाधान यह हो सकता है कि समानता के आधार पर सविधान मे उनका योग स्वीकार किया जाय। परन्तु इस बात को दृष्टि में रखते हुए कि वह शरीर से स्वाभाविक रूप में दुर्बल होती है और देश को योग्यतम बच्चे प्रदान करने का एक मात्र दिव्य अधिकार उसे ही प्राप्त है उसके लिए यह उपयुक्त होगा कि वह अपने को एक मात्र घर के आन्तरिक काय तक ही सीमित रखे। यहां भी अपनी योग्यता और वीरता का परिचय देने के लिए उसके लिए अनेक माग खुले हुए हैं।

कपड़ों की रगाई, कसीदा काढने, कपडा बुनने आदि काय मे निपुणता प्राप्त कर सकती है। इन कार्यों मे एक मात्र स्त्रिया ही पूर्ण निष्णात हो सकती है एसा कौटिल्य का मत है। स्त्री को यह समझलेना चाहिए कि घर में या हस्पताल में रोगियों की देखभाल और सेवा परिचर्या करने के उच्च कार्य के लिए उससे उपयुक्त दूसरा कोई नहीं है। उसकी मधुर प्रकृति के साथ ही इस प्रकार के भीतरी कार्यों का सामजस्य हो सकता है। पुरुष और स्त्री का यह अनुभूति होनी चाहिए कि वे एक प्राण और दो शरीर होते हैं। दोनों ही अमर-पथ के साथी राहगीर है। इन दोनों समान व्यक्तियों की पारस्परिक प्रेम और विश्वास की साझेदारी एक समन्वित इकाई में परिणत हो जानी चाहिए।

(ट्रिब्यून २८ १२ ५८)

आर्य समाज की चिनगारियाँ

श्रीयुत स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज द्वारा लिखित अनेक चिनगारिया 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित हो चुकी हैं। निधन के कुछ समय पूर्व वे कुछ चिनगारिया लिखा गए थे। वे अब समय २ पर प्रकाशित की जाती रहेंगी।
—सपादक सावदेशिक

आज्ञाराम जी

पुरानी बात है। एक सज्जन तहसीलदार थे। आर्य समाज के सदस्य थे। वह घूस न लेने की ख्याति प्राप्त थे। मैने उनसे घूस न लेने का कारण पूछा। उन्होंने कहा यदि आप वचन दें कि मेरा नाम न लेगें और न लिखेंगें तब कारण बता दूगा अन्यथा नहीं बताऊ गा। मै कारण जानने का इच्छुक था। अत मैने वचन दे दिया। इसलिए उनका नाम पता न लिख कर मैने आज्ञाराम उनका काल्पनिक नाम लिखा है। उन्होंने मिडिल परीक्षा पास करके पटवारी गीरी की परोक्षा दी और उसमे उत्तीर्ण होकर पटवारी बन गए। तीसरे महीने उन्होंने ४०) घूस मे प्राप्त करके अपनी पूज्या माता जी को भेज दिए। उनके पिता जीवित न थे। दूसरा कोई भ्राता भी न था। वह अकेले थे। जिस समय माता को ४०) मिले उन्हें लेकर अपने पुत्र को लिखा तुम्हारा वेतन थोडा सा है उसमे से तुम खाते पीते वस्त्र भी पहनते हो तब ४०) कैसे भेज दिए। उन्होंने उत्तर दिया माता जी आपको इससे क्या मेरे पास रुपए थे मेने भेज दिए आप व्यय कर लें।

यह पत्र आते ही माता जी ने मनीआर्डर फीस अपने पास से लगाकर ४०) अपने पुत्र को लौटा दिये और लिख भेजा मुझे इस प्रकार के धन की आवश्यकता नहीं। मैंने तुम्हारे पिता के स्वर्गवास पर परिश्रम करके अपना निर्वाह किया और तुमको पाला तथा पढाया। है। यदि मुझे यह पता होता कि मेरा पुत्र पढकर बेईमान हो जायेगा तो मै कभी न पढाती। अच्छा परमेश्वर की ऐसी ही इच्छाथी। अब मुझे कभी कुछ न भेजना। मैंने जिस भाति अब तक निर्वाह किया है अब भी कर लूगी। प्रतीत होता है मेरे भाग्य किसी का सुख नहीं लिखा है। तुम आनन्द मे रहो परन्तु मेरे सामने कभी न आना। जहा मैने पति के स्वग सिधारने पर सबर किया है वहा तुमको भी पति के पास गया समझ कर सन्तोष से दिन व्यतीत करूगी।

यह पत्र मिलने पर आज्ञाराम जी को बडा कष्ट हुआ और मनीआडर प्राप्त करके उस व्यक्ति को जिससे घूस लिया था बुलाकर वह ४०) दे दिये और उससे क्षमा मागी। वह भी हैरान था कि पटवारीजी क्या कररहे है तब उन्होंने अपनी माता जी का पत्र सुनाया और उसे जाने की आज्ञा दी। उसी समय माता जी को पत्र लिखा और ४०)लौटा देने की बात लिखकर आगे को कभी भी घूस न लेने का प्रण करके माता से क्षमा चाही। माता उस पत्र को पाकर प्रसन्न हुई और अपने पुत्र को आशीर्वाद दिया।

आज्ञाराम जी कहा करते थ मेरा गुरु मेरी पूज्या माता है जो कुछ वह कहे मुझे शिरोधार्य है मेरे जीवन की पथ प्रदशक माता है।

धन्य है ऐसी मातायें और ऐसे आज्ञाकारी पुत्र।

सुमन संचय

सच्ची क्षमा द्वेष पर विजय पाती है

राजा विश्वामित्र सेना के साथ आखेट (शिकार) के लिए निकले थे। वन में घूमते हुए वे महर्षि वसिष्ठ के आश्रम के निकट पहुँच गए। महर्षि ने उनका आतिथ्य किया। विश्वामित्र यह देखकर आश्चर्य में पड गए कि उनकी सेना का सत्कार वसिष्ठ ने किया। इसके पश्चात् दोनों में परमशत्रुता हो गई। विश्वामित्र वसिष्ठ को नीचा दिखाने या पराजित करने का यत्न करने लगे परतु वे सफल न हुए। अन्त में विश्वामित्र ने वसिष्ठ को मार डालने का निश्चय किया। सम्मुख जाकर अनेक बार वे पराजित हो चुके थे अत अस्त्र शस्त्र से सज्जित होकर रात्रि में छिपकर वसिष्ठ जी के आश्रम पर पहुँचे। गुप्त रूप से वे वसिष्ठ जी का वध उनके अनजाने करना चाहते थे। चादनी रात थी। कुटी से बाहर वेदी पर महर्षि वसिष्ठ अपनी पत्नी के साथ बैठे थे। अवसर की प्रतीक्षा में विश्वामित्र पास ही वृक्षों की ओट में छिपे रहे।

उसी समय अरुन्धती जी ने कहा' कैसी निर्मल ज्यो सना छिटकी है। वसिष्ठ जी बोले—"आज की चादनी ऐसी उज्ज्वल है जैसे आजकल विश्वामित्र जी की तपस्या का तेज दिशाओं को आलोकित करता है।"

विश्वामित्र ने ये शब्द सुने और जैसे उन्हें साप सू घ गया हो उनके हृदय ने उन्हें धिक्कारा जिसे तू मारने आया है, जिससे रात दिन द्वेष करता है, वह कौन है—यह देख ! वह महापुरुष अपने पुत्रों के हत्यारे की प्रशसा एकान्त मे अपनी पत्नी से कर रहा है।"

विश्वामित्र ने शरीर पर के शस्त्र नोच फेंके। वे दौडे और वसिष्ठ के सम्मुख भूमि पर दण्डवत गिर पडे। बद्ध मूल द्वेष समाप्त हो चुका था सदा के लिए। वसिष्ठ जी की सहज क्षमा उस पर विजय पा चुकी थी। द्वेष और शस्त्र त्याग कर आज तपस्वी विश्वामित्र ब्राह्मण का पद प्राप्त कर चुके थे। महर्षि वसिष्ठ वेदी से उठकर उन्हें दोनों हाथों से उठाते हुए कह रहे थे–'उठिए ब्रह्मर्षि।

यो वै भमा तत्सुखम् नाल्पे सुखम्–

महत्ता ही सुख है लघुता में सुख नहीं। —उपनिषद्

पुत्र ! नाऽऽत्मा ऽव मन्तव्यः पूर्वाभिरसमृद्धि भिः।
अभूत्वा हि भवन्त्यर्था भूत्वा नश्यन्ति चाऽपरे॥

—महाभारत

विदुला ने अपने पुत्र सञ्जय को उपदेश देते हुए सत्य ही कहा है कि अपनी पूर्व की असमृद्धि से अपने को क्षुद्र न मान लेना चाहिए, ऐश्वर्य की दशा तो विचित्र है–यह न होकर भी हो जाता है और होकर भी नष्ट हो जाता है।

एक जिज्ञासा का समाधान

एक सज्जन ने इस शंका का समाधान चाहा है कि क्या राधा कृष्ण की मातुल पत्नी (मामी) थी ? इस शका का समाधान करते हुए श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती लिखते हैं —

पुराणों मे वर्णित राधा एवं श्री कृष्ण चरित्र की अन्य सब घटनाओं की उपेक्षा करके इन पंक्तियों में केवल इतना ही विचार किया गया है कि राधा और श्री कृष्ण जी का परस्पर क्या सम्बन्ध (रिश्ता) था।

राधा गोकुल के एक वृषभानु नामक गोप की कन्या थी। जेसा कि (वृषभानु गृहे जाता तन्माता च कलावती) इस ब्रह्म वैवर्त पुराण के वचन से प्रकट होता है वय क्रम से जब राधा विवाह योग्य हुई तब पिता ने इसका सम्बन्ध एक रायण नामक युवक से किया। इसका वर्णन ब्रह्म वैवर्त पुराण प्रकृति खण्ड अध्याय ४९ में इस प्रकार किया गया है कि —

अतीते द्वादशाब्दे तु दृष्ट्वा तां नवयौवनाम्।
सार्धं रायण वैश्येन तत् सम्बन्धं चकार सः॥ ३७॥

अर्थात् १२ वर्ष व्यतीत होने पर राधा को नवयौवन युक्त देखकर उसके पिता वृषभानु ने उस का सम्बन्ध रायण नामक वैश्य युवक के साथ कर दिया। महाभागवत पुराण में राधा के विवाह के विषय में इस प्रकार लिखा है कि —

तां राधामुपयेमे को ऽपि गोपो महामुने ?
॥ ५१। ३५॥

हे महामुने ? उस राधा को किसी गोप ने विवाहा। यह गोप उपरोक्त युवक रायण ही है अन्य कोई नहीं। यत राधा स्वय अपने पति का नाम निर्देश करती हुई एक प्रसंग में कहती है कि —

अहमेव स्वयं राधा छाया रायण कामिनी।
ब्रह्म वै० पु० श्रीकृ० ज० ख० १११।५६।८

अर्थात मैं राधा रायण की पत्नी हूं। अब देखना चाहिए कि यह रायण कौन है और कृष्ण के साथ इसका कोई सम्बन्ध है या नहीं। ब्रह्म वैवर्त पुराण प्रकृति खण्ड अ० ४९ में इस प्रकार वर्णन आया है कि —

कृष्णमातुर्यशोदाया रायणस्तत् सहोदरः।
..... सम्बन्धात् कृष्ण मातुलः॥४०॥

अर्थात् रायण कृष्ण जी की माता यशोदा जी का सहोदर भाई सम्बन्ध (रिश्ते) में कृष्ण जी का मामा था। अत स्पष्ट हुआ कि "राधा यशोदा जी के सहोदर भाई रायण की पत्नी सम्बन्ध में यशोदा जी की भाभी और श्रीकृष्ण जी की मामी थी" पत्नी या सखी नहीं।

इस प्रकार श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज के १६००० राणिया थी यह बात भी सर्वथा निराधार और मिथ्या है।

श्रीकृष्ण जी के विषय में अनेक विध भ्रान्त प्रचार वेष्णवों और विशेषकर वैष्णव सम्प्रदायान्तर्गत गोकुलिए गोसाइयों ने किया है, जो महाभारतादि इतिहास ग्रन्थों के विरुद्ध और सर्वथा अमान्य एव कपोल कल्पित है।

श्रीकृष्ण जी के चरित्र के विषय में हमें महर्षि दयानन्द जी महाराज के ये वचन सर्वदा याद रखने चाहिए। "देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण, श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।" सत्यार्थ प्रकाश समु-११

अत सब आर्यों को पुराणों के सर्वथा भ्रान्ति पूर्ण और मिथ्या लेखों पर लेश मात्र भी विश्वास नहीं करना चाहिए।

❀

ईसाई धर्म प्रचार निरोध आन्दोलन

गोविन्दपुर से एक सज्जन लिखते है।

'यह क्षेत्र राची से ५२ मील दक्षिण सीमडेगा से ८० मील लोहारदगा से ३५ मील खूटीसे पश्चिम २४ मील दूर पर है। शहरी क्षेत्र से नितान्त दूर जगलों से भरा पड़ा है। यही स्थान छोटा नागपुर में ईसाइयों का गढ़ माना जाता है। बाह्य जगत् से अलग-थलग होने के कारण जन जागृति का अभाव है।

इस क्षेत्र में मुख्यत उराव, और मु डा की घनी आबादी है। ये अत्यन्त गरीब और अशिक्षित हैं। इस दुरवस्था का तीन ईसाई-मिशन अनुचित लाभ उठा रहे हैं—(१) जर्मन मिशन (२) रोमन मिशन (३) अंग्रेजी मिशन। इनकी सहायता के लिए विदेश से बहुत आर्थिक सहायता आरही है।

पिछले दिनों यहा दुर्भिक्ष पड़ गया था। उस समय विदेश से आया हुआ आटा, चावल और दूध बाटकर ईसाई लोग कहते थे कि ईसा मसीह के राज्य में सब चीजें इतनी होती है कि समाप्त नहीं होती। अत तुम ईश्वर को मानने वाले हो, यह राज्य हिन्दुओं का है इसलिए यहा रुपए का १ सेर चावल बिकता है। आज से कुछ दिन पूर्व जब ईसा का राज्य था तब यहा पर भी रुपए का २० सेर चावल बिकता था। तुम प्रार्थना करो कि वही ईसा का राज्य फिर से लौट आए। इन मिशनरियों का दूसरा बड़ा हथियार मिशन की युवतियां हैं। देहात में अशिक्षित जनता के बीच कहा जाता है कि तुम लोग ईश्वर को नहीं मानते हो इसलिए शैतान हर समय तुम्हें सताता रहता है। उसी शैतान की तुम पूजा करते हो। डाइन भी होता है। इनकी मदद् करने के लिए यहा के भगत् यती और ओझा का भी कम हाथ नहीं है। ईसाई हो जाने के बाद इन सब दुखों से छुटकारा पा जाओगे।"

यहा के जितने ईसाई मिशन हैं उनमें ईसाई धर्म की प्रति दिन पढाई होती है। इन मिशनरियों के स्कूल में पढ़कर उराव, मु डा छात्र ईसाई बनकर निकलते हैं। बाद में लडको के अभिभावकों से कहा जाता है तुम्हारा लड़का ईसाई बन गया है। और तुम उनका छुआ खाते हो अत तुम भी ईसाई बन गए हो और वे बाध्य होकर ईसाई बन जाते हैं।

बाज़ारों में आदिवासी महिलायें जेवर बेचने जाती हैं और सुनारों से कहती हैं कि इन्हें खरीद लो अब हम ईसाई बन गए हैं। इस जेवर को हम बड़े यत्न से रखती थीं पर अब हमें नहीं पहनने दिया जाता।

क्या यही हमारे स्वतन्त्र भारतवर्ष का धर्म निरपेक्ष राज्य है?

❀

Social And Moral Hygiene

(Pooran Chandra Advocate, Agra)

The Regulation of the Sex Instinct

The regulation of the sex instinct is a most important psychologic problem to be dealt with. It is connected with the first and the foremost evil tendency known as 'KAMA" i e, Passion The regulation of the sex instinct is connected with the regulation of region of the human heart Out of the three types of Law prevailing, namely State Law, Social Law and Divine Law the Divine Law has the best and the deepest connection with the working of the human heart The State and the Social Laws have also deep significance but they have only access to the things said and the deeds done The deeds done have their origin in the realm of heart where Divine Law primarily applies The belief in the omnipotence and omnipresence of the Divine Power puts an end to the idea of secrecy and the idea of forgiveness, if secrecy is avoided the sin is avoided, if there is implicit belief in Divine justice there can be no feeling of escape and nobody can dare do any wrong act The regulation of the human heart including the regulation of the sex instinct is an important part of Moral Hygiene, to make moral hygiene effective and intensively and extensively applicable to the whole life is to be regulated, what we eat, what we drink, what we do, where we sleep and how we sleep are all important factors. The question of recreation and entertainment is also an important factor to be dealt with in this connection. The reading and study of sex provoking novels and stories is to be avoided The display of passion-exciting films & pictures has also to be stopped, specially for the young and persons of immature age and discretion There should also be provision for sex education. Unfortunately at present the parents and the elders in the family feel shy in giving instructions about the regulation of sex instinct In Educational Institutions also the teachers also do not feel inclined to give any hints for this regulation, rather it is considered against etiquette and culture to talk of the sex problem, though it is a most important part of human life. Out of the two instincts in human life

the sex instinct is connected with the hunger instinct The question of the hunger instinct is discussed from social & hyg enic stand point In the question of diet we have to keep in view both the stand points of taste and health, we have to be taught to eat to live and not live to eat If the question of diet is neglected we have to recourse to digestives and tonics, palliatives and other things of this type We have to think of vitamins and go on losing vitality If the question of diet is not regulated it leads to bad health and loss of physical strength if the sex instinct is not properly regulated it leads not only to the loss of health, the loss of wealth, but also leads to the loss of character, which is the very basis of human life Rishi Dayanand, one of the greatest reformers of the twentieth century, has elaborately dealt with the sex problem in his immemorable book 'the Satyartha Prakash' Though he was a Brahmachari and a Sanyasi, he wanted to regulate human life and for this regulation he thougnt it most important and essential to regulate sex instinct The question of moral hygiene as indicated above is a question of the individual growth and formation It cannot be tackled only from the economic and social view point The question of prostitution and its removal is deeply connected with the individual character and the social atmosphere Sexual relations must be considered as a most important part of human life and behaviour this problem cannot be tackled by looking only at the surface and making suggestions from superficial angle of vision The question of intoxication and meat diet has also to be kept in view Co education is also a provoking factor and has to be put stop to The question of prostitution is the question of demand and supply The habit of uttering filthy abuses and the habit of decorating drawing rooms with naked pictures has also to be put to a stop

The legal aspect —

This problem has to be dealt with from the legal stand point also The law of the land is the best index of the culture of the Nation and the Country In I P C sexual offences are dealt with in Section 376, 377 and Sections 494 to 498 The offence of adultery has been tackled more from the occidental stand point and not on the basis of ancient Vedic culture A new section of adultery has to be added according to which sexual intercourse has to be penalized between those who are not con

nected by a valid marriage, in all other circumstances there is no question of any exception being made At present in Section 497 and 498 the woman concerned is only a witness and not an accused, this is against the spirit of democracy and socialis She should be given a status of a co accused It is strange that in bigamy she has to be punished In adultery she goes scot free The law has to be amended and brought in conformity with the ancient culture It is strange that in Section 498 the consent and connivance of the husband has been mentioned as an exonerating factor for the adulterer On the other hand the husband also should be punished as an abettor Section 376 has also to be suitably amended Section 377 deals with unnatural offences there should be strict law for the regulation of natural offence

The proper state is only the state of a married life as mentioned above Somebody may object that if adultery is made a penal offence under all circumstances the evil may go under ground and assume different aspects it may reach the prohibited area it may also be said that it amounts to interference with individual liberty All these objections are futile and they are always raised when there is any question of introducing any reform This cry is being heard in case of prohibition, this was also raised in the case of gambling The tenacity of the law breaker is no ground for making the law lenient It has to be enforced with greater vigour and care If the law of the land is properly framed the question of moral hygiene specially as regards prostitution can be successfully tackled

❋

करनाटक प्रचार

दिसम्बर मास में श्रीयुत वैद्य कृपाराम जी शास्त्री द्वारा मैसूर में प्रचार कार्य का क्रम इस प्रकार रहा —

योग शिक्षा, आसन प्राणायाम, आर्य वीरों को लाठी, व्यायाम शिक्षण, सम्मिलित सन्ध्या प्रार्थना एवं शंका समाधान, सिद्धान्तरत्न के विद्यार्थियों का प्रशिक्षण, पारिवारिक उपासना, यज्ञ, व्याख्यान, साप्ताहिक सत्संग, दर्श यज्ञ, गायत्री महायज्ञ, कन्नड़भाषा के पत्रों के लिए लेखादि, नए सदस्यों की भरती, विशाल सामूहिक यज्ञ व सहयोग, ग्राम प्रचार, हिन्दी प्रचार सभा तथा कालेजों में व्याख्यान, शंका समाधानादि।

९ यज्ञ, २ यज्ञोपवीत संस्कार हुए २ नए सदस्य बनाए गए, १ विशाल सामूहिक यज्ञ व सहभोज हुआ पितहली ग्राम में यज्ञ, व्याख्यान और शंका समाधान किया गया। संस्कृत कालेज और हिन्दी प्रचारक सभा में २, २ बार जाकर संगठन तथा प्रचार कार्य किया गया।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

आर्य जनता से सहयोग की अपील

आज से ५१ वर्ष पूर्व गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) की स्थापना आर्य जगत के स्वनामधन्य सन्यासी स्व स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने की थी। बिना किसी भेदभाव के इस संस्था ने संस्कृत शिक्षा का द्वार मनुष्य मात्र के लिए उस समय खोला था जब रूढ़िवादियों ने संस्कृत का अध्ययन वर्ग विशेष के लिए ही सुरक्षित रख छोड़ा था। दूसरी विशेषता इस संस्था की अब तक यह रही कि बिना किसी भी प्रकार का शुल्क (फीस) लिये इस संस्था में पढ़ने वाले छात्रों को भोजन वस्त्र निवास एवं शिक्षा भी मुफ्त दी गई। धनी निर्धन सब ही के लिये कृष्ण सुदामा की तरह सदा इस संस्था के द्वार खुले रहे हैं। अब जबकि देश विभाजन ने परिस्थितियां बदल दीं और महगाई सीमा लांघ गई तब नाम मात्र को छात्रों पर सब मिलाकर पन्द्रह रुपये मासिक अर्थात् आठ आने प्रतिदिन का व्यय लगाया है और वह भी सब पर नहीं जो सुगमता से दे सकें उन पर ही रखा है।

अब तक इस आदर्श शिक्षण संस्था से सहस्रों ही स्नातक निकलकर देश जाति की सेवा में संलग्न हैं। आर्य समाज के आरम्भिक क्षणों में स्वयं संस्था के संस्थापक वीतराग स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज, प० गणपति शर्मा साहित्याचार्य, प० पद्मसिंह जी संस्कार चन्द्रिका के रचयिता प० भीमसेन जी आदि विद्वानों ने जो सेवायें की है उनसे आर्य समाज भली भांति परिचित हैं। आजकल भी यहां के बहुत से स्नातक आर्य समाज के मंच पर अथक कार्य कर रहे है। आर्य समाज के इतिहास मे इस संस्था की सेवायें सदैव स्तुत्य मानी जायगी।

इस वर्ष इस गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती ९ से १५ अप्रैल तक बडी तैयारियों से मनाई जा रही हैं। आ जगत के चोटी के विद्वान साधु महात्मा एवं अन्य क्षेत्रों के भी सांस्कृतिक नेता उसमे भाग लेंगे। इस समय गुरुकुल मे तीन सौ के लगभग छात्र वेद, दर्शन, साहित्य, व्याकरण और आयुर्वेद आदि विषयों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। गुरुकुल के अधिकारियों ने इस महायज्ञ को सफल बनाने एवं भावी उन्नति को ध्यान में रखते हुए ढाई लाख रुपये की एक योजना बनाई है। हमारा अनुरोध है कि आर्य जनता मुक्तहस्त होकर इसमें दान दें और स्वर्ण जयन्ती में सम्मिलित होकर अपने इस गुरुकुल की प्रगतियों का परिचय भी प्राप्त करे। जो धन भेजा जाय वह—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर जिला सहारनपुर के पते पर भेजने की कृपा करें। निवेदक —

(१) श्री स्वा० अभेदानन्द जी सरस्वती, (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
(२) श्री स्वा० आत्मानन्द जी सरस्वती
(३) श्री स्वा० आनन्द स्वामी सरस्वती (प्रधान—आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब)
(४) श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त, (प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश)
(५) श्री महाशय कृष्ण जी, (मालिक—प्रताप दिल्ली)
(६) श्री प० नरेन्द्र जी, (प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद)
(७) श्री डाक्टर महावीरसिंह जी, (प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत)
(८) ला० रामगोपाल जी, (प्रधान मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
(९) श्री जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती, (महामन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब)
(१०) श्री वेणीभाई आर्य (प्रधान मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई)
(११) श्री रामनारायण जी शास्त्री, (प्रधान मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार)
(१२) श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी, (आर्य महोपदेशक हापुड)
(१३) श्री ठाकुर मथुरालाल शर्मा, (भू० पू० डाइरेक्टर शिक्षाविभाग राजस्थान)

सितम्बर तथा अक्टूबर सन् १९५८ में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद द्वारा दक्षिण प्रचार योजना के अन्तर्गत किए गए प्रचार का कार्य विवरण

सितम्बर ५८

१–उपदेशकों व प्रचारकों द्वारा प्रचार कार्य

श्री प० रुद्रदेव जी

१ से २ सितम्बर तक ताण्डूर समाज में वेद सप्ताह सपन्न करवाया, ३ से ६ सितम्बर तक जोगीपेट समाज का वेद सप्ताह भुगताया। ७ सितम्बर को जोगीपेट से निजामाबाद प्रवास कर पहुचे। ८ से १४ सितम्बर ५८ तक आर्य समाज निजामाबाद के वेद सप्ताह कार्यक्रम मे भाग लिया। १५ सितम्बर ५८ को निजामाबाद से प्रवास कर मिर्याल गुडा पहुचे। १९ सितम्बर तक रहकर प्रचार किया। ० सितम्बर रो रला कुशापुर प्रचाराथ जाते समय सकल से गिर जाने के कारण रुगण रहे।

इस मास आपने ३ समाजों के वेद सप्ताह भुगताए और १८ व्याख्यान दिए।

बुर्राकथा दल

इस मास बुर्राकथा दलने शहरके विभिन्न स्थानो गोषामहल, लालागुडा सीताफलमण्डी ऽन नगर बुलारम माद्न्नापेट, अखिनाण्डा पुरा, अम्बरपेठ, असमत पेट, दूध बावडी तथा जिले महबूबनगर के चोधर गुडा स्थान की तेलगु भाषा भाषी जनता मे 'बुराकथा दल" (लोक-गीत शैली) द्वारा प्रचार कार्य किया।

२–शुद्धि तथा विवाह

श्री प० कालीचरन जी ने आर्य समाज शालीबण्डा में एक मुसिल्म महिला की शुद्धि कर उसका नाम कलावती रखा और वनपाड जिला महबूबनगर के एक युवक से विवाह करा दिया।

अक्टूबर ५८

(१) उपदेशको तथा प्रचारकों के द्वारा प्रचार कार्य

१—श्री प० रुद्रदेव जी उपदेशक सभा, इस मास आपने आर्य समाज मिर्यालगुडा जिला नलगुडा मे तथा कोत्तागुडा जिला खम्मम की आर्य समाजों मे श्री प० गोपदेव जी द्वारा 'गीता प्रवचन सप्ताह के कायक्रम आयोजित करवाए। इन दोनों स्थानों में आप स्वय एक एक सप्ताह रह कर नित्य प्रात साय यज्ञ करवाया और प्रवचन काय में भाग लिया। इसके अतिरिक्त और भी स्थानों पर प्रचार कार्य किया। कोत्तागुडा मे ३ ईसाई परिवारों की जिसमें ३ पुरुष ३ स्त्रिए तथा एक युवक था—शुद्धि की। इस अवसर पर विशेष रूप से श्री प० नरेन्द्र जी, प्रधान सभा भी कोत्तागुडा पधारे थे।

२–बुर्राकथा दल द्वारा प्रचार

बुर्राकथा दल ने एक अक्टूबर को चौधरगडा में २ से ३ अक्टूबर तक इन्द्रनगर मे, ४ तथा ५ अक्टूबर को मुधोल मे, ६ अक्टूबर को कोडगल में, ७ व ८ अक्टूबर को कुदढमल्ला में, ९ व १० को हकीमपेट में, ११ अक्टूबर को प्रवास कर महबूबनगर पहुचे और यहा से १३ तथा १४ अक्टूबर को अमिस्तापुर नामक ग्राम में प्रचार किया व १६ अक्टूबर को किष्टापुर ग्राम मे रहे। यहा से मरिकल व महबूबनगर होकर २०, अक्टूबर को जडचर्ला पहुँचे और यहा भी दो दिन प्रचार किया। पश्चात् हैदराबाद पहुचे। तदोपरान्त सभा के आदेश पर किष्टापुर जिला निजामाबाद में ईसाई

आर्य समाज विनयनगर की ओर से अपील

आर्य जनता को यह जानकर परम हर्ष एव सन्तोष होगा कि उत्साही एवं जागृत आर्य समाज विनयनगर नई दिल्ली को निरन्तर प्रयत्नों के उपरान्त भारत सरकार ने आर्य समाज मन्दिर निर्माण के लिये ५०० वर्गगज भूमि देना स्वीकार कर लिया है।

सरकारी बस्तियों मे इस प्रकार का भूमि सम्बन्धी निर्णय सब से प्रथम अवसर है, किन्तु इसके लिये फरवरी के अन्त तक आर्य समाज-विनयनगर को १५०००) रुपये अपने कोष में जमा करके सरकार को दिखाना होगा, जिससे यह स्थान जल्दी से जल्दी समाज के अधिकार में आ जावे। यह हमारा परीक्षा-काल है। आर्य समाज-विनयनगर का धन निरन्तर सामाजिक-सुधार कार्यों में व्यय होता रहता है।

पिछले वर्ष वहा के उत्साही कार्यकर्त्ता हिन्दी आन्दोलन में पूर्ण रूप से लगे रहे। लगभग ७८ हजार रुपये आर्य समाज-विनयनगर ने इस पवित्र कार्य में व्यय किये। अत समाज के पास धन नहीं है जो हम इस कार्य को स्वयं पूरा कर सकें।

इस पवित्र कार्य के लिए आपकी सेवा में पूर्ण विश्वास के साथ निवेदन है कि आप हमारी अपील पर अवश्य ध्यान देंगे। हमें दान रूप में ५०० गज भूमि प्राप्त करनी है। भूमि का मूल्य २५) प्रतिगज है। आर्य नर नारी धन देकर पुण्य के भागी बनें और साथ ही अपने मित्रों को भी इस भूमिदान कार्य में, सहयोग देने की प्रेरणा करें। उनके पते हमें लिखने की कृपा करें जिनसे पत्र-व्यवहार किया जा सके। इसके लिए चैक, ड्राफ्ट, या मनीआर्डर मन्त्री आर्य समाज विनयनगर नई दिल्ली के पते पर आना चाहिए। निश्चय किया गया है कि भूमिदाताओं के नाम पत्थर पर अंकित कराकर मुख्य द्वार पर लगाये जावें।

निवेदक —

महेन्द्र नाथ झा	चन्द्र प्रकाश	प्रकाशचन्द्र शास्त्री
प्रधान	मन्त्री	सयोजक भवन निर्माण

प्रचार निरोध के लिए २८ अक्टूबर को पहुंचे और बुर्राकथा द्वारा प्रचार किया।

(२) विशेष प्रचार

सभा को बिचकुन्दा, बोधन, बासवाड़ा तथा बीरकूर के मध्यवर्ती ग्राम किष्टापुर जिला निजामाबाद में ईसाई पादरी द्वारा तम्बू डाल कर विशेष प्रचार करने की सूचना प्राप्त होने पर और उपदेशक(आदि भेजने की उपर्युक्त समाजों से माग होने से सभा द्वारा तत्काल बुर्राकथा दल को तथा सभा के उपदेशक श्री प० मंगलदेव जी शास्त्री व श्री पं० वेंक्टेश्वरराव जी शास्त्री को भेजा गया। इन दोनों विद्वानों के पहुंचने पर लाऊडस्पीकर आदि की विशेष व्यवस्था की जाकर खूब प्रचार किया गया है। अभी आगे एक मास तक इस क्षेत्र में बुर्राकथा दल द्वारा प्रचार की योजना की जा रही है।

२-शुद्धि कार्य

कोत्तागुडा जिला खम्मम में श्री पं० रुद्रदेव जी के प्रयत्नों से ३ ईसाई परिवार जिनके ७ सदस्य (३ स्त्री ३ पुरुष और एक युवक इन्टर तक शिक्षित थे) की शुद्धि हो गई। इस अवसर पर हैदराबाद से श्री प्रधान जी सभा ने भी पहुंच कर भाग लिया।

नरेन्द्र
प्रधान सभा

(पृष्ठ ५६२ का शेष)

को प्र रणा की गई है। इस आयोजन के अनुसार २॥लाख रुपया एकत्र करना निश्चित कियागया है महाविद्यालय का विशेष परिचय देने की आवश्य कता नहीं है। उसकी सेवाएं और उपयोगिता सर्वविदित है। सस्कृत का रक्षण तथा आर्यजगत् को उच्चकोटि के सस्कृतज्ञ विद्वान् तथा प्रचारक देना इस महाविद्यालय का ध्येय है तथा रहा है। प्रसन्नता है महाविद्यालय निरन्तर इस ध्येय की सिद्धि और रक्षा करता आ रहा है। इसने अब तक अपनी आत्मा की प्राणपण से रक्षा की है इसी लिए यह आर्य जनता का आकर्षण और प्रेम प्राप्त किये हुए है। यह सस्था सर्वथा दान पर आश्रित रही है क्योंकि विद्यार्थियों को नि शुल्क शिक्षा दी जाती है। ऐसी उपयोगी सस्था आर्य जगत् की पूरी २ आर्थिक सहायता की अधिका रिणी है। हम हृदय से महाविद्यालय जयन्ती के आयोजन तथा महोत्सव की सफलता की कामना करते है।

श्री स्वामी जी का अभिनन्दन

आर्य जगत् मे यह समाचार बड हर्ष के साथ सुना जायगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार ने १९६० के प्रारम्भ में सभा प्रधान श्री स्वामी अभे दानन्द जी महाराज के जन्म दिवस के अवसर पर उनकी जयन्ती मनाने का निश्चय किया है। उसी अवसर पर उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ दिया जायगा तथा एक अच्छी बडी राशि की थैली भेंट की जायगी।

श्री स्वामी जी तथा आर्य समाज के प्रति की गई उनकी उदात्त सेवाओं का विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। वे आर्य जनता पर सुस्पष्ट हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में उन्होंने एक सर्वाधिकारी के रूप मे आर्य जगत् की चिरस्मरणीय सेवा की थी। सिंध के सत्याग्रह के लिए स्व० महात्मा नारायण स्वामीजी ने हैदराबाद सत्याग्रहके अधिनायकों को ही सर्वप्रथम आह्वान किया था। उनके साथ जो महानुभाव कराची गए थे उनमें श्री स्वामीजी महाराज भी थे। केवल इन दो घटनाओं से ही समस्त आर्य जगत् को यह ज्ञात हो सकता है कि वे आर्य समाज के कितने ऊचे और परखे हुए अग्रणी है।

श्री स्वामी जी इस समय आर्य जगत् के आध्यात्मिक और वैधानिक नेता हैं। उनके जन्म दिवस समारोह पर आर्य जगत् को अपनी कृतज्ञता का प्रकाश करने का अवसर मिले, इससे बढ कर सौभाग्य की और क्या बात हो सकती है। आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार यह सुअवसर समुपस्थित करने जा रही है इसके लिए वह धन्यवाद की पात्र है।

हम इस आयोजन का अभिनन्दन करते हुए इसकी सफलता की कामना करते और आशा करते हैं कि बिहार का आर्य जगत् इस आयोजन को सफल बनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार को समुचित योग देगा। जहा बिहार की आर्य जनता को अपने कर्तव्य का उत्तम रीति से पालन करना है वहा बिहार से बाहर की आर्य जनता को भी अपना पूर्ण सहयोग देना है। बिहार और बिहार से बाहर की जनता दोनों ही श्री स्वामी जी की सेवाओं के लिए ऋणी है। बिहार में ४० ५ वर्ष रह कर स्वामी जी ने आर्य समाज की विविध सेवाए की हैं और उसे शक्तिशाली बनाया है। अब समूचे आर्य जगत् का मार्ग प्रदर्शन और भाग्य निर्णय उनके हाथ में है

आर्य पुरुष की सब से बडी विशेषता यह होती है कि वह सार्वजनिक हित को सर्वोपरि रखता है और वैयक्तिक आनन्द, सुख और लाभ को सार्वजनिक हित पर अर्पित किये होता है। श्री स्वामीजी इसी कोटि के आर्य महानुभाव हैं।

सह-शिक्षा का दुष्परिणाम

लखनऊ का २३ दिसम्बर का समाचार है कि

लखनऊ विश्व विद्यालय में सह शिक्षा समाप्त कर देने का प्रस्ताव है। इसका कारण यह बताया जाता है कि लड़कियों के प्रति लड़कों का व्यवहार अनाचार की प्रत्येक सीमा का अतिक्रमण कर गया है। विश्व विद्यालय के डा० के सी सरकार जो वाणिज्य परिषद् के डीन भी हैं कुलपति के पास यह प्रस्ताव औपचारिक रूप से भेज रहे हैं कि कम से कम उपस्नातकों में तो सह शिक्षा समाप्त करदी जाय स्नातकोत्तर वर्गों में चाहे फिलहाल उसे जारी रखा जाय। डा० सरकार ने एक भेंट में लज्जा के साथ स्वीकार किया कि विश्व विद्यालय मे छात्राओं के प्रति छात्रों का व्यवहार अत्यधिक अभद्र हो चला है। उनके प्रति अशिष्ट और कुत्सित बातें करने के साथ २ छीना झपटी के अनेक दृष्टान्त प्रोक्टर के पास आए हैं और एक दिन तो छात्राओं के कैलाश होस्टल के सामने ही एक छात्रा को एक मोटरकार में ले भागने का प्रयत्न किया गया जो कुछ राहगीरों और बाद में पुलिस वालो के दौड़ पड़ने पर विफल हो गया। यही नहीं छात्राओं की पुस्तकों नोटबुकों, फाउन्टेन पैन, ऐनकों और दुपट्टों के छीनने की घटनाए नित्य होती हैं। १७ दिसम्बर को जिस समय डा० कृष्णन दीक्षान्त भाषण कर रहे थे १४.०० दर्शकों के बीच एक छात्र ने एक छात्रा के साथ अभद्रता की और एक अन्य छात्र ने उसका पर्स छीन कर उछाला फेंका और भाग गया। प्रोक्टर ने ऐसे आधा दर्जन से अधिक छात्रों को निलम्बित कर दिया है परन्तु इस प्रकार का दण्ड भी उन्हें अनुशासन में रखने में असमर्थ है। सन् १९२१ मे सह शिक्षा का आरम्भ हुआ था और कभी इस बात की नौबत नहीं आई कि इस प्रथा को समाप्त करने का विचार तक किया जाता परन्तु पिछले कुछ काल से छात्रों की अशिष्टता बढने लगी है और अब तो वह असह्य हो गई है।"

सह शिक्षा के पक्षपातियों को और उन्हें जो इसका प्रयोग कर रहे हैं उपर्युक्त वर्णन को आखें खोलकर पढना चाहिए। ऋषि दयानन्द ने अपने अमर-ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में चेतावनी के रूप में लिखा था कि लड़के और लड़कियों के विद्यालय पृथक् २ होने चाहिए और लड़कियों के विद्यालय में ५ वर्ष की आयु का भी बालक प्रविष्ट न होना चाहिए। उनकी दिव्य-दृष्टि ने सह शिक्षण की भयकरता को कितने यथार्थ रूपमें देखा था यह बात उपर्युक्त प्रकार के कटु अनुभव से सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

डा० के० सी० सरकार ने सह शिक्षा को समाप्त कर देने का जो प्रस्ताव किया है वह सामयिक और उचित है। हम उनके नैतिक साहस की प्रशसा किए बिना नहीं रह सकते।

जिन नवयुवकों से अपनी बहनों की मान मर्यादा और शील की रक्षा की आशा की जाय उन्हीं के द्वारा निर्लज्जता पूर्वक उनके साथ अभद्र व्यवहार का होना और उनके शील भग का यत्न किया जाना, बडे दु ख और परिताप की बात है।

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना है। यदि वे उससे मनुष्य के स्थान में पशु बनें तो उस शिक्षा से क्या लाभ?

सह शिक्षा के प्रचारक और समर्थक इसके पक्ष में कई युक्तियां दिया करते हैं। एक तो यह कि इससे स्त्रियों मे शिक्षा का व्यापक प्रसार होता है, पृथक् स्त्री विद्यालयों पर खर्च होने वाले धन की बचत हो जाती है। स्त्रियों के स्वातन्त्र्य के लिए भी सह शिक्षा आवश्यक है। सह-शिक्षा कृत्रिम दीवारों को तोड़कर दोनों वर्गों के प्रति ज्ञान और सहानुभूति को जाग्रत करती है और दोनों के दृष्टिकोण को विस्तृत करके उनके मानसिक विकास में योग देती है इतना ही नहीं यह शिक्षा समानता के आधार पर स्त्री पुरुषों के स्वाभाविक और सुन्दर सम्बन्धों के मार्ग का दिग्दर्शन करती है।

वे लोग नैतिक पतन की सभावनाओं को भी स्वीकार करते हुए कह दिया करते हैं कि ऐसे कतिपय उदाहरण सामने आ सकते हैं केवल उन उदाहरणों से भयभीत होकर इस वरदायिनी शिक्षा का प्रतिवाद या विरोध न होना चाहिए। जरा सी सावधानता से इस प्रकार के भय का निवारण हो सकता है इत्यादि २। यह शिक्षा युरोप और अमेरिका आदि देशों मे भी अभिशाप सिद्ध हो चुकी हैं जहा सह शिक्षा के अभिशापों के प्रति इतनी उग्र भावना नहीं है जितनी भारत मे क्योंकि यहा के आदर्श और परम्पराए उन देशों की परम्पराओं से भिन्न है। यहा स्वतन्त्रता के नाम पर चरित्र भ्रष्टता जातीय मृत्यु समझी जाती रही है। १९३३ मे जमन देशवासियों ने सह शिक्षा के दुष्परिणामों से तग आकर वहा प्रथक कन्या विद्यालयों की स्थापना की थी। लखनऊ विश्व विद्यालय के अधिकारियों और प्राध्यापकों के प्रस्ताव मे भी वही परेशानी व्यक्त होती है। क्या लखनऊ विश्व विद्यालय क वाणिज्य परिषद् के डीन का सह शिक्षा निवारण का प्रस्ताव नैतिक पतन की १२ घटनाओं का परिणाम कहा जा सकता है? यह तो स्पष्ट दुरवस्था का द्योतक है और इस बात का सूचक है कि अधिकारिया के शर पर पानी उत्तर गया है।

— रघुनाथप्रसाद पाठक

हिन्दू और सिख!

इस शीर्षक से सहयोगी प्रदीप (पटना) अपने १८ १ ५९ के अ क में लिखता है —

"पटना सिटी में गुरु गोविन्दसिह जयन्ती के समारोह के अवसर पर भाषण करते हुए अकाली नेता मास्टर तारासिह ने कहा है कि प्रारम्भ से सिख हिन्दुओं के रक्षक और हिन्दू सिखों के सरक्षक रहे हैं। अत हिंदुओं और सिखों के बीच सघर्ष की कोई सम्भावना नहीं है। स्वाधीन और जनतान्त्रिक भारत में इस अर्थ मे रक्षण और सरक्षण की शायद ही कोई आवश्यकता रह गई हो जिस अर्थ में मास्टर जी ने उन शब्दों का व्यवहार किया है, परन्तु इसमे तानक भी सन्देह नहीं कि राष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ हितों के लिए हिन्दुओं और सिखों के बीच पूरी सद्भावना और एकता आवश्यक है। देश की प्रगति के लिए हिंदुओं और सिखों के बीच ही नहीं बल्कि सभी सम्प्रदायों के बीच पूरी सद्भावना होनी चाहिए। हिंदुओं और सिखों के तो प्रेरणा स्रोत एक ही हैं। यह बात भी ठीक ही है कि गुरु गोविन्द सिंह हिन्दुत्व की रक्षा के लिए जीवन भर लडते रहे और उन्होंने महान् बलिदान किया। उनके जीवन से सभी को प्रेरणा मिल सकती है। ऐसी स्थिति में यह बडे ही दुःख की बात है कि इधर पञ्जाबमें सिखों और हिंदुओं के बीच मतभेद और फूट बनी है। मास्टर जी ने हिंदी के नारे लगा कर हिंदुओं और सिखों के बीच फूट पैदा करने के लिए आर्यसमाज को दोषी ठहराया है। पूर्वी पञ्जाब मे भाषा का प्रश्न बडा ही विवादग्रस्त रहा है। उसके विषय मे मास्टर तारासिंह को अपनी राय प्रकट करने का अधिकार प्राप्त है। परन्तु पञ्जाब मे हिदुओं और सिखों के बीच जो खाई दीखती है उसे अधिक चौडी बनाने की जिम्मेदारी स्वय मास्टर तारासिह और उनके समर्थकों की बदलती हुई राजनीति पर भी कम नहीं है। पञ्जाबी सूबे के नारे के विषय में वे चाहे जो कहे, परन्तु उनस भी यह बात छिपो नहीं होगी कि इस नारे से पञ्जाब मे हिंदुओं और सिखों के बीच फूट बढी है। क्या आशा की जाय कि पञ्जाब के सभी नेता, जिनमें मास्टर तारासिंह का भी स्थान ऊ चा है, पूरी सद्भावना के साथ सारे मतभेदों को दूर कर हिन्दुओं और सिखों के बीच हार्दिक एकता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे?

❀

जिस माता-पिता ने विद्या का दहेज नहीं दिया मानो उसने कुछ नहीं दिया।

धन-दौलत के साथ-साथ विद्या का दान दो ७ अमूल्य पुस्तकों का सैट

कन्याओं को दहेज के लिये सर्वोत्तम भेंट

१—शाक रत्नाकर

(ले० सुशीला)

इस पुस्तक में प्रत्येक घर में बनानेवाली शाक सब्जियो को बनाने के तरीकों व उनमें पड़ने वाले मसाले आदि का वर्णन बड़ी सरल भाषा में सविस्तार किया गया है। इसकी सहायता से आप स्वादिष्ट शाक-सब्जियां बना सकती हैं। मू० २।) दो रुपया चार आने। डाकव्यय ।।।=)

२—आदर्श कशीदाकारी

(ले० कुमारी लाजवती)

जिनमे नये नये डिजाइन बूटियां, बेल, क्रास स्टिच, कटवर्क, मोतियो का काम, सीनरियां, मोनोग्राम तकिये पर दोहे, पेटीकोट के बोर्डर, कमीजो के गले, स्मोकिंग लेडीडेजी तथा आधुनिक ढग की चीजें हैं। मूल्य ४) डाकव्यय १)

३—उषा दस्तो कढ़ाई शिक्षा

(ले०—उषारानी)

आजकल घरो में कन्या पाठशालाओ तथा सरकारी सेन्टरो मे दसूती का काम सिखलाया जाता है। इस दसूती की पुस्तक में बेलें पशु पक्षी, चौपायो के चित्र तथा गुलदस्ते बनाकर दिखाये गये है। मू० ३) डाकखर्च ।।।=) पृथक

४—दर्जी मास्टर (दोस्त दर्जियों)

(ले०—मास्टर बद्रीप्रसाद)

जिसको पढकर थोडी पढी लिखी स्त्रियां व पुरुष भी घर में हर प्रकार का कपडा काटना सीख जाते हैं तथा पूरे टेलर मास्टर बन सकते हैं। अपने-तथा बच्चो के कपड़े घर ही में उम्दा सीने के लिये यह पुस्तक मगाकर रखें। मू० २।।) डाकव्यय १)

५—पाक भारती

(ले०—अमोलचन्द्र शुक्ल)

पाकशाला की व्यवस्था, कच्ची रसोई पक्की रसोई, दूध को चीजें मुरब्बा, अचार चटनी आदि देशी एवं बगला मिठाई पाक-रोटी नान, बिस्कुट इत्यादि प्रत्येक प्रकार की आधुनिक एव प्राचीन खाद्य सामग्रियो के तैयार करने का विधियो सहित ६०० पृष्ठो की सचित्र सजिल्द रंगीन आवरण की पुस्तक। मूल्य ६) डाकव्यय १।।)

६—महिला मंजरी

(ले०—सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री)

गृहस्थ धर्म को सुखी बनाने में स्त्री का स्थान सबसे ऊंचा है। इस पुस्तक म शादी से पहले की शिक्षा तथा विवाहित जीवन के बाद म किन-किन बातो पर ध्यान देना चाहिये, पाक विज्ञान स्वास्थ्य विज्ञान तथा नारी का बनाव सिंगार आदि हर विषय पर पूरा प्रकाश डाला गया है। पृष्ठ ३८४, मू० केवल ६) डाकव्यय १।) अलग।

७—स्त्री-शिक्षा या चतुरगृहिणी

(लेखिका—श्रीमती साधना सेन)

यह पुस्तक प्रत्येक नारी की सच्चीजीवन सहचरी तथा गृहस्थी को सुखमय बनानेवाली है। इसमें बाल्यकाल की शिक्षा अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बनाने की विधि शिल्प-विद्या, सीना पिरोना, गर्भ रक्षा, धात्री शिक्षा, स्त्री-रोगो के चिकित्सा बालको का पालन-पोषण धर्मोपदेशएव अनेक रीति और व्रत त्यौहारो का वर्णन है। इसमे लडकी को अमूल्य शिक्षायें दी गई हैं। मू० २।।) डाकव्यय १)पृथक

पृथक् पृथक् पुस्तकें मगाने पर डाक व्यय ग्राहक को देना होगा।

उपरोक्त सातो पुस्तको की छपी कीमत २६।) होती है परन्तु पूरा सैट लेने वाले सज्जनो को केवल २०)डाकव्यय ३) २३) की वी०पी० की जावेगी। केवल ।) (२५ नये पैसे) के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर हजारों पुस्तको का बड़ा सूचीपत्र फ्री मगावे। केवल ।।।) (७५ नये पैसे) के टिकट भेजकर १९५९ की 'श्री बापू राष्ट्रीय मशहूर जन्त्री' मंगायें।

देहाती पुस्तक भण्डार, (स: दि) चावड़ी बाजार दिल्ली-६ फोन: २००३०

बाजार में असली पुस्तक खरीदते समय लेखक और प्रकाशक अवश्य देख लें।

केवल दिल्ली निवासियों को फोन द्वारा पुस्तकें सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

परिपत्र — || ओ३म् || कार्यालय—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१
दिनांक २०-१-५६

आर्य जनता को साहित्य प्रचार का विशेष सुअवसर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने साहित्य-प्रचार कार्य को सुगम बनाने की दृष्टि से आगामी दयानन्द बोध रात्रि के सुअवसर पर अपने प्रकाशनों पर आर्य जनता को निम्न प्रकार विशेष रियायत देने का निश्चय किया है। समस्त आर्य हिन्दू जनता विशेषत आर्य समाजों और उनकी सस्थाओं को पर्याप्त साहित्य मगाकर इस अवसर से पूरा २ लाभ उठाने का यत्न करना चाहिए। यह रियायत १ फरवरी ५६ से ३० अप्रैल ५६ तक रहेगी।

निम्न प्रकाशन नैट मूल्य पर दिये जायेंगे।

	मूल्य	नैट मूल्य
१. कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द	)७५	)६६
२ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	२)५०	१)८७
३ सत्यार्थप्रकाश बढ़िया	५)	३)७५
४ सत्यार्थप्रकाश	१)३७	१)१२
५ सामवेदभाष्य सजिल्द	२)	१)६२
६ महर्षि दयानन्द	)६२	)५०

निम्न साहित्य पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा —

१०) तक	२०%	कमीशन
१०) से २५) तक	२५%	,,
२५) से अधिक	३३⅓%	,,

(१) यमपितृ परिचय (प० प्रियरत्न आर्य) २)
(२) आर्य डाइरेक्टरी १।)
(३) सार्वदेशिक सभा का सत्ताईस वर्षीय कार्य विवरण अ० २)
(४) स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार (प० धर्मदेव जी वि० वा०) १।)
(५) आर्य समाज के महाधन (स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी) २॥)
(६) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण (पं० इन्द्रजी) ।=)
(७) आर्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या (अनुवादक प० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक) ।)
(८) आर्य मन्दिर चित्र (सार्व० सभा द्वारा स्वीकृत))
(९) वैदिक ज्योतिष शास्त्र (प० प्रियरत्नजी आर्य) १॥)
(१०) वैदिक राष्ट्रीयता (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।)
(११) मातृत्व की ओर (रघुनाथ प्रसाद पाठक) १।)
(१२) हमारी राष्ट्रभाषा (प० धर्मदेवजी वि० वा०) ।-)
(१३) स्वराज्य दर्शन स० (पं० लक्ष्मीदत्तजी दीक्षित) १)
(१४) राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)
(१५) योग रहस्य (श्री नारायण स्वामी जी) १।)
(१६) मृत्यु और परलोक ,, १।)
(१७) विद्यार्थी जीवन रहस्य ,, ॥=)
(१८) प्राणायाम विधि ,, =)
(१९) उपनिषदें—

ईश	केन	कठ	प्रश्न
।=)	॥)	॥)	।=)
मुण्डक	माण्डूक्य	ऐतरेय	तैत्तिरीय
।≡)	।)	।)	१)

(२०) बृहदारण्यकोपनिषद् ४)
(२१) आर्य जीवन गृहस्थ धर्म प० रघुनाथप्रसाद पाठक) ॥=)
(२२) कथामाला ,, ॥)
(२३) सन्तति निग्रह १।)
(२४) नैतिक जीवन स० ,, २॥)
(२५) नया संसार , ≡)
(२६) इजहारे हकीकत उर्दू (ला० ज्ञानचन्द जी आर्य) ॥=)
(२७) वर्ण व्यवस्था का वैदिक स्वरूप ,, १॥)
(२८) धर्म और उसकी आवश्यकता ,, १)
(२९) भूमिका प्रकाश (प० द्विजेन्द्रनाथजी शास्त्री) १।)
(३०) एशिया का वैनिस (स्वा० सदानन्द जी) ।॥)
(३१) वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां (प० प्रियरत्न जी आर्य) ।॥)
(३२) सिंधी सत्यार्थप्रकाश २)
(३३) कन्नड सत्यार्थप्रकाश ३।)
(३४) मराठी सत्यार्थप्रकाश १।=)
(३५) आर्योदयकाव्यम् पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध, १।।), १॥)
(३६) हमारे घर (श्री निरंजनलाल जी गौतम ॥=)
(३७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर २।)
(३८) भजन भास्कर १॥)
(३९) मुक्ति से पुनरावृत्ति (प० गंगाप्रसाद उपाध्याय ।=)
(४०) वैदिक ईश वन्दना (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।=)॥
(४१) वैदिक योगामृत ,, ॥=)
(४२) सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रसाद शास्त्री) २)
(४३) आर्य वीर दल सैनिक (श्री ओम्प्रकाश त्यागी) ॥)
(४४) आत्म कथा श्री नारायण स्वामी जी २।)
(४५) वैदिक संस्कृति (प० गंगाप्रसाद उपाध्याय) १।)
(४६) वैदिक वन्दन (स्वा० [illegible] जी) ५।।)
(४७) दार्शनिक आध्यात्मि[illegible]

(१) आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग ४)
" " द्वितीय भाग ५)
(२) वेद की इयत्ता (श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी) १॥)
(३) दयानन्द दिग्दर्शन (श्री स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ॥)
(४) इञ्जील के परस्पर विरोधी वचन ।=)
(पं० रामचन्द्र जी देहलवी)
(५) भक्ति कुसुमांजलि (प० धर्मदेव वि० वा० ॥)
(६) धर्म का आदि स्रोत
(पं० गंगाप्रसाद जी एम ए) २)
(७) भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक
(श्री राजेन्द्र जी) ॥)
(८) भारत में मूर्तिपूजा १=)
(९) वेदान्त दर्शनम् (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ३)
(१०) संस्कार महत्व
(प० मदनमोहन विद्यासागर जी) ॥)
(११) जनकल्याण का मूलमन्त्र , ॥)
(१२) वेदों की अन्त साक्षी का महत्व ॥=)
(१३) आर्य घोष ॥)
(१४) आर्य स्तोत्र " ॥)
(१५) स्वाध्याय सदोह (स्वा० वेदानन्द तीर्थ) ४)
(१६) वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) ७)
(१७) सनातन धर्म और आर्य समाज
(प० गंगाप्रसाद उपाध्याय) ।=)

ENGLISH PUBLICATIONS

1 Introduction to the Commentary on Vedas 2/8/
2 Kenopanishat (Translation by Pt Ganga Prasad ji, M A /4/
3 Kathopanishat (Pt Ganga Prasad M A Rtd Chief Judge) 1/4/
4 Aryasamaj & International Aryan League Pt Ganga Prasad ji Upadhyaya M A /1/
5 Voice of Arya Varta (T L Vasvani) /2/
6 Truth & Vedas (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) /6/
7 Truth Bed Rocks of Aryan Culture (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) /8/
8 Vedic Culture (Pt Ganga Prasad Upadhyaya M A) 3/8/
9 Aryasamaj & Theosophical Society (Shiam Sunder Lal) /3/
10 Wisdom of Rishis (Gurudatta M A.) 4/ /-
11 The Life of the Spirit (Gurudatta M A) 2/ /
12 A Case of Satyarth Prakash in Sind (S Chandra) 1/8/-
13 In Defence of Satyarth Prakash (Prof Sudhakar M A) /2
14 Universality of Satyarth Prakash /1/
15 Tributes to Rishi Dayanand & Satyarth Prakash (Pt Dharma Deva ji Vidyavachaspati) /8/
16 Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati) /8/-
17 Elementary Teachings of Hindusim /8/ (Ganga Prasad Upadhyaya M A)
18 Life after Death " 1/4/-
19 Philosophy of Dayanand " 10/
20 Agnihotra (Dr Satya Prakash) 2/8
21 Daily Prayer of An Arya /8/
22 The Constitution of Arya Samaj 20 n P

नोट—(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूपमें भेजें।
(२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ २ लिखें।
(३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा आना चाहिए।

इस बार छोटे २ टैक्टों पर निम्न प्रकार विशेष रियायत दी जायगी—

	मूल्य प्रति	सैकड़ा	नैट मूल्य सैकड़ा	
१ आर्यसमाज के मन्तव्य	)०६ प्रति	५)	४)	,,
२ शंकासमाधान	)०३ ,,	३)	२)५०	,,
३. पूजा किसकी	)०३ ,,	२)५०	२)	,,
४. आर्यसमाज	)०३ ,,	२)५०	२)	,,
५. भारत का एक ऋषि	)०६ ,,	५)	४)	,,
६. ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा	)०६ ,,	५)	४)	,,
७. गो करुणानिधि	)०६ ,,	४)	३)५०	,,
८ गोहत्या क्यों ?	)१२ ,,	१०)	८)	,,
६ चमड़े के लिये गोवध	)१८ ,,	१५)	१२)	,,
१० गोगान	)०३ ,,	२)५०	२)	,,
११, सन्ध्यापद्धति	)१२ ,,	१०)	६)	,,
१२. मांसाहार घोर पाप	)१२ ,,	१०)	६)	,,
१३ आर्य शब्द का महत्व	)०६ ,,	७)५०	६)५०	,,
१४ दशनियम व्याख्या	)०६ ,,	७)५०	६)५०	,,
१५. तीर्थ और मोक्ष	)०६ ,,	७)५०	६)५०	,,
१६. ग्रहण और दान	)०६ ,,	७)५०	६)५०	,,
१७. भारतवर्ष में जाति भेद	)०६ ,,	७)५०	६)५०	,,
१८. भारत में ईसाई षड्यन्त्र	)२५ ,,	२०)	१८)	,,
१६. ईसाईयों से सौ प्रश्न	)१२ ,,	१०)	६)	,,
२० स्वतन्त्रता खतरे में	)०३ ,,	२)५०	२)	,,
२१. वैदिक राष्ट्र धर्म	)०२ ,,	१५)	१२)	,,
२२ प्रजापालन	)०५ ,,	३॥)	३)	,,
२३. नारायण स्वामीजी की संक्षिप्त जीवनी	)०६ ,,	५)	४)	,,
२४ सिनेमा मनोरंजन या सर्वनाश	)१२ ,,	१०)	६)	,,
२५, सत्यार्थप्रकाश की रक्षा में	)०६ ,,	५)	४)	,,
२६. मुर्दों को क्यों जलाना चाहिए ?	)०६ ,,	७)५०	६) ५०	,,
२७. आर्यसमाजों के सा स. का कार्यक्रम	)०६ ,,	५)	४)	,,
२८. आर्य समाज के नियमोपनियम	)०६ ,,	७)५०	६)५०	,,

रामगोपाल
सभा मन्त्री

आर्य समाज का इतिहास

सचित्र प्रथम और द्वितीय भाग

इस सभा द्वारा श्रीयुत पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत आर्य समाज के इतिहास का प्रथम और द्वितीय भाग छप कर बिकने लगे हैं। इतिहास की भूमिका आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान तथा पंजाब सरकार के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्रीयुत डा० गोकुलचन्द जी नारंग, एम० ए० पी० एच० डी० ने लिखी है। ग्रन्थ सजिल्द हैं और $\frac{१८\times२२}{८}$ के आकार पर हैं। कागज व छपाई उत्कृष्ट है। स्थान २ पर लाइन ब्लाक दिये गये हैं।

महर्षि की जन्म तिथि, आर्य समाज स्थापना तिथि, महर्षि की मृत्यु कैसे हुई इत्यादि विवादास्पद विषयों पर परिशिष्ट रूप में मूल्यवान सामग्री दी गई है।

प्रारम्भ से सन् १९०० ई० तक के इतिहास में आर्य समाज की स्थापना से पहले की धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति, महर्षि दयानन्द का आगमन, आर्य समाज की स्थापना, प्रचार युग, अन्य मतों से संघर्ष, संगठन का विस्तार, संस्था युग का आरम्भ आदि विषयों का समावेश है। शैली बड़ी रोचक और चित्ताकर्षक है।

दो भाग छप चुके हैं और तीसरा भाग तैयार किया जा रहा है।

इन ग्रन्थों की सामग्री के एकत्र करने, बढ़िया से बढ़िया रूप में इनको छपाने में तथा चित्रादि के देने में सभा का बहुत व्यय हुआ है। इस राशि की शीघ्र से शीघ्र प्राप्ति आवश्यक है जिससे कि वह तीसरे भाग की छपाई में काम आ सके।

सभा ने यह विशाल आयोजन प्रदेशीय सभाओं, आर्य समाजों, आर्य नर नारियों के सहयोग के भरोसे बहुत खटकने वाले अभाव की पूर्त्यर्थ किया है। अत. प्रत्येक आर्य समाज और आर्य नर नारी को इस ग्रन्थ को शीघ्र से शीघ्र अपना कर अपने सहयोग का क्रियात्मक परिचय देना चाहिये।

प्रत्येक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज तथा आर्य संस्था के पुस्तकालय में अनिवार्य रूप से ये ग्रन्थ रहने चाहियें। यह विषय इच्छा या पसन्द का नहीं है अपितु एक स्थायी रूप से रहने वाले ग्रन्थ के संग्रह करने का है जिससे वर्तमान ही नहीं आने वाली सन्तति को भी लाभ उठाने का अवसर मिल सके।

प्रथम भाग का मूल्य ४) और द्वितीय भाग का ५) कर दिया गया है। इन दोनों भागों के ५ सैट एक साथ मंगाने पर ३३$\frac{१}{३}$ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। पुस्तकों का आर्डर भेजते समय डाकखाने और निकटतम रेलवे स्टेशन का नाम स्पष्ट शब्दों में लिखा होना चाहिये।

कृपया आर्डर भेजने में शीघ्रता करें।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा केलिए मनी आर्डर और चैक इस प्रकार आने चाहियें।

मनी आर्डर

१—मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-१

२—मनी आर्डर सभा मन्त्री के नाम से नहीं आने चाहिये। इससे मनी आर्डर के मिलने मे कुछ विलम्ब हो जाने की आशंका रहती है।

३—मनी आर्डरों की कूपन पर भेजने वाले का नाम पता व राशि अनिवार्यत अंकित होने चाहिये।

चैक व पोस्टल आर्डर

सार्वदेशिक सभा तथा सार्वदेशिक पत्र के लिये यदि कोई सभा को चैक या पोस्टल आर्डर भेजें तो वे केवल **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** के नाम मे लिखे होने चाहियें। क्रास हों तो अच्छा है

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली १

❁ आर्य हवन सामग्री ❁

हर्ष सूचना

विश्व के समस्त वैज्ञानिकों डाक्टर वैद्य और हकीमों को तथा सभी यज्ञ प्रेमी भाई बहिनों को एव विश्व को समस्त आर्य समाजों को सहर्ष सूचित किया जाना है कि हमारी विश्व विख्यात आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला मे सर्व रोग नाशक सुगन्धित हवन सामग्री का निर्माण वैदिक विज्ञान के आधार पर पूर्ण वैज्ञानिक रीति से किया जाता है।

आप महात्माओं और नेताओं व विद्वानों द्वारा प्रशंसित सर्व रोग नाशक आर्य हवन सामग्री से ही नित्य यज्ञ करें और यज्ञमय जीवन बनाकर धर्म, अर्थ काम व मोक्ष को प्राप्त करें।

विश्व के समस्त नगरों में आर्य हवन सामग्री के स्थाई ग्राहकों विक्रेताओं और एजेन्टों की अविलम्ब आवश्यकता है।

देश और विदेशों में हमारी एजेन्सिया स्थापित हो रही है। एजेन्सियों के लिए आज ही लिखें।

न० १ मेवायुक्त हवन सामग्री का भाव ८०) मन है।

न० २ सुगन्धित हवन सामग्री का भाव ५०) मन है।

निवेदक—

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झण्डाधारी व्याख्यान भूषण

अध्यक्ष—आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला, सरायरुहेला देहली—५

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं। हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है, यह तेल दिमागी ताकत और आंखों की रोशनी को बढाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापिस की शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो तो ३॥)।

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों, औरों की भांति, मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ७ दिन के लेप से सफेदी का दाग पूरा आराम न हो तो मूल्य वापस। मूल्य लगाने का ३) खाने का ४) रु० है।

धनवन्तरि औषधालय, नं० ११, पो० शेखपुरा, जिला मुंगेर (बिहार)

विषय सूची

शुभावसर न खोवें !

स्वाध्याय शील श्रद्धालु, सज्जनों को मालूम हो कि स्थुलाक्षरों वाला सत्यार्थप्रकाश जिसकी टिप्पनी ढाई हजार ग्रन्थों के प्रमाणों से स्वामी वेदानन्द जी की लिखी हुई है, दूसरी बार छपने लगा है। उसमें पण्डित उदयवीर जी शास्त्री काम कर रहे हैं। यह अपूर्व ग्रन्थ बार २ नहीं छप सकता है पहली बार थोडी प्रतिया छपन से अनेकों भाई निराश रहे थे जिस न अपने मित्रों को भेंट मे देना हो वह १५ रुपये भेजकर रसीद ले लेंं छपन पर उनको पुस्तक मिल जावेगी।

स्वामी आनन्द देव, सन्यास आश्रम गाजियाबाद

तपोभूमि मासिक (मथुरा) का

दर्शनानन्द-ग्रन्थ-संग्रह विशेषा

प्रकाशन तिथि १ अप्रैल १९५९

तपोभूमि का नया बृहद् विशेषाक दर्शनानन्द ग्रन्थ सग्रह विशेषाक के रूप मे १००० पृष्ठों मे आगामी १ अप्रैल को प्रकाशित होने जा रहा है जिसमें स्वामी जी के ९० ट्रैक्ट होंगे, मूल्य ४) होगा। तपोभूमि के ग्राहकों को केवल ३॥) अतिरिक्त अर्थात् रजिस्ट्री व्यय सहित ५॥) अगाऊ भेजने पर मिलेगा। ग्लेज कागज पर ६) मे तथा सजिल्द का मूल्य ७) रुपया होगा। विशेष सुविधा जनता की विशेष प्रार्थना पर शिवरात्रि ८ मार्च (ऋषि बोधोत्सव) तक कर दी गयी है।

तपोभूमि व्यवस्थापक

२० कृष्णगञ्ज मथुरा

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

(सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष ३५ { मार्च १९५९ फाल्गुन २०१५ वि० दयानन्दाब्द १३५ } अङ्क १

वैदिक प्रार्थना

ब्रह्म जज्ञान प्रथम पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ य० १३।३॥

व्याख्यान—हे महीय परमेश्वर ! आप बडों से भी बडे हो। आपसे बडा वा आपके तुल्य कोई नहीं है। "जज्ञानम्" सब जगत् मे व्यापक (प्रादुर्भूत) हो। सब जगत् के प्रथम (आदिकारण) आप ही हो। सूर्यादि लोक "सीमत" सीमा से युक्त (मर्यादासहित) "सुरुच" आपसे प्रकाशित हैं। "पुरस्तात्" इनको पूर्व रचके आप ही धारण कर रहे हो 'वेन" आपके आनन्दस्वरूप होने से ऐसा कोई जन ससार में नहीं है जो आपकी कामना न कर, किन्तु सब ही आपको मिला चाहते हैं। तथा आप अनन्त विद्यायुक्त हो। सब रीति से रक्षक आप ही हो। सो ही परमात्मा "बुध्न्या" अन्तरिक्षान्तर्गत दिशादि पदार्थों को "विव' विवृत (विभक्त) करता है। वे अन्तरिक्षादि उपमा सब व्यवहारों में उपयुक्त होते हैं और वे इस विविध जगत के निवासस्थान है। "सत्" विद्यमान स्थूल जगत् "असत्" अविद्या चक्षुरादि इन्द्रियो से अगोचर इस विविध जगत् की योनि आदिकारण आपको ही वेदशास्त्र और विद्वान् लोग कहते हैं। इससे इस जगत् के माता पिता आप ही हैं, हम लोगों के भजनीय इष्ट देव हैं ॥

सम्पादकीय

महर्षि जन्म दिवस की पुण्य स्मृति

महर्षि दयानन्द भारत के उन सपूतों में हैं जिन्होंने भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विचार धारा में युगान्तकारी परिवर्तन करके देश की सामाजिक और राजनीतिक विचार धारा को नई प्रेरणा प्रदान की है। हो सकता है कि उन प्रेरणाओं में मूल्य का भेद हो युग प्रवर्त्तकों के समक्ष ध्येय होता है कि जाति को किस प्रकार उन्नति के पथ पर बढाया जाय और किस प्रकार वर्तमान काल को बीते हुए युग से अच्छा बनाया जाय। वे आंखें बन्द करके सभी पुरानी और नई बातों का अनुकरण करने की आज्ञा नहीं देते। यदि कोई बात पुरानी है परन्तु हानिकारक है तो केवल इसलिए उस का आदर न होना चाहिए कि वह पुरानी है। इसी प्रकार प्रचलित रेल तार आदि सभी नई वस्तुएं हैं परन्तु उपयोगी हैं कौन व्यक्ति है जो इनसे केवल इस लिए लाभ न उठाता हो कि ये नई वस्तुएं हैं।

अमेरिका के एक विद्वान् ने बड़ी अच्छी बात कही है और वह यह कि प्रत्येक पुरुष संसार में एक निर्दिष्ट कार्य करने के लिए आया करता है। यदि वह उसे न करके अन्य लोगों के लिए नियत कार्य को करने का यत्न करता है तो निश्चित है वह असफल होगा। जोसफ जेफरसन ने रंग मंच पर आने वाले नए अभिनेताओं को एक बार कहा था कि यदि मनुष्य को असफल होना हो तो उस का सुनिश्चित मार्ग यह है कि वह किसी अन्य के किए हुए कृत्यों की नकल करे। इस कथन में बड़ी सत्यता है। सफलता का अनुकरण भी सफलता के साथ नहीं किया जा सकता।

क्या आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने जो अब सर्व सम्मति से आधुनिक भारत की धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक चेतना के अग्रदूत माने जाने लगे हैं उपयुक्त नियम की सत्यता को अपने जीवनमें चरितार्थ करके नहीं दिखलाया? जब वे शीत काल की रात्रियों में गंगा के तट पर नग्न शरीर रखते हुए रेती में बैठकर देश और जाति की दुर्दशा पर विचार किया करते थे तब हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक और पेशावर से लेकर ब्रह्मा तक क्या कोई व्यक्ति था जो यह सोचता था कि —

(१) अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से निकम्मा स्वराज्य भी अच्छा है।

(२) स्वदेशी वस्तुओं को विदेशी वस्तुओं पर प्रमुखता देनी चाहिए।

(३) अस्पृश्यों और दलित वर्गों से अछूतपन दूर करके उन्हें मानवोचित अधिकार देने चाहिए।

(४) वेद समस्त मानव समाज के लिए हैं अतः प्रत्येक विधर्मी मुसलमान ईसाई यहूदी आदि का अधिकार है कि वैदिक धर्म ग्रहण करके आर्य जाति का अंग बने।

(५) बाल विधवाओं का विवाह होना चाहिए।

(६) जन्म की जाति को मिटाकर गुण कर्मानुसार वर्ण बनने चाहिए।

(७) स्त्री और शूद्र को वेदाधिकार प्राप्त होकर उनकी शिक्षा और उन्नति के मार्ग उन्मुक्त होने चाहिए।

(८) परदे की अस्वास्थ्यकर प्रथा को उठा देना चाहिए।

(९) ब्रह्मचर्य के नियम को प्रतिष्ठित कर मनुष्यों को बलवान आत्मा और शरीर वाला बनाना चाहिए।

(१०) आर्यभाषा, वैदिक धर्म एवं आर्य संस्कृति के द्वारा ही भारत तथा विश्व का कल्याण हो सकता है आदि २।

इस प्रकार के अन्य अनेक सुधारों का वह महर्षि स्वप्न देखा करता था। ब्रह्मचर्य तप और स्वाध्याय से अपने को शक्तिशाली बनाकर दयानन्द कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होता है और उपर्युक्त अनहोनी सी बातों को आचरण में लाकर दिखा देता है।

उसी का प्रारम्भ किया हुआ वह सुधार था जिसे हम आर्य समाज, कांग्रेस शुद्धि सभा दलितोद्धार सभा आदि २ के रूप में देख रहे हैं। उसने प्रचलित कुरीतियों को जिन्हें भूल से सनातन धर्म कहा जाने लगा था एक सिरे से उखाड़कर फेंक दिया। इस बात की रत्ती भर भी चिन्ता न की कि कौन उसका साथ देगा, कौन नहीं, कौन उसकी बात मानेगा कौन नहीं। उसके हृदय की विशालता उसका आत्मबल और सुधार की प्रबल इच्छा राजपथ बन कर उसके समक्ष आ गए और वह सुपथ पर बेखटके चलता रहा, आगे बढ़ता रहा और पीछे फिरने का नाम भी न लिया।

महर्षि दयानन्द के पवित्र जन्म दिवस की पुनीत स्मृति में आओ हम एक बार अपने हृदयों को टटोलें कि हमारे भीतर उपर्युक्त शक्ति है या नहीं यदि है तो उससे काम लें। नहीं तो उसके उत्पन्न करने का यत्न करें।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सम्पादकीय

हिन्दू विवाह

इन दिनों समाचार पत्रों में यह चर्चा चल रही है कि हिन्दू में चाचा ताऊओं के बच्चों का पारस्परिक विवाह उचित है या नहीं। जो लोग इन विवाहों के पक्ष में हैं वे जहां अनेक युक्तियां प्रस्तुत करते हैं वहां यह भी कहते हैं कि हिन्दू समाज में इन विवाहों के वर्जित होने से अनेक व्यक्ति मुसलमान या ईसाई बनने की सोचते रहते हैं क्योंकि उन मतों में इस प्रकार के विवाहों को मान्यता प्राप्त है। इस प्रसंग में वे कतिपय शास्त्रीय उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। जो लोग इन विवाहों का विरोध करते हैं वे यह समझते हैं कि इस प्रकार के विवाह हिन्दू समाज में अकल्पनीय है। इनके होने से हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज की वरिष्ठता का घातक आघात लगेगा। जो लोग हिन्दू समाज में इस प्रकार के विवाहों को प्रोत्साहित करने का सुझाव देते हैं वे भी अपने को हिन्दू समाज का हितैषी बताते हैं और हिन्दुओं को ईसाई या मुसलमान बनने से रोकने के एक उपाय के रूप में उपयुक्त विवाहों के प्रचलन पर बल देते हैं।

महर्षि दयानन्द ने वैदिक परम्परा के समर्थन स्वरूप निकट विवाहों को अवाञ्छनीय बताया है। हिन्दू समाज में विवाह की भावना बड़ी उच्च रही है और यह न केवल सामाजिक वरिष्ठता पर ही अपितु मानव के आत्मिक विकास पर केन्द्रित रही है। हिन्दू बहनों और भाइयों के पारस्परिक विवाहों की अनुमति इसलिए नहीं है कि उनसे प्रेम वृद्धि, वंश वृद्धि तथा नस्ल सुधार में व्यवधान उपस्थित होता है। जीव विज्ञान के पंडित जानते हैं कि पौधों की नस्लों के सम्मिश्रण से अच्छे पौधों की उत्पत्ति होती है और यही कारण है कि प्रकृति ने मिश्रित उत्पत्ति की व्यवस्था की हुई है। प्रजनन शास्त्र से भिज्ञ व्यक्ति भी निकट प्रजनन का परामर्श नहीं देते। अपने परिवार वा गोत्र से बाहर के विवाहों का अर्थ है नूतन रक्त के संचार की अवस्था का उत्पन्न किया जाना। वैदिक ऋषियों की दृष्टि में ये सब बातें थीं। वे विवाह को काम वासना के नियन्त्रण और सुसन्तानोत्पत्ति का साधन मानते थे मुसलमानों में निकट विवाहों की व्यवस्था सम्पत्ति की सुरक्षा की दृष्टि से हुई था

उनकी दृष्टि मे श्रेष्ठ सन्तान की उत्पत्ति न थी। जो लोग हिन्दुओं मे निकटवर्ती विवाहों का प्रचलन चाहते है उनकी दृष्टि में विवाह का विकृत स्वरूप ही हो सकता है जो काम वासना रगरेलियों एव भौतिकता की परिधि के चहु ओर घूमता और जिसकी दृष्टि से जाति का सुधार और मानव का आत्मिक विकास ओझल रहता है।

डार्विन महोदय लिखते है — 'जिस प्रकार प्राण विद्युत प्राण विद्युत को हटाती है आकर्षण नहीं करती इसी प्रकार निकट सम्बन्ध मे विवाह हो जाने पर जैसा आकर्षण होना चाहिए वैसा नही होता। यह नियम है कि प्राण विद्युत रयि (मनकी) विद्युत आकर्षण करती है अथवा यों कहा कि विरुद्ध प्रकार की बिजलियों मे जिस प्रकार आपस मे मेल होता है ठीक उसी प्रकार दूर के विवाह सम्बन्धों मे परस्पर मेल बढता है छूटता नहीं। अत निकट सम्बन्ध मे विवाह न होना चाहिए।'

एक दूसरे सज्जन की सम्मति है —'यदि रक्त सम्बन्ध मे विवाह किया जायगा तो सन्तान भद्दी और प्रतिभा शून्य होगी। खाने पीने और सोने मे तो वह चतुर होगी परन्तु बौद्धिक और आत्मिक कार्यों के अपेक्षाकृत अयोग्य होगी। साथ ही अधिक स्वार्थी होगी। यदि रक्त सम्बन्ध मे विवाह करने की प्रथा बन्द न हुई तो मानव जाति का विनाश अवश्यम्भावी है ससार मे आज अधिक विषय वासना पाई जाती है। रक्त सम्बन्धों की सन्तान अधिक विषयी सिद्ध हुई है। अमेरिका इत्यादि देशों में कई बार शोर मच चुका है कि इस प्रकार के विवाहोंको राज्य सरकारों द्वारा त्याज्य और दण्डनीय ठहराए जाने चाहिए ताकि अयोग्य सन्तान पैदा न हो।"

एक ओर तो रक्त सम्बन्ध त्याज्य और दण्डनीय बताए जा रहे हैं और दूसरी ओर हमारे यहा रक्त सम्बन्धों को अपनाए जाने की सोचो जा रही है। क्या यह बात हमारी मूर्खता और विकृत बुद्धि की परिचायिका नही है? क्या हिन्दू समाज के ऐसे हितैषियों से उसकी रक्षा हो सकती है?

अफ्रीका मे गोरी चमड़ी वाले मानव का भविष्य

अफ्रीका मे गोरी चमड़ी वाले मनुष्य के भविष्य पर विचार करते हुए लन्दन के 'औब्जरवर' नामक पत्र ने एक सम्पादकीय लेख मे कहा है कि "इस प्रकार का भविष्य तो है परन्तु गोरी चमडी वाला मनुष्य स्थिर रूप से शासक वर्ग के रूप में वहा (अफ्रीका) न रह सकेगा।" यह बात व्यापक रूप से स्वीकार भी की जा रही है। अल्जीरिया में फ्रास और मध्य तथा पूर्वी अफ्रीका मे ब्रिटेन उपर्युक्त भविष्यवाणी की यथार्थयुक्तता को विफल बनाने के लिए यत्नशील हैं। उन्होंने गोरी चमडी वाले मनुष्य की प्रभुता को भविष्य मे सुरक्षित करने के लिए एक सविधान की सृजना भी कर डाली है। परन्तु इन्हीं क्षेत्रों ने गम्भीरतम राजनीतिक समस्याएं उत्पन्न कर रखी हैं और काले तथा गोरे लोगो के मध्य उग्रतम सघर्ष विद्यमान है। गोरों को कालों से पृथक् करने की नीति और विधान का विरोध ही गोरों के कालों पर शासन की अवाञ्छनीयता का सूचक है। गोरा व्यक्ति यान्त्रिक नपुणताके साथर तीन प्रबल विचारधाराए भी अफ्रीका मे ले गया था—ईसाइयत जो शिक्षा देती है कि सब मनुष्य आपस में भाई २ और ईश्वर की दृष्टि में समान हैं—प्रजातन्त्र जो बहुमत के शासन का शिक्षण प्रदान करता है और जातीयता--जो कुछ भी शिक्षा नहीं देती। अफ्रीका के निवासी ने उसी उत्सुकता से इन विचारधाराओं को अपनाया है जिस उत्सुकता से हमारी यान्त्रिक प्रतिभा और कौशल से कुछ सीखा है। इस पर भी उस कहा जाता है कि वे विचारधाराए उस पर लागू नहीं होतीं। अत फ्रास के लोग कहते हैं फ्रेंच जातीयता अच्छी और उच्च है परन्तु अफ्रीकन

राष्ट्रीयता बुरी और गलत है। अंग्रेजों का जनतन्त्र पर हार्दिक विश्वास है परन्तु जब वे यह कहते हैं कि जनतन्त्र अर्सा दग्ध रूप से अंग्रेजों भारतीयों और नाइजीरिया के निवासियों के लिए अच्छा है परन्तु केनिया और मध्य अफ्रीका के निवासियों को येन केन इससे बचाना चाहिए अथवा उसे सुधारना चाहिये तो वे अपने वा असाधारण स्थिति में ग्रस्त हुआ पाते हैं।"

सब मनुष्य समान हैं परन्तु अफ्रीका में सफेद वोट या सफेद आत्मा का मूल्य काले वोट और काले आत्मा से अधिक है।

कुल भूमि का जीर्णोद्धार

इस समय गुरुकुल कांगड़ी ज्वालापुर के निकट गंगा की नहर के तट पर स्थित है। यह स्थान परिवर्तन १९२४ की बाढ के पश्चात् सुरक्षा की दृष्टि से हुआ था। इससे पूर्व गुरुकुल गंगा पार कांगड़ी ग्राम में स्थित था और वहीं पर १९०२ में उसकी स्थापना हुई थी। १९२४ की भयंकर बाढ से गुरुकुल के मकानों को बड़ी क्षति पहुंची थी। १६ १७ वर्ष तक कुल भूमि उपेक्षित अवस्था में पड़ी रही परन्तु गंगा की धारा के उपद्रवों से बची रही। इसके उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने कृषि कार्य में उस भूमि का उपयोग किया और गुरुकुल के अवशिष्ट भवन पशु शालाओं के रूप में प्रयुक्त किये गये। इसी बीच में हरिद्वार और कनखल की रक्षा के लिए सरकार ने गंगा पर एक बांध बांधने का उपक्रम किया। इससे यह आशंका उत्पन्न हुई कि बांध बन जाने पर गंगा की धारा की टक्कर सीधी गुरुकुल की इमारतों पर लगने लगी तो शेष इमारतें भी नष्ट भ्रष्ट हो जायगी। अतः कुल भूमि के उद्धार का कार्य स्थगित रखा गया। बांध बन गया है और उपर्युक्त आशंका मिट गई है।

अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस भूमि के उपयोग की एक योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत डेरी फार्म और संस्कृत पाठशाला का संचालन और साधना के अभिलाषी जनों के लिए स्थान की सुविधा की व्यवस्था है। मकानों की मरम्मत आदि में ५०००) के व्यय का अनुमान है जिसकी पूर्ति आर्य जनता से करने का निश्चय किया गया है। गुरुकुल कांगड़ी के उपकुलपति श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति की ओर से एक अपील भी प्रचारित की गई है।

गुरुकुल की पुरानी भूमि के साथ आर्य जनता का भावात्मक प्रेम सम्बन्ध है। अतः ५००) की राशि की पूर्ति शीघ्र से शीघ्र होनी चाहिये।

केरल के हरिजन कल्याण विभाग का सुझाव

पिछले दिनों केरल सरकार ने एक अस्पृश्यता विरोधी कमेटी बनाई थी उसने सुझाव दिया है कि छुआछूत को दूर करने के लिए अन्तर्जातीय विवाहों का प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। ऐसे विवाहों में पति पत्नी में से एक हरिजन होना चाहिये। कमेटी ने यह सुझाव एक प्रस्ताव पास करके प्रस्तुत किया है। हरिजन कल्याण विभाग के मन्त्री श्री क्यू० के० चाकान इस कमेटी के अध्यक्ष हैं। इस सुझाव की भावना प्रशंसनीय है परन्तु इसकी व्यवहारिकता सन्दिग्ध है। किसी को हरिजन बनाए रखते हुए सवर्ण के साथ अथवा सवर्ण को हरिजन के साथ बांध देने से उद्देश्य की सिद्धि नहीं हो सकती। इसके लिए दोनों के मन में स्पृश्य अस्पृश्य की भावना का न होना अनिवार्य है। यह उच्च शिक्षा और स्वस्थ वातावरण में रहने से ही दूर हो सकती है। इसके लिए आर्य समाज व गुरुकुलों से अधिक उपयुक्त स्थान नहीं हो सकता। यही वह स्थान है जहां ब्राह्मण और महतर का बच्चा अपने जन्म के वर्ण को भूल कर समान व्यवहार का अधिकारी बनता है। यहीं सब की आध्यात्मिक समानता सर्वाधिक अंगीकार की जाती है। यहीं पर उसका वर्ण निश्चित हो

सकता है। यदि हरिजन के घर मे उत्पन्न बच्चा गुण, कर्म और स्वभावानुसार सवर्ण के स्तर पर पहुच जाय तो उसका विवाह सवर्णों मे अवश्य होना चाहिए। सवर्ण और हरिजन की भावना के मन मे रहते हुए इनके पारस्परिक विवाह वरदान के स्थान में अभिशाप सिद्ध हो सकते है यही सब से बडा खतरा देख पडता है हरिजनो का सरकारी नौकरियो आदि की सुविधाओं का दिया जाना उचित है परन्तु इसका एक कृष्ण पक्ष भी है और वह यह कि जब तक हरिजन के नाम पर किसी को सरकारी सहायता वा सुविधा मिलती है तब तक वह उनकी प्राप्ति के लिए अपने को हरिजन बनाये रखना वा कहलाना ही पसन्द करेगा। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है। हरिजनोद्वार के पृष्ठ पोषकों को यह बात भी हृदय मे रखनी चाहिए। हरिजनों के लौकिक उत्थान से अधिक महत्व की बात छुआछूत की भावना का मिटाया जाना है। हरिजन समस्या लौकिक उत्थान से उतना सम्बन्ध नहीं रखती जितना आचारिक उत्थान से रखती है और इसका गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। सरकार छात्रवृत्तिया देकर हरिजन बच्चों के गुरुकुलों में शिक्षण का प्रबन्ध कर सकती है। सरकार को इस परीक्षण को अवश्य आजमाना चाहिए।

अणु परीक्षण बन्द किए जाय

संयुक्त राष्ट्रीय महासभा की वैज्ञानिक समिति ने अपना अणु परीक्षणों पर २२८ पृष्ठों का प्रतिवेदन गत १० अगस्त को महासभा को दे दिया था जिसका सार इस प्रकार है —

'इससे वर्तमान और भावी मानव प्राणी के लिए अज्ञात नई और बड़ी कठिनाइया उद्भूत हो रही हैं। ये कठिनाइया अपने स्वभाव से ही प्रभावित मनुष्य के वश से परे हैं।"

"ऐसे सभी कदम उठाए जाने चाहिए जो मानव प्राणी के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं। रेडियो धर्मिता को चाहे वह चिकित्सा, औद्योगिक या अन्य किसी प्रक्रिया से उत्पन्न हो अथवा अणु आयुधों के विस्फोटों के परिणाम से उत्पन्न हो, बन्द किया जाना चाहिए।

रेडियो धर्मिता की न्यूनतम मात्रा भी प्रजनन एव अन्य गम्भीर शारीरिक विकृतियों के लिये कारण बन सकती है।

कोई भी जनसमूह जो जन्म से पूर्व या जन्मकाल के समय रेडियो धर्मता से प्रभावित है अपने आगे वाली सन्तति को भी उससे प्रभावित करता जायगा क्योंकि रेडियोधर्मिता से यौन ग्रन्थियां प्रभावित हो जाती है।

'रेडियो धर्मिता से अब तक जो हानि हुई है यद्यपि उसका पूरा आकलन नहीं होसका है तथापि महत्वपूर्ण विचार की बात यह है कि रेडियोधर्मिता की वृद्धि को प्रतिरुद्ध करने के लिए किस गति से मानवीय प्रतिकार किया जाय।

रेडियो धर्मिता के दीर्घकालीन प्रभाव के बारे मे सकलित ज्ञान वैज्ञानिकों को इस बात की अनुमति नहीं देता है कि वे यह आकलन कर सकें कि थोडे से भी प्रभाव का मानव पर क्या प्रभावित परिणाम हो सकता है। विश्व की रेडियोधर्मिता में स्वल्प सी वृद्धि भी, चाहे वह अणु बम परीक्षण हो या किसी अन्य प्रक्रिया से हो, इस बात का पता चलाने से पूर्व हो कि यह रेडियोधर्मिता का प्रभाव है बडी सख्या मे मानव प्राणियों को गभीर रूप से विकलाग या विकृताग कर देगी।

"परिस्थितियों की यह माग है कि मानव अत्यधिक सावधानी से कदम बढाए क्योंकि वह अभी रेडियोधर्मिता की गभीरता को बहुत कम कर के देख रहा है।"

विशेष महत्व की बात यह है कि अणु आयुधों के विस्फोट से होने वाली रेडियोधर्मिता की, जो

अनिश्चित स्वरूप की है, जांच की जाय। इसी के कारण बड़ी चिन्ता की जा रही है।

"विश्व की जनसंख्या के बारे मे प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कुछ व्यक्ति या कुछ समूह अपने पेशे या निवास के कारण रेडियोधर्मिता से अपेक्षया अधिक प्रभावित हो सकते हैं।

रेडियोधर्मिता का प्रभाव या तो सारे शरीर पर पड़ता है या शरीरके किसी भाग विशेषपर स्नायुओं, हड्डी, यौन ग्रंथियों आदि पर रेडियोधर्मिता का प्रभाव अलग २ रूपमे पडता है जो कि अन्ततोगत्वा घातक सिद्ध होता है।

१८-२-५६ को लोक सभा में दिए श्री प०प्रकाशवीर शास्त्री के भाषण का सार

भाषायी प्रान्त रचना का निर्णय जिस दिन किया गया वह भारत के इतिहास मे दुर्दिन के रूप मे ही स्मरण किया जायगा। भाषा वार जिन प्रान्तों की सीमायें निर्धारित की गई हैं वहा शान्ति और सद्भावना की अपेक्षा अशान्ति एवं वैमनस्य का वातावरण ही दिनोंदिन उग्र होता जा रहा है। माननीय राष्ट्रपति जी को दिये जाने वाले धन्यवाद प्रस्ताव पर अधिकाश सदस्यों ने सयुक्त महाराष्ट्र, महागुजरात और करनाटक की सीमा विवादों की चर्चा की हैं। श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने पजाब की भाषा समस्या और पजाबी प्रान्त रचना के प्रश्न पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि कल तकहमारे साम्यवादी मित्र अकाली दल को साम्प्रदायिक कहते थे परन्तु कल कम्युनिस्ट सदस्य चौ० प्रताप सिंह दौलता को पजाबी सूबे का समर्थन करते हुए देखकर पजाब की नई राजनीति का कुछ आभास हुआ। आज ज्ञानी करतारसिंह जी कल के कट्टर अकाली भी जिस पजाबी सूबे का विरोध कर रहे हैं उस मरते हुए नारे को अब साम्यवादी भाइयों ने लगाने का निश्चय किया है।

पजाब की हिन्दू और सिख जनता का हित इसी में है कि पजाब को महापजाब बनाया जाय। पजाब की भाषा समस्या पर विचार व्यक्त करते हुए श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि आर्य समाज एक विशुद्ध राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक सगठन है जो अब तक सक्रिय राजनीति से कोसों दूर रहा है। पजाब की भाषा समस्या राष्ट्र भाषा हिन्दी की समस्या न होकर मातृ भाषा हिन्दी की समस्या थी। माननीय प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू तथा गृह मन्त्री माननीय प० गोविन्द वल्लभ पन्त जी के सार्वजनिक आश्वासनों के पश्चात् ही सत्याग्रह स्थगित किया गया परन्तु दुख है कि सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए कोई गम्भीर पग नही उठाया यदि यही उपेक्षा वृत्ति देर तक चली तो पजाब मे इसके कुछ अकल्पित परिणाम भी निकल सकते हैं। सरकार को इस समस्या के समाधान के लिए शीघ्र ही उचित कार्यवाही करनी चाहिए।

मा० तारासिंह का आरोप आर्य नेताओं का वक्तव्य

मास्टर तारासिंह द्वारा गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती के अवसर पर पटनासिटी गुरुद्वारा में आयोजित सार्वजनिक सभा मे दिये गये भाषण के कुछ अ श पर आर्यसमाज के नेताओं ने आपत्ति प्रकट की है।

एक वक्तव्य में उन्होंने कहा है—समाचार पत्रों मे गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती के अवसर पर पटना सिटी मे आयोजित जनसभा में भाषण देते हुए प्रसिद्ध अकाली नेता मास्टर तारासिंह ने आर्य समाज पर निम्नलिखित आरोप लगाया है-आर्य समाज ने हिन्दू और सिख के बीच मत-भेद पैदा किये हैं। आर्यसमाज ने हिंदी का नारा देकर सिखों की आलोचना की, उसने पूर्व की मोना जाति को हिंदू की संज्ञा देकर हिन्दू और सिक्ख के बीच मत भेद को उकसाया है।

'सार्वदेशिक पत्र' के स्वामित्व तथा अन्य बातों का विवरण

१—प्रकाशन का स्थान—	दयानन्द भवन (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-१
२—प्रकाशन का समय—	मास की १ या २ तारीख को प्रकाशित होता है।
३—मुद्रक का नाम—	रघुनाथ प्रसाद पाठक
जातीयता—	आर्य
पता—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-१
४—प्रकाशक का नाम—	रघुनाथप्रसाद पाठक
जातीयता—	आर्य
पता—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-१
५—सम्पादक का नाम—	मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सहायक सम्पादक—रघुनाथप्रसाद पाठक
जातीयता—	आर्य
पता—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-१
६—पत्र के स्वामी का नाम—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-१

मैं रघुनाथप्रसाद पाठक घोषणा करता हूँ कि जहाँ तक मेरा ज्ञान और विश्वास है उपर्युक्त विवरण ठीक है।

रघुनाथप्रसाद पाठक

१-३-५६ प्रकाशक

मास्टर तारासिंह ने हिन्दू सिक्ख एकता का जो नारा लगाया है, उसका हम समर्थन करते है किन्तु पंजाब के विवाद को बिहार में छेड़कर उन्होंने बिहार मे हिन्दू-सिख की एकता को भंग करने का प्रयास किया है। आर्यसमाज सदा से हिन्दू-सम्प्रदायों को एक करने का प्रयास करता रहा है। जातिवाद और पंथवाद का आर्यसमाज सदा से विरोधी रहा है। सिखों के गुरुओं को आर्यसमाज हिन्दू धर्म से पृथक् नहीं मानता अपितु उनके प्रति हिन्दू सत समझकर श्रद्धा प्रकट करता है। सिखों का जहा तक धार्मिक स्वरूप है, आर्यसमाज उसे हिन्दुओं का ही भेद मानता है किन्तु उनके राष्ट्रीय एकता विरोधी राजनैतिक करम का आर्यसमाज सदा से विरोधी रहा है।

भाषा समस्या के सांस्कृतिक प्रश्न को राजनीति में मास्टर जी ने उलझाया है और वे अब कांग्रेस-अकाली समझौते को जिसके अनुसार क्षेत्रीय फार्मूला स्वीकृत हुआ था तोड़ रहे हैं।

❀

आत्म-दर्शन कैसे हो ?

[लेखक—श्री स्वामी गगा गिरि जी, आचार्य, गुरुकुल महा विद्यालय, रायकोट, (लुधियाना)]

आत्मा को जानना आसान नहीं है। क्योंकि प्रकृति से उत्पन्न ज्ञानेन्द्रियों की यह सामर्थ्य नहीं है जो ये आत्म-दर्शन कर सकें।

इन्द्रिया, आत्मा को बाह्य पदार्थों की ओर ही ले जाती है। 'नान्तरात्मा" आत्मा को अन्तर्मुख नहीं होने देती हैं। जितना काल आत्म प्रकृति के सग मे लगा रहता है उतना काल अज्ञान रूप अन्धकार मे पडा रहता है। महाभारत का उदाहरण आपके सम्मुख है। एक ओर दुर्योधन है जो प्रकृति के साथ चिपटा हुआ है। योगिराज श्री कृष्ण जी दुर्योधन को कहते हैं कि "तू विद्वान् तथा विचारशील है क्या तू यह नहीं जानता है कि उलटे मार्ग पर चल कर किसी का सुख नहीं प्राप्त हो सकता है। दुर्योधन ने भगवान् को उत्तर मे कहा कि भगवन्!

"जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः,
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
केनापि देवेन हृदि स्थितेन,
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

अर्थात् मैं धर्म को जानता हू परन्तु मै उस के अनुकूल कर्म नहीं करता हू। पाप को भी जानता हूं, परन्तु उससे हट नहीं सकता हू। योगिराज ने पुन पूछा कि "ऐसा क्यों हो रहा है ? दुर्योधन बोला कि श्रीमान्! मुझ मे कोई देव विद्यमान् है वह जिस ओर मुझे लगाता है मै वैसा ही करता हू।

बस यहा पर लोगों ने भूल की है। आज कल भी बहुत से मत ऐसे हैं जो कहते है कि —

"करे करावे आपे आप,
मानस के कुछ नहीं हाथ।"

अर्थात् सब कुछ परमात्मा ही करता है। मनुष्य के हाथ मे कुछ नहीं है। यह विचार आजकल के ससारी लोगों का है यदि भला और बुरा परमेश्वर ही कराता है तो दुःख सुख भी परमेश्वर ही भोगे। क्योंकि शस्त्र को कोई दण्ड नहीं देता है दण्ड तो शस्त्र चलाने वाले को ही मिलता है। इसी प्रकार मनुष्य भी शस्त्र रूप है। इसे बुरे और अच्छे मार्ग में चलाने वाला यदि परमात्मा ही है तो फल मनुष्य को न मिलना चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं होता। दुर्योधन ने भी गलत समझा। उसको भला देव कौन कह सकता है ? जो मनुष्य को भले मार्ग मे नहीं लगने देता और बुरे मार्ग मे चला रहा है वह तो राक्षस है। वह राक्षस कौन है ? महाभारत शान्तिपर्व मे युधिष्ठिर का भीष्म से प्रश्न है कि इस मनुष्य का शत्रु कौन है ? इसका उत्तर भीष्म ने इस रूप में दिया है —

एकः शत्रुः न द्वितीयोऽस्ति शत्रुः।
अज्ञान तुल्य पुरुषस्य राजन् ॥
येनावृतो हि कुरुते प्रमत्तः।
घोराणि कर्माणि सुदारुणानि ॥

इसका भाव यह है कि —"राजन्! इस पुरुष का शत्रु एक मात्र इसका अपना अज्ञान ही है। जब इसका आत्मा अज्ञानावृत हो जाता है तो यह अनेक ऐसे घोर कम मनुष्य जन्म मे आकर कर जाता है किसका फल कितने ही जन्मों मे भोगना पड़ता है।

अज्ञान को भी मनुष्य ने समझा नहीं है कि "अज्ञान क्या है ?" किसी सन्त ने कहा है —

"मन जानत सब बात, जानत ही अवगुण करे।
काहे की कुशलात, हाथ दीप कूएं परे।"

अर्थात् हर एक मनुष्य का मन इस बात को जानता है कि यह कर्म भला है। जानते हुए भी उस मार्ग में चलता नहीं। साथ ही यह भी जानता है कि यह काम बुरा है--इसे नहीं करना चाहिए—फिर भी उससे रुकता नहीं है। यह बात ठीक ऐसे ही है जैसे कि 'किसी ने हाथ में दीपक भी पकड़ा हुआ है और फिर वह कूप में गिरता है'। आजकल के मनुष्यों की भी यही अवस्था है। दूसरों को तो उपदेश देते फिरते हैं परन्तु अपने आपका उन्हें पता नहीं होता कि व क्या है? मेरी आप बीती से पाठकों को यह बात भली भांति समझ में आ जाएगी। लगभग ५० वर्ष की घटना है जब कि गुरुकुल रायकोट नाभा स्टेट के महोली गांव में स्थित था। उन दिनों एक बार "मैं और एक अन्य महात्मा दोनों मण्डी अहमदगढ के स्टेशन पर उतरे। एक भगोर जिसके कन्धे पर बहगा था हमारे साथ मिल गया। मिलते ही उसने अपने व्याख्यान को प्रारम्भ कर दिया। चार कोस तक वह हमारे साथ रहा-उसने अपना व्याख्यान बन्द नहीं किया। विषय था 'साधु कैसा होना चाहिए?" हम दो श्रोता थे और वह वक्ता। यह भी नहीं कि "वह विद्वान् था" सर्वथा अनपढ था। बुल्ले शाह व वारेशाह के ढल्ले मार रहा था। जब वह हमसे अलग हो गया तो मैंने अपने संगी सन्यासी से कहा कि बताओ अब उपदेश किसको करोगे? इस भगोर को चाहिए तो यह था कि हम दो सन्यासियों से कुछ न कुछ जीवनोपयोगी उपदेश ग्रहण करता जिससे उसके अपने जीवन का सुधार हो पाता। परन्तु नहीं—इसके विपरीत वह हम ही को उपदेश देता रहा।

यह है अज्ञान की महिमा। अपने आपको जाने बिना आदमी को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं होता है। कर्त्तव्य का पालन करना ही भगवान् की उपासना है। ज्ञान कर्म, उपासना से ही मनुष्य को अपने स्वरूप की पहिचान होती है। इस भाव को प्रकट करते हुए श्री कृष्ण जी महाराज अर्जुन को उपदेश देते हैं कि—

"उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं, नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धु रात्मैव रिपुरात्मनः॥
गीता अ० ६।५॥

इसका भाव यह है कि मनुष्य को ज्ञान द्वारा अपनी आत्मा का उद्धार करना चाहिए। पवित्र किया हुआ आत्मा अपने आपका मित्र बन जाता है। अज्ञान के कारण मलिन आत्मा मनुष्य का शत्रु बन जाता है-भर्तृ हरि ने भी इसी बात पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि —

"यावत् स्वस्थमिदं कलेवर-
गृहं यावच्च दूरे जरा,
यावच्चेन्द्रिय शक्तिरप्रतिहता
यावत्क्षयो नायुषः।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा
कार्यप्रयत्नो महान्।
प्रोद्दीप्ते भवने तु कूप खननं
प्रत्युद्यमः कीदृशः॥

इसका भाव यह है - हे मनुष्य! जितना काल तेरा शरीर स्वस्थ है अर्थात् शरीर में बल कायम है—इन्द्रियां भी बलवती हैं--वृद्धावस्था और आयुक्षय भी नहीं है तभी तक आत्मा के कल्याण के लिए यत्न किया जा सकता है। जब शरीर अस्वस्थ हो गया है इन्द्रियां भी शिथिल और बल हीन हो गई हैं और इस प्रकार मनुष्य मृत्यु के समीप पहुँच गया है उस समय आत्मा को जानने का प्रयत्न करना ऐसे ही व्यर्थ है जैसे कि घर को आग लगने पर कूप का खोदना व्यर्थ है। अर्थात् युवावस्था में ही आत्मा का जानना सम्भव है वृद्धावस्था में नहीं।

टङ्कारा वाले की टङ्कार

(स्व० आचार्य रामदेव जी के एक भाषण का सार)

"जिस समय भारतवर्ष में अनेक मत मतान्तर फैले हुए थे, जिस समय वैदिक सूर्य पर अज्ञान के बादल मडरा रहे थे उस समय जगद्गुरु दयानन्द ने टकारा मे प्रणव-धनुष की टकार की थी। मौर्वी वाले की टकार ने किरानी, कुरानी, पुराणी, जैनी, सनातनी सब को सोते से जगा दिया था। टकार को सुन कर मुहमदी तलवार गिर पडी। मिश्र के भव्य मीनार गूज उठे, चीन, जापान और अमेरिका के अमर सस्कृत परिवार जाग उठे। 'प्रथमा सस्कृति विश्ववारा' का वैदिक नाद फिर होने लगा। जोरोस्टर, कनफ्यूशस और ईसा मसीह ने हा मे हा भरी। टकारे की टकार कुछ अद्भुत थी। वह एक धधकती ज्वाला थी जिसमे ससार के मत मतान्तर भस्म हो रहे थे। जिसे देख कर एन्ड्र जेक्सन डेविस जैसे ऋषि एक बार अवाक् रह गये थे। ईसाई मुसलमान और सनातनी उस आग को बुझाना चाहते थे पर वह धधकती जाती थी। ज्वाला ने मत मतान्तरों को भस्म करके सत्य सनातन वैदिक धर्म के कुन्दन को ससार के समक्ष ला रखा। ससार ने समझ लिया कि सब मत वैदिक धर्म के पवित्र स्रोत से निकले हैं और सम्पूर्ण सचाई का मूल वैदिक धर्म है।"

श्री सर सय्यद अहमदखा ऋषि दयानन्द के मित्र और प्रशसक थे कुरान की व्याख्या करने का उनका ढग ऋषि दयानन्द के ढग से मिलता है। दयानन्द कहते हैं कि वेदों के देव वैयक्तिक देव नहीं प्रत्युत प्रकृति की शक्तिया हैं ठीक इसी प्रकार सर सय्यद भी अपने तफसीर उल कुरान मे देवताओं की प्राकृतिक शक्तियों के ही रूप मे व्याख्या करते हैं। दयानन्द ने वेद की गाथाओं की आलकारिक व्याख्या की है ठीक इसी प्रकार सर सय्यद ने मुहम्मद पैगम्बर की विद्युतीय अश्व की पीठ पर स्वर्ग में जाने की गाथा की आलकारिक व्याख्या ही की है। जैसे महर्षि दयानन्द ने स्वर्ग और नरक को मानसिक अवस्थाए कहा है ठीक इसी प्रकार सर सय्यद ने बहिश्त और दोजख का वर्णन किया है। लन्दन मे हुए 'विश्वधर्म सम्मेलन' में मुसलमान प्रचारक ख्वाजा कमालुद्दीन ने इस्लाम' पर निबन्ध पढते हुए नरक की अग्नि की मानसिक चिन्तानल से और स्वर्ग की अप्सराओं की देवियों, बहिनों और लडकियों से तुलना की थी। यही अवस्था ईसाइयत की भी है। ईसाइयत पर भी वैदिक धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा है।

सबसे पहले सेन्ट अगस्टाइन ने यह उद्घोषित किया ईसाई धर्म सदा से चला आया है परन्तु ईसा मसीह ने जब उस धर्म का प्रचार आरम्भ किया तब से वह धर्म क्रिश्चियनिटी कहाया है। उसने बाइबिल के त्रित्ववाद Trinity की वैदिक व्याख्या की है। Father, Son तथा Holy Gho t उसकी दृष्टि मे क्रमश सत् चित् और आनन्द है, जो कि वेद में ईश्वर का नाम है। कुछ वर्ष पूर्व डीन इन्डा ने भी लन्दन के सेन्टपाल के गिरजा घर में उपदेश देते हुए इसी प्रकार की व्याख्या की थी। सर हर्बर्ट रिस्ले ने १६११ की जन गणना रिपोर्ट में यह भविष्य वाणी की थी कि आर्य धर्म सम्पूर्ण हिन्दुओं का धर्म होकर रहेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ससार आज वैदिक धर्म को स्वीकार कर रहा है। लन्दन के 'विश्वधर्म सम्मेलन' मे सनातन धर्म के व्याख्यान प्रसिद्ध

प० श्यामशकर ने खुले तौर पर यह घोषणा की थी कि हिन्दुओं का वास्तविक नाम आर्य है धर्म की सब से बडी कसौटी वेद है। उन्होने कहा था कि पौराणिक लोग जन्म की जात पात को नहीं मानते अपितु सच्चे वर्णाश्रम धर्म को स्वीकार करते हैं। सनातन धर्म मे छुआछूत को महत्त्व नहीं दिया गया है। इसी प्रकार के विचार बुद्ध गया के महन्त की Universal Religion नामक १९२० में प्रकाशित पुस्तक में भी पाए जाते हैं। अत यह कहना अनुचित न होगा कि ऋषि दयानन्द ने ससार के समस्त धर्मो मे एक क्रान्ति पैदा कर दी है।

परन्तु भगवान दयानन्द की यह क्रान्ति यहां तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता मे रगे हुए नवयुवकों के दिल और दिमाग को बदलने के लिए वेदों की ओर चलो का सुन्दर सन्देश सुनाया है। इस सन्देश मे फ्रास की महाराज्य क्राति से कम प्रभाव नहीं किया है। ऋषि के चरण चिन्ह पर चलते हुए महात्मा अरविन्द घोष ने वेदों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की जिसने वैज्ञानिक ससार मे हलचल मचा दी। इसी प्रकार डा० रेले ने अपनी Vedic Gods नामक पुस्तकमे वेदके देवताओं की Biological व्याख्या करके विद्वानों के लिए एक नया माग खोल दिया है। ऋषि दयानन्द की वेदों के यौगिक अथ करने की शैली की सचमुच विजय हुई है। इस विजय का स्वाभाविक परिणाम यह है कि ससार के बडे २ मस्तिष्क हिल गये हैं, ससार के बडे २ विकास वादियों के मुख बन्द हो गये हैं और वे दबी जबान वेदों की प्रशसा करने लग गये हैं यह है क्रान्तिकारी दयानन्दके विचार के क्षेत्र में अद्भुत क्रान्ति।

दयानन्द चौमुखी लडाई लडने वाले योद्धा थे। पाश्चात्य सभ्यता के रग में रगे भारत के नवयुवकों को अमृत पुत्रों का दिव्य सन्देश सुनाने (शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा) के लिए ऋषि ने शिक्षा जगत मे भी एक क्राति परीक्षण का बीज बोया। वह परीक्षण गुरुकुल के रूप मे है। यह परीक्षण शिक्षा के क्षेत्र में सब से श्रेष्ठ सिद्ध हो चुका है। इस परीक्षण को देखकर सयुक्त प्रात तथा पजाब आदि के शिक्षण सस्थाओं मे मातृ भाषा को महत्त्व प्रदान किया गया है।

आज स्थान २ पर जैन गुरुकुल देख रहे हैं, कहीं ऋषिकुल है तो कहीं विद्यापीठ खुले हुए हैं। इन सस्थाओं में ब्रह्मचारी बढते हैं और इनके ग्रेजुएट स्नातक कहे जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व बनारस मे All Asian Educational Conference की आयोजना की गई थी उसमें Moral Education नैतिक शिक्षा का भी एक भाग था। उस समिति के हिन्दू, मुसलमान, अग्रेज सब ने मिल कर सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पास किया था कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली समस्त एशिया में प्रचलित की जाय।

आर्य समाज की अन्य सस्थाओं ने भी भारत वर्ष की बडी सेवा की है। लाहौर के दयानन्द एग्लो वैदिक कालेज ने हजारों की सख्या मे हिन्दी और सस्कृत जानने वाले नवयुवकों को पैदा किया है।

आर्य समाज ने 'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्' के स्थान पर प्रत्येक प्राणी को वेदों का पवित्र गान सुनने का अधिकारी बनाया। आर्य समाज के अनेक कन्या गुरुकुल, कन्या महाविद्यालय तथा कन्या पाठशालाए खुल चुके हैं। आज वेद की ऋचाओं का सुन्दर उच्चारण करने वाली बहनें दिखाई देती हैं। हिंदी और सस्कृत भाषा में व्याख्यान देनेवाली महिलाए दृष्टिगोचर होती हैं। हमारे सनातनी भाई भी स्त्री शिक्षा को आवश्यक अग समझ रहे हैं। इन सब का श्रेय ऋषि को नहीं तो और किसको है? कलपती स्त्री जाति के करुण क्रन्दन को यदि ऋषि न सुनते तो भारत मा की वेणी को सवारने वाले नवयुवक न पैदा हो सकते? ऋषि ने विधवाओं का आर्त्तनाद सुना,

गौओं की पुकार सुनी, अनाथों, दलितों, पीड़ितों के दर्दे दिल की दवा दी। सैकड़ों, सहस्त्रों हिन्दू जाति की सन्तानों को विधर्मी होने से बचाने वाले आर्य अनाथालय आज भी भगवान् दयानन्द का गुणानुवाद कर रहे हैं। स्त्रियों को परदे के बन्धन से छुड़ाने वाला ऋषि न था तो कौन था?

आज अछूतोद्धार का बोलबाला है। महर्षि दयानन्द ने अपनी आर्ष दृष्टि से यह पहले ही देख लिया था कि जब तक अछूतोद्धार न होगा देश का कल्याण न होगा। निस्सन्देह आर्यसमाजने ही सब से पहले अछूतोद्धार की नींव रक्खी है। यह दृश्य कितना सुन्दर था जब कि पजाब में रहतिये लोगों को समाज में मिलाया गया था। उस समय आर्यों को कुओं पर चढने से रोका गया था। बहुतों की जानें खतरे में थीं रोपड़ के आर्य वीर सोमनाथ की माता आन्त्रज्वर (टाईफाइड) से कराहती इसलिए ससार से चल बसी कि उसे लोग कुएं का पानी न पीने देते थे और वह नहर का गदला पानी पीकर रही थी।

क्या जम्मू के धर्मवीर प० रामचन्द्र की शहादत को याद कराने की आवश्यकता है जिन्होंने मेघों की शुद्धि करते हुए अपनी आखों में धूल डलवाई, डडों की मार मारे गये? उनकी याद तो जम्मू का वीर मेला दिला रहा है।

आर्य समाज ने अछूतों को छाती से लगाया। गरीबों की आह में आह भरी, ससार को विश्व प्रेम का पाठ पढ़ाया। धर्म के पवित्र नाम पर दूसरों की जान लेना तो ईसाई तथा मुसलमान भाई सिखा चुके थे और आज भी सिखा रहे हैं परन्तु धर्म की वेदी पर अपने प्राणों को न्यौछावर करना आर्य धर्म सिखाता है। विश्वधर्म की विमल पताका के नीचे शत्रु और मित्र एक हो जाते हैं। वहां अपना और पराया नहीं रहता, वहा 'अभयं मित्रादभयममित्रात' का दिव्य सन्देश गूंजा करता है। वहां मारना नहीं मरना सिखाया जाता है। आर्य धर्म विश्व धर्म है। इसके मूल में शहीदों का खून पड़ा हुआ है। इसको बेल को दयानन्द ने सींचा है। राज दरबार में खरी बातें कहीं और जान पर खेल गये। धर्मवीर लेखराम ने ऋषि के जीवन की अन्तर्लीला को अपनी पसलियों में लिखा और मुसलमान भाइयों को धर्म अमृत का प्याला पिलाया। मुनिवर प० गुरुदत्त जी को यह स्वीकार न था कि प्रतिहिंसा द्वारा अपने जीवन को टिकाये रखते। कह देते थे कि अमरता का पट्टा लिखाकर कौन आया है? अमरशहीद श्रद्धानन्द ने पानी के प्यासे को खून के कटोरे पिलाए। उनका दाग २ अपनी मूक वाणी से आज भी आर्य धर्म के प्रेम मन्त्र को सुना रहा है।

आर्य धर्म के विशाल स्वरूप में राष्ट्र धर्म समाया हुआ है। कांग्रेस के कार्यक्रम के रचनात्मक भाव ऋषि की बुद्धि की उपज है। खद्दर प्रचार, हिन्दी प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा, अछूतोद्धार तथा विदेशीय न्यायालयों का बहिष्कार आर्य ग्रन्थों तथा आर्य समाज के उपनियमों के अंग हैं। ऋषि के प्रथम सत्यार्थप्रकाश में मद्य निवारण, नमक कर तथा जंगल कानून के अत्याचार के विरोध में सब से पहले आवाज उठाई गई है। कोई भी इतिहास वेत्ता ऐसा नहीं जो भारत की राष्ट्रीय जागृति का श्रेय ऋषि को न देता हो। 'स्वराज्य' शब्द वेद का शब्द है और आर्य समाज स्वराज्य दिलाने वाला चर्च है—स्वराज्य हर प्रकार का—मन का, आत्मा का और देश का। राष्ट्रीय जागृति का आर्य समाज से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध समझा जाता है कि जो लोग भारत की स्वाधीनता के विरोधी (थे) वे आर्य समाज को सबसे अधिक बुरा भला कहते थे। कार्डिव नामक प्रसिद्ध लेखक Lost Dominion के पृष्ठ २१८ पर लिखते हैं कि हिन्दुओं को ईसाई तथा मुसलमानों से बचाने का श्रेय आर्य समाज को है।

आगे चलकर यही लेखक आर्यसमाज को बड़ा बुरा भला कहते हैं और आर्य समाज को ईसाई तथा मुसलमानों का सब से बड़ा शत्रु बताते हैं।

लार्ड मोरले जैसे सभ्य पुरुषों ने Ninteenth Century and after नामक पत्रिका के British Democracy of Indian Government शीर्षक में निम्न प्रकार लिखा है —

'What you call unrest is not political demoralisation though it produced a whole rash school of resent ful iconoclasts just as the Italian Renaissance did or just as the German reformation had to do with anabaptist and the peasants revolt It is not political demoralisation, stillless it is crafty religious Reaction using the natural dislike of a lien rule unrest has a spiritual inwardness that you never try to under stand and whatever else it is, do not describe it as Neo—Hinduism or Brahmanical reaction It is a strange medley of asceticism self restraint and the kind of patriotism that discovers in India faith, and letters finer and deeper sentiments and expression of senti ments than all that is best in the sentiment of Europe What is found in the Vedas exists no where else

यह निर्देश आर्य समाज की तरफ नहीं तो और किसकी ओर है ? इस उद्धरण में स्पष्ट तौर पर आर्यसमाज को ही सम्पूर्ण जागृति का स्रोत समझा गया है। सीलेने Expansion of England पुस्तक में लिखा था कि हिन्दू धर्म हम से कम निपुण नहीं है। उनकी सभ्यता महान् है। जिस समय ये लोग जान जावेंगे कि हम उनके पुरुखाओं के शिष्य थे तब वे हमारे अधीन कैसे रहेंगे? तब हमें अपना बिस्तर लपेटना पड़ेगा।

एक जर्मन लेखक ने Rise of Nationalism in the East पुस्तक में हिन्दुस्तान की जागृति का श्रेय महर्षि दयानन्द को दिया है। उस पुस्तक में यहां तक लिखा है कि जिसने पहले पहल बम का गोला बनाया था उसने एक वेद मन्दिर नामक मन्दिर बना कर उसमें वेदों की पूजा की थी। इस उद्धरण से इतना ही तात्पर्य समझा जा सकता है कि प्रत्येक प्रकार के आन्दोलन के विचारक अपना २ मूल वेदों से तथा वेदों के प्रचारक आर्य समाज से समझते रहे हैं। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने Indian Sociologist में लिखा था कि भगवान् दयानन्द ने निरुक्त पढाते हुए मुझे उपदेश दिया था कि भारत की आजादी क्रान्ति द्वारा हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि इन सब लोगों के विचार ठीक ही हों किन्तु यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय जागृति का श्रेय सब ऋषि दयानन्द को ही देते हैं।

इन सब बातों के होते हुए भी क्या कोई सभ्य पुरुष महर्षि दयानन्द को राष्ट्रीय जागृति का प्रवर्त्तक स्वीकार करने से इन्कार कर सकता है ? ऋषि तो सच्चे अर्थों में राष्ट्रीयता के प्राण थे। ऋषि हमारी आर्थिक दासता से ही व्याकुल न थे। वे मानसिक दासता से मुक्त करने के लिए सांस्कृतिक विजय को विशेष महत्त्व देते थे। ऋषि ने हमारे कुटुम्ब को वसुधा में फैला दिया है। इसी लिए ऋषि की राष्ट्रीय क्रान्ति अद्भुत ही थी। ऋषि भारत की सांस्कृतिक विजय चाहते थे इसी लिए वे आधुनिक भारत के सच्चे अर्थ में पिता थे, वे धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक हर प्रकार की जागृति के जन्मदाता हैं। आर्य समाज उस ऋषि का ही शिष्य है। इसलिए आर्यसमाजी की दृष्टि से हमें अपने गुरु के पाद पद्म के पीछे चलना चाहिये। रोमा रोला ने ठीक ही कहा है कि आनन्द कन्द दयानन्द ने भारत की शुष्क नसों में शेर का खून डाल दिया है।

❀

"बोध रात्रि का चमत्कार"

महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज

[लेखक—ला० रामगोपाल, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]

बालक मूलशकर को पिता जी ने कहा कि आज शिवरात्रि है। रात को मन्दिर में जागरण होगा। तुम भी व्रत रखना और रात भर जाग कर भगवान शकर के दर्शन करना। सच्चे जिज्ञासु मूलशकर ने बडी श्रद्धा के साथ उपवास रखा और रात भर शिवालय में भगवान शकर के दर्शनों की इच्छा से जागता रहा। सभी भक्त जन एक २ करके सो गए। लेकिन मूलशकर दर्शनों की धुन में बार २ आखों पर पानी के छींटें मारकर जागने का प्रयत्न करता रहा और त्रिशूलधारी शकर के दर्शनों की कामना करता रहा। इतने में एक चूहा आया और भगवान शिव की मूर्त के ऊपर चढे हुए प्रसाद को खाने लगा। भगवान की मूर्त पर इस प्रकार उछल कूद मचाते हुए चूहे को देखकर मूलशकर केकोमल हृदय मे विचारों की उथल पुथल होने लगी वह सोचने लगा कि समस्त ससार का रचयिता और प्रलय करने वाला सर्वशक्तिमान त्रिशूलधारी शकर क्या यही है? जो अपने ऊपर चढ़े हुए इस साधारण से मूषक को भी हटाने की सामर्थ्य नहीं

जिस प्रकार न्यूटन ने एक सेब को वृक्ष से गिरते हुए देखकर पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का नवीन सिद्धान्त ससार के सामने रखा था। जिस प्रकार भगवान बुद्ध ने एक मृतक को देखकर परिवर्तनशील प्रकृति और नाशवान ससार का ज्ञान प्राप्त किया, इसी प्रकार मूर्ति पर चढते हुए मूषक को देखकर बालक मूलशकर के पवित्र तथा कोमल हृदय में इस जिज्ञासा का प्रादुर्भाव हुआ कि यह पाषाण—मूर्ति तो शकर नहीं सच्चे शिव की खोज करनी चाहिए। इस छोटी सी घटना से ही मूलशकर दयानन्द के नाम से विख्यात हो गए और महर्षि दयानन्द ने सच्चे शिव की खोज करने के लिए अपने गृह का त्याग कर दिया। बर्फ से ढके हुए पहाड़ों और जगलों में बिना किसी मित्र के और बिना किसी सहायता के घूमकर और अनेक महात्माओं से विद्या प्राप्त की और योग की अद्भुत क्रियाए सीखी। वर्षों तक सर्दी तथा गर्मी की चिन्ता न करते हुए महर्षि ने घोर तपस्या तथा ब्रह्मचर्य से अपने मन तथा इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी। परन्तु इतने साधु सन्तों तथा महात्माओं से मिलने पर भी उन्हें सच्चे गुरु की प्राप्ति नहीं हुई। सच्चे शकर को प्राप्त करने से पहले सच्चे गुरु की प्राप्ति होनी चाहिए। इस पवित्र भावना से दयानन्द अनेकों नदियों तथा जगलों को पार करते हुए मथुरा नगरी में पहुचे। पता चला कि यहा पर एक प्रज्ञाचक्षु महाविद्वान् महात्मा रहते हैं। दण्डी स्वामी विरजानन्द के द्वार पर जाकर दयानन्द ने दरवाजा खटखटाया। अन्दर से आवाज आई कौन है? बाहर खड़े दयानन्द ने कहा "भगवन् यही तो जानने आया हू कि मैं कौन हूँ। आज से नौ लाख वर्ष पूर्व भगवान राम जब गुरु वशिष्ठ के घर गए तो अन्दर से आवाज आई कौन? बाहर खडे भगवान् राम का भी वही उत्तर था जो कि ऋषि दयानन्द का। दरवाजा खुला और भगवान कृष्ण की जन्म भूमि मथुरा नगरी में सच्चे गुरु को सच्चा शिष्य मिल गया। गुरु विरजानन्द के पवित्र हृदय रूपी नेत्रों ने भारतवर्ष की दुरवस्था को भली प्रकार देख लिया था चर्म चक्षुओं के अभाव में स्वामी विरजानन्दजी दयानन्द

जैसे सच्चे शिष्य की खोज में थे। गुरु शिष्य के इस महान मिलन ने भारत की पतनावस्था को उन्नति की ओर अग्रसर कर दिया। महर्षि दयानद ने अनेक देववाद के चक्कर में भटकी हुई मानव जाति को यह दिव्य सन्देश दिया कि इस महान ससार का रचयिता मनुष्य मात्र के हृदय मन्दिर मे विराजमान है। उसे ढू ढने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं।

दिल के आइने में है तस्वीरे यार।
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली॥

दुनिया के भूले हुए लोगो प्रभु तुम्हारे पास है। पवित्र कर्मों से मन को शुद्ध बनाकर आत्मा में निवास करने वाले इस परम पुरुष का साक्षात्कार करो। उसे पाने के लिए मस्जिदों मन्दिरों और तीर्थ स्थानों में मत भटको। ऋषि दयानन्द के पदार्पण करने से पहल आर्य जाति वेदों से सर्वथा विमुख हो चुकी थी। काशी के बडे २ पडित भी ईश्वरीय ज्ञान के बारे में बहुत कम जानते थे। पाच हजार वर्षों से निरन्तर पतन की ओर जाती हुई भारतीय जनता को बडी सावधानी से गुरुवर दयानन्द ने वेद की ओर मोडा। मौलवी और पादरी तन्जीर और तबलीग से करोडों को पतित करके भारत माता के शरीर को बाटने की दूषित योजनाए बना रहे थे। महर्षि की दूरदर्शिता ने इस भारी षडयन्त्र को भाप लिया और बूढे भारत की अखडता को अक्षुण रखने के लिए आर्य जाति को शुद्धि रूपी अमृतपान करा दिया। गुलामी की तारों में जकडी हुई भारत की जनता को देखकर स्वामी की आत्मा रो उठी। अग्रेजी राज्य के अन्तर्गत सर्व प्रथम सत्यार्थ प्रकाश में अपने देश में अपने राज्य की दिव्य घोषणा करके क्रान्तिकारी दयानन्द ने देश के नवयुवकों को क्रान्ति का शख फूक दिया। भारत को शक्तिशाली बनाने के लिए पहले हिन्दू जाति को शक्तिशाली बनाना चाहिए और हिन्दू को शक्तिशाली बनाने के लिए इसकी बिगडी हुई अवस्था को ठीक रखना आवश्यक है। यह सोचकर महाष ने जाति पाति का भेद हटाकर गुण कर्म स्वभाव से वर्णव्यवस्था का प्राचीन सिद्धान्त अपनाया। जाति के शरीर को सुरक्षित रखने के लिए छूआछूत के भूत को हटाकर गुणों के आधार पर मनुष्य मात्र को बराबर का दर्जा दिया। भगवान बुद्ध की जिस गलत अहिसा न भारतवासियों के हृदय में हीन भावना उत्पन्न करके बार २ विदेशी आक्रमणों के सामन झुक कर देश वासियों के विचारों को निबल कर दिया था स्वामी दयानन्द के इस सिद्धान्त से कि सबके साथ धर्मानुसार यथा योग्य व्यवहार करना चाहिए न देश की शक्ति का सगठित करके जनता में अपन पराये को समझन की शक्ति उत्पन्न कर दी। इसीलिए अग्रेजी राज्य मे महाराजा पटियाला के माध्यम से आय समाज पर राजद्रोह का षडयन्त्रकारी आक्रमण करके सैकडा आय वीरों को बन्दी बना लिया गया था और राजद्रोहात्मक मुकदमें चलाये गए। महाष दयानन्द का आर्य समाज उस जलती हुई भट्टी मे स कुदन बन कर निकला। अग्रेजी राज्य में विदेशी सत्ता के अनुयायी मौलवी और पादरी न आय समाज को समाप्त करन के लिए एडी से चोटी तक का जोर लगाया। पडित लेखराम को छुरा भोंका गया। स्वामी श्रद्धानन्द पर गोलिया दागी गई। लेकिन दयानन्द का क्रान्तिकारी आय समाज आगे ही बढता गया। हैदराबाद में अत्याचार हुए और आर्य समाज न अपन अद्वितीय सगठन का परिचय दिया। अभी कल पजाब में राष्ट्रभाषा हिन्दी की रक्षा के लिए जो शानदार आन्दोलन चलाया गया और अनेकों बलिदान हुए उससे महर्षि के लगाये हुए आर्य समाज रूपी शानदार सगठन न एक बार फिर दिखा दिया कि यह बोध रात्रि की तपस्या का महान चमत्कार है।

×

महर्षि के प्रति :—

[श्री जयदेव शरण 'विद्यावाचस्पति' नगरनायक आर्य वीर दल, सम्भल]

अमर तुम्हारा है बलिदान !

वसुधा की छाती पर जब छाया था भीषण अन्धकार।
दानवता से पीड़ित मानव उठ उठ गिरता था बार बार ॥
जब पथ का कण कण भटक रहा था पाने को आलोक प्रखर—
तुम दिव्य ज्योति लेकर उतरे भू पर हे ऋषिवर, नमस्कार !
दिया जगत को जीवन-दान—
अमर तुम्हारा है बलिदान !!

दो आसू में घुल गई मनुष्यों की जब सचित अभिलाषा !
जब कामी कुटिल अनाचारी करते धर्मों की परिभाषा !!
सब की अपनी अपनी डफली, सब का अपना राग नया—
ओ नवयुग निर्माता, तब तुम जग में लाए नव आभा !
किया जगत को ज्ञान प्रदान—
अमर तुम्हारा है बलिदान !!

महापर्व की मौन रागिनी सुन पृथ्वी को होश हुआ !
जग की आखें खुलीं, शिराओं मे विस्फुरित जोश हुआ !!
दयानन्द की बोध रात्रि ने चीर दिया युग तिमिर सघन—
दिनकर की उस प्रखर किरण से अन्धकार का नाश हुआ !!
आज तुम्हारा पर्व महान्
अमर तुम्हारा है बलिदान !!

अब अधर्म का चूहा फिर से, आर्य मूर्त को तोल रहा !
किन्तु तुम्हारा सामगान सुन कर मानव मन बोल रहा—
"झुक न सकेगी आर्य पताका धरती को झुकना होगा !
इसी ध्वजा की छाया अपनाने को अम्बर डोल रहा ॥"
तुमने गाया गान महान !
अमर तुम्हारा है बलिदान !!

फहराने को यही पताका तुमने किया मूक विषपान !
भूल नहीं पायेगी तुमको भारत की गर्वित सन्तान !!
मानवता के हे अभिमान,
धन्य तुम्हारा है बलिदान !!

आर्य समाज भस्मासुर पैदा करने से पीछे हटे

[ले०—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री]

आचार्य दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना वेदप्रचार और उसकी रक्षा एवं प्रसार के लिए किया था। अपने जीवन काल से आर्य समाज इस दिशा में कार्य करता आ रहा है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि वेदप्रचार का कार्य पूर्ण हो गया है। वस्तुत देखा जावे तो वह अभी थोडा ही हुआ है और इस दिशा में अभी बड़े २ कार्य करने को शेष हैं—जिनके करने के लिए हमें जागरूक रहना चाहिए।

यद्यपि अन्य सम्प्रदायवादियों की भाति आचार्य दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना कर किसी नये पथ को जन्म नहीं दिया और न वर्तमान आर्यसमाज किसी पथ के रूप में प्रचलित ही है फिर भी कुछ ऐतिहासिक तथ्यों का सामना करन से वह भी बच नहीं सक रहा है। भारत देश वह देश है जहा पर समय समय पर भिन्न २ आचार्यों ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार किये। जब तक वे जीवित रहे उनके सिद्धान्त उनके बताये रूप में चलते रहे। उनके बाद उनकी शिक्षायें उनके ग्रन्थों आदि के आधार पर चलती रहीं। कुछ समय बाद उनके सिद्धान्तों की ऐसी व्याख्या उन्हीं के अनुयायियों ने निकाली कि उनसे भिन्न २ भेद खडे हो गये और उनकी शिक्षाओं के नाम पर ही भिन्न २ पन्थ खडे हो गये। बौद्ध धर्म का दृष्टान्त अपने सामने है। शकर द्वारा प्रचारित मायावाद और आज कल के नवीन वेदान्त में भी कुछ न कुछ अन्तर अवश्य है। परमेश्वर के अस्तित्व के साथ शैतान के अस्तित्व की कल्पना जिन धर्मों में पायी जाती है—वे वस्तुत शकर के इस ब्रह्म और अविद्याके ही रूप हैं। नवीन वेदान्त को भी सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में नास्तिक क्यों कहा गया है?—इस लिए कि नवीन वेदान्त मे भी अविद्या की शक्ति ब्रह्म से भी बढ चढ गयी है। साथ ही आज यह भलीभाति प्रकट हो गया है कि मायावाद भी एक प्रच्छन्न बौद्ध विचारधारा है। जिस प्रकार कई आचार्यों की शिक्षाओं को लेकर उनके विभिन्न अनुयायी वर्गों मे यह कहते हुए भेद खडे हो गये कि उनकी अपनी मानी हुई व्याख्या अथवा विचार धारा उनके आचार्यों की शिक्षा है-ऐसा ही आगे चलकर कहीं आर्यसमाज में भी भेद न पैदा हो जावे। आर्यसमाज की शिरोमणि सस्थाओं को और आय विद्वानों को इससे सचेत रहना चाहिए। कहीं इतिहास की घटनायें हमारे ऊपर भी अपना प्रभाव न जमा लेवें।

दो नीतिया हमारे सामने रहीं। एक तो है विष्णु की नीति जिसमे बुद्धिमत्ता, कुशलता और निपुणता है और दूसरी है भोले बाबा शकर की नीति। इस नीति मे अपने विनाश के लिए ही भस्मासुर पैदा किये जाते हैं। शकर का काम भस्मासुर पदा करना रहा है। हम पाठ तो यह पढते पढाते हैं कि "विष्णो कर्माणि पश्यत—यतो व्रतानि पस्पशे"। परन्तु डर है कि कहीं भस्मासुर बनान के मार्ग पर न चल पडे। इससे अपना ही विनाश हो जावेगा। आज तक हम ऋषिवर के सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे परन्तु इस में सदेह नहीं कि अनेकों भस्मासुर भी ऐसे बनाये कि जिन्होंने हमे ही हानि पहुचायी। पहले तो फोटो छापकर, तारीफ करके ऐसे व्यक्तियों को आशीर्वाद दिया जाता है। बाद में जब वे अपना खेल खेलने लगते हैं तब आख खुलती है और उन्हें निकालने

की बात चलती है। परन्तु इतने समय मे वे पर्याप्त प्रभाव जमा लेते हैं। नाम लेने की जरूरत नही है परन्तु यह सब पर प्रकट है कि ऐसे अनक भस्मासुर समाज में पैदा हुए तथा उनको पैदा भी हम समाज के लोगों ने ही किया।

हमारी स्थिति यह है कि जो कोई भी महर्षि दयानन्द का नाम लेकर जो कुछ भी उनके नाम पर कह देवे हम सुन लेते है और इस लोभ मे कि वह महर्षि का नाम ले रहा है। हम उसकी उन बातों की तारीफ करते हैं जो वस्तुत विचारने पर महर्षि की शिक्षाओं के प्रतिकूल पड जाती है। महर्षि के नाम का कई लोग अनुचित नाम लेकर अपना कार्य पूरा करते हैं। एक व्यक्ति जो महर्षि के सिद्धान्तों को जानता तक नहीं और उनके ग्रन्थ भी नहीं पढे—भाषण और लेख में अपनी धारणा प्रकट करता है और साथ मे ऋषि के किसी वाक्य का उल्टा अर्थ लगाकर यह भी कहता जाता है कि यही महर्षि का सिद्धान्त है। लोग सुनते हैं, प्रशसा करते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि इसका परिणाम क्या होने वाला है। यदि इसी प्रकार के लोग अपन छिपे उद्देश्यो से ऋषि के विपरीत विचारधाराओं को ऋषि की विचारधारा बनाकर प्रचारित करते जाएंगे तो आर्यसमाज के प्रवर्तक के सिद्धान्तों की भी वही स्थिति भविष्य मे होगी जो बुद्ध आदि के सिद्धान्तों की हुई हैं। आज कल महर्षि का नाम लिया जाता है, सस्थायें उनके नाम पर बनायी जाती हैं मण्डल खोले जाते है और उद्देश्य मे ऋषि के विचारों को रखा जाता है परन्तु कार्य जो किया जाता है वह विपरीत होता है। क्या बीडी, सिगरेट तथा शराब की बोतल पर ऋषि का नाम रख दिया जावे तो वे पवित्र बन जावेंगी। ऐसी भी सस्थाए हैं जो अपन नाम के साथ दयानन्द का नाम रखती हैं, आर्य शब्द भी जोड रखती है-फिर भी वहा पर मूर्तिपूजा आदि विरोधी बातें भी होती हैं।

यह कहना कि आर्यसमाज मे वेदों को समझने वाले विद्वान् नही—सुतराम गलत होगा। वेद के वास्तविक स्वरूप और दृष्टिकोण को समझने वाले विद्वान यदि है तो आर्यसमाज मे ही है। आर्यसमाजिक विद्वानों से अतिरिक्त विद्वानो का वेद क्या है ? और क्या नहीं है-यह अभी तक निर्णीत नहीं हो सका। जिन लोगों पर पाश्चात्य धाराओं की छाप है उनका वेद विचित्र ही है। श्री विद्यानन्द जी विदेह आर श्रीमान् प० सातवलेकर जी के वेद को भी देख लीजिए। उनके वेद के स्वरूप का निर्णय आज तक नहीं हो सका और न आगे ही हो सकेगा आर्य विद्वानों और आर्य सभाओं एव आर्यों का परम कर्तव्य है कि वे इस दिशा में सक्रिय रूप से दृष्टि रखें कि ऋषि के सिद्धान्तों और वद पर कौन किस समय क्या लिखता है। विशेषकर ऋषि का नाम लेकर उनके सिद्धातों पर कौन क्या लिखता है यह तो सदा दृष्टिमे रखने का विषय है। हमे सिद्धान्तों के विषय मे बहुत सतर्कता रखने की जरूरत है। अन्यथा पछताना पडेगा।

एक घटना मुझे स्मरण है। एक समय किसी व्यक्ति ने गुजरात के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री प० आनन्द प्रिय जी से वेद सम्बन्धी किसी बात की सम्मति लेनी चाही। श्री प० जी ने मुझे लिखा कि इस विषय मे क्या सम्मति दी जावे। मैने लिखा कि इस विषय मे आप का सम्मति देना उचित नही होगा। क्योंकि वह बात जिस पर सम्मति मागी गईथी सर्वथा सिद्धात विरुद्ध पडती। थोडे ही दिन का समय हुआ कि बडौदा में मैं श्री वेणीभाई जी आर्य, मन्त्री बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के गृह पर भोजन करने को बुलाया गया। मेरे वहा जाने पर श्री वेणीभाई आर्य और श्री चूनीभाई जी आर्य ने पूछा कि एक किसी डाक्टर का थीसिस—जो दयानन्द की वेदभाष्य शैली की विशेषता पर है—वे यदि वेदमण्डल की

ओर से छपवायें तो कैसा होगा ? मैंने उनको सम्मति दी कि ऐसे ग्रन्थों का छपवाना तो प्रशस्त काम है परन्तु उसे भली प्रकार देख दिखलाकर छापना चाहिए। यूनिवर्सिटी में डाक्टरों के थीसिस का मानदण्ड दूसरा है और अपना मानदण्ड दूसरा है। यूनिवर्सिटी जिस चीज को प्रशस्त बता सकती है वह अपने प्रतिकूल बन सकती है और जिसे विपरीत बतलावे हो सकता है वह अपने अनुकूल पड़जावे। यदि ऐसे लेखों को छपाने पर बाद में कोई सिद्धान्त विपरीतता दिखलायी पड़ी तो भस्मासुर न्याय अपने ऊपर लागू होगा। यह प्रासंगिक बात थी। वर्तमान समय में अपने ही पत्रों में कभी कभी ऐसे भी लेख छप जाते है जो साधारणतया ठीक होते हैं परन्तु विचारने पर विपरीत ठहरते हैं। कभी २ बहुत छोटी सी बात भी विचार में महत्व पूर्ण बन जाती है। परन्तु इस बारीकी पर ध्यान नहीं जा पाता एक समय एक डाक्टर महोदय ने पूर्वीय दर्शन पर अपना एक लेख प्रकाशित कराया। लेख में योगशास्त्र के योग शब्द पर विचार किया गया था। लेखक महोदय ने प्रोफेसर मैक्समुलर का हवाला देकर "योग" पद को "युज योगे" धातु से सिद्ध बनाया और लिखा कि इस में आत्मा का परमात्मा के साथ योग वा मेल होता है अत यह योग है। परन्तु यह योगदर्शन की परिभाषा के विपरीत है चाहे मैक्समुलर कहें- वा अन्य कोई कहे योगदर्शन में चित्तवृत्ति के निरोध का नाम योग है। यहा पर "योग" पद "युज समाधौ" धातु से बना है। "युज योगे" से नहीं। इसीलिए भाष्यकार व्यास ने लिखा कि—"योग समाधि" अर्थात योग समाधि को कहा जाता है। ऐसा न मानने पर अनेकों आपत्तिया खड़ी हो जावेंगी परतु डाक्टर महोदय को यह परिज्ञात नहीं था।

आचार्य दयानन्द ने वैदिक ऋषियों को मन्त्र द्रष्टा माना है। यास्क और अन्य शास्त्रों का भी अभिप्राय यही है। ऋषि से मन्त्रद्रष्टा साक्षात्कृतधर्मा मन्त्रप्रयोक्ता, अथवा उपदेष्टा आदि अर्थ लिए जाते है। यह बात सर्वसाधारण पर दो दो चार की भांति विदित है। विद्वान् आर्यसन्यासी श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी और चमूपति जी ने उपाधिवाद का वर्णन उस दिशा में किया है। परन्तु यह उपाधि वाद द्रष्टृत्व पक्ष के पोषण में हैं। ये विद्वान् द्रष्टृत्व वाद के पोषक हैं। परन्तु अभी थोड़े दिन हुये श्री डाक्टर सुधीर कुमार गुप्त ने अपने एक लेख "ऋग्वेद के ऋषि और उनका आषदर्शन" में ऋषि को मन्त्रों के अर्थ का परिचायक, सारयुक्त, गुणवाचक यौगिक पद कहा है। वे पुन लिखते हैं कि 'मन्त्र का ऋषि मन्त्र के अर्थ का सार है, देवता उसका विषय है, छन्द उसका नियामक है। इन तीनों के युगपत ज्ञान से मन्त्रार्थ का ज्ञान अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। इनकी दृष्टि में देवता की भांति ही ऋषि और छन्द भी अर्थ के परिचायक है। यह एक नया विचार खड़ा किया गया है और मध्य कालिक विचारधाराओं से मिलता जुलता है। परतु यह विचारधारा आर्यसमाज की नहीं। ऋषि दयानन्द इस विचारधारा को नहीं मानते थे।

यह केवल प्रसगत कुछ उदाहरण दिये गये। वह भी इसलिए कि हमें सिद्धान्तों के विषय में बहुत ही सचेत रहने की आवश्यकता है।

वचनामृत

अपि श्रिया हीनः कृतविद्य प्रकाशते।　　　-वनपर्व

कोई चाहे ऐश्वर्य हीन भी क्यों न हो, यदि विद्या युक्त है तो प्रकाशित हो सकता है।

—: लाजाहोम की परिक्रमाओं मे वर आगे और वधू पीछे चले :—

[लेखक—स्वा० मुनीश्वरानन्द सरस्वती आ० स० हापुड़]

मैने मास अक्टूबर १९५८ के सार्वदेशिक पत्र मे उपरोक्त आशय का एक लेख प्रकाशित कराया था। उस लेख और फेरों के समय वर की वधू के उत्तर भाग में स्थिति और उसके आगे परिक्रमा के आदेश के सिवा अन्य विधि वचन का अभाव आदि बातों पर तनिक भी विचार न करके केवल लेख का उत्तर देने की भावना से प्रेरित होकर श्री रामअवतार जी मन्त्री आर्यसमाज मगरहा ने जनवरी मास के सार्वदेशिक पत्र में उसका उत्तर प्रकाशित कराया है। जो संस्कारविधि आदि समस्त कर्मकाण्ड ग्रन्थों के विरुद्ध है। प्रस्तुत लेख उसी के समाधानार्थ पाठकों की सेवा में उपस्थित कर रहा हूँ। अस्तु !

श्रीराम अवतार जी ! हमारे विचार का मुख्य आधार महर्षि दयानन्द जी महाराज कृत संस्कार विधि ग्रन्थ है। इसलिए संस्कारों के विषय मे जो कुछ वह ग्रन्थ कहता है वह सब सत्य और अन्य ग्रन्थ जो बात इसके अनुकूल कहें वह ग्राह्य और शेष सब अग्राह्य समझें।

संस्कार विधि ११ वें संस्करण के पृ० १५१ पर शिलारोहण के पश्चात् लिखा है कि ,'तत् पश्चात् वधू वर कुण्ड के समीप आके पूर्वाभिमुख दोनों खड़े रहें और वहां वधू दक्षिण ओर रहके अपनी हस्ताञ्जली वर की हस्ताञ्जली पर रखें । इतना ध्यान रहे इस अवसर पर वर वधू के उत्तर भाग मे और वधू वर के दक्षिण भाग म खड़ी है। इसी अवस्था में लाजाहोम के अनन्तर वर वधू यज्ञाग्नि की परिक्रमा करते हैं। यहां वधू आगे रहे ऐसा लेख संस्कारविधि और किसी भी गृहसूत्र में नहीं है, जिसके आधार पर फेरों के समय वधू आगे वर पीछे रहे, अपितु उपरोक्त स्थिति में परिक्रमा करते समय स्वयमेव वर आगे रहेगा। क्योंकि परिक्रमा करने के लिए वर वधू जो अब तक पूर्वाभिमुख खड़े है, उन्हें एक साथ उत्तराभिमुख होना पड़ेगा। और उत्तराभिमुख होते ही वर स्वयमेव आगे हो जाता है। संस्कार विधि और सब गृह्य सूत्रों का यही आशय है कि परिक्रमा करते समय वर आगे और वधू पीछे रहे प्रदक्षिणा से ठीक पूर्व मन्त्र ब्राह्मण का 'कन्यलापितृभ्य' मन्त्र संस्कार विधि मे लिखा ही इसलिए गया है कि वर आगे रहे, क्योंकि उक्त मन्त्र वर के आगे रहने का ही विधान करता है। प्रदक्षिणा से पूर्व संस्कार विधि मे ऐसा लिखा है कि "ओ३म् तुभ्यमग्रे०' और "कन्यला पितृभ्य" इन मन्त्रों को पढकर यज्ञ कुण्ड की प्रदक्षिणा करके ।पृ १५२। मन्त्र ब्राह्मण के "ओ३म् कन्यलापितृभ्य' इस मन्त्र के विनियोगवचन में लिखा है कि परिक्रमा के समय वर वधू को अपने पीछे चलावे और वर आगे चले। इसलिए वर वधू की तत्कालीन स्थिति और संस्कारविधि के उपरोक्त लेख से सुतरासिद्ध है कि लाजाहोम की परिक्रमाओं मे वर आगे और वधू पीछे रहे।

अब मे संस्कार विधि की उपरोक्त क्रिया के पक्ष में मन्त्र ब्राह्मणादि ग्रन्थो के प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ। जरा ध्यानपूर्वक पढिए और शास्त्र के इस सत्य सिद्धान्त को स्वीकारकर अपने असत्याग्रह को छोड़ दीजिये।

"ओ३म् कन्यलापितृभ्य" इति—कन्यलेत्यग्नि प्रणयने विनियुक्त सूत्रित च (खा० गृ० सू० १।१३।२४) हुते तेनैव गत्वा, प्रदक्षिणमग्नि परिणयेत

"कन्यलापितृभ्य" इति। इय नाराति हुते येनैव प्रकारेण पाणिग्राहमनुपृष्ठत्तरतोगत्वा पाणिग्राहम्नेव प्रदक्षिणी कुर्वीत। येन वधू मनुगमयेदित्यर्थ।
मन्त्र ब्रा० १।२।५

अर्थात् लाजाहोम हो चुकनेपर जिसप्रकार वर इस विधि के सम्पन्न कराने के लिये वधू के उत्तर भाग से वधू के पृष्ठ देश से होकर उसके दक्षिण भाग में आया था, अब उसी प्रकार से वधू के पृष्ठ देश से होकर उसके उत्तर भाग में जाकर वधू का हाथ पकड़े हुए अग्नि की प्रदक्षिणा करे (येन) जिससे (वधूम्) वधू को (अनु) अपने पीछे (गमयेत्) चलावे।

मन्त्र ब्राह्मण, गोभिलगृह्यसूत्र और खादिर गृह्यसूत्रानुसार शिलारोहण और लाजाहोम ये दोनों क्रियाएं वर वधू के दक्षिण भाग में उत्तराभिमुख खड़ा रहकर सम्पन्न कराता है। इसलिए फेरों में वर को आगे रखने के लिए ही यह विधान किया गया है कि लाजाहोम के पश्चात् वर वधू के पीछे से होकर उसके उत्तर भाग में आकर फिर प्रदक्षिणा करे। इस प्रकार ठीक संस्कार विधि के उपरोक्त विधान की ही पुष्टि करते हुए मन्त्र ब्राह्मण ने इस बात को अत्यन्त स्पष्ट कर दिया है कि लाजाहोम की परिक्रमाओं में वर आगे और वधू पीछे रहे। इसी ब्राह्मण के एक अन्य स्थल पर भी ऐसा ही वर्णन आता है कि —

ओ३म् प्रमेपतियान पन्था कल्पता शिवा अरिष्टा पतिलोक गमेयम्। म० ब्रा० १।१।८

सा० भा—पतियान यात्यनेति यानोमार्ग। पतिर्येन मार्गेण याति सपतियान। तादृश पन्था मार्गो मह्य कल्पतासमवत्वित्यर्थ। मार्ग प्रार्थन प्रयोजनमाह, अह च तेनमार्गेणशिवा मगला अशुभ रहिता अरिष्टा अहिंसिता च सति। पति लोक लोक्यत इति लोक प्रदेशास्त पतिनिवास प्रदेश गमेयम्।

अर्थात्—मेरा पति जिस मार्ग से चल रहा है वही मार्ग मेरा हो। दूसरे शब्दों में वधू यों कहती है कि मेरा पति मेरे आगे और मैं उसके पीछे चलू। इस प्रकार पति के मार्ग पर उसके पीछे २ चलती हुई सब विघ्नबाधाओं और हिंसादि दोषों से रहित होकर पति के निवास स्थान को प्राप्त होऊ।

इस ब्राह्मण वचन मे वधू स्वय यह कामना करती है कि मेरा पति मेरे आगे चले और मैं उसके पीछे चलू। तो बतलाइए आप बलात् ठोक पीटकर उसे पति के आगे किस विधान के आधार पर चलाना चाहते हैं।

हो सकता है आप गोभिलगृह्यसूत्रका नाम लें, पर मेरे प्यारे मन्त्री जी गोभिल भी आपका समर्थन नहीं करता, अपितु गोभिल तो ड्के की चोट वही बात कहता है जो संस्कार विधि के समर्थन में मैं कह रहा हू। मैंने अपने पिछले लेख मे गोभिल का अपेक्षित प्रकरण श्रीचन्द्र कान्त भाष्य सहित लिख कर यह सिद्ध किया था कि गोभिल गृह्यसूत्र के अनुसार लाजाहोम की प्रत्येक परिक्रमा में वर आगे और वधू पीछे रहेगी। मैं पाठकों और आपकी जानकारी के लिए इस बार पुन उस प्रकरण को अधिक विस्तारपूवक प्राचीनतम भट्ट नारायण वृत्ति सहित लिख रहा हू गोभिल गृह्यसूत्र के दूसरे प्रपाठक की दूसरी कण्डिका का आरम्भ शिलारोहण की तैयारी से होता है। यथा —हुत्वोपोतिष्ठत ॥ ॥२।२।१॥

भट्ट नारायण वृत्ति हुत्वा अन तरमेव उत्तिष्ठत। उपेति सहत हस्ताविति। दम्पतीतिशेष।

अर्थात्—व्याहृति होम के पश्चात् वर वधू एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए अपने २ आसनों से खड़ होवें।

अनुपृष्ठ पति परिक्रम्य दक्षिणत उदङ्मुखो ऽवतिष्ठते वध्वञ्जलिंगृहीत्वा।२।२ २

भ० ना० वृ० —अनुपृष्ठ अनुपश्चिमेनवध्वा। पति परिक्रम्य गत्वा। दक्षिणत उदङ्मुखोऽवतिष्ठते

इत्युक्तार्थम्। किंकृत्वाऽवतिष्ठते? वध्वा अञ्जलिं गृहीत्वा स्वेनाञ्जलिना।

अर्थात् पति पत्नी के पृष्ठ भाग से होकर वधू के दक्षिण ओर जा अपनी अंजली से वधू की अंजली पकड़े हुए उत्तराभिमुख खड़ा रहे। और—

पूर्वा माता लाजानादाय भ्राता वा वधूमाक्रामयदश्मान दक्षिणेन प्रपदेन।२।२।३

अर्थात्—वधू की माता या सहोदर भाई लाजाओं को वाएं हाथ में लेकर दाएं हाथ से वधू का दक्षिण पैर शिला पर रखवावे और उस समय-

पाणिग्रहोजयति 'इममश्मानमारोहेति" २।२।४

वर 'इममश्मानमारोह" इस मन्त्र को बोले। पश्चात्—

सकृत समृहीत लाजानामञ्जलि भ्रातावध्वञ्जलावावपति।२।२।५

वधू का भाई एक बार खील लेकर वधू की अञ्जली में डाले। (संस्कार विधि के अनुसार दो बार)। और—

त सोपस्तीर्णाभि घारितमग्नौ जुहोत्यविच्छिन्दत्यञ्जलिम् "इय नार्युपब्रूते" इति।२।२।६

'अयमणं नु देवम् पूषणमित्युत्तरयो"।२।२ ७

वधू अपनी हस्ताञ्जली को वर की हस्ताञ्जली से अलग न करते हुए सूत्र ६ तथा ७ में निर्दिष्ट मन्त्रों से तीन लाजाहोम करे। ध्यान रहे गोभिल के मतानुसार शिलारोहण और लाजाहोम के समय वर वधू के दक्षिण भाग में उत्तराभिमुख खड़ा है। अब आठवाँ सूत्र देखिये। इस सूत्र को ठीक समझने के लिये दूसरे सूत्र को बराबर ध्यान में रखना चाहिए। क्योंकि सूत्र दो तो वर को वधु के पीछे से उसके दक्षिण भाग में लाया है और यह सूत्र पुन वर वधू के पीछे से उसके उत्तर भाग में ले जावेगा और पश्चात् परिक्रमा होगी। अस्तु—हुते पतिर्यथेत परिव्रज्य प्रदक्षिणमग्निं परिणयति मन्त्रवान् वा ब्राह्मण 'कन्यलापितृभ्य" इति।२।२।८

भ० ना० वृत्त—हुते लाजाञ्जलौ पति परिव्रज्य। कथम्? यथेत यथा येन प्रकारेण इत गत गमन कृत तथा वध्वा पश्चिमेनेति। प्रदक्षिण मग्निं वधू परिणयति। परि सर्वतोभाव सर्वतोनयेत्। अग्ने प्रादक्षिण्येनभ्रामयतीत्यर्थ। मन्त्रवान् गुणवान् ब्राह्मणो वधू परिणयति "कन्यलापितृभ्य" इत्यनेन मन्त्रण। अञ्जलिमविमुञ्चन्।

चन्द्रकान्त भाष्य—हुतेपति परिव्रज्य पुनरागत्य। कथ पुनरागन्तव्यम्? यथेत यथा येन प्रकारेण पत्नी पृष्ठ देशेन इत गत गमन कृत पत्नी दक्षिणस्या तथैव पत्नी पृष्ठ देशेन पुनरागन्तव्यमित्यर्थ। तदेवमागत्य प्रदक्षिण यथा भवति तथा पत्नीं परिणयति। सर्वतोभावेन नयति अग्ने प्रादक्षिण्येनभ्रामयेदित्येतत्।

मृदुला व्याख्या—हुते वध्वा लाजाहोमे कृते पतिर्यथेत यथाऽऽगत (यथा वध्वाऽनुपृष्ठमितमागन कृत पत्नी दक्षिणस्या तथैव) परिक्रम्य पुनरागम्य प्रदक्षिण यथा भवति तथा पत्नीमग्निं परिणयति परि सर्वतोभावेननयेत्। अग्निप्रादक्षिण्येन भ्रामयेदित्यर्थ। कस्याचिदापदि पत्युरसामर्थ्येऽन्योवामन्त्रवान् अधीत वेदो ब्राह्मण पारणयति।

(इस सूत्रमे दो बातें कही गई हैं, एक तो वर का वधू के दक्षिण भाग से उसके उत्तर भाग मे जाना और दूसरी बात वधू को यज्ञाग्नि की प्रदक्षिणा कराना।

उपरोक्त तीनों भाष्यों का एकत्र आर्यभाषार्थ—[अब तक सूत्र दो के अनुसार वर-वधू के दक्षिण भाग में उत्तराभिमुख खड़ा है] अब लाजाहोम की समाप्ति पर जिस प्रकार शिलारोहण और लाजाहोम से पूर्व सूत्र दो के अनुसार वर—वधू के पीछे से होकर उसके दक्षिण में आया था उसी प्रकार पत्नी के पृष्ठ भाग से होकर उसके उत्तर भाग में आकर स्वय आगे रहते हुए पत्नी को प्रदक्षिणा करावे। किसी आपत काल मे यह क्रिया वेदज्ञ ब्राह्मण करावे। उल्लिखित तीनों भाष्य पढकर प्रत्येक विज्ञ

पाठक समझ गया होगा कि गोभिल २।२।८ तो लाजाहोम की परिक्रमाओं में वर को आगे और वधू को पीछे चलने का विधान करता है। अब ज़रा श्री सत्यव्रत जी सामश्रमी का भाष्य देखिए, जिसे ठीक प्रकार से न समझ कर अनेक जन बहक गये हैं।

"हुतेलाजाहोमे सम्पन्ने अनन्तर मन्त्रवान् अधीतवेदो ब्राह्मण पति यथा येन प्रकारेण पत्नी पृष्ठ देशेन इत गत तथैव अग्नि प्रदक्षिण यथा स्यात् तथा परिव्रज्य प्रत्यागत्य "कन्यलापितृभ्य पतिलोक यतीयमपदीक्षामयष्ट। कन्या उत त्वयावय धारा उदन्या इवातिगाहेमहिद्विष" ॥५॥ (मन्त्र ब्राह्मण १।२ ५)—इति अनेन मन्त्रेण परिणयति ता कन्यामितिशेष"।

आर्य भाषार्थ —लाजाहोम सम्पन्न होने के पश्चात् अधीतवेद ब्राह्मण वरने जिस प्रकार से पत्नी के पृष्ठ देशसे (उसके दक्षिण भाग में आने के लिए) गमन किया था उसी प्रकार उसके पृष्ठदेश से उसके उत्तर भाग में आवे जिससे आते समय अग्नि उसके दक्षिण हाथ को रहे—इस प्रकार आकर कन्यलापितृभ्य इस मन्त्र को बोलकर उस कन्या को प्रदक्षिणा करावे। यहा भी परिक्रमा से पूर्व वर का वधू के उत्तर भाग मे आना सूचित करता है कि परिक्रमा के समय वर आगे और वधू पीछे रहे।

सत्यव्रत जी के भाष्य को आधार मानकर यह आपकी अभिमत उलटी गगा ठा० उदयनारायण सिंह वर्मा ने बहाई है। जिन्होंने सत्यव्रत जी के भाष्य का हिन्दी अनुवाद छपाया था इन्होंने खादिर गृह्यसूत्र के अनुवाद में भी ऐसा ही घोटाला किया है। उनके अनुवाद के अनुसार तो सूत्र का मूलपाठ यह नहीं हो सकता। और सूत्र के मूलपाठ तथा उल्लिखित चारों भाष्यों के अनुसार तीन काल में भी ठा० उदयनारायणजी का अर्थ नहीं बन सकता। इसलिए भी उनका अनुवाद दोषयुक्त है, क्योंकि एक तो जहा वर का पत्नी के पृष्ठभाग से उसके उत्तर भाग में जाने का विधान है, वहा उन्होंने वर के लिए अग्नि की प्रदक्षिणा करने को लिखा है। दूसरे इस प्रकार प्रथम केवल वर की ही अग्नि प्रदक्षिणा बनती है वधू की नहीं और तीसरे इस प्रकार एक परिक्रमा के पश्चात दूसरे सूत्र का विधान व्यर्थ हो जाता है, जो कि लाजाहोम की सब परिक्रमाओं में समानरूप से लागू होता है।

अब खादिर गृह्यसूत्र का एक प्रमाण और लिखकर लेख समाप्त करताहू और श्रीरामअवतारजी के शेष लेख पर अपने अगले लेखमें विचार करूगा। अस्तु

हुते तेनैव गत्वा प्रदक्षिणमग्नि परिणयेत् कन्यला पितृभ्य" इति। खा० गृ० सू० १ ३।२४ रुद्रस्कन्दीयवृत्ति –पाणि गृह्णन्ननुपृष्ठमुत्तरतोगत्वा पाणि गृह्णन्नेव अग्नि प्रदक्षिणी कुर्वन् वधू मनुगमयेत्।

अर्थात्—वर वधू के पीछे से उसके उत्तर भाग में जाकर प्रदक्षिणा करते हुए (वधूम्) वधू को (अनु) अपने पीछे (गमयेत्) चलावे।

लाजाहोम की परिक्रमाओं में वर आगे और वधू पीछे चले, इसका कितना स्पष्ट वर्णन है। आशा है इससे श्रीराम अवतार जी की शका का समाधान हो जावेगा। हमने संस्कारविधि, मन्त्र ब्राह्मण, गोभिलगृह्यसूत्र और खादिर गृह्यसूत्र इन चार ग्रन्थों के प्रमाणों से सुतरा यह सिद्ध कर दिया है कि **लाजाहोम की परिक्रमाओं में वर आगे और वधू पीछे चले।**

विज्ञान और सभ्यता

भारतीय विज्ञान परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में भाषण करते हुए प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने विज्ञान और दर्शन के अध्ययन और जीवन के सन्तुलित विकास की उपादेयता पर बल दिया। भौतिक राकेट और उद्जन बम मानव के मानसिक और नैतिक विकास के दो विभिन्न पहलू हैं। मनुष्य के हृदय में भौतिक जगत् के स्वरूप को समझने और उसमें निहित दृश्यमान असीम बहुरूपता में एकता का रहस्य जानने की उत्कण्ठा विद्यमान है। भौतिक राकेट इसी उत्कण्ठा और कौतूहल का परिणाम है। यह राकेट उस मानव की सर्वोपरि सफलता है जो अज्ञात का ज्ञाता और विजेता है जो अब तक आकर्षण शक्ति का बन्दी बना रहा और जो आकाश के सौन्दर्य और उसके रहस्यों से विमोहित हुआ नित्य आकाश की ओर दृष्टि लगाए रहता था। जिस भावना ने राकेट को जन्म दिया वह धर्म और दर्शन से मिलती जुलती है। इस भावना ने हमारे चक्षु और व्याप्त विश्व का उद्देश्य जानने में हमें समर्थ बनाया है। इसके साथ ही सृष्टि के पदार्थों के मूल स्थान विषयक अन्धविश्वासों से भी हमें मुक्त किया है। बहुत समय व्यतीत नहीं हुआ जब वैज्ञानिकों को जादूगर, नास्तिक और अनीश्वरवादी कहकर उनकी निन्दा की जाती थी क्योंकि वे सत्य के अन्वेषणार्थ इन अन्ध विश्वासों और मान्यताओं की उपेक्षा किया करते थे विज्ञान और धर्म में कोई विरोध नहीं है विज्ञान तो अन्ध विश्वास और अज्ञान का ही शत्रु है विज्ञान। बहुतसे दार्शनिकों और धर्मोपदेष्टाओं की यह मान्यता है कि विज्ञान एकमात्र विश्व के रहस्यों की बुद्धि सगत ऊहापोह करता है उसमें विश्व की सृजना का रहस्य बताने की क्षमता नहीं है जो आध्यात्मिक शक्तियों से प्रशासित है। इसके सचालन का रहस्य तो एकमात्र ध्यान और योग साधना से ही ध्यानी और योगी जनों पर स्पष्ट होता है जीवन के रहस्यों को खोल कर हमारे सामने रख देने की विज्ञान की क्षमता के विषय में जो सन्देह पाया जाता है वही सन्देह स्वय वैज्ञानिकों को भी है। भौतिक और आध्यात्मिक के बीच का रेखा दिन पर दिन पतली होती जा रही है और वह दिन दूर नहीं है जब विज्ञान को यह स्वीकार करना होगा कि वह अनुसन्धान की अन्तिम सीमा पर पहुँच गया है और वह गहराई तक पहुचने में असमर्थ है। इस पर भी कोई धर्म विज्ञान की ऊहापोह की उपेक्षा नहीं कर सकता। यदि उपेक्षा करेगा तो वह अन्ध विश्वास और अन्ध श्रद्धा से विकृत हो जायगा।

विज्ञान और यन्त्रों ने मनुष्य के जीवन में क्रांति उत्पन्न कर दी है। उन्होंने दूरी को समाप्त करके ससार को एक और अविभाज्य बना दिया है। विज्ञान और यन्त्रों ने जिस औद्योगिक समाज की सृजना की उसने मानव की जीवन पद्धति को बिल्कुल बदल दिया है। बहुतसे व्यक्ति प्राविधिक समाज व्यवस्था के आगमन, इससे उत्पन्न पारिवारिक जीवन के विघटन इससे प्रोत्साहित भौतिकवाद, आर्थिक असमानताओं तथा विनाश एव सहार के भय कर अस्त्रों के आविष्कार पर जो राष्ट्रों के हाथों में रख दिये गये हैं दुःख प्रकट करते हैं। ससार में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक अव्यवस्था के लिए विज्ञान और वैज्ञानिकों को उत्तरदाता ठहराना उनके प्रति अन्याय करना है। विज्ञान से हमें ज्ञान और शक्ति प्राप्त होती है। दर्शन और धर्म का कार्य गुणा का विकास करना है। हमारी कठिनाई यह है कि

हमारे जीवन के गुण अयथार्थ है। हम अविवेक पूर्ण ढग से शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं। विज्ञान और यन्त्रों ने जिस वातावरण की सृष्टि की हम अपने को उसके अनुरूप नहीं बना सके हैं। जब तक हम स्थानीय, प्रदेशीय तथा अन्यान्य विघटन कारिणी ममताओं से मुक्त न होंगे, राज्य की प्रभुता के पुराने सिद्धांतों का परित्याग करके विश्व व्यापी स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारे पर अवलम्बित समाज व्यवस्था के प्रति निष्ठावान न होंगे तब तक हम विज्ञान का पूर्ण लाभ उठाने मे सफल न हो सकेंगे। सत्य यह है कि गत कई शताब्दियों से हमारी नैतिक और धार्मिक भावना अधिक उन्नत नहीं हो सकी है। हमने जितनी बौद्धिक उन्नति की है उतनी आध्यात्मिक उन्नति की होती तो ससार की ऐसी सकटपूर्ण स्थिति न हुई होती जैसी आज है। जब तक विविध राष्ट्र एक मात्र अपने ही हितों और आवश्यकताओं को प्रमुखता देते रहेंगे और जब तक इस सन्तप्त जगत् में राजनीति के परिहत राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यवस्था करने के लिए विवश रहेंगे तब तक वैज्ञानिक लोगों को घातक अस्त्रों के निर्माण कार्य मे अपने को व्यस्त रखना ही पड़ेगा। सर्व संहारक अस्त्र शस्त्रों का बनना तभी बन्द हो सकेगा जब आज जैसे युद्धों का अन्त हो जायगा और मनुष्य सभ्य बन जायेंगे। हमें नये जीवन दर्शन और कार्य पद्धति की आवश्यकता है अच्छे नागरिक की परिभाषा करते समय हमें विज्ञान और यन्त्रों से उपन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखना होगा।

केवल ज्ञान और शक्ति ही पर्याप्त नहीं है उनका रचनात्मक कार्यों के लिए प्रयोग करने की भी हम में योग्यता होनी चाहिये। हमे विवेक पूर्वक शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति इस बात से सहमत है कि हमारा उत्पादन का ढग वैज्ञानिक होना चाहिए परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि राष्ट्रीय करण का सामाजिक प्रभाव नहीं होता। यदि राष्ट्रीयकरण से बड़े पैमाने पर बेरोजगारी बढ़ती है तब राष्ट्रीयकरण का समर्थन न होना चाहिए। मुख्यतया वहा जहा बेरोजगारी पहले से ही उग्र रूप धारण किये हुए हो और देश मे लोगों के बेकार हो जाने पर सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था न हुई हो। विज्ञान और यन्त्रों को मानव की सेवा के लिए ही प्रयुक्त करना उचित है न कि उसे रोजगार विहीन बना देने के लिए। हमारे यहा यान्त्रिक क्रांति की आवश्यकता है परन्तु क्रांति का स्वरूप सामाजिक आवश्यकताओं के आधार पर ही निर्धारित होना चाहिए। हम भारत वासी रूस या अमरीका जैसी औद्योगिक व्यवस्था को स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि हमारी अवस्थाए रूस या अमरीका की अवस्थाओं से भिन्न हैं। हमारे राजनीतिज्ञों, दर्शन शास्त्रियों धर्माचार्यों और समाज सशोधकों को हमारी जीवन पद्धति निश्चित करके सदाचार के सिद्धांत निर्धारित करने हैं।

उस पद्धति को सम्भव बनाने के लिए जिस भौतिक सामग्री की आवश्यकता होगी उसकी व्यवस्था हमारे वैज्ञानिकों इञ्जीनियरों को करनी है। हमें तर्क एव श्रद्धा युक्त मस्तिष्क की आवश्यकता है जो धर्म और साइस से ही प्राप्त हो सकता है। धर्म विहीन साइस उदजन बम उत्पन्न करती है और विज्ञान विहीन धर्म जीवन का स्वाथ एव अन्ध विश्वास पूर्ण दृष्टिकोण उपस्थित करता है।

(ट्रिब्यून अम्बाला, २२ १।५६)

स्वाध्याय का पृष्ठ

मूर्ति पूजा के पक्ष की युक्तियों का खण्डन

(२)

परमात्मा अदृश्य है। हम उसको देख नहीं सकते इसलिए हमने उसकी मूर्तियां बनाली हैं जिस से हम उसको देखने की अपनी लालसा पूरी कर सकें।

जब परमात्मा अदृश्य है तब वह दृश्यमान पदार्थों के द्वारा क्योंकर दिखाया जा सकता है? देखने का अर्थ है स्थूलपन और स्थूलपन का अर्थ है ससीमता। आप जिस स्वरूप को देखते हो वह परमात्मा का नहीं अपितु मूर्ति का होता है। वस्तुत आपकी आखें जो कुछ देखती है वह मूर्ति का स्वरूप और रंग होता है और परमात्मा के स्वरूप के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। शास्त्रों मे जहां कहीं परमात्म दर्शन की चर्चा है वह आलङ्कारिक है और उसका अभिप्राय 'अनुभूत' होता है। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि दुनिया उस प्रभु को देखने के लिए दोड धूप करती है जो पार्थिव नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। उपनिषत् इस भ्रम जाल से मुक्त रहने की चेतावनी देते हुए कहता है वह परमात्मा शब्द, स्पर्श और स्वरूप रहित तथा अखण्डनीय है।

'अशब्दमस्पर्शमरूपम व्ययम' (कठोपनिषद्)

इसका अर्थ है कि आखें परमात्मा को नहीं देख सकती और उसे देखने का यत्न करना व्यर्थ है। लोग उसे देखने के लिए मरते हैं। वे अदृश्यमान को देखने के लिए हर प्रकार के अनुष्ठान करते, उपवास और कष्ट सहन करते हैं। पुराणों में तथा मत मतान्तरों के अन्य ग्रन्थों में ऐसी कथाए है जो इस प्रयत्न को बढावा देती हैं। ऐसी कथाए भी पढने को मिलती है जिनमे बताया जाता है कि अमुक व्यक्ति ने अमुक समय तक अमुक अमुक अनुष्ठान और तपस्याए की और अन्त मे परमात्मा ने शरीर सहित उस मनुष्य को दर्शन दिए। यह भी कहा जाता है कि अमुक २ पैगम्बर खुदा से बात करने के लिए आसमान में गए। इन आलङ्कारिक वर्णनों पर भक्तजन आखें बन्द करके विश्वास कर लेते है और स्वयं इस प्रकार की सिद्धियों के लिए आतुर हो जाते हैं। पाखण्डीजन भक्तों के भोलेपन से लाभ उठाते और उन्हें अपने जाल मे फसाने के लिए विविध ढोंग रचते है। ईश्वर के सच्चे स्वरूप की अनभिज्ञता, सन्तों की बनावटी या बढा चढाकर कही जाने वाली कहानियां जन साधारण को फसाने वाले विविध ढोंग भ्रम मे डालने वाली छोटी मोटी प्रारम्भिक सिद्धियां इन सबसे बडा उपद्रव पूर्ण वातावरण उत्पन्न हो जाता है जिनसे मुक्ति पाना सीधे सादे उपासक के लिए कठिन हो जाता है। यह सब क्योंकर घटित होता है आओ इस पर भी तनिक विचार करलें। जब मनुष्य की आखें खुली होती हैं तो वह प्रकाश के दर्शन करता है। वह जानता है कि वह प्रकाश परमात्मा नहीं है। यह भौतिक प्रकाश है, जब वह अपनी आखें बंद करता है तब उसे आन्तरिक प्रकाश देख पडने लगता है। उस प्रकाश में बाह्य प्रकाश की झांकी तो आती है परन्तु कोई पदार्थ नहीं देख पडता। बनावटी गुरु उसे कहता है यह दिव्य ज्योति है और परमात्म दर्शन का प्रारम्भ है। यदि वह लम्बे समय तक अपनी आखें बन्द

रखेगा तो वह प्रकाश अधिकाधिक उज्ज्वल होता जायगा और वह समझने लगेगा कि वह अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त करता है, परन्तु यह भूल है। जब वह अपनी आंख बंद करता है तो सचमुच वह बाहरी पलकों को ही बंद करता है। देखने वाली इन्द्रिय उस समय भी काम करती होती है। इससे दिखाई पड़ेगा। यदि उसे बाह्य प्रकाशन देख पड़ेगा तो आन्तरिक प्रकाश दिखाई देगा दोनों ही प्रकाश भौतिक हैं और उनमें दिव्यता का लेश भी नहीं है। उसने सोचा कि मैने आंख बंद की है परन्तु वास्तव मे उसने ऐसा न किया था, वह अपने भौतिक वातावरण से बाहर नहीं था। उसने केवल बाहरी जगत की ओर से नेत्र बंद किए थे। आन्तरिक जगत उसके दिमाग मे था और उसकी आखें उसमें निमग्न थीं। उपनिषद् कहती है कि परमात्मा अरूप है। प्रकाश स्वरूपवान् है। उपनिषद् बताती है कि आंख उसको नहीं देख सकती, चमक को परमात्मा की चमक या उसे परमात्मा मानना भूल है।

यदि तुम्हारे कान खुले हो तो तुम्हें बाहरी ध्वनि सुन पड़ेगी। यदि तुम अपने कानों में अंगुली डालकर उन्हें अच्छी तरह बन्द करलो तो बाहरी ध्वनि बंद हो जाती है और भीतरी ध्वनि सुनाई पड़ने लगती है। लोग यह सोचते हैं कि ये ध्वनियां परमात्म की ओर से आती हैं। इन ध्वनियों को विविध प्रकार के रहस्यपूर्ण नाम प्रदान किए गए हैं। यथा अनहद आदि। इस आन्तरिक ध्वनि को विकसित करने के लिए अनेक प्रकार के अभ्यास किए जाते हैं। यहा भी वही भूल होती है। उपनिषद् बताती है कि परमात्मा ध्वनि रहित है। वहा हम ध्वनि के पीछे मारे २ फिरते हैं। कानों में अंगुली डाल लेने से श्रवणशक्ति का अन्त नहीं हो जाता। हमारा दिमाग ध्वनियों से परिपूर्ण होता है जो स्वय वे न तो ईश्वर होती हैं और न ईश्वर प्रेरित होती है। वे पार्थिव ध्वनियां होती हैं और उनको सुनने वाले कान भी पार्थिव होते है।

यदि परमात्मा को पार्थिव नेत्रों से देखने का व्यर्थ प्रयत्न रुक जाय तो धर्म के नाम पर होने वाली मूर्खताओं का ८० प्रतिशतक भाग लुप्त हो जाय और धोखा घड़ी नियन्त्रित हो जाय। परन्तु समस्या यह है कि यह किस प्रकार रुके। स्वार्थी जन दूकानदारी का बन्द हो जाना सहन नहीं करते हैं। यदि एक बाजार बन्द होता है तो दूसरे कई बाजार खुल जाते है एक बात जो मनुष्यों को सिखाई जानी चाहिए वह यह है कि जिस प्रकार वे अपनी आत्मा को नहीं देख सकते फिर भी उन्हें इसका भान होता है इसी भांति परमात्मा अदृश्य मान् है। और सदैव अदृश्यमान् रहेगा।

(वशिष पृ० १०५ ११६)

सृष्टि सम्वत्

आर्यों में जो सृष्टि सम्वत् चला आता है वह सन् १९५८ में १९७२९४९०६० अर्थात् लगभग २ अरब वर्ष हैं। यह सख्या वर्तमान भूगर्भ शास्त्रियों की सख्या से आश्चर्यजनक रीति से मिलती है।

ससार कितने वर्ष रहेगा, इसका उत्तर अथर्व वेद में ऐसे हुए लिखा है—शत ते ऽयुत हायनान् द्वयुगे त्रीणि चत्वारि कृण्म —अर्थात् ४, ३, २ इन अंकों के आगे १० लाख सख्या सूचित करने वाले शून्य लगा देने से जो सख्या बनती है वह सृष्टि का समय है—सृष्टि आरम्भ से अन्त तक इतने समय रहेगी। यह सख्या ४, ३२,०००००० (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष) बनती है। इतने वर्ष सृष्टि रहती है। फिर इतने ही वर्ष प्रलय रहता है।

सृष्टि के ४ अरब बत्तीस करोड़ वर्ष होते हैं परन्तु सृष्टि में १४ मन्वन्तर माने गए हैं एक एक एक मन्वन्तर में ७१ चतुर्युगी मानी गई है। चतुर्युगी का अर्थ है—कलियुग, द्वापर, त्रेता, सतयुग, कलियुग के जितने वर्ष हैं उससे दुगने द्वापर के,

तिगुने त्रेता के और चौगुने सत्ययुग के माने गये हैं। कलियुग का काल ४३२००० चार लाख बत्तीस हजार वर्ष) माना गया है। इस प्रकार एक चतुर्युगी का समय हुआ ४३२००० +८६४०००+१२९६००० +१७२८०००=४३२०००० (तैंतालीस लाख बीस हजार) वर्ष। क्योंकि ७१ चतुर्युगी का एक मन्वन्तर होता है इस लिए एक मन्वन्तर का समय हुआ ४३२०००० × ७१=३०६७२०००० (तीस क्रोड सरसठ लाख बीस हजार) वर्ष एक सृष्टि मे १४ मन्वन्तर होते है अत १४ मन्वन्तरों का समय हुआ ३०६७२०००० × १४=४२९४०८०००० (४ अरब २९ करोड ४० लाख ८० हजार) वर्ष।

परन्तु एक २ मन्वन्तर के बाद एक २ सधिकाल आता है और सृष्टि के प्रारम्भ में भी एक सधिकाल होता है। इस हिसाब से १४ मन्वन्तर है तो १४ सन्धिकाल हुए और एक सन्धिकाल है सृष्टि से आरम्भ का। कुल १५ सन्धिकाल हो गए। एक २ सधिकाल का समय एक सत्ययुग का समय माना गया है इस प्रकार सृष्टि मे १५ सन्धिकालों का कुल समय हुआ १७२८०००×१५=२५९२०००० (दो करोड़ उनसठ लाख बीस हजार) वर्ष।

इस हिसाब से सृष्टि का कुल समय हुआ —

१४ मन्वन्तरों का समय—४२९४०८०००० वर्ष

१५ सन्धिकालों ,, ,, २५९२०००० वर्ष

कुल ४३२००००००

आर्य गणना के अनुसार इस समय तक ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं और ७वें मन्वन्तर की २७ चतुर्युगिया बीत चुकी हैं। २८वीं चतुर्युगी के ३० युग बीत गए और कलियुग चल रहा है। इस हिसाब से सृष्टि को उत्पन्न हुए जो वर्ष बीते हैं उनका हिसाब निम्न है—

(१) ६ मन्वन्तरों के बीते वर्ष=३०६७२०००० × ६ =१८४०३२००००

(२) २७ चतुर्युगियों का ,, =४३२०००० × २७ =११६६४००००

(३) २८वीं चतुर्युगी के ३० युगों के बीते वर्ष (एक चतुर्युगी में से कलियुग के वर्ष घटा दिए) =३८८८०००

(४) छ मन्वन्तरों के सन्धिकाल तथा

(५) ७वा प्रारम्भिक ,, १७२८००० × ७=१२०९६०००

(६) प्रचलन के अनुसार सन् १९५८ तक बीते वर्ष सम्वत् २०१५ तक =५०६०

अब तक सृष्टि का समय =१९७२९४९०६०

ऊपर के हिसाब मे जो प्रचलन के अनुसार ५०६० वर्ष जोड़े गए हैं वह प्रचलन हैं—द्वितीय परार्द्धे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टा विंशति कलौयुगे ५०६० गताब्दे जम्बू द्वीपे भारतखंडे' इत्यादि यह सकल्प प्रत्येक हिन्दू अपने सस्कार कराता हुआ पढ़ता है।

ऊपर जो १४ मन्वन्तरों का वर्णन किया गया है, वे हैं—१ स्वाय भूव २ स्वारोचिष ३ औतमि ४ तामस ५ रैवत ६ चाक्षुष ७ वैवस्वत ८ सावर्णि ९ दक्ष सावर्णि १० ब्रह्मसावर्णि ११ धर्म्मसावर्णि १२ इन्द्र पुत्र १३ रौच्य १४ भौत्य।

(समाज शास्त्र के मूलतत्त्व पृ० १७६ १७७)

पुनर्जन्म के सिद्धान्तों का विजय

श्री विलियम इ० ब्लेट्ज ने १९२८ मे पाच बहनें' (The five sisters) नाम की एक पुस्तक लिखी थी जिसमें इन पाच बहनों का वर्णन था। ये पांचो बहनें एक ही रज कण (ovum) के पाच टुकड़े हो जाने से पाच बनी थीं। इसलिए इनके वशानुसक्रमण (Heredity) के एक ही होने मे कोई सन्देह न था। ये डायोनी खान्दान की पांच बहनें थीं इसलिए इन्हें 'डायोनीपचक' कहा जाता है। जब ये तीन वर्ष की थीं तब मनोवैज्ञानिकों ने इनकी सामाजिक सफलता, सामाजिक लोक प्रियता तथा सामाजिक रुचि—इन तीन गुणों की परीक्षा ली। यह परीक्षा यह देखने के लिए थी कि 'वशानुसंक्रमण' के बिलकुल एक तथा 'परिस्थिति' के भी लगभग एक से रहने पर भी उनमें क्या भिन्नता थी। इन परीक्षाओं से निम्न परिणाम निकला—

सुमन संचय

धर्म से दीर्घायु प्राप्त होती है

काशी में धर्मपाल नामक एक सदाचारी गृहस्थ रहता था। उसके घर के स्त्री, बच्चे, नौकर-चाकर तक सदाचार का पालन करते थे। धर्मपाल का पुत्र जब उच्च शिक्षा के योग्य हुआ तो उसे तक्षशिला के विश्वविद्यालय में भेज दिया।

तक्ष शिला में उन दिनों ५०० युवक विद्याध्ययन करते थे। एक दिन उनमें से एक मर गया। सहपाठी की मृत्यु से शोक कातर होकर विद्यार्थी गण परस्पर कहने लगे—क्रूर काल ने ऐसे होनहार व्यक्ति को युवावस्था में ही मार डाला।

यह बात धर्मपाल के युवा पुत्र के कान मे भी पडी। उसने अपने साथियो से कहा—तुम लोग क्या कहते हो? युवा काल में तो किसी की मृत्यु हो ही नहीं सकती।

साथियों ने कहा – विप्रकुमार! प्रत्यक्ष के लिए

बहनों का नाम	सामाजिक सफलता	सामाजिक लोकप्रियता	सामाजिक रुचि
(१) एनेट	१३० प्रतिशतक	८० प्रतिशतक	२७० प्रतिशतक
(२) सेसिल	१३० ,,	१२० ,,	१८० ,,
(३) एमिली	६० ,,	१०० ,,	६० ,,
(४) मेरी	६० ,,	७० ,,	४० ,,
(५) यूनी	१८० ,,	१६० ,,	१०० ,,

इस परिणाम से स्पष्ट है कि 'सामाजिक सफलता' में अगर मध्यमान १०० माना जाय तो जहाँ एमिली और मेरी को ६० अंक मिले वहा यूनी को उनसे दुगने अंक १८० प्राप्त हुए। 'सामाजिक लोकप्रियता' में जहा एनेट को ८० अंक मिले वहा यूनी को १६० मिले। 'सामाजिक रुचि' में जहा मेरी को ४० अंक मिले वहा एनेट को २७० मिले। इन बहनों का ध्यान से अध्ययन करने वाले विशेषज्ञ का कहना है कि इन बहनों में से एमिली को क्रोध बिल्कुल न आता था। एनेट और मेरी क्रोध की पुतली थीं। एमिली को उन बातों से डर न लगता था जिनसे दूसरी बहनें डरती थीं। एमिली दूसरी बहनों के प्रति किसी प्रकार का राग द्वेष प्रकट न करती थी। इन सब कारणों से विशेषज्ञ ने एमिली को आत्म निर्भर तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली कन्या का नाम दिया। इन सब बहनों में मेरी मे सबसे अधिक बचपन दिखाई देता था। यूनी ऐसा बरतती थी जैसे सबकी बड़ी बहन हो। बिल्कुल एक 'वंशानुसक्रमण' तथा लगभग एक सी 'परिस्थिति' में रहते हुए इन बहनों की इतनी विषमता आश्चर्य में डालने वाली वस्तु है। डायानी बहनों के परिचय से हम क्या परिणाम निकाल सकते हैं? एक ही 'वंशानुसक्रमण' एक ही 'परिस्थिति'—और फिर इतना भेद। कई विचारक इन भेदों की सगति 'पुनर्जन्म' के सिद्धान्तों के साथ बिठा सकते हैं।

(समाज शास्त्र के मूलतत्व पृ० १६१ १६२)

प्रमाण की क्या आवश्यकता ? क्या तुम्हारे कुल मे कोई नहीं मरता ?

विप्र कुमार बोला--मरता क्यों नहीं, परन्तु बाल्यावस्था या युवावस्था मे कोई नहीं मरता। मृत्यु तो बुढापे में हो होती है- यही हमारे कुल की सनातन परम्परा है।

इस उत्तर से अन्य विद्यार्थियों को बडा आश्चर्य हुआ उन्होंने अपने आचार्य से इसका जिक्र किया। आचार्य को भी कौतूहल हुआ। उसके कथन की सत्यता की जाच के लिए वे एक दिन स्वय काशी की ओर चल पडे। रास्ते में किसी जीव की हड्डिया बिखरी हुई मिलीं। उन्हें यत्न पूर्वक एक कपड मे लपेट कर आचार्य आगे बढे और शीघ्र ही काशी पहुच गये। वहा उन्होंने हड्डियों को धर्मपाल के आगे रख कर करुण स्वर मे कहा—विप्रवर आपका होनहार कुमार तो अकाल में ही काल के गाल मे चला गया, मै उसी के फूल लेकर आया हू।

एकाएक अपने सुपुत्र का मृत्यु समाचार सुनकर और प्रमाण स्वरूप अस्थियो को सामने देख कर भी ब्राह्मण खिन्न न हुआ। वह हसता हुआ बोला- पण्डित जी, आपको भ्रम हुआ है, कोई और मरा होगा। हमारे कुल मे तो सात पीढियो से अकाल मृत्यु हुई ही नहीं, यह कुत्ते बकरी का फूल होगा, मेरे बच्चे का नहीं हो सकता।

आचार्य ने मन ही मन समझ लिया कि ब्राह्मण पुत्र का अभिमान सत्य था। उन्होंने धर्म पाल से अपने आने का सच्चा प्रयोजन बता कर पूछा — विप्रदेव ! आप मृत्यु से इस प्रकार निश्चित कैसे रहते हैं ? क्या आपके कुल मे इसके लिए किसी विशेष व्रत का अनुष्ठान या मृत्युञ्जय योग सिद्ध किया जाता है ? मैं आप लोगों के दीर्घजीवी होने का रहस्य जानना चाहता हूँ।

धर्मपाल ने सहज भाव से कहा—आचार्य ! सुनिये। हम यथा शक्ति धर्म का पालन करते हैं। दुष्कर्म मे प्रवृत्त नहीं होते। दुर्जनों से दूर रहते और सज्जनो को सेवा से सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते हैं। हम एक पत्नीव्रती हैं। हमारे घर की स्त्रिया पतिव्रता एव सुशीला होती हैं। सतियों से उत्पन्न हमारे पुत्र स्वभाव से ही निर्दोष, मेधावी, तेजस्वी और चरित्रवान होते हैं हमारे घर में सब कर्तव्य का पालन करते हैं। दास दासी तक सदाचार परायण हैं। इस प्रकार मर्यादाबद्ध जीवन व्यतीत करने के कारण हमें अपने विनाश का भय नहीं सताता। वर्षा में छाते की भाति धर्म आपत्तियों में हमारा रक्षक है। धर्म धर्माचारी की रक्षा करता है। आचरण में लाया हुआ धर्म मनुष्य के लिए सुखदायी होता है। यह धर्म का प्रभाव है कि धर्माचारी की कभी दुर्गति नहीं होती। 'मृत्युरपि धर्मिष्ठ रक्षति" मृत्यु भी धर्मनिष्ठ की रक्षा करती है। आचारश्च सता धर्म "(महाभारत) धर्म शुभाचार से सिद्ध होता है। मनु महाराज का यह उद्बोधन हमें स्मरण रहता है कि—

आचाराल्लभ्यते ह्यायुराच रादीप्सिता प्रजा।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥

आचार से दीर्घायु मिलती है, आचार से अभीष्ट सन्तानें प्राप्त होती हैं, आचार से अनन्त धन लाभ होता है, आचार से अशुभ लक्षणों का विनाश होता है।

ऋग्वेद मे भी कहा है कि देवताओं के नियम को तोड कर कोई सौ वर्ष नहीं जी सकता। 'न देवानामतिव्रते शतात्मा च न जीवति।" देवताओं का नियम क्या है ? धर्म, ब्रह्मचर्य, सयम सदाचार दैवी सम्पदाओं का सग्रह, सदुपयोग वेदोक्त ज्ञान और कर्म।

धर्मपाल से दीर्घ जीवन का यह अनुभूत योग पाकर तक्षशिला के कुलपति परम कृतार्थ हुए और उस गृहस्थ से सत्कृत होकर कुछ समय बाद अपने स्थान को लौट गये।

❀

शंका समाधान

महर्षि जीवन

पौराणिकों के प्रश्नों के उत्तर--

प्रश्न—धन बढाना, कला कौशल द्वारा लोगों को सुखी करना और रोग ग्रस्त पापी मनुष्य को औषधादि देना धर्म है अथवा अधर्म ?

उत्तर—न्याय से धन बढाने, कला कौशल निकालने और औषध आदि बनाने में धर्म है। यदि कोई मनुष्य ऊपर कहे कम अन्याय से करे तो अधर्म है। पापी मनुष्यों को रोग से छुडा कर धर्म कार्यों में लगाना धर्म है।

क्या जल में अनन्त जीव हैं ?

प्रश्न—सूक्ष्म यन्त्रों से ज्ञान होता है कि जल में अनन्त जीव हैं। इस अवस्था में क्या जल पान करना चाहिए ?

उत्तर—जब पात्र और पात्रस्थ जल अन्त वाले हैं तो उनमें अनन्त जीव नहीं समा सकते। जल को आंख से देख कर और वस्त्र से छान कर पीना चाहिए।

क्या बहु विवाह वर्जित है ?

प्रश्न--पुरुष के लिए बहुत सी स्त्रियों से विवाह करने का कहा निषेध है ? यदि है तो धर्म शास्त्र में यह क्यों आता है कि यदि एक पुरुष के अनेक स्त्रिया हों और उनमें से एक पुत्रवती हो जाय तो सब पुत्र वालिया समझी जाय ?

उत्तर—वेद में बहु विवाह का निषेध है। ससार में सभी मनुष्य अच्छे नहीं होते। इसलिए यदि कोई अधर्मी पुरुष अनेक स्त्रियों से विवाह कर ले तो उसकी स्त्रियों में परस्पर विरोध अवश्य होगा। यदि एक के पुत्र हो तो दूसरी उसे विष आदि से मार न दें, इसलिए धर्म शास्त्र मे लिखा है कि उसे अपना ही पुत्र समझें।

क्या फलित ज्योतिष माननीय है ?

प्रश्न—ज्योतिष शास्त्र के फलित भाग को क्या आप मानते है ? क्या भृगु सहिता आप्त ग्रन्थ है ?

उत्तर—हम ज्योतिष शास्त्र के फलित भाग को नहीं मानते, किन्तु गणित भाग को मानते हैं। ज्योतिष के जितने सिद्धात ग्रन्थ हैं उनमें फलित लेश भी नहीं है। भृगु सहिता मे गणित है इस लिए उसे हम मानते है। ज्योतिष शास्त्र के सिद्धात ग्रन्थों में भूत, भविष्यत काल का ज्ञान नहीं लिखा है और न ही उनमें मनुष्य के सुख दु ख के ज्ञान का लेख है।

क्या सुख दुःख मे न्यूनता अधिकता है ?

प्रश्न—क्या आप पृथ्वी पर सुख दु ख, विद्या धर्म और मनुष्य सख्या की न्यूनता और अधिकता मानते हैं ? यदि मानते हैं तो क्या पहले इनकी वृद्धि थी ? अब है ? अथवा आगे होगी ?

उत्तर--हम पृथ्वी पर सुखादि की वृद्धि सापेक्ष होने से अनित्य मानते हैं और मध्यम अवस्था में बराबर स्वीकार करते हैं।

धर्म का लक्षण

प्रश्न—धर्म का क्या लक्षण है ? ईश्वर कृत सनातन है अथवा मनुष्य कृत ?

उत्तर—धर्म का लक्षण पक्षपात रहित न्याय है और सत्य का ग्रहण तथा असत्य का परित्याग है। वह वेद प्रतिपादित और ईश्वर कृत सनातन है।

(पृ० ३६६)

ईसाई धर्म प्रचार निरोध आन्दोलन

महात्मा ईसा के ये अनुयायी ?

श्रीयुत बाबूराव पटेल द्वारा सम्पादित बम्बई के 'फिल्म इण्डिया' नामक पत्र के सितम्बर ५६ के अ क मे 'ईसा के पदचिन्ह (Foot Prints of Christ) शीर्षक से एक बडा उपयोगी एवं तथ्यपूर्ण सम्पादकीय लेख प्रकाशित हुआ था। जनता की बढ़ी हुई माग की पूर्त्यर्थ यह लेख पृथक् ट्रैक्ट रूप मे छप गया है। सार्वदेशिक' के पाठकों के लाभार्थ उसका हिन्दी अनुवाद क्रमश प्रकाशित किया जाता है।

—सम्पादक

भारत मे ईसाइयत

भारत मे ईसाइयत का सर्व प्रथम पदार्पण १५०० वष पूर्व लगभग ५वीं शतामें हुआ था जबकि कुछ ईसाई व्यापार के उद्देश्य से भारत मे आये थे और वे फिर यहा ही बस गये थे। वे सीरियन ईसाई के नाम से प्रख्यात हैं और इन १५०० वर्षों मे हिन्दुओं ने इन पर कभी भी अत्याचार नहीं किया। इन शान्ति प्रिय ईसाइयों पर भारत के रोमन कथोलिक मिशनरियों ने ही अत्याचार की पहल की। जो उन लोगों को पोप की अधीनता स्वीकार करने के लिए निरन्तर बाध्य करते रहे।

१२६१ ईस्वी मे पोप निकोलस (चतुर्थ) ने जोहन कानिर्वो को चीन देश को रवाना किया। चीन जाते हुए यह मिशनरी भारत में ठहरा और यहा १३ महीने रहा। भारत भूमि पर पाव धरने वाला यही पहला ईसाई मिशनरी था। अपने निवास काल में इसने भिन्न २ स्थानों पर लगभग १०० व्यक्तियों को ईसाई बनाया।

इसके पश्चात् एक फ्रञ्च मिशनरी आया। वह १३२३ में बम्बई मे उतरा परन्तु १४वीं शती समाप्त होने से पहले ही युरोप के अनेक ईसाई मिशनरियों ने थाना (बम्बई) और क्विलन (ट्रावन्कोर) के बीच पश्चिमी घाट पर कई ईसाई उपनिवेश स्थापित कर लिये थे। पुर्तगाल का क्रूर लुटेरा वास्कोडिगामा जब १५०२ ई० में दूसरी बार भारत में आया तो उसे भारत के पश्चिमी तट पर ईसाइयों की बस्तियाँ देख कर आश्चर्य हुआ। इस ईसाई वर्ग ने अपने राजा और अपने प्रदेश से विश्वासघात करके ईसाई लुटेरे की अधीनता स्वीकार कर ली

भारत में पुर्तगाल साम्राज्य के संस्थापक अल-फन्सो अलबुकर ने १५१० से लेकर १५१५ तक गोवा और लका के मध्यवर्ती समस्त समुद्री तट पर शासन किया। उसने तलवार और आग के बल पर ईसाइयत की जड़ जमाई। उसने मुख्य रूप से पश्चिमी तट के मुसलमानों को अपने प्रतिशोध का लक्ष्य बनाया।

पुर्तगाल के राजा को भेजे हुए अपने एक पत्र मे वह गोआ के आक्रमण का वर्णन इस प्रकार करता है —

"तब मैने नगर को जला दिया और जो सामने आया उसी को मौत के घाट उतार दिया। आपके लोगों ने लगातार कई दिन तक खून बहाने का कार्य चालू रखा। जो भी जहा कहीं भी पकड़ा गया

वहीं पर मार डाला गया। मुसलमान तो शायद ही कोई जीवित बचा हो। उनकी मस्जिदों में आग लगा कर उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। हमारी गणना के अनुसार ६ ०० व्यक्ति मार डाले गये। बहुत से मुस्लिम पुरुष, स्त्रियां और तीरन्दाज मरे। मेरे स्वामी! यह कार्य महान था जो अच्छी तरह हाथ में लिया और पूरा किया गया। मैं मुसलमानों की किसी इमारत या कब्र को खड़ा नहीं रहने देता। जो जीवित बन्दी बनाये गये हैं मैंने उन्हें आग में भूनने की आज्ञा दे दी।" (श्रीयुत मणिलाल सी० पारीख कृत" भारत में ईसाइयों द्वारा धर्म परिवर्तन Christion Proselytism in India पृष्ठ ३६, ३७, १९४७ का संस्करण)।

अलबुकर ने पश्चिमी तट पर आतंक व्याप्त किया, सहस्रों हिन्दुओं और मुसलमानों को जीवित जलाया, सहस्रों को ईसाई बनाया और सहस्रों का सर्वस्व छीना। परन्तु पुर्तगाल के लोभी राजा को इससे सन्तोष न हुआ। वह चाहता था कि मुझे सुवर्ण और ईसाई दोनों ही प्राप्त हों। अत जेसस सोसायटी के संस्थापक इगनेटियस लायोला की दया से फ्रांसिस ऐक्जेवियर भारत भेजा गया जो समस्त ईसाई प्रचारकों में महानतम समझा जाता है। वह १५४२ में गोआ में आया था। वह ४॥ वर्ष भारत में रहा और उसने ६० हजार व्यक्तियों को जिनमें अधिकांशत मछियारे थे, ईसाई बनाया।

वह मिशनरी बड़ा मतान्ध था। वह जातीय, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक सभी दृष्टियों से अपने को बहुत ऊंचा समझता था। ब्राह्मणों के विषय में उसकी विचारधारा इस प्रकार थी —

"इस देश में कुछ व्यक्ति ब्राह्मण वर्ग के हैं। ईसा में विश्वास न रखने वाले सभी लोग उनका समर्थन करते और उन्हें प्यार करते हैं। देव-मन्दिर उन्हीं के अधिकार में हैं वह वर्ग संसार में सब से अधिक दुष्ट वर्ग है। ये लोग कभी भी सत्य नहीं बोलते, और झूठ घड़ने में बड़े पटु हैं। ये लोग भोले भाले अज्ञानी लोगों को खूब ठगते हैं। ये ब्राह्मण बहुत कम पढ़े लिखे होते हैं परन्तु उनकी त्याग भावना इस गुण की बहुत कुछ पूर्ति कर देती है।

(श्रीयुत पारीख कृत ईसाइयों द्वारा धर्म परिवर्तन पुस्तक पृ० १२)

इसी फ्रांसिस ने सामूहिक धर्म परिवर्तन का सूत्रपात किया। उसका उद्देश्य था पश्चिम की गोरी जातियों के लिए राज सत्ता की प्राप्ति और उसका दृढीकरण। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उसने बड़े गर्हित उपायों का आश्रय लिया। वह बड़ा जल्दबाज था इसके कारण वह प्राय बड़ा निर्दयी और क्रूर बन जाता था। उसने बच्चों को मा बाप के विरुद्ध किया। उसने बच्चों को बहका कर उनके द्वारा परिवारों की देव मूर्तियों को तुड़वाया, उन पर थुकवाया और पैरों तले कुचलवाया।

उसने जेसस सोसायटी को भेजे हुए अपने एक पत्र में लिखा "ईसाई धर्म की दीक्षा प्राप्त करके, नये ईसाई अपने घरों को लौट जाते हैं और अपनी पत्नियों और परिवारों को ईसाई बनने के लिए तैयार करके उनके साथ पुन लौट आते हैं। जब सब ईसाई बन चुकते हैं तो मैं झूठे देवी देवताओं के मन्दिरों को गिराने और मूर्तियों को नष्ट भ्रष्ट करने का आदेश दे देता हू। मैं नहीं जानता कि उन व्यक्तियों के द्वारा जो कभी मूर्तियों को पूजते थे, मन्दिरों को गिराये जाने और मूर्तियों के तोड़े जाने के दृश्य को देखकर मुझे जो आनन्द आता है उसे किन शब्दों में वर्णन करूं।"

(श्री पारीख जी की पुस्तक, पृ० सं० २०)

यदि वह दिव्य ज्योति जो फ्रांसिस जैसे मनुष्य के हृदय में प्रज्वलित हुई मानी जाती है इतनी निर्मम हो सकती है तो यही ज्योति ईसाइयत के

व्यवसायी सिपाहियों के हृदयों में जो तलवार की नोक पर ईसाई मत का प्रचार करने के लिए किराये पर रखे जाते थे कितना भयकर रूप लिए हुए होगी।

फ्रांसिस ने पुर्तगाल के राजा को लिखा और उसके पत्र के परिणाम स्वरूप राजा ने घोषणा की 'समस्त मूर्तिया खोज की जाकर तोडी जायेंगी और उन व्यक्तियों को कठोर दण्ड दिया जायगा जो मूर्तिया बनायेंगे अथवा किसी ब्राह्मण को शरण देंगे वा छुपायेंगे।'

(हिस्ट्री आव् क्रिश्चियन मिशन इन इण्डिया, पृ० ५४)

परन्तु सब से निकृष्ट बात धार्मिक न्यायालयों की स्थापना हुई जो फ्रांसिस की प्रेरणा पर पुर्तगाल के राजा ने की। यह सस्था बड़ी अधार्मिक और दुष्टतापूर्ण थी। इसने २०० वर्षसे अधिक कालतक ईसाइयों और गैर ईसाइयों दोनों पर अगणित अत्याचार किये। यह संस्था अमानवीय यातनाओं और विनाश का राक्षसी यन्त्र था जिसका प्रयोग न केवल सामूहिक धर्म परिवर्तन के लिए ही अपितु भारत मे पुर्तगाल की राज सत्ता के विस्तार और सस्थापन के लिए किया जाता था। ईसाइयों के समस्त इतिहास में गोआ का यह न्यायालय अपने ढग का निकृष्टतम न्यायालय था। यह इतना अमानवीय था कि रोमन कथोलिक चर्च के बड़े २ पादरी भी समय २ पर इसकी निन्दा किया करते थे। ईवोरा के आर्क विशप ने लिस्बन नगर में अपने एक धर्मोपदेश में इसका निम्न प्रकार वर्णन किया था —

"गोआ का धार्मिक न्यायालय बड़ा बदनाम न्यायालय था। यह न्यायालय उन स्त्रियों को भी जेल भेजने के लिए बदनाम था जो ईसाई बनने से इन्कार कर देती थीं। जेल मे उनके साथ बलात्कार किया जाता था और पाशविक वृत्तियों की सन्तुष्टि के बाद वे धर्म विरोधिनी कही जाकर जीवित जला दी जाती थीं।

(श्रीयुत पारीख की पुस्तक, पृ० २१-२२)

इस आश्चर्य जनक कार्य के उपलक्ष्य में फ्रांसिस को सन्त की उपाधि दी गई। ईसाई चर्च की 'सन्त' की यह परिभाषा देखने योग्य है। हिन्दुओं के देवी देवताओं की मूर्तियों को नष्ट-भ्रष्ट करने कराने मे आनन्द लेने वाला यह व्यक्ति ईसाई मत की दिव्यता और चमत्कारों के प्रमाण-स्वरूप स्वय मूर्तिवत् सुरक्षित रक्खा जाकर पूजा जा रहा है। इस बात का ठीक न्याय तो कवि जन ही करेंगे।

पुर्तगाल के निवासियों ने भारतीयों को अपने प्रभु ईसा के प्रति निष्ठावान बनाने का कार्य जारी रखा। उनके एक हाथ में तलवार और दूसरे मे 'क्रास' रहता था।

ज्यों २ पुर्तगाल की सत्ता भारत में पैर जमाती गई त्यों २ वह निर्मम बनती गई। समय २ पर राजकीय घोषणाए होती रहीं जिनके द्वारा ईसाइयों और गैर ईसाइयों में द्वेष पूर्ण भेद उत्पन्न किये गये। गैर ईसाइयों को अनेक प्रकार से अयोग्य उद्घोषित किया गया। १५५९ ई० में एक कानून बना जिसके अनुसार हिन्दुओं को राज्य की समस्त नौकरियों से वचित कर दिया गया। उसी वर्ष एक दूसरा कानून बना जिसके आधार पर गैर ईसाई अनाथों की सम्पत्ति ईसाई बनने से इन्कार कर देने पर जब्त कर ली जाती थी। एक कानून हिन्दुओं के मन्दिरों और प्रतिमाओं को नष्ट करने और गैर ईसाइयों के समस्त धार्मिक पर्वों को बन्द करने के लिए बना। १५६० में समस्त ब्राह्मणों और स्वर्णकारों को आज्ञा दी गई कि वे ईसाई धर्म स्वीकार करें अन्यथा गोआ छोड़ कर चले जाय। १५६७ ई० में हिन्दुओं को उपनयन, विवाह और शव-दाह इत्यादि महत्त्व पूर्ण संस्कार करने से रोक दिया गया। हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थ जब्त किये गये। १५ वर्ष से ऊपर की आयु के समस्त

गैर ईसाइयों को ईसाई मत के धार्मिक सत्संगों में भाग लेने के लिए विवश किया गया। हिन्दुओं के मन्दिर गिराये जाकर उनके स्थान पर गिरजा घर बनाये गये। १५५५ ई० में एक और कानून बना और हिन्दुओं को राज्य की भूमि को किराये पर देने के नागरिक अधिकार से वंचित किया गया। १६८४ई०में एक राजकीय आज्ञा के द्वारा गोआ के लोगों के लिए उनकी मातृभाषा (कोंकनी) का प्रयोग निषिद्ध ठहराया गया। उन्हें ३ वर्ष की अवधि दी गई कि वे इस काल में पुर्तगाल देश की भाषा सीख लें अन्यथा उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायगी। इस प्रकार उन पर पुर्तगाल की भाषा बलात् लादने का उपक्रम हुआ। इन सब कानूनों का उद्देश्य क्या था? यह कि या तो वे ईसाई धर्म स्वीकार करें या राज्य को छोड़ कर अन्यत्र चले जाय।

(नियोगी कमेटी की रिपोर्ट का अध्याय, १५ पृ० ६६)

रोम का ईसाई 'ब्राह्मण'

मानवीय प्रतिभा का नाटक रचने के लिए ईसाइयत कितनी खुली छुट्टी देती है, इसबात को राबर्ट डी० नोबिली ने सिद्ध कर दिखाया था जो १७ वीं शती के प्रारम्भ में आया था। इसका जन्म इटली के उच्च घराने में हुआ था। यह बड़ा बुद्धिमान् और धर्म का प्रेमी था। उसने देखा कि राजसत्ता के बल पर आदि वासियों और छोटी जातियों के लोगों के सामूहिक धर्म-परिवर्तन की नीति घातक है जिसका आश्रय फ्रांसिस तथा अन्य कथोलिक मजहबी दीवाने लेते रहे थे। उसे स्पष्ट अनुभव हुआ कि जब तक उच्चवर्ग के हिन्दू ईसाई न बनेंगे तब तक भारत की भूमि में ईसाइयत की जड़ें गहरी न बन पायंगी। अत उसने फ्रांसिस नीति का परित्याग करके अपनी नीति अपनाई।

अत यह रोमन कथोलिक साधु पुर्तगाल के वापस तय के अधिकार क्षेत्र से बाहर मदुरा पहुंचा, इसने भगवे वस्त्र धारण किये, माथे पर चन्दन लगाया, गले मे यज्ञोपवीत डाला जिसमे क्रास लटका हुआ था और वह मदुरा के ब्राह्मणों के मुहल्ले में मकान लेकर रहने लगा। उसने कहा मैं 'रोम' का ब्राह्मण हूँ आर्यावर्त के एक प्राचीन कुल से सम्बद्ध हू। उसने प्रमाण मे कुछ कागज पत्र भी प्रस्तुत किये। उसने स्थानीय ब्राह्मणों को कहा कि ईसाई बन जाने पर मनुष्य की जाति, कुल और प्रथाए नहीं छूट जातीं।

(पी० थामस कृत 'क्रिश्चियन एण्ड क्रिश्चियनिटी इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान' पृ० ६५-७० भारत पाकिस्तान में ईसाई और ईसाइयत)

उसने तामिल, तेलगु और संस्कृत पढ़ीं, शाकाहारी बना और ब्राह्मणों के ढग से रहने लगा। उसने ब्राह्मण से ईसाई बने हुए ईसाइयों के लिए संस्कृत में 'ईसाई सन्ध्या वन्दन' नामक एक प्रार्थना पुस्तक लिखी। इतना ही नहीं उसने 'येशु वेद' नामक एक ग्रन्थ रच डाला जिसका आधार ईसा का जीवन और उनकी शिक्षाओं को बनाया। १८४० तक यह वेद सच्चा ग्रन्थ माना जाता रहा जब प्रोटैस्टैंड पादरियों ने इस धोखा धड़ी का भाडा फोड़ दिया तभी इस 'वेद' की मान्यता कम हुई। १६०७ से लेकर सन् १६११ तक के ४ वर्ष के काल में उसने ८७ ब्राह्मणों को ईसाई बनाया। यह नोबिली की बहुत बड़ी सफलता थी जिससे उसकी प्रसिद्धि बढ़ी और जिसके कारण वह प्रतिद्वन्द्वी मिशनरियों की ईर्ष्या का लक्ष्य बन गया। परन्तु पोप ग्रेगरी (१६२१-२३) ने उसके कार्य को पसन्द करके घोषणा की "हम वर्तमान और भावी नव ईसाइयों को अनुमति देते हैं कि वे यज्ञोपवीत और चोटी रख सकते हैं जिससे उनकी जाति, सामाजिक स्थिति और कार्य की अलग पहचान रहे। वे अलकार के रूपमें चन्दनका प्रयोग और स्वच्छता की दृष्टि से स्नान कर सकते हैं आदि २। इस ब्राह्मण साध ने जो अपना गोत्र

'रोमन' बताया करता था, ४० वर्ष तक कार्य किया और अपने छल प्रपञ्च और व्यक्तित्व से १ लाख लोगों को ईसाई बनाया। वह सन् १६५६ ई० मे ८६ वर्ष की आयु में मरा। धार्मिक विषय में उसका यह वैयक्तिक चमत्कार था। क्योंकि जिन लोगों ने ईसाई मत ग्रहण किया था वे उसकी मृत्यु के तत्काल पश्चात् पुन हिन्दू धर्म मे वापस चले गये। (हमे इसमे सन्देह है क्योंकि उन दिनों आज कल जैसा शुद्धि कार्य प्रचलित न था।

—अनुवादक)

कैथोलिक मिशन का कार्य बढता ही गया। १७०० ई० में फ्रांस के मिशनरियों ने पाण्डचेरी मे अपना डेरा जमाया। १७०० ई० मे कलकत्ता नगर में कैथोलिकों का गिरजा घर बना। १७०३ ई० में इटली के मिशनरी तिब्बत में पहुचे। इस प्रकार तिब्बत से कन्याकुमारी अन्तरीप तक और पञ्जाब से आसाम तक देश भर मे कैथोलिक मिशन का जाल फैल गया। पुर्तगाल के समुद्री डाकुओं के भारत में प्रवेश के बाद पहले २०० वर्षों मे भारत मे कैथोलिक चर्च के ६,५८,००० अनुयायी थे।

(कैथोलिक डाइरेक्टरी ८५)

१७०६ ई मे प्रोटैस्टेण्ट मिशनरी भारत मे आये। अगले १०० वर्षों मे वे समस्त यूरोप यथा हालैंड, डन्मार्क, जर्मनी, इगलैंड इत्यादि २ से आए। इनमें अनेक मिशनरी बड़ मतान्ध थे जिनमे डा० अलेक्जेण्डर डफ का नाम उल्लेखनीय है। वह १८५७ मे भारत मे था जो प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य सग्राम का वर्ष था। वह मिशनरी और राजनीतिज्ञ दोना ही था। वह अग्रेज साम्राज्य वादियों में अत्यधिक बदनाम साम्राज्यवादी था। वह स्वभावत साम्राज्य निर्माता था। उसका विश्वास था कि भारत मे पश्चिम के लिए ईसाई साम्राज्य की स्थापना के निमित्त धर्म को साधन के रूप में प्रयुक्त करना चाहिए।

अग्रेज लोग ईसाई प्रचारकों उनमे भी प्रोटै-स्टैंड मिशनरियों की सहायता किया करते थे। इस सहायता का अनुमान केवल एक बात से सहज ही लग सकता है कि प्रत्येक देशी रजवाड के अग्रेजी छावनी क्षेत्र मे आज भी बडे २ गिरजाघर और मिशन के भवन खड़े है जो गैर ईसाइयों के धन से बने थे। अग्रेजों ने अपने क्षेत्रों मे सामूहिक धर्म परिवर्तन के लिए क्या किया होगा इसका किसी को भी सहज ही अनुभव हो सकता है।

जिस प्रकार अन्य देशो मे ईसाई चर्च और राज्य दोनो मिल कर काम करते हैं इसी प्रकार भारत मे राज्य और ईसाई चर्च ने मिल कर काम किया और १२६१ ई० से लेकर (जब पहले मिश-नरी कानवो ने भारत मे पैर रखा था और १३ महीने तक यहा रह कर १०० व्यक्तियों को ईसाई बनाया था) अब तक लाखो व्यक्ति ईसाई बना लिए गए हैं।

अकों मे वर्णित कहानी इस प्रकार है —

वर्ष	ईसाई धर्म मे दीक्षित हुए व्यक्तियों की सख्या	काल (वर्षों में)	सख्या वृद्धि	वृद्धि का अनुमानिक शतक	
१५५०	१२०,०००	२५०	११९९००	१२००००	प्रतिशतक
१६००	२७०,०००	५०	१५०,०००	१२५	"
१७००	६००,०००	१००	३३०,०००	१२२	"
१८००	९५८,०००	१००	३५८,०००	५७६	"
१९११	३८७६,२०३	१११	२९१८,२०३	३०३५	"
• १९२१	४७५४,०७९	१०	८७७८७६	२२५	"
१९३१	६२९६,७३३	१०	१५४२६५४	४०	"
१९५१	८१५७,७६५	२०	१६४,९२४	२५	"

सन् १२६१ ई० मे १८० ईसाई और १९५१ मे ८१ लाख ५७ हजार ७ सौ ६५ ईसाई—६६० वर्षों में तलवार और क्रास के सहारे उपाजित यह फसल बहुत बढिया है। गत ७ वर्षों के काल में यह खेती बहुत बढी होगी क्योंकि इन दिनों ईसाई प्रचारक हमारे धर्म निरपेक्ष सविधान का पूर्णतया प्रयोग कर रहे है।

जो मिशनरी एकमात्र प्रकार का अपेक्षा सख्या अधिक पसन्द करते हैं वे आदि वासियों, परिगणित जातियों, पिछडे वर्गों, कोढियों और जन जातियों को अपने कार्य का क्षेत्र बनाते है उन्हें अपने राजनैतिक कार्य के लिए पर्याप्त क्षेत्र मिल जाता है क्योंकि वे समझते हैं कि भारत मे लग भग ७॥ करोड व्यक्ति अछून पिछडी और जन जातियों के हैं। ईसाई मिशनरी इन सबको अपने बाड की भेड समझते हैं।

मानचित्र, पैसा और जन शक्ति

सामूहिक धर्म परिवर्तन से ये मिशनरी किस उद्देश्य को पूर्ण करना चाहते है इसकी चर्चा करने से पूर्व आओ इनके कार्य के प्रकार की जाच पडताल करें।

ईसाई मिशनरियों ने अपनी प्रगतियों के लिए ६ क्षेत्र चुने हुए हैं —

(१) अर्थ (२) शिक्षा (३) धर्म (४) चिकित्सा (५) परोपकार (६) राजनीति।

१—'अर्थ' शीर्षक के अन्तर्गत-कृषि सम्बन्धी उपनिवेश सहकारी समितिया, बीज और धन के बैंक, ऋण देने के सस्थान, छापेखाने, तथा विविध प्रगतिया यथा—मेले, कार्निवल, बैलों के मेले, बच्चों की प्रदर्शिनी इत्यादि २। इन प्रगतियों के लक्ष्य मे किसान और मजदूर रहते हैं।

२—'शिक्षा' शीर्षक के अन्तर्गत मान्तसरी श्रेणिया जो ग्रामों में वृक्षों के नीचे छोटे २ बच्चों को ईसा का परिचय देने के लिए लगाई जाती हैं, प्राइमरी, मिडिल हाई स्कूल, कालेज, टीचर्स ट्रेनिङ्ग स्कूल, औद्योगिक शिक्षा सस्थान तथा प्रचारकों के बच्चों के लिए नियत शिक्षा सस्थाए आती हैं। इस कार्य के अन्तर्गत ३ वर्ष के बच्चे से लेकर ३० वर्ष तक के युवा पुरुष और स्त्रिया आ जाती हैं। यह उपाय बडा सूक्ष्म और चातुर्य पूर्ण है। विद्यार्थी पर किसी न किसी प्रकार से ईसा के जादू की छाप पडे बिना नहीं रहती। यह कार्य सभी वर्गों के लोगों को प्रभावित करने के लिए किया जाता है।

३—'धर्म' शीर्षक के अन्तर्गत धार्मिक कालेज, धर्म प्रचारकों के प्रशिक्षण केन्द्र पत्र व्यवहार द्वारा बाइबिल का पाठ्यक्रम बाइबिल, ट्रैक्टों, चित्रों, पोस्टकार्डों तथा अन्य धार्मिक साहित्य का नि शुल्क वितरण, ईसाई आश्रम, चर्च के भवन, सडकों के कोनों पर प्रचार, ग्रामों मे कार्य, जगलों में प्रचारार्थ प्रवेश, धनसग्रह और सामूहिक धर्म परिवर्तन आता है। यह कार्य मुख्य रूप से आदि वासियों, गोंड, सथाल, बैगा, उराव, मु डा, भील आदि जन जातियों, हरिजनों तथा अन्य निर्धन एव पिछडे वर्गों में किया जाता है।

४—'चिकित्सा' शीर्षक के अन्तर्गत ग्रामों और नगरों के औषधालय, आते हैं। इन औषधालयों मे भी प्रसव केन्द्रों की व्यवस्था को प्रमुखता प्रदान की जाती है जिससे जन्म लेते ही बच्चा ईसा के दर्शन कर सके। कुष्ठालयों तथा तपेदिक के स्वास्थ्य केन्द्रों इत्यादि का भी सचालन होता है।

५—परोपकार के कार्यों में-अन्धों के लिए आश्रय स्थान, अनाथालय, पतित देवियों के लिए रक्षण गृह, ईसाई बने हुए लोगों लिए आश्रम, सामाजिक और कल्याणकारी सस्थान, विद्यार्थी छात्रावास, प्रचारक विश्राम केन्द्र आदि २ सम्मिलित हैं।

६—ईसाई प्रचारकों की राजनीतिक प्रगतिया बडी गूढ और विविध होती हैं। वे साधारणत सकट कालीन परिस्थितियों का लाभ उठाते हैं।

इन सब कार्यों के लिये प्रचुर धन की आवश्यकता होती है। यह मानी हुई बात है कि भारत के लोगों के पास ईसाई प्रचारकों को देने के लिए धन नहीं है। इस पर भी धर्म परिवर्तन के ये केन्द्र चाहे आप उन्हें औषधालय, स्कूल आदि के नामों से सबोधित करें छ शताब्दियों से अधिक काल से चल रहे हैं।

रिजर्व बैंक आव् इ डिया इस सन्देह की निवृत्ति कर देता है। वह बताता है कि जनवरी ५० से जून ५४ तक ४½ वर्षों मे २९ करोड २७ लाख रुपया भारत के ईसाई मिशनरियों को प्राप्त हुआ। धन निम्नलिखित देशों से आया —

देश	राशि
अमेरिका	२०,६८,६३,०००
कनाडा	१,६७,५६,० ०
बेल्जियम	६,४७ ०००
डेन्मार्क	३३,९१, ००
फ्रास	७,६१,०००
जर्मनी	११,१६,०००
नारवे	२७,९७ ०००
स्वीडन	६४,४१ ०००
स्विटजरलैंड	१५,७७, ००
अन्य देशों से	१४,७२, ००
इ ग्लैंड	४,८३,८६,०००
विविध	२५,२६,०००
	२९,२७,३६,०००

यह सूचना भारत सरकार ने मध्य प्रदेश राज्य सरकार द्वारा नियुक्त नियोगी कमेटी को दी थी।

भारत सरकार को पता नहीं है कि विदेश के दानी लोग और धार्मिक सस्थान बड़ी २ रकमे देते है। भारत मे व्यापार करने वाली बहुत सी विदेशी फर्में नकद दान के रूप में बड़ी २ राशिया अदा करती हैं जो युरोप में वास्तविक दानियों से प्राप्त कर ली जाती हैं।

इस प्रकार के दान की राशि १ अरब रुपए से अधिक ही होगी।

इस प्रकार ईसाई प्रचारकों को बहुत धन मिलता है। आओ अब उनकी जन शक्ति का निरीक्षण करलें। १९५४ ५५ मे विदेशी मिशनरियों की तुलनात्मक सख्या इस प्रकार थी —

वर्ष	सख्या	कार्य का क्षेत्र
१९४०	५४१७	भारत और पाकिस्तान
१९४७	५०४०	,, ,, ,,
१९५०	४७४४	,, ,, ,,
१९५१	४३७७	केवल भारत
१९५५	४८७७	,, ,,

छोटे २ ईसाई सस्थानो के कार्यकर्त्ताओं की बढ़ी हुई सख्या गिनी नही गई, और न छोटे २ विविध कार्यकर्त्ताओं का ही सूची तय्यार की गई है।

(देखें नियोगी कमेटी की रिपोर्ट पृ० १०४)

ये कार्यकर्त्ता २४ प्रदेशीय ईसाई कौन्सिलों द्वारा प्रशासित होते हैं जिनके केन्द्र आध्र आसाम, बगाल, बिहार, बम्बई, हैदराबाद, कर्नाटक, केरल, तामिलनाद मध्य भारत, उत्तरी पश्चिमी भारत, सथाल, उत्तर प्रदेश और उत्कल (उडीसा) मे स्थित हैं। इस प्रकार की भारी समस्या देशमें व्याप्त है।

ये विदेशी मिशनरी २० देशों से आते है यथा, अमेरिका, फ्रास, ब्रिटेन, स्वीडन, हालैन्ड, जर्मनी, स्विटजरलैन्ड, बेल्जियम, स्पेन, पुर्तगाल, कनाडा, आयरलैंड, स्काटलैंड, ब्राजील आस्ट्रेलिया, फिनलैंड, इटली, हगरी और डेन्मार्क इस प्रकार पश्चिम के २० देश भारत को सफेद चमडी वाले लोगों के ईसाई साम्राज्य का अ ग देखने के लिए उत्सुक हैं। इस क्राइस्ट (प्राइवेट) लिमिटेड के समस्त हिस्से पश्चिम के सफेद चमडी वाले लोगों की सम्पत्ति देख पडती है।

महिला जगत

भारतीय नारी की लोकोत्तर झांकी

[लेखक—श्री रामनिवास शर्मा]

कुमार सभव मे आर्य नारी की महिमा का वर्णन कालिदास ने इन शब्दों में किया है -

इयेष सा कर्तुम वन्ध्यरूपतां ।
समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः ॥
अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं ।
तथा विध प्रेम पतिश्च तादृशः ॥

तप से सौन्दर्य को सफल बनाने की इच्छा क्या पवित्रता के विश्व की भी अनोखी बात नहीं है ? दार्शनिकता की भी सीमा से बाहर की वस्तु नहीं है ? परन्तु भारतीय नारी की तो यह नित्य की सुलभ लोक परम्परा है ।

यही कारण है कि आर्य जाति की आज की पतनोन्मुख अवस्था मे भी भारतीयनारी आर्योचित सम्पूर्ण सुख-सौभाग्य को सदैव अपने उत्तरीय मे सभाले रहती है ।

अपनी छोटी सी गृहस्थी मे आज भी वह गांधी वाद, मार्क्सवाद, और विश्व बन्धु भारतीय ज्ञान-वाद, अधिकारवाद, धनवाद, और श्रमवाद के नाना क्लेशों को समन्वय सामंजस्य के द्वारा ठीक करती रहती है । यदि वह अपने सार्वजनिक और सार्वभौम दृष्टिकोण को विस्फारित और व्यक्तित्व को विस्तारित करले तो विश्व कुटुम्ब के प्रत्येक कार्य का इस समय भी सुचारु रूप मे सचालन कर सकती है । इसलिए कि उसकी रग २ में आज भी उसकी लोकोत्तर प्राचीन दैवी भावनाओं और अलौकिक उदात्त परम्पराए नाम शेष नहीं हुई हैं । ज्ञान में याज्ञवल्क्य और शक्ति में मधु-कैटभ उसकी परम्परा का तात्विक आभास अपने अधिकृत रूप में इस समय भी हिन्दू कुटुम्ब सस्था

विदेशों के इन कार्यकर्ताओं का प्रतिनिधित्व इस प्रकार है —

अमेरिका	५१ प्रतिशतक
फ्रास	१२ ,,
ब्रिटेन	१० ,,
स्वीडन	६ ,,
हालैंड	६ ,,
जर्मनी	३ ,,
स्विटजरलैंड	३ ,,
बेल्जियम	३ ,,
अन्य	६ ,,

इस तालिका से स्पष्ट है कि अमेरिका के धर्म प्राण जोहन फास्टर, डलेस भारत मे सबसे अधिक मिशनरी और धन भेजने है. अमेरिका से खुले रूप में प्राप्त होने वाली राशि कुल राशि का ६६ प्रतिशत होती है :

ये आंकड़े एक मात्र विदेशी मिशनरियों के हैं। इनमें उन नव ईसाइयों की बड़ी संख्या सम्मिलित नहीं है जो मिशनरी कार्य के लिए प्रशिक्षित किए जाते हैं और जिनमें से प्रत्येक को ३०) से लेकर ३००) मासिक तक वेतन मिलता है । ये 'प्रचारक' कहे जाते हैं ।

(नियगी कमेटी की रिपोर्ट पृ० १०२)

(क्रमशः)

में प्राय दृष्टिगोचर होता है। आज भी हमारी गृहस्थी के प्रत्येक क्षेत्र मे आर्य संस्कृति को इसी ने कायम रख छोड़ा है। शील सकोच लज्जा और धर्म जैसे समाज पोषक तत्वों को इसी ने अनुप्राणित कर रखा है।

वैसे ही वैज्ञानिक क्षेत्र मे वैदिक मुनि पत्नियों और ब्रह्मवादिनी देवियों की ज्ञान परम्परा आज भी दार्शनिकों और मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि में भारतीय नारी की विचार धारा और कल्पना सृष्टि मे जीवित है। इसका पता गार्हस्थ की उसकी अपनी रसायन शाला और पारवेषण की नव नव्य परिकल्पनाओं में नित्य ही हमे मिलता रहता है। इसके अपने घरेलू प्रकाश वायु और जल के विविध वैज्ञानिक और यान्त्रिक प्रबन्ध भी इसकी अपनी वैज्ञानिक रुचि के ही परिचायक है। विशेषत इसका अपनी गृहस्थी का इस क्षण का संस्कृतिवाद, समाजवाद, साम्यवाद, नीतिवाद, अर्थवाद, और सौन्दर्यवाद, क्या किसी भी दृष्टि से नगण्य कहे जा सकते है।

कुछ अन्यतम विदेशी विद्वानों ने भी भारतीय नारी का गुणगान करने का सफल यत्न किया है— उनके अपने कुछ उद्गार इस प्रकार है —

१—सह धार्मिकता के आदर्श का पूर्णत निर्वाह करने वाली देवियां भारत के सिवा अन्यत्र नहीं मिल सकतीं।

भारतीय नारी के आदर्श की प्रतीक सीता के विषय में मिस मेरी स्काट इस प्रकार कहती है –

"सीता नारीत्व का वह मधुरतम आदर्श है जिसका मैने पहले कभी अध्ययन न किया था।'

कुछ अभिनन्दनीय प्रसङ्ग इस प्रकार भी हैं और वे प्रवासी युरोपियन बन्धुओं के अपनी आखों देखे से हैं —

(क) किसी भी जाति के इतिहास मे राजपूत महिलाओं की भांति अनुराग एव देश प्रेम के इतने अधिक ज्वलन्त उदाहरण नहीं मिल सकते।

(ख) भूमण्डल के इतिहास मे माता देवल के समान वीरता और सज्जनता का उदाहरण शायद ही कहीं और मिले।

(ग) हिन्दू बच्चे युरोपियन बच्चों की अपेक्षा बहुत तेज और निपुण होते है। इसका कारण उनकी माताए ही है।

भारतीय नारी की विशेषता के सूचक बून्दी की महारानी और राज माता के निम्नलिखित सवाद पर सामयिक आवश्यकता की दृष्टि से भी विचार कीजिए —

महाराणी ने महल में राव की मृत्यु का समाचार सुनकर चिल्लाकर पूछा–'क्या वह अकेला ही चल बसा ?'

राजमाता—कभी नहीं, वह बालक जिसने इन छातियों का दूध पिया है, रणक्षेत्र में अकेला प्रयाण नहीं कर सकता। अर्थात वह हजारों को मारकर मरा होगा।

यह कहते हुए माता का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया। उनकी छातियों से दूध बह निकला।

यह सब पुण्यश्लोक भारतीय नारियों के ही दूध अथवा भारत के जल वायु के ओज-तेज का ही प्रभाव था।

ऐसी अवस्था मे यह कहना पूर्णत सत्य है कि यदि आज भी भारत की जाग्रत नारी अपने स्वरूप को अच्छी तरह समझने तो वह क्या नहीं कर सकती ? हमारी समझ में तो आज के नाशोन्मुख ससार के धरातल को वह बहुत कुछ ऊंचा उठा सकती है और भारत को वह न जाने क्या और कैसा बना सकती है ? सच तो यह है कि आजभी वह ससारको पवित्रता,कर्तव्यपरायणता और वास्तविक वीरता का पाठ पढा सकती है। भारतीय नारी के लोकोत्तर सपूत श्रीराम के लिए देखिए आदि कवि वाल्मीकि इस तरह लिखते है —

राम धनुष पर एक ही बार बाण चढ़ाते हैं।'

यह है भारतीय नारी और उसके सपूतों के विश्व-दुर्लभ कारनामें। आज भी इन्हीं से आर्य जाति जीवित है और भविष्य में भी इन्हीं से हमें सब कुछ आशा है।

साहित्य

समालोचना

महर्षि भरद्वाज प्रणीत बृहद् विमान शास्त्र

सम्पादक एवं भाषानुवादक—स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक

प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन नई दिल्ली १

सजिल्द मूल्य १५) प्रति

यह ग्रन्थ विमान विद्याविषयक अलभ्य सामग्री से परिपूर्ण है जिसमें उक्त विद्या की बड़ी सूक्ष्मता से विवेचना की गई है। इस ग्रन्थ में विमानों के बहुसंख्यक प्रकारों, नामों उनके निर्माण और सचालन के विविध उपायों के वर्णन को पढ़कर मनुष्य आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता। निश्चय ही यह ग्रन्थ यन्त्रविद्या और विज्ञान के क्षेत्र में एक बड़ी क्रान्ति का सन्देशवाहक सिद्ध होगा।

रामायण में आए पुष्पक विमान का वर्णन विज्ञान के पण्डितों द्वारा कपोलकल्पना और धर्मभीरु भोले भाले जन समाज के द्वारा दैव चमत्कार समझा जाता था। आधुनिक काल में नव वेदोद्धारक आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर इस विद्या की चर्चा की और अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में एक अध्याय इस विषय के अर्पण किया तो वैज्ञानिकों को मुख्यतः पाश्चात्य विद्वन्मण्डली को विश्वास न हुआ। परन्तु भौतिक विज्ञान और यन्त्रविज्ञान की ज्यों ज्यों प्रगति हुई त्यों त्यों महर्षि दयानन्द के कथन की प्रामाणिकता और प्राचीन भारत में इस विद्या के पूर्ण विकास की सम्भावनाएं प्रतिलक्षित होती गईं और वे अमरिकावासी विदुषी मिसेज ह्वीलर विल्लोक्स के शब्दों में इन सम्भावनाओं को निम्न प्रकार अभिव्यक्त करने के लिये विवश हुए —

'हमने प्राचीन भारत के धर्म के विषय में सुना और पढ़ा है। यह उन महान् वेदों की भूमि है जो अत्यन्त अद्भुत ग्रन्थ हैं जिनमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए ही उपयोगी धर्मतत्त्व बताए गए हैं अपितु उन तथ्यों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हें समस्त विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, एलैक्ट्रन्स विमान (हवाई जहाज) आदि सब चीजें वेदों के द्रष्टा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होती हैं।"

अर्वाचीन काल में राइट बन्धुओं को वायुयान के आविष्कार का श्रेय प्राप्त है जब उनके बनाए हुए विमान आकाश में उड़ने लगे तब विज्ञानवेत्ताओं को वैदिक ज्ञान विज्ञान की प्रामाणिकता और महर्षि दयानन्द की स्थापनाओं की सत्यता को स्वीकार करना पड़ा।

महर्षि भरद्वाजकृत प्रस्तुत ग्रन्थ में "निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनिः। नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम्" श्लोक में इस विद्या का भण्डार वेद बताए गए हैं। उपर्युक्त उद्धरण से बढ़कर महर्षि दयानन्द की इस स्थापना का कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" तथा विमानविद्या का स्थान स्थान पर वेदों में वर्णन है और क्या प्रमाण हो सकता है? जिस प्रकार इस ग्रन्थरत्न ने महर्षि दयानन्द की वेदविषयक विशुद्ध विचारसरणि में

वैदिक शोध के कार्य को प्रेरणा दी है उसी प्रकार यह विमानविद्याविषयक अनुसधानो और आविष्कारों को महती प्रेरणा प्रदान करेगा।

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी विद्यामार्तण्ड वैदिक अनुसन्धान का मूल्यवान् कार्य कर रहे है। प्रस्तुत भाष्य उनके उसी प्रशसनीय कार्यों का सुफल है जिसके लिए वे आर्य जगत और विद्वत्समाज के धन्यवाद के अधिकारी है। सार्वदेशिक सभा पर उनकी सदैव कृपा दृष्टि रहती है। सभा को उनके अनेक ग्रन्थों के प्रकाशन का गौरव प्राप्त है, इस भाष्य को सभा की ओर से प्रकाशित करने का निष्शतिकार अवसर प्रदान करके उन्होंने अपनी उसी कृपादृष्टि का परिचय दिया और सभा को उपकृत किया है।

यह प्रकाशन बडा व्ययसाध्य था फिर भी सभा ने इसे प्रकाशित करके अपने एक महान दायित्व की पूर्ति की है। आशा है जनता इससे यथोचित लाभ उठाएगी और शीघ्र सभा को व्ययभार से मुक्त करके इसी प्रकार के अन्य उपयोगी प्रकाशनों को हाथ मे लेने मे समर्थ बनाएगी।

स्वतन्त्र भारत मे इस कोटि के अलभ्य एवं अत्यन्त मूल्यवान ग्रन्थों का प्रकाशन हमारे राज्य का एक विशिष्ट कर्तव्य है। सभा ने इस भाष्य को प्रकाशित करके राज्य और देश का ही एक बडा कार्य सम्पन्न किया है जो हमारे देश के गौरव को बढाने वाला सिद्ध होगा। क्या हम आशा करें कि राज्य और देश सभा के इस कार्य का समुचित आदर करेगा ?

रामगोपाल
सभा मन्त्री

श्री गया प्रसाद जी, आर्य समाज हैदराबाद

[लेखक—स्व० श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

श्री गया प्रसाद जी आर्य समाज हैदराबाद के पुराने कार्यकर्ताओं मे से एक थे। मैने उनके दर्शन किये हैं। आप सरकारी नौकरी में थे और श्री केशोराम जी की सम्मति से आर्य समाज का काम किया करते थे। एक बार किसी भजनीक ने भजन गाने मे आनाकानी की तब आपने कहा अच्छा आगे कोइस का प्रबन्ध भी करना होगा तब आपने गाना सीखना आरम्भ किया और गाना सीख कर आगे को आर्य समाज मे स्वय भजन गाने लगे।

जिस समय आपने पेंशन ली तब भी आर्य समाज के कामों मे समय दिया करते थे। प्रति मास जब आप पेंशन के रुपये लेने जाते थे तो आते समय चन्दन खरीद कर लाते थे। यह उनका नियम था। प्रति मास चन्दन लाकर सुरक्षित रखना। अन्त में जब आप बीमार पडे तो श्री विनायकराव जी को बुलाया। जहा और बातें की वहा यह भी कहा महर्षि जी ने शरीर के बोझ के सम चन्दन चिता के लिये लिखा है। मैने चन्दन का प्रबन्ध कर रखा है। अमुक स्थान पर इतना चन्दन पडा है। पूछा इतना वहा कैसे आ गया। आपने बताया मैं प्रति मास खरीद कर वहा रखता रहा हू। मैने वह अपनी अन्त्येष्टि के लिये ही जमा किया है।

आपकी धर्मपत्नी पास बैठी थी। उनके आखों मे अन्त्येष्टि की बात सुनकर आसू आ गये। आपने कहा आपने मेरे सहवास से कुछ नहीं सीखा। आपके पुत्र आज्ञाकारी हैं। आपको कोई कष्ट न होने देंगे और परमात्मा सबका रक्षक है। साथ ही सबने मरना है। मरना मेरे लिये भी कोई नई बात नहीं। यदि आप रोयेंगी तो मुझे भी दुःख होगा। आप धैर्य करें और मुझे मौत की गोद में शान्ति से जाने दें। आपकी धर्मपत्नी यह सुनकर चुप हो गई और आपने अपना शरीर प्रसन्नता पूर्वक शान्ति से परमात्मा का नाम स्मरण करते हुये त्यागा।

सार्वदेशिक सभा की सूचनाएँ

नेपाल में आर्य समाज का प्रचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल जी द्वारा वस्तुस्थिति पर प्रकाश —

दिनांक १७-२-५६ के "वीर अर्जुन" में "नैपाली भाषा में सत्यार्थप्रकाश" शीर्षक से श्रीयुत म० कृष्ण जी का एक लेख छपा है जिससे पढ़कर पाठकों पर यह भाव अंकित होता है कि नैपाल में अभी तक सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रचार का कोई कार्य नहीं हुआ।

श्रीयुत महाशय जी तथा सर्वसाधारण जनता की सूचना के लिए यह लिख देना आवश्यक है कि यह सभा उसी समय से नैपाल में प्रचार का यत्न करती रही है जब से वहां राज्य की ओर से आर्य समाज का प्रवेश बन्द था और प० शुकराज जी को आर्य समाज का प्रचार करने के कारण वृक्ष पर लटका कर फांसी दे दी गई थी।

राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन और नैपाल के राजनैतिक ढांचे में आमूल चूल परिवर्तन हो जाने पर आर्य समाज के प्रवेश का मार्ग खुला। सभा ने इस अवसर से लाभ उठाते हुए नैपाल में श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान सञ्चालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल की अध्यक्षता में एक शिक्षण शिविर लगाया जिसमें नैपाल के लगभग ५० नवयुवकों ने भाग लिया और शिविर का दीक्षान्त समारोह वीरगंज के गवर्नर की अध्यक्षता में हुआ। शिविर के पश्चात् श्री त्यागीजी ने नैपाल का दौरा किया और वहां के प्रधान मन्त्री तथा गृह मन्त्री जी से मिल कर आर्य समाज के प्रचार के लिये भूमिका तैयार की।

इसके पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार की देख रेख में वहां प्रचार की स्थायी व्यवस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से की गई जिसके अन्तर्गत श्री रामदेव जी शास्त्री को बिठा दिया गया। वहां उन्होंने आर्य समाज का अच्छा कार्य किया। आर्य समाजों की स्थापना की। आर्य प्रतिनिधि सभा नैपाल के सुसंगठन की योजना बनाई। वे राज्याधिकारियों की सहानुभूति प्राप्त करने में भी सफल हुए। महाराज के राज्याभिषेक के अवसर पर उन्होंने सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्य समाज का प्रतिनिधित्व किया। नैपाल के आर्य वीर दल ने राज्याभिषेक के अवसर पर महाराज को गार्ड आफ आनर दिया जिसके उपलक्ष्य में महाराज ने आर्य वीर दल के कार्य की प्रशंसा करते हुए १५००) पारितोषिक दिया था। सभा की ओर से उस समय महाराजाधिराज को धन्यवाद दिया गया था। दुर्भाग्य से श्री रामदेव शास्त्री का निधन हो गया और उनके द्वारा होने वाला उपयोगी कार्य वहीं रुक गया।

इस वर्ष के आरम्भ में सार्वदेशिक सभा ने नैपाल की तराई में पाठशालाएं और हस्पताल (औषधालय) खोले हैं जहां ईसाई प्रचार का जोर है। श्री स्वामी अभेदानन्द जी सभा प्रधान वर्ष में २-३ बार उस क्षेत्र तथा निकटवर्ती स्थानों का दौरा करते रहे हैं।

नेपाली भाषा में सत्यार्थप्रकाश कई वर्ष हुए आर्य समाज दार्जिलिंग के उद्योग से छप चुका था। जहां तक हमारी सूचना है वह अब भी वहां से मिलता है। नेपाली सत्यार्थप्रकाश के नए

संस्करण की आवश्यकता होने पर सार्वदेशिक सभा अवश्य ही अपनी देख रेख में उसकी छपाई का प्रबन्ध करेगी।

नेपाल में ईसाई प्रचार निरोध कार्य के लिये भी सभा भरसक प्रयत्न कर रही है और छोटे २ ट्रैक्टों द्वारा प्रचार करा रही है। इन ट्रैक्टों का नेपाली भाषा में छपवाने का यत्न कर रही है। सभा गत ७ ८ वर्ष से लगातार १५०) मासिक व्यय करती आरही है। प्रतीत होता है कि लेख लिखते समय महाशय जी के सामने उक्त तथ्य न थे।

टंकारा जयन्ती

(३)

अनेक आर्य समाजी और आर्य भाइयों ने सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा से आगामी बोधोत्सव के समय होने वाली टंकारा जयन्ती के सम्बन्ध में इतिकर्तव्यता का निर्देश चाहा है। आर्य समाजों और आर्य जनता की सूचना के लिये यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है कि इस सभा तथा ट्रस्ट के अधिकारियों के मध्य पत्र व्यवहार हो रहा है। यह सभा चाहती है कि यह जयन्ती पूर्ण समारोह के साथ मनाई जाय और इसकी तैयारी में कोई त्रुटि न रहने दी जाय। सार्वदेशिक सभा यह यत्न कर रही है कि टंकारा ट्रस्ट कुछ व्यक्तियों की ही नहीं अपितु आर्य जगत् की वैधानिक संस्था बन जाय जिससे समूचे आर्य जगत् की भावना और पुरुषार्थ इस संस्था के पीछे रहे। और जयन्ती महोत्सव तथा ट्रस्ट की महर्षि दयानन्द स्मारक विषयक योजनाओं की सफलता असंदिग्ध बन जाय।

इसके लिये सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने दिनांक १-५-५४ की बैठक में एक प्रस्ताव के द्वारा निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति करानी चाही है —

(१) ट्रस्ट में सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओं का प्रतिनिधित्व रहे।

(२) ट्रस्ट के टूटने की अवस्था में ट्रस्ट की सम्पत्ति की स्वामिनी सार्वदेशिक सभा होगी।

(३) भविष्य में ट्रस्ट पत्र तथा मनोनीत सदस्य संख्या में सभी की स्वीकृति के बिना परिवर्तन न होगा।

(४) आजीवन सलाहकार सम्मतकार ही हों ट्रस्ट उनको सलाहको मानने के लिये बाध्य न हो।

यत्न किया जा रहा है कि इन शर्तों की पूर्ति ट्रस्ट के द्वारा शीघ्र ही हो जाय।

हमें आशा करना चाहिये कि ट्रस्ट के वर्तमान ट्रस्टी सभा की इस न्यायोचित मांग को स्वीकार करने में संकोच न करेंगे कि ट्रस्ट में सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओं का उचित प्रतिनिधित्व रहे जिससे भविष्य में यह ट्रस्ट आर्य समाज के संगठन और सिद्धान्तों के अन्तर्गत ऋषि के मन्तव्यों की पूर्ति करता रहे। यथा समय ट्रस्ट के साथ निर्णय हो जाने पर आर्य जनता को सूचित किया जायगा।

ईसाई खतरे का सामना करो

(३)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज बिहार और उत्तर प्रदेश में लगभग एक मास पर्यन्त भ्रमण कर के ११ २ ५६ को कुछ घन्टों के लिये दिल्ली लौटे थे। उन्होंने ईसाइयों की निरन्तर द्रुतगति से बढ़ती हुई आपत्तिजनक प्रगतियों पर बड़ी चिन्ता व्यक्त की जिनके कारण हिंदू संस्कृति और देश के लिए खतरा बढ़ता जाता है। उनकी यह धारणा पक्की हो गई है कि हमारी सरकार इस खतरे से या तो लोहा लेना नहीं चाहती या वह अपने को अशक्य अनुभव करती है। आर्य समाज आरम्भ से ही खतरे के प्रति सावधान और जागरूक रहा है और अपनी शक्ति और सामर्थ्य से उसके निराकरण का उपाय करता आ रहा है। अब स्थिति ऐसी भयंकर देख पड़ती है कि यदि उसने अपनी पूरी शक्ति से काम न लिया तो हिंदू जाति और देश का भविष्य बड़ा

अन्धकारमय बन जायगा। सरकारी प्रयत्न पर निर्भर रहने का स्टेज समाप्त प्राय है। अतः स्वामी जी महाराज ने सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी को आदेश दे दिया है कि वे योजनानुसार कार्य की प्रगति को एकदम बढावें। समस्त देश में भ्रमण करने और हिंदू जाति को ईसाइयों के जाल से बचाने के विविध उपायों को काम में लाने का प्रोग्राम निर्धारित करें।

श्रीयुत स्वामी जी की प्रेरणानुसार सभा मन्त्री शीघ्र ही प्रान्तों के भ्रमण के लिए जा रहे है तथा योजनानुसार कार्य आरम्भ कर दिया गया है। श्री लाला रामगोपाल जी प्रान्तों के अधिकारियों से मिलकर तत्सम्बन्धी योजना को क्रियात्मक रूप दिलाने का प्रयत्न करेंगे।

श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज पुनः भ्रमण के लिए निकल गए है। हिंदू समाज के लिए उनका आह्वान है कि वह समय रहते सजग हो जायें। ईसाई प्रचार की काली छाया उसे आत्मसात करने के लिये बढ़ती जा रही है। ईसाई मिशन इस कार्य पर पानी की तरह धन बहा रहा है। करोड़ों रुपये और सहस्रों मिशनरी उसके निर्णय पर हैं। फिर भी यदि आर्यसमाज के हाथ मजबूत कर दिये जायें तो इसके प्रचारक लाखों रुपयों में ही इस काली छाया को पूर्णतया छिन्न भिन्न कर सकते हैं।

हिंदू जाति के लिए यह समय बड़ा नाजुक और संकट पूर्ण देख पड़ता है। हिंदू समाज को समाप्त करने की प्रक्रियाएं उग्ररूप धारण करके खड़ी हो गई देख पड़ती है। आर्य समाज विनाश की इस प्रक्रिया को निष्क्रिय दर्शक के रूप में नहीं देख सकता इसी लिये बृहत् कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा रहा है। प्रत्येक हिंदू को आर्य समाज का धन और उनका पूरा २ सहयोग देने में अग्रसर होना चाहिये।

ओम्प्रकाश त्यागी
मन्त्री
सार्वदेशिक ईसाई प्रचार
निरोध समिति, दिल्ली

मौरीशस प्रचार

मकर सक्रान्ति पर्व

श्री मोहनलाल जी मोहित ने अपने गृह पर १४ जनवरी सन् १९५९ को पूज्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज और श्री प० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति जी द्वारा मकर सक्रान्ति पर्व के उपलक्ष्य में यज्ञ कराया।

यज्ञ के उपलक्ष्य में मोहित जी ने निम्नलिखित संस्थाओं को दान भी दिया।

५१) श्री गयासिंह अनाथालय आर्य सभा मौरिशस.

५१) आर्य सभा मौरिशस

५१) आर्य प्रतिनिधि सभा मौरिशस

धनपत मोहित
मन्त्री
आर्य समाज लावेनियर-मौरिशस

—अनुभवों के आधार पर मेरा यह विश्वास बन गया है कि यदि नीयत साफ हो तो संकट के समय सेवक और साधन कहीं न कहीं से आ जुटते हैं। —गांधी

—यदि एक आदमी भी अडिग इच्छा शक्ति के साथ किसी स्थल पर जमकर बैठ जाय और अपनी पवित्र अन्तरात्मा के अनुसार कार्य आरम्भ कर दे तो सारी दुनिया उसके पास आ सकती है। —इमर्सन

वैदिक धर्म प्रसार
और सूचनायें

—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली के तत्वावधान में २१ १२ ५८ को ग्राम लूम्ब (मेरठ) में ईसाई बने ४०१ हरिजनों की शुद्धि हुई, १८ १-५६ को ग्राम मेघना डालावड (मेरठ) में १३१ की, २५ १-५६ को ग्राम बदरखा (मेरठ) मे १५३ की और १ २ ५६ को ग्राम सोधन (मेरठ) मे २ ३ की शुद्धि हुई।

नारायणदास कपूर, प्रधान मन्त्री

—आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक अधिवेशन श्रीयुत डा० राजबहादुर जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे गुरुकुल चित्तौड़ गढ़ में हुआ। आगामी वर्ष के लिए श्री स्वामी व्रतानन्द जी प्रधान तथा श्री भगवती प्रसाद जी मन्त्री निर्वाचित हुए।

—गुरुकुल घरौंडा (करनाल) का वार्षिकोत्सव २१, २२ मार्च को होगा। १६ मार्च से वैदिक उपासना का वास्तविक प्रकार शिक्षण सप्ताह भी मनाया जायगा।

—आगामी ७ मार्च को आल इण्डिया रेडियो से रात्रि को पौने आठ बजे महर्षि दयानन्द के जीवन पर एक वार्ता प्रसारित होगी।

—१० १-५६ को ग्राम मसूदपुर (भेलसा) में श्रीमती सुशीलाबाई का पुनर्भू संस्कार श्री यशवन्तराय जी के साथ प० रामचन्द्र जी शर्मा वानप्रस्थी आर्य गुरुकुल एटा ने करवाया। जिसमें ग्राम के बहुसख्यक नर नारियों ने भाग लिया।

—आर्य समाज मन्दिर गया के लिए श्री वीरेन्द्रसिंह ने दान मे भूमि प्रदान की है। प्रथम वार्षिकोत्सव १० मई से १३ मई तक होगा। २०-१-५६ को पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। प्रधान श्री सच्चिदानन्द सहाय तथा मन्त्री श्री डा० ओ३म्प्रकाश जी निर्वाचित हुए।

वार्षिक निर्वाचन

नाम समाज	दिनांक	प्रधान	मन्त्री
१ तिलक नगर नई दिल्ली	+	श्री लज्जाराम जी	श्री डा० वीरेन्द्रसिंहजी आर्य
२. आ० स० जौहरी बाजार जयपुर	२५-१-५६	श्री डा० रेवाचन्दजी	श्री राममनोरथलाल शर्मा
३ आ० स० सीहोर	१६-१ ५६	श्री विष्णुदत्त जी	श्री प्यारेलाल जी आर्य
४ आर्यवीर दल सिन्धु नगर कल्याण	२३ १ ५६	श्री दुनीचन्दजी आर्य	श्री बाधूराम जी
५ लश्कर	२५-१ ५६	श्री डा०महावीरसिंहजी	श्री ओ३म्प्रकाश जी
६ खुरजा	११-१ ५६	श्री लालचन्द जी बधवा	श्री प्यारेलाल जी गुप्त
७ देवास	११-१ ५६	श्री मुरलीधर आर्य	श्री डा० मुरारीलाल जी
८. गोरखपुर (जबलपुर)	+	श्री गोपालदास आनन्द	श्री जयसिंह गायकवाड़ एम ए
९. मण्डी (हिमाचल प्रदेश)	४-१-५६	श्री इन्द्रसिंह जी	श्री लेखराज जी
१०. बैंकोक (स्याम)	२१-१२ ५८	श्री बाबूलाल जी आर्य	श्री सहदेवसिंह जी

जिस माता-पिता ने विद्या का दहेज नहीं दिया मानो उसने कुछ नहीं दिया।

धन-दौलत के साथ-साथ विद्या का दान दो — ७ अमूल्य पुस्तकों का सैट

कन्याओं को दहेज के लिये सर्वोत्तम भेंट

१—शाक रत्नाकर

(ले० सुशीला)

इस पुस्तक मे प्रत्येक घर मे बनानेवाली शाक सब्जियो को बनाने के तरीके व उनमें पडने वाले ममाले आदि का वर्णन बडी सरल भाषा मे सविस्तार किया गया है। इसकी सहायता से आप स्वादिष्ट शाक-भाजिया बना सकती हैं। मू० २।) दो रुपया चार आने। डाकव्यय ।।=)

२—आदर्श कशीदाकारी

(ले० कुमारी लाजवती)

जिनमें नये नये डिजाइन बूटियां, बेल, क्रास स्टिच, कटवर्क, मोनियो का काम सीनरियां, मोनोग्राम तकिये पर दोहे, पेटीकोट के बोडर, कमीजो के गले स्मोकिंग लेडीडेजी तथा आधुनिक ढग की चीज है। मूल्य ४) डाकव्यय १)

३—उषा दस्तकारी कढ़ाई शिक्षा

(ले०—उषारानी)

आजकल घरो मे कन्या पाठशालाओ तथा सरकारी सेन्टरो मे दसूती का काम सिखलाया जाता है। इस दसूती की पुस्तक में बेल पशु पक्षी, चौपायो के चित्र तथा गुलदस्ते बनाकर दिखाये गये है। मू० ३) डाकखर्च ।।=) पृथक

४—दर्जी मास्टर (दोस्त दर्जियां)

(ले०—मास्टर बद्रीप्रसाद)

जिसको पढकर थोडी पढी लिखी स्त्रियां व पुरुष भी घर में हर प्रकार का कपडा काटना सीख जाते है तथा पूरे टेलर मास्टर बन सकते है। अपने-नन्हे बच्चो के कपडे घर ही में उम्दा सीने के लिये यह पुस्तक मगाकर रखे। मू० २।।)डाकव्यय१)

५—पाक भारती

(ले०—अमोलचन्द्र शुक्ल)

पाकशाला की व्यवस्था, कच्ची रसोई पक्की रसोई, दूध की चीजें मुरब्बा अचार चटनी आदि देशी एवं बंगला मिठाई पाक-रोटी नान, बिस्कुट इत्यादि प्रत्येक प्रकार की आधुनिक एवं प्राचीन खाद्य सामग्रियो के तैयार करने की विधियो सहित ६०० पृष्ठो की सचित्र सजिल्द रंगीन आवरण की पुस्तक। मूल्य ६) डाकव्यय १।।)

६—महिला मंजरी

(ले०—सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री)

गृहस्थ धर्म को सुखी बनाने मे स्त्री का स्थान सबसे ऊंचा है। इस पुस्तक में शादी से पहले की शिक्षा तथा विवाहित जीवन के बाद मे किन-किन बातो पर ध्यान देना चाहिये, पाक विज्ञान स्वास्थ्य विज्ञान तथा शरीर का बनाव सिंगार आदि हर विषय पर पूरा प्रकाश डाला गया है। पृष्ठ ३८४, मू० केवल ६) डाकव्यय १।) अलग।

७—स्त्री-शिक्षा या चतुरगृहिणी

(लेखिका—श्रीमती साधना सेन)

यह पुस्तक प्रत्येक नारी की सच्चीजीवन सहचरी तथा गृहस्थी को सुखमय बनानेवाली है। इसमें बाल्यकाल की शिक्षा अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बनाने की विधि शिल्प विद्या, सीना पिरोना, गर्भ रक्षा, धात्री शिक्षा, स्त्री-रोगो की चिकित्सा बालको का पालन-पोषण धर्मोपदेश एवं अनेक रीति और व्रत त्यौहारो का वर्णन है। इसमें लडकी को अमूल्य शिक्षायें दी गई है। मू० २।।) डाकव्यय १)पृथक

पृथक् पृथक् पुस्तकें मगाने पर डाक व्यय ग्राहक को देना होगा।

उपरोक्त सातो पुस्तको की छपी कीमत २६।) होती है परन्तु पूरा सैट लेने वाले सज्जनो को केवल २०)डाकव्यय ३) २३) की वी०पी० की जावेगी। केवल) (२५ नये पैसे) के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर हमारे पुस्तको का बडा सूचीपत्र फ्री मगावे। केवल ।।।) (७५ नये पैसे) के टिकट भेजकर १९५८ की 'श्री बापू राष्ट्रीय मशहूर जन्त्री' मंगावें।

देहाती पुस्तक भण्डार, (स: दि) चावड़ी बाजार दिल्ली-६ फोन: २००३०

बाजार में असली पुस्तक खरीदते समय लेखक और प्रकाशक अवश्य देख लें।

केवल दिल्ली निवासियों को फोन द्वारा पुस्तकें सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

परिपत्र — ॥ ओ३म् ॥ कार्यालय—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१

दिनांक २०-१-५६

आर्य जनता को साहित्य प्रचार का विशेष सुअवसर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने साहित्य-प्रचार कार्य को सुगम बनाने की दृष्टि से आगामी दयानन्द बोध रात्रि के सुअवसर पर अपने प्रकाशनों पर आर्य जनता को निम्न प्रकार विशेष रियायत देने का निश्चय किया है। समस्त आर्य हिन्दू जनता विशेषतः आर्य समाजों और उनकी संस्थाओं को पर्याप्त साहित्य मगाकर इस अवसर से पूरा २ लाभ उठाने का यत्न करना चाहिए। यह रियायत १ फरवरी ५६ से ३० अप्रैल ५६ तक रहेगी।

निम्न प्रकाशन नैट मूल्य पर दिये जायेंगे।

	मूल्य	नैट मूल्य
१. कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द	)७५	)६६
२ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	२)५०	१)८७
३ सत्यार्थप्रकाश बढ़िया	५)	३)७५
४ सत्यार्थप्रकाश	१)३७	१)१२
५ सामवेदभाष्य सजिल्द	२)	१,६२
६. महर्षि दयानन्द	)६२	)५०

निम्न साहित्य पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा :—

१०) तक	२०%	कमीशन
१०) से २५) तक	२५%	,,
२५) से अधिक	३३⅓%	,,

(१) यमपितृ परिचय (प० प्रियरत्न आर्य) २)

(२) आर्य डाइरेक्टरी १।)

(३) सार्वदेशिक सभा का सत्ताईस वर्षीय कार्य विवरण अ० २)

(४) स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार (प० धर्मदेव जी वि० वा०) १।)

(५) आर्य समाज के महाधन (स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी) २॥)

(६) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण (पं०इन्द्रजी) ।॥)

(७) आर्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या (अनुवादक प० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक) ।)

(८) आर्य मन्दिर चित्र (सार्व०सभा द्वारा स्वीकृत) ।)

(९) वैदिक ज्योतिष शास्त्र(पं०प्रियरत्नजी आर्य) १॥)

(१०) वैदिक राष्ट्रीयता (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।)

(११) मातृत्व की ओर (रघुनाथ प्रसाद पाठक) १।)

(१२) हमारी राष्ट्रभाषा (पं०धर्मदेवजी वि० वा०) ।-)

(१३) स्वराज्य दर्शन स०(पं०लक्ष्मीदत्तजीदीक्षित) १)

(१४) राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)

(१५) योग रहस्य (श्री नारायण स्वामी जी) १।)

(१६) मृत्यु और परलोक ,, १।)

(१७) विद्यार्थी जीवन रहस्य ,, ।॥)

(१८) [illegible] विधि [illegible]

(१९) उपनिषदें—

ईश	केन	कठ	प्रश्न
।=)	॥)	॥)	।=)
मुण्डक	माण्डूक्य	ऐतरेय	तैत्तिरीय
।≡)	।)	।)	१)

(२०) बृहदारण्यकोपनिषद् ३)

(२१) आर्य जीवनगृहस्थधर्म प०रघुनाथप्रसादपाठक) ॥=)

(२२) कथामाला ,, ॥)

(२३) सन्तति निग्रह ,, १।)

(२४) नैतिक जीवन स० ,, २॥)

(२५) नया संसार ,, ≡)

(२६) इजहारे हकीकत उर्दू (ला० ज्ञानचन्द जी आर्य) ॥।=)

(२७) वर्ण व्यवस्था का वैदिक स्वरूप ,, १॥)

(२८) धर्म और उसकी आवश्यकता ,, १)

(२९) भूमिका प्रकाश (प० द्विजेन्द्रनाथजी शास्त्री) १।)

(३०) एशिया का वैनिस (स्वा० सदानन्द जी) ।॥)

(३१) वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां (पं० प्रियरत्न जी आर्य) ।॥)

(३२) सिंधी सत्यार्थप्रकाश २)

(३३) कन्नड सत्यार्थप्रकाश ३।)

(३४) मराठी सत्यार्थप्रकाश १।=)

(३५) आर्योद्देश्यरत्नमाला पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध, १।।), १॥)

(३६) हमारे घर (श्री निरञ्जनलाल जी गौतम ॥=)

(३७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर २।)

(३८) भजन भास्कर १॥।)

(३९) मुक्ति से पुनरावृत्ति(प०गंगाप्रसाद उपाध्याय ।=)

(४०) वैदिक ईश वन्दना (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।=)॥

(४१) वैदिक योगामृत ,, ॥=)

(४२) सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रसाद शास्त्री) २)

(४३) आर्य वीर दल सैनिक (श्री ओम्प्रकाश त्यागी)॥)

(४४) आत्म कथा श्री नारायण स्वामी जी २।)

(४५) वैदिक संस्कृति (प० गंगाप्रसाद उपाध्याय) १।)

(४६) वैदिक वन्दन (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ५॥)

(४७) सार्वदेशिक [illegible]

(१) आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग ४)
,, , द्वितीय भाग ५)
(२) वेद की इयत्ता(श्री स्वा०स्वतन्त्रानन्दजी)१।।)
(३) दयानन्द दिग्दर्शन(श्री स्वा० ब्रह्ममुनिजी) ।।।)
(४) इ जील के परस्पर विरोधी वचन ।≈)
(प० रामचन्द्र जी देहलवी)
(५) भक्ति कुसुमांजलि (प० धर्मदेव वि० वा० ।।)
(६) धर्म का आदि स्रोत
(प० गगाप्रसाद जी एम ए) २)
(७) भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक
(श्री राजेन्द्र जी) ।।)
(८) भारत में मूर्तिपूजा १≈)
(९) वेदान्त दर्शनम् स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ३)
(१०) सस्कार महत्व
(प० मदनमोहन विद्यासागर जी) ।।।)
(११) जनकल्याण का मूलमन्त्र , ।।)
(१२) वेदों की अन्त साक्षी का महत्व ।।≈)
(१३) आर्य घोष ।।)
(१४) आर्य स्तोत्र , ।।)
(१५) स्वाध्याय सदोह (स्वा० वेदानन्द तीर्थ) ४)
(१६) वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) ७)
(१७) सनातन धर्म और आर्य समाज
(प० गगाप्रसाद उपाध्याय) ।≈)

ENGLISH PUBLICATIONS

1 Introduction to the Commentary on Vedas 2/8/
2 Kenopanishat (Translation by Pt Ganga Prasad ji M A /4/
3 Kathopanishat (Pt Ganga Prasad M A Rtd Chief Judge) 1/4/
4 Aryasamaj & International Aryan League Pt Ganga Prasad ji Upadhyaya M A /1/
5 Voice of Arya Varta (T L Vasvani) /2/
6 Truth & Vedas (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) /6/
7 Truth Bed Rocks of Aryan Culture (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) /8/
8 Vedic Culture (Pt Ganga Prasad Upadhyaya M A) 3/8/
9 Aryasamaj & Theosophical Society (Shiam Sunder Lal) /3/-
10 Wisdom of Rishis (Gurudatta M A.) 4/ /
11 The Life of the Spirit (Gurudatta M A) 2/ /
12 A Case of Satyarth Prakash in Sind (S Chandra) 1/8/
13 In Defence of Satyarth Prakash (Prof Sudhakar M A) /
14 Universality of Satyarth Prakash /1/
15 Tributes to Rishi Dayanand & Satyarth Prakash (Pt Dharma Deva ji Vidyavachaspati) /8/
16 Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati) /8/-
17 Elementary Teachings of Hinduism /8/ (Ganga Prasad Upadhyaya M A)
18 Life after Death , 1/4/-
19 Philosophy of Dayanand ,, 10/
20 Agnihotra (Dr Satya Prakash) 2/8
21 Daily Prayer of An Arya /8/
22 The Constitution of Arya Samaj 20 n P

नोट—(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूपमें भेजें।
(२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ २ लिखें।
(३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा आना चाहिए।

इस बार छोटे २ टैक्टो पर निम्न प्रकार विशेष रियायत दी जायगी—

	मूल्य प्रति	सैकड़ा	नैट मूल्य सैकड़ा
१ आर्यसमाज के मन्तव्य	)०६ प्रति	५)	४) „
२ शकासमाधान	)०३ „	३)	२)५० „
३ पूजा किसकी	)०३ „	२)५०	२) „
४ आर्यसमाज	)०३ „	२)५०	२) „
५ भारत का एक ऋषि	)०६ „	५)	४) „
६ ऋग्वेद मे देवृकामा या देवकामा	)०६	५)	४) „
७ गो करुणानिधि	)०६ „	४)	३)५० „
८ गोहत्या क्यों ?	)१२ „	१०)	८) „
९ चमडे के लिये गोवध	)१८ „	१५)	१२) „
१० गोगान	)०३ „	२)५०	२) „
११, सन्ध्यापद्धति	)१२ „	१०)	९) „
१२ मासाहार घोर पाप	)१२ „	१०)	९) „
१३ आर्य शब्द का महत्व	)०९	७)५०	६)५० „
१४ दशनियम व्याख्या	)०९ ,	७)५०	६)५० „
१५ तीर्थ और मोक्ष	)०९ ,	७)५०	६)५०
१६ ग्रहण और दान	)०९ „	७)५०	६)५० ,
१७ भारतवर्ष मे जाति भेद	)०९ ,	७)५०	६)५० ,
१८ भारत मे ईसाई षडयन्त्र	)२५ „	२०)	१८) „
१९ ईसाईयों से सौ प्रश्न	)१२ „	१०)	९) ,
२० स्वतन्त्रता खतरे में	)०३ „	२)५०	२) „
२१ वैदिक राष्ट्र धर्म	)०२ ,	१५)	१२) „
२२ प्रजापालन	)०५ ,	३॥)	३) „
२३ नारायण स्वामीजी की सक्षिप्त जीवनी	)०६ ,	५)	४) „
२४ सिनेमा मनोरंजन या सर्वनाश	)१२ „	१०)	९) „
२५, सत्यार्थप्रकाश की रक्षा में	)०६ ,	५)	४) „
२६ मुर्दों को क्यों जलाना चाहिए ?	)०९ „	७)५०	६) ५० „
२७ आर्यसमाजों के सा स का कार्यक्रम	)०६ „	५)	४) „
२८ आर्य समाज के नियमोपनियम	)०९ „	७)५०	६)५० „

रामगोपाल
सभा मन्त्री

आर्य समाज का इतिहास

सचित्र प्रथम और द्वितीय भाग

इस सभा द्वारा श्रीयुत पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत आर्य समाज के इतिहास का प्रथम और द्वितीय भाग छप कर बिकने लगे है। इतिहास की भूमिका आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान तथा पजाब सरकार के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्रीयुत डा० गोकुलचन्द जी नारंग, एम० ए० पी० एच० डी० ने लिखी है। ग्रन्थ सजिल्द हैं और $\frac{१८ \times २२}{८}$ के आकार पर हैं। कागज व छपाई उत्कृष्ट है। स्थान २ पर लाइन ब्लाक दिये गये हैं।

महर्षि की जन्म तिथि, आर्य समाज स्थापना तिथि, महर्षि की मृत्यु कैसे हुई इत्यादि विवादास्पद विषयों पर परिशिष्ट रूप में मूल्यवान सामग्री दी गई है।

प्रारम्भ से सन् १९०० ई० तक के इतिहास मे आर्य समाज की स्थापना से पहले की धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति, महर्षि दयानन्द का आगमन, आर्य समाज की स्थापना, प्रचार युग, अन्य मतों से सघर्ष, सगठन का विस्तार, सस्था युग का आरम्भ आदि विषयों का समावेश है। शैली बडी रोचक और चित्ताकर्षक है।

दो भाग छप चुके हैं और तीसरा भाग तैयार किया जा रहा है।

इन ग्रन्थों की सामग्री के एकत्र करने, बढिया से बढिया रूप मे इनको छपाने में तथा चित्रादि के देने मे सभा का बहुत व्यय हुआ है। इस राशि की शीघ्र से शीघ्र प्राप्ति आवश्यक है जिससे कि वह तीसरे भाग की छपाई मे काम आ सके।

सभा ने यह विशाल आयोजन प्रदेशीय सभाओं, आर्य समाजों, आर्य नर नारियों के सहयोग के भरोसे बहुत खटकने वाले अभाव की पूर्त्यर्थ किया है। अत प्रत्येक आर्य समाज और आर्य नर नारी को इस ग्रन्थ को शीघ्र से शीघ्र अपना कर अपने सहयोग का क्रियात्मक परिचय देना चाहिये।

प्रत्येक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज तथा आर्य सस्था के पुस्तकालय मे अनिवार्य रूप से ये ग्रन्थ रहने चाहिये। यह विषय इच्छा या पसन्द का नहीं है अपितु एक स्थायी रूप से रहने वाले ग्रन्थ के सग्रह करने का है जिससे वर्तमान ही नहीं आने वाली सन्तति को भी लाभ उठाने का अवसर मिल सके।

प्रथम भाग का मूल्य ४) और द्वितीय भाग का ५) कर दिया गया है। इन दोनों भागों के ५ सैट एक साथ मगाने पर ३३⅓ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। पुस्तकों का आर्डर भेजते समय डाकखाने और निकटतम रेलवे स्टेशन का नाम स्पष्ट शब्दों मे लिखा होना चाहिये।

कृपया आर्डर भेजने में शीघ्रता करें।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मनी आर्डर और चैक इस प्रकार आने चाहिये।

मनी आर्डर

१—मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली १

२—मनी आर्डर सभा मन्त्री के नाम से नहीं आने चाहिये। इससे मनी आर्डर के मिलने मे कुछ विलम्ब हो जाने की आशंका रहती है।

३—मनी आर्डरों की कूपन पर भेजने वाले का नाम पता व राशि अनिवार्यत अंकित होने चाहिये।

चैक व पोस्टल आर्डर

सार्वदेशिक सभा तथा सार्वदेशिक पत्र के लिये यदि कोई सभा को चैक या पोस्टल आर्डर भेजे तो वे केवल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम मे लिखे होने चाहिये। क्रास हो तो अच्छा है

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली १

नवदम्पति को भेंट देने योग्य अनुपम उपहार

भारतीय स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण व चिरस्थायी बनाने के लिए आज भारत को कर्मवीर, बुद्धिमान् व शौर्य सम्पन्न युवकों की आवश्यकता है। उस आवश्यकता की पूर्ति आपके हाथों मे है। क्या आप चाहते है कि आपकी सन्तान समाज मे सम्मान प्राप्त करे यदि हां! तो उसके लिए प्रयत्न करना आपका कर्त्तव्य है।

किस प्रकार ? यह जानने तथा अपने कर्त्तव्य से परिचित होने के लिए

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति

पुस्तक मंगा कर अवश्य पढिये। पुस्तक पढ कर आप अनुभव करेंगे कि 'पुत्र या पुत्री, धर्मात्मा या पापी, शासक या चोर, जितेन्द्रिय या व्यभिचारी गोरे या श्याम वर्ण की।' सन्तान का निर्माण तथा बर्थ कन्ट्रोल अपने ही हाथों मे है। इसकी महत्ता पढने से ही विदित होगी।

सजिल्द मूल्य २॥) डाक व्यय पृथक — लेखक —वीरेन्द्र गुप्त

प्राप्ति स्थान—वीरेन्द्रनाथ अश्विनीकुमार, प्रकाशन मदिर बाजार चौक, मुरादाबाद

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं। हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड से काला हो जाता है, यह तेल दिमागी ताकत और आंखों की रोशनी को बढाता है। जिन्हे विश्वास न हो वे मूल्य वापिस की शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो तो ३॥)।

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों, औरों की भांति, मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ७ दिन के लेप से सफेदी का दाग पूरा आराम न हो तो मूल्य वापस। मूल्य लगाने का ३) खाने का ४) रु० है।

धनवन्तरि औषधालय नं० ११, पो० शेखपुरा, जिला मुंगेर (बिहार)

Regd No D 51

उत्तम ग्रन्थो के स्वाध्याय से अपना जीवन यज्ञमय बनायें

स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी के अमूल्य ग्रन्थ आपके आध्यात्मिक मित्र हैं।

इन्हें मगा कर अवश्य पढे और दूसरो को पढने की प्रेरणा करे !

योग रहस्य

इस पुस्तक म योग क अनेक रहस्यो को उद्घाटित करते हुए उन विधियो को बतलाया गया है जिन से प्रत्येक आदमी योग के अभ्यासी हो सकता है

मूल्य १।।

उपनिषद् रहस्य

ईश, केन कठ, प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य ऐतरेय, तैतिरीय और बृहदारण्यको पनिषद् की बहुत सुन्दर, ओजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें। मूल्य क्रमश

।-) ।), ।।), ।≈), =), ।) ।) १) ४)

मगाने मे शीघ्रता करे।

मृत्यु और परलोक

इसमें मृत्यु का वास्तविक स्वरूप, मृत्यु दुःख क्यो प्रतीत होती है ? मरने के पश्चात् जीवकी क्या दशा होती है ? एक योनि से दूसरी योनि तक पहुँचने म कितना समय लगता है ? जीव दूसरे शरीर में कब और क्यो जाता है आदि महत्त्वपूर्ण प्रश्नो पर गम्भीर विवेचन किया गया है। अपने विषय की अद्वितीय पुस्तक है। मूल्य १)

कर्त्तव्य दर्पण

आर्य समाज के मन्तव्यो उद्देश्यो, कार्यो, धार्मिक अनुष्ठानो पर्वो तथा व्यक्ति और समाज को ऊचा उठाने वाली मूल्यवान् सामग्री से परिपूर्ण—पृष्ठ ३००, सफेद कागज सचित्र और सजिल्द। मूल्य ।।।)

रियायती मूल्य ।।≈)

मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

सार्वदेशिक प्रेस, पाटौदी हाउस, दरियागज दिल्ली—७ में छपकर रघुनाथ प्रसाद जी पाठक प्रिंटर और पब्लिशर के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

फूट का दुष्परिणाम

जब आपस मे भाई भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पाच सहस्र वर्ष के पहिले हुई थीं उनको भी भूल गये? देखो! महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते पीते थे। आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है, न जानें यह भयकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्य्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दु:ख सागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चल कर दु:ख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर करे कि यह राज रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाये।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

विषय सूची

विमान विज्ञान पर प्राचीनकाल का महान् ग्रन्थ
महर्षि भारद्वाज प्रणीत

बृहद् विमान शास्त्र

(मूल संस्कृत और आर्य भाषानुवाद सहित)

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् सन्यासी श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज ने बड़े परिश्रम से प्राचीनकाल के इस महान् ग्रन्थ को हस्तलिखित प्रति से लिखकर और आर्य भाषा में भाष्य करके तय्यार किया है। इस ग्रन्थ मे वर्णित वायुयान विद्या को देखकर आज के वायुयान शास्त्री आश्चर्य चकित हैं।

सभा ने इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ को प्रकाशित करने मे कई हजार रुपया व्यय किया है।

यह ग्रन्थ आर्य समाज क पुस्तकालयों सार्वजनिक पुस्तकालयों, कालेज और स्कूलों की लायब्रेरियों में अवश्य रखने योग्य है प्रत्येक स्वाध्याय प्रेमी को इसकी एक प्रति का आर्डर आज ही भेजना चाहिये। इस विराट ग्रन्थ का मूल्य १५) है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन नई दिल्ली-१

कांग्रेस सरकार का सिर दर्द
साम्प्रदायिकता और उसका इलाज

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने गहरे अध्ययन के पश्चात् लिखी है। इस पुस्तक का भारी सख्या मे प्रचार करने के लिए आज ही बडा आर्डर भेजें। मूल्य ।।)—२५ लेने पर ।≈) मे।

पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

वधू वर-आवश्यकता

अग्रवाल गर्ग गोत्रीय प्रतिष्ठित परिवार की शिक्षित इन्टर (आर्ट्स) गृहकार्य में, कसीदे आदि में निपुण शीलवती कन्या के लिए सुशिक्षित जीविका सम्पन्न आर्य विचारों वाले वर की आवश्यकता है।

पूर्ण विवरण लिखें—

पो० बा०—"सार्वदेशिक" देहली

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

(सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष ३५ { जून १९५९ ज्येष्ठ २०१६ वि० दयानन्दाब्द १३५ } अङ्क ४

वैदिक प्रार्थना

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥

[यजु० अ० ३० । म० ३]

व्याख्यान—हे सत्यस्वरूप ! हे विज्ञानमय ! हे सदानन्दस्वरूप ! हे अनन्तसामर्थ्ययुक्त ! हे परमकृपालो ! हे अनन्तविद्यामय ! हे विज्ञानविद्याप्रद ! (देव) हे परमेश्वर ! आप सूर्यादि सब जगत् का और विद्या का प्रकाश करने वाले हो तथा सब आनन्दों के देने वाले हो, (सवित) हे सब जगदुत्पादक सर्वशक्तिमन् ! आप सब जगत् को उत्पन्न करने वाले हो, (न) हमारे (विश्वानि) सब जो (दुरितानि) दुःख हैं उनको और हमारे सब दुष्ट गुणों को कृपा से आप (परासुव) दूर कर दीजिये, अर्थात् हम से उन को और हम को उन से सदा दूर रखिये, (यद्भद्र) और जो सब दुःखों से रहित कल्याण है जो कि सब सुखों से युक्त भोग है, उस को हमारे लिये सब दिनों में प्राप्त कीजिये ! सो सुख दो प्रकार का है—एक जो सत्यविद्या की प्राप्ति में अभ्युदय अर्थात् चक्रवर्त्ति राज्य इष्ट मित्र धन पुत्र स्त्री और शरीर से अत्यन्त उत्तम सुख का होना, और दूसरा जो निःश्रेयस सुख है कि जिसको मोक्ष कहते हैं और जिसमें ये दोनों सुख होते हैं उसी को भद्र कहते हैं, (तन्न आसुव) उस सुख को आप हमारे लिये सब प्रकार से प्राप्त करिये ॥

सम्पादकीय

आर्य सभासदों के विचार के लिए

आर्य समाज एक सुसगठित सुप्रसिद्ध धार्मिक संस्था है। इसने लाखों व्यक्तियों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। आर्य समाज की ओर आकृष्ट होने वाले बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जो अपना सुधार करके दूसरों का सुधार और उनकी सेवा करने के पवित्र उद्देश्य से इसमें सम्मिलित हुए। इन व्यक्तियों के कारण आर्यसमाज के कार्य को अमित प्रेरणा मिली। उसकी जड़ें गहरी बनीं और उसकी प्रसिद्धि हुई। इन्हीं के तप, त्याग, बलिदान और निस्स्वार्थ सेवाओं के कारण आर्यसमाज को यह स्थिति प्राप्त हुई कि समाज हित की किसी भी योजना में चाहे वह सरकार की ओर से बनी या अन्य किसी सस्था की ओर से, आर्यसमाज की उपेक्षा करना सम्भव न हो सका। ऐसी श्रेष्ठ और लोकप्रिय सस्था का स्वार्थीजनों द्वारा दोहन होने से बचा रहना कठिन था। इस में पद और अधिकार के भूखे स्वार्थीजन प्रविष्ट हुए और उन्होंने आर्यसमाज के नाम और यश का अपने निजी स्वार्थों की पूर्त्यर्थ दोहन किया। इसमें ऐसे व्यक्तियों की बन आई जिनकी दृष्टि अपने पद और अधिकार की सुरक्षा पर केन्द्रित रही उसकी उन्नति पर केन्द्रित न रही। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज की अधिकांश शक्ति और पुरुषार्थ मुख्य बातों पर न लगकर गौण बातों—चुनावों और उनसे सम्बद्ध झगड़ों और सघर्षों—आदि २ पर लगा, आर्यसमाज से वह तत्त्व छिनसा गया जो आर्यसमाज के लिए वरदान सिद्ध हुआ और भविष्य में भी सिद्ध होता रहता, इसके साथ ही कुछ वरिष्ठ व्यक्ति इसमें आने में सोच विचार में पड़ गया।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज को प्रजा-सत्तात्मक प्रबन्ध व्यवस्था प्रदान की। उन्होंने इसे दोषों से मुक्त रखने के लिए भी पूरी रोक लगाई। आर्यसमाज की सार्वजनिकता की नींव सदाचार और सत्य पर रखी। अपने ग्रन्थों में इस बात पर ज़ोर दिया कि एक आप्त की बात मानो कई अनाप्तों की नहीं। आप्त का लक्षण किया कि जो योग्य हो और श्रेष्ठ भी हो। जब हम आर्यजनों को आपस में सघर्ष करते देखते हैं तो ऐसा लगने लगता है कि हममें महर्षि दयानन्द की कल्पना की प्रजासत्तात्मक शासन प्रणाली को चलाने की अपेक्षित योग्यता नहीं है। प्रजासत्तात्मक प्रणाली उसी दशा में सफल होती है जबकि मत दाता योग्य हो अपने अधिकारों के साथ २ अपने कर्त्तव्य पर भी विचार करता हो, साथ ही जहां विशेषज्ञों की सम्मति का पूरा २ आदर किया जाता हो, जहां प्रत्येक मतदाता समाज के हिताहित को समक्ष रखकर अपने मत का सदुपयोग करता और अपने उत्तरदायित्व को समझता हो। हमारी सार्वजनिकता की सफलता उसी सीमा तक हुई या होती है जिस सीमा तक उपयुक्त आदर्श को सामने रखा गया या रखा जाता है परन्तु जब से नेताओं की बागडोर जनता के हाथों में आई और प्रत्येक नए सभासद् की प्रवृत्ति उच्छृंखलतापूर्वक अपने मताधिकार के प्रयोग की बनी तभी से बहुत खराबी उत्पन्न हुई। आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज की सार्वजनिकता को दोषों से मुक्त करने का भगीरथ यत्न किया जाय और उसमें स्थायी अंश लाने की चेष्टा की जाय बहुपक्ष बहुत अच्छी वस्तु है परन्तु जब यह वरदान के स्थान में अभिशाप बन जाता है तब सस्थाओं को ले डूबता है। प्रत्येक आर्य सभासद् को इस तथ्य पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

आदिवासियों की रक्षा की जाय

अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ ने एक वक्तव्य प्रचारित करके माग की है कि ईसाई बन जाने वाले आदिवासियों को आदिवासी न माना जाय और इस प्रकार उन्हें आदिवासियों को दिए जाने वाले अधिकार, सुविधाएं और छूट न दी जाय।

लोक सभा में गत सप्ताह अनुसूचित जातियों और आदिम जातियों विषयक रिपोर्ट पर हुई बहस में मध्यप्रदेश के कुछ सदस्यों विशेषकर श्री अमरसिंह डोमर द्वारा की गई उपर्युक्त आशय की माग के उत्तर में केन्द्रीय गृह उपमन्त्री श्रीमती वायलेट अल्वा ने कहा था कि 'आदिम जाति का कोई भी व्यक्ति ईसाई हो जाने पर भी आदिम जाति का ही बना रहता है।" संघ के वक्तव्य में श्रीमती अल्वा के इस कथन का विरोध करते हुए कहा गया है कि ईसाई बन जाने के बाद आदिवासियों की संस्कृति, रीति रिवाज, तीज त्योहार आचार विचार और रहन सहन सब कुछ बदल जाता है। ये लोग फिर भी अपने आपको केवल इसलिए आदिवासी कहते हैं ताकि आदिवासियों को सरकार से मिलने वाले विशेष अधिकार, रियायतें और सुविधाएं उन्हें मिलती रहें। यदि सरकार ने इन्हें न रोका तो इसका परिणाम यह होगा कि ईसाई लोग जो स्वास्थ्य और शिक्षा की दृष्टि से पहले ही काफी आगे बढ़े हुए हैं इन सुविधाओं और अधिकारों को हड़पते रहेंगे और भोले भाले आदिवासी उनसे वंचित रहेंगे। ईसाई बन जाने पर भी आदिवासियों को इन सुविधाओं के मिलते रहने का ही यह परिणाम है कि आदिवासी क्षेत्रों में ईसाइयों का प्रभाव बढ़ रहा है और ईसाई मिशनरी आदिवासियों को प्रलोभन देकर पथ भ्रष्ट कर रहे हैं। वक्तव्य में ३ वर्ष पूर्व तथा विधान निर्माण के समय आदिवासियों की ओर से सरकार को दिए गए एक प्रार्थना पत्र का उल्लेख किया गया है जिसमें उन्होंने कहा था कि हमारी संस्कृति और ईसाइयों की संस्कृति में कोई मेल नहीं है। किसी भी व्यक्ति के ईसाई हो जाने के साथ २ उसकी जाति समाप्त हो जाती है। अतः यदि सरकार आदिवासियों की उन्नति चाहती है तो सवसार आदिवासियों को ईसाई आदिवासियों से प्रथक् रखा जाय और उनकी रक्षा की जाय ऐसा न होने से सबसार आदिवासी धड़ाधड़ ईसाई होते जायगे।"

यह वक्तव्य अपने में सुस्पष्ट है। हम इसका समर्थन करते हुए सरकार से यही कहेंगे कि वह इस दशा में एक सही नीति का अनुसरण करे जिससे उसकी कठिनाइयां न बढ़े और आदिवासियों का दूरवर्ती अहित न हो। धर्म के नाम पर चलने वाले राजनैतिक कुचक्र गर्हित हैं। उनकी ओर से आंखें बन्द कर लेना और इसी प्रकार उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करना घोर राजनैतिक अदूरदर्शिता और भूल कही जा सकती है।

सिगरेट न पीने में सावधान रहो

लंदन की स्वास्थ्य रायल सोसाइटी के समक्ष भाषण देते हुए लार्ड बर्केन हैड ने बताया कि फेफड़े के कैंसर से मृत्यु संख्या में प्रतिवर्ष १० ० की वृद्धि हो रही है। कोई मनुष्य जितनी अधिक सिगरेट पियेगा उतनी ही अधिक उसे कैंसर हो जाने की आशंका रहेगी। कैंसर की बीमारी दिन पर दिन बढ़ती जाती है और ब्रिटेन में भरी जवानी में प्रतिवर्ष २० हजार मनुष्य इसकी बलि चढ़कर मर जाते हैं।

योग की महिमा

जकार्ता का १३ मई का समाचार है कि इंडोचीन के नवनिर्मित महिला पुलिस के दल को योग

का शिक्षण दिया जा रहा है जिससे वे अपने बुरे स्वभाव पर विजय पा सके और अपने स्वास्थ्य को ठीक रख सकें इस प्रकार के प्रशिक्षण में ५० महिलाएं भाग ले रही हैं भावनाओं में कितना अन्तर है? योगी परमात्माकी खोज करता है परन्तु ये महिलाएं अपराधी की खोज करेंगी। यदि महिला पुलिस को इस प्रशिक्षण से यथेष्ट लाभ न हुआ तो इसमें योग विद्या का दोष न होकर उनकी अपनी ही दुर्बलताओं का दोष होगा।

कीटाणु युद्ध

विश्व स्वास्थ्य संघ के भूतपूर्व डायरेक्टर जनरल डा० ब्रूक चिशोइम ने शिकैगो (अमेरिका) में कहा कि १०८ व्यक्ति उत्तरी अमेरिका के बड़े २ नगरों और सैनिक अड्डों में कीटाणुओं का प्रसार करके उन्हें बेकार कर सकते हैं। जीव विद्या का अच्छा विशेषज्ञ रखने वाला कोई भी देश इन लोगों को घातक कीटाणु दे सकता है और प्रभावित क्षेत्रों में ८० प्रतिशतक तक व्यक्ति मर सकते हैं। अणु विज्ञान की पत्रिका में लिखते हुए डाक्टर महोदय ने बताया है कि कीटाणुओं के अनेक अस्त्र हो सकते हैं। बाट्यूलिनस विष की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा है कि यह बड़ा घातक विष है। इस विष के सूंघ लेने, होटों पर लगने, आंखों में जा पड़ने, भोजन वा तरल पदार्थों में मिल जाने से ६ घण्टों के भीतर २ मृत्यु हो जाती है। इस मृत्यु में पीड़ा भी अत्यधिक होती है।

झूठी प्रशंसा

सोवियत प्रधान मन्त्री श्री निकिता ख्रुश्चेव ने मास्को में आयोजित एक समारोह में १६ मई को इस बात का खंडन किया कि वे मानव जाति के अत्यधिक धार्मिक नेता हैं।

लेनिन शांति पुरस्कार वितरण के समय भारतीय शिष्ट मंडल के नेता पंडित सुन्दरलाल ने जो भारतीय शांति परिषद् के अध्यक्ष भी हैं अपने भाषण में कहा कि 'मैं धार्मिक व्यक्ति हूं' जबकि आप (ख्रुश्चेव) धर्म शब्द को भी पसन्द नहीं करते तथा अपने को नास्तिक कहने में गर्व अनुभव करते हैं। परन्तु मैं विविध धर्मों के अपने अध्ययन के फलस्वरूप यह कह सकता हूं कि आप मानव जाति के अत्यधिक बड़े धार्मिक नेता हैं।"

श्री ख्रुश्चेव महोदय ने तत्काल इस बात का खंडन किया कि मैं तथाकथित परमात्मा में कोई विश्वास नहीं रखता हूं।"

आशा है इस उत्तर से श्री सुन्दरलाल जी की आंखें खुल गई होंगी और वे भविष्य में अयथार्थ बातें बढ़ाकर न कहने में सावधान रहेंगे। श्री निकिता महोदय श्री सुन्दरलाल जी की दृष्टि में सबसे बड़े धार्मिक नेता हैं परन्तु निकिता महोदय को प्रसन्न करने के लिए जब वे उन्हें धार्मिक नेता की महान् पदवी से सार्वजनिक समारोह में विभूषित करने लगे थे तो वे भारतीय शिष्ट मंडल के नेता के रूप में बोल रहे थे और वह प्रमाण पत्र अयथार्थ रूप में समूचे भारत की ओर से दिया जा रहा था। उनके कथन के तात्कालिक खंडन से जहां भारतका अपमान हुआ वहां उपस्थित जनों और संसार के इतर जनों पर यह प्रभाव पड़े बिना न रहा कि श्री सुन्दरलाल जी चापलूसी का आश्रय ले रहे थे। भारत सरकार को सांस्कृतिक शिष्ट मंडलके सदस्यों और नेताओं का चुनाव करने में और उन सदस्यों तथा नेताओं को बाहर बोलने में बहुत सावधानता बर्तनी चाहिए। श्री सुन्दरलाल जी को ह्यूम के इन शब्दों को स्मरण रखना चाहिए कि बहुत बढ़ाचढ़ाकर अतिश्योक्तिपूर्ण बातें न करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने से सत्य या बुद्धिमानी को धक्का लगता है। वह तो अतिश्योक्ति करने वाले व्यक्ति की समझ की कमजोरी या सूझ-बूझ की कमी की ही द्योतक होती हैं। वह व्यक्ति भले ही अपनी दृष्टि से सत्य कह रहा हो फिर भी वे आंशिकरूप में सत्य और प्राय: असत्य समझी जाती हैं।

कोई व्यक्ति ईश्वर को न मानता हुआ भी धार्मिक समझा जा सकता है यदि उसका जीवन मानव समाज के हित पर अर्पित हो और जो विशुद्ध साधनों से हित सम्पादित करता हो। श्री ख्युश्चेव महोदय उस जीवन प्रणाली की उपज है जो हिंसा के आश्रय द्वारा बलात दूसरों पर छा जाने के लिए सचेष्ट रहती है तथा विश्व में हिंसा के वातावरण की उत्पत्ति वा वृद्धि में योग देती रही है। इस समय भी इस वातावरण मे वृद्धि हो रही है जिसके लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में निकिता महोदय जिम्मेवार हैं। क्या यही मानव हितैषिता है? उनकी राजनीति धर्म पर हावी है धर्म राजनीति पर हावी नहीं है। इसलिए उनसे ज्ञान मे या अनज्ञान में ऐसे कार्य हो जाते हैं जो धार्मिक दृष्टि से ठीक नहीं होते। अत उन्हें धार्मिक नेता की पदवी से विभूषित करना ठीक नहीं और उन्होंने इसका प्रतिवाद करके अपने बडप्पन का ही परिचय दिया। यह ठीक है कि वे तीसरे युद्ध की विभीषिका को टाल रहे हैं। उनका यह कार्य प्रशसनीय है परन्तु इस प्रशसनीय कार्य के पीछे धार्मिक भावना काम कर रही है या राजनीति की चालें इस विषय में चित्र स्पष्ट नहीं है। ऐसा अवस्था में अतिशयोक्तिपूर्ण बाते कह २ कर धर्म को वा भारत को अपमानित न होने देने में विशेष सावधान रहना चाहिए।

मन्दिरों की सम्पत्ति

सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्स अपने ४.५.५६ के अक में लिखता है — "विदित हुआ है कि मन्दिरों और अन्य धर्म सघों की सम्पत्ति और धन के प्रयोग को नियन्त्रित करने के लिए सरकार कानून बनाने पर विचार कर रही है। भारत साधु समाज के एक सम्मेलन में ३.५.५६ को भाषण देते हुए प्रधान मन्त्री पडित जवाहरलाल नेहरू ने इस प्रकार के कानून की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि समष्टि रूप में समाज हित में इस सम्पत्ति तथा धन का प्रयोग होना चाहिए। साधुओं ने इस बात की आवश्यकता को स्वीकार तो किया परन्तु यह माग की कि इस सम्पत्ति का प्रयोग धार्मिक कार्यों मे ही होना चाहिए अन्य कार्यों में नहीं। साधु समाज के प्रस्ताव में कहा गया है कि धार्मिक शिक्षण, भारतीय सस्कृति के प्रसार तथा प्रस्ताव में उल्लिखित अन्यान्य कार्यों में ही इस सम्पत्ति का प्रयोग होना चाहिए। बिजली की योजनाओं, खाद के कारखानों तथा अन्यान्य विकास योजनाओं में इस सम्पत्ति के प्रयोग से साधु समाज सहमत नहीं है। ये योजनाएं समाज के लिए हितकारी हैं परन्तु इन्हें धार्मिक योजनाए नहीं कहा जा सकता। पडित नेहरू ने इस बात की निन्दा की कि महन्त लोग तथा धार्मिक सम्पत्तियों के अन्य प्रबन्धक अपने निजू कार्यों में इसका प्रयोग करते हैं। साधुओं को इस पर भी आपत्ति है। वे प० जी के इस सुझाव से सहमत हो सकते हैं कि धार्मिक सस्थाओं का स्वामित्व वशानुक्रम से पिता के बाद पुत्र को न मिलना चाहिए। महन्तों या पडों पुजारियों द्वारा मन्दिरों की सम्पत्ति का दुरुपयोग बहुत हुआ है इसलिए इस बात में प्राय सभी सहमत है कि धन पर जनता का नियन्त्रण रहना चाहिए। परन्तु ऐसी भी धार्मिक सस्थाए हैं जिन पर महन्त या किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है अपितु सगठनों का अधिकार है और उनकी सम्पत्ति का पाई २ निर्दिष्ट कार्यों में व्यय होता है इस प्रकार की सस्थाओं ने धार्मिक एव सांस्कृतिक शिक्षण का बहुत बड़ा कार्य किया है अत कानून कोई भी क्यों न बने, वह इन मन्दिरों और सस्थाओं के धार्मिक और सास्कृतिक कार्यों में अनुचित हस्ताक्षेप न करने वाला होना चाहिए।"

परिवार नियोजन

अभी कुछ दिन हुए अखिल भारतीय यूनानी तिब्बी कान्फ्रेंस के प्रधान श्री हकीम अब्दुल हमीद ने सरकार द्वारा सचालित परिवार नियोजन के

आंदोलन के अभिशापों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया था। केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय को इन अभिशापों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। उनके सुझावों पर कुछ मनचले नवयुवकों ने आपत्ति की है और कृत्रिम साधनों से परिवार नियोजन का समर्थन किया है। हकीम महोदय सतति निग्रह के विरुद्ध नहीं हैं और देश का कोई भी हितैषी इसके विरुद्ध नहीं हो सकता। मतभेद तो उपायों के सम्बन्ध मे है। कृत्रिम साधनों के द्वारा सन्तान नियमन का विरोध ३ ४ भयकर बुराइयों पर आधारित है और वे है —

शरीर में नैतिकता का ह्रास, उत्तम सन्तान की विहीनता, कामुकता में वृद्धि और चिकित्सा व्यवसाय का अपयश। हकीम महोदयका यह कहना ठीक है कि इस घातक अभियान से देश के लोगों का न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ही नष्ट होगा अपितु भारत अपनी नैतिक सम्पदा को भी खो बैठेगा जिससे देश देशान्तर के लोग प्रेरणा और प्रकाश ग्रहण करते रहे हैं। सयम द्वारा सतान नियमन ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। सयम के मार्ग में दो बहुत बड़ी कठिनाइया हैं। एक तो इस प्रकार के शिक्षण और वातावरण का अभाव और दूसरे पतिपत्नी के दृष्टिकोणों में घोर अन्तर। जब तक दोनों ही परिवार नियोजन के लिए उद्यत न हो तब तक क्या सयम से और क्या कृत्रिम साधनों से परिवार नियोजन का अभियान सफल नहीं हो सकता।

वनस्पति घी

पिछले दिनों केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री श्री डी पी करमारकर ने लोक सभा में बताया कि वनस्पति घी के प्रयोग से हृदय के रोगों की उत्पत्ति होती है और इण्डियन कौंसल आव मेडीकलरिसर्च इस विषय में जो अनुसधानकर रही है उसके परिणामों की प्रतीक्षा की जा रहीहै। निस्सन्देह बहुतसे व्यक्ति हृदयरोगों से परिपीड़ित हैं। अनेक बार यह चर्चा हो चुकी है कि इस घी की उत्पत्ति बन्द करदी जाय। यह सुझाव भी बड़ी चर्चा का विषय बना है कि इस घी को ऐसा रग दिया जाया करे जिससे कि शुद्ध घी और बनावटी घी में पहचान हो जाया करे और मिलावट की सभावनाए कम हो जाय। परन्तु मुट्ठीभर धनपतियों के निहित स्वार्थों ने जिन का इस उद्योग में धन लगा है और जो राष्ट्र के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड करते नहीं शर्माते, कानून का निर्माण रोका हुआ है। कांग्रेस के शासक दल पर यह बहुत बड़ा धब्बा है।

घी के व्यापारियों की देश में बाढ सी आई हुई है जिनमें से प्रत्येक गाव के शुद्ध घृत के नाम से इस व्यापार में सलग्न है। सरकार जागरूकता का कितना ही ढोल क्यों न पीटे, यह एक सच्चाई है कि वह घी की मिलावट को रोकने में असफल रही है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ता सदिग्ध माल खरीदने की अपेक्षा विशुद्ध वनस्पति घी को ही खरीदना पसन्द करता है।

अनशन की आदत

उपर्युक्त शीर्षक से ट्रिब्यून (८ मई) लिखता है -

'अनशन की प्रथा को महात्मा गाधी ने स्वतन्त्रता सग्राम के दिनों मे पुनर्जीवित किया था। महात्मा जी ने कई अवसरों पर आत्म शुद्धि वा सरकार तथा प्रजा के हृदयों को बदलने के लिए ऐतिहासिक उपवास किए थे। उनके लिए उपवास का काल आत्म निरीक्षण का काल रहता था। यद्यपि उन्होंने कभी २ अपने मित्रों के परामर्श के विरुद्ध उपवास किए तथापि उनकी इच्छा यह न थी कि दूसरे जन इस अस्त्र का बार २ प्रयोग करें। उन्हें यह भय रहता था कि जो व्यक्ति उपवास के मूलभूत सिद्धान्तों को नहीं समझते वे इसका दुरुपयोग न कर बैठें। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अनशन दिन प्रतिदिन की बात हो गई है। शिकायत उचित

हो या अनुचित इसकी परवाह किए बिना आमरण अनशन की धमकी दे दी जाती है। श्रम जीवियों का नेता शिकायत का समाधान होने तक फैक्टरी या उसके कार्यालय के सामने धरना देकर बैठ जाता है। भले ही वह शिकायत अनुचित हो। यही दशा विद्यार्थियों की है। प्रिंसिपल, प्रोफेसर वा संस्था के प्रबन्ध विभाग के विरुद्ध किसी तथा कथित शिकायत के निराकरण के लिए विद्यार्थियों के नेता अनशन का आश्रय ले लेते हैं। इनका परिणाम यह होता है कि राजनीतिज्ञ प्राय इन उपवासों से उत्पन्न स्थिति का अपने लिए लाभ उठाते हैं। इस प्रकार के अनशनों की भावना और प्रचलन दूसरों पर दबाव डालने वा विरोधी दलों को डराने के तत्वों से परिपूर्ण होती है। आत्म शुद्धि वा दूसरों के हृदयों को बदलने का प्रश्न सम्बद्ध व्यक्तियों को परेशान नहीं करता। आज भी राजनैतिक क्षेत्र में ऐसे व्यक्ति विद्यमान हैं जो अनशन की बात सोचते हैं। केरल के सर्वोदय समाज के नेता श्री केलापन ने आत्म शुद्धि के लिए अनशन करने का निश्चय किया। इसके सम्बन्ध में श्री जयप्रकाश नारायण जी ने बोलते हुए कहा 'अनशन, जैसा अस्त्र प्रत्येक स्थिति में वैध और उचित है।" परन्तु उनकी सम्मति है कि अनशन के तत्त्व को समझने वाले व्यक्ति को ही इसका आश्रय लेना चाहिए। अनशन के सिद्धान्त को भली भांति समझने वाले व्यक्ति हैं ही कितने? प्रश्न उठता है कि क्या अनशन का स्थान अन्य कोई उपाय नहीं ले सकता? अनशन का तात्विक महत्त्व कोई भी क्यों न हो जन-साधारण के हाथों में इसका महत्त्व जाता रहा है। आज जो व्यक्ति अनशन करता है तथा जिसके विरुद्ध इसका प्रयोग किया जाता है। वह इसके नैतिक या दार्शनिक पहलू को कोई महत्त्व नहीं देता। इस प्रकार के अनशन में कोई गम्भीरता और पवित्रता नहीं होती अत इसे अधिक से अधिक निरुत्साहित करना चाहिए।

आक्षेप का निराकरण

वेदों के विद्वानों तथा आर्यसमाज के सदस्यों पर प्राय यह आक्षेप किया जाता है कि विज्ञान का जब कभी कोई नवीन आविष्कार होता है तो वे तुरन्त उसे वेद प्रतिपादित सिद्ध करने लग जाते हैं और आविष्कार होने से पहले उसकी कोई चर्चा नहीं होती। यह आक्षेप ठीक नहीं है। उदाहरणार्थ—

महर्षि दयानन्द के समय में युरोप के विज्ञान-वेत्ता ६४ भौतिक तत्त्व मानते थे। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में ५ महाभूत ही सत्य माने जिनकी सत्यताका आधार वैदिक ऋषियों की योगदृष्टि है।

महर्षि के समय डार्विन महोदय का विकास-वाद सत्य माना जाता था। ऋषि ने समाज के पहले और तीसरे नियम में इसको नहीं माना। आज के विज्ञान वेत्ता इसी दृष्टिकोण को अपनाने के लिए बाध्य हो गए हैं।

एलोपैथी के डाक्टर कहते रहे हैं कि तेल के जलाने से जो गैस उत्पन्न होती है ठीक वही गैस घृत के जलाने से उत्पन्न होती है। पर योगदृष्टि तथा मानव की स्वाभाविक चेतना शक्ति इस बात का खण्डन करती है।

सब रसायनशास्त्री लिखते हैं कि हीरा, कोयला

तथा पैंसिल का सुरमा उसके भौतिक प्रयोगों की दृष्टि से अंगारक तत्त्व के समान विकार है। पर मानवी योगदृष्टि अनुभव द्वारा इसका खंडन करती है। एक माशा कोयलेका चूर्ण वा पैंसिल का सुरमा खा जानेसे मनुष्य मरता नहीं किन्तु उतनी मात्रा में हीरा खा जानेसे वह मर जाता है।

वैदिक वा आर्ष सिद्धातों का आधार युरोप के भौतिक प्रयोग नहीं किंतु जीवन युक्त वैदिक ऋषियों की योगदृष्टि है। युरोप के विज्ञान वेत्ता जिस दिन बुद्धि के साथ योगदृष्टि की बात भी मानेंगे उस दिन वे अपने प्रयोगों की भूलें भी सुधार लेंगे।

यह तो रही तत्त्वों की आधारभूत विश्लेषण की बात।

वेदों में समस्त विद्याए बीज रूप में विद्यमान् हैं।

प्रोफेसर मैक्समूलर अपने Biographical Essay में स्वामी दयानन्द जी के वेद भाष्य का निर्देश करते हुए लिखते हैं —

"स्वामी दयानन्दजी की दृष्टि में वेदों में प्रतिपादित प्रत्येक वस्तु न केवल पूर्ण सत्य थी बल्कि वे एक पग और आगे गये और अपनी व्याख्या से वे औरों को यह विश्वास दिलाने में सफल हुए कि प्रत्येक जानने योग्य वस्तु यहा तक कि आधुनिक विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों का भी वेदों में निर्देश है। रेल, बिजली, तार, बेतार का तार, रेडियम, एलेक्ट्रोस, हवाई जहाज आदि कम से कम बीज रूप में वैदिक ऋषियों को ज्ञात थे।

राइट भाइयों से पूर्व ही बड़ौदा के एक व्यक्ति ने वायु यान का आविष्कार किया परन्तु ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने भारतीय कला कौशल को अधिक से अधिक निरुत्साहित करने की नीति का अनुसरण करते हुए इस आविष्कार को निरुत्साहित कर दिया। अन्य अनेक आविष्कारों के उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

वस्तुत तथ्य यह है कि भारत के दूरदर्शी ऋषिगण भौतिक विज्ञान के उन आविष्कारों के प्रति उदासीन रहते थे जो मनुष्य के पशुत्व को जाग्रत करने में योग देने वाले सिद्ध होते थे। आज अवस्था क्या है? यही न कि मानव का पशुत्व इन आविष्कारों के कारण जाग्रत हुआ है और ससार के विनाश की धमकी दे रहा है। रावण के पास भी तो इस प्रकार के आविष्कारों के अनेक उपकरण विद्यमान थे परन्तु उसकी गति क्या हुई यह सभी जानते हैं।

अत यदि वेदज्ञ और आर्यसमाज के विद्वान् किसी आविष्कार की पृष्ठभूमि वेद बताए तो उपर्युक्त विश्लेषण के प्रकाश में उनका ऐसा कहना वा बताना युक्ति युक्त ही है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

हिन्दी रक्षा आन्दोलन

२२।५६ को प्रात ६ बजे से सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की महत्त्वपूर्ण बैठक दयानन्द भवन (रामलीला मैदान नई दिल्ली-१) में श्रीयुत घनश्यामसिंह जी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक मे विशेष निमन्त्रण पर पजाब राज्य द्वारा नियुक्त सद्भावना समिति के एक सदस्य श्री प० जयचन्द जी विद्यालकार तथा चौधरी रामनारायण जी भी उपस्थित थे। यह बैठक लगभग ६ घटे तक चली। अन्त में पर्याप्त वाद विवाद और विचार विमर्श के पश्चात् निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुआ —

'सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक मे पजाब की भाषा समस्या के उचित रूप से समाधान के विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार हुआ। समिति के प्रधान और पजाब के राज्यपाल के बीच जो पत्र व्यवहार हुआ वह भी पढा गया। सद्भावना समिति के सदस्य श्री जयचन्द जी विद्यालकार एव श्री चौधरी रामनारायण जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए जिन में उन दोनों ने अपने द्वारा इस समस्या के समाधान के लिए किए जा रहे प्रयत्नों एव शासन के उच्चाधिकारियों के साथ किए गए वार्तालाप पर भी प्रकाश डाला।

इन सब बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के पश्चात् समिति इस परिणाम पर पहुची है कि श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज से सविनय आग्रह किया जाय कि वे अपने सत्याग्रह करने के विचार को स्थगित रखे। समिति आर्य समाज की प्रतिष्ठा के लिए उनकी बलिदान एव त्याग की अदम्य भावना की सराहना करती है। आर्य समाज जो कि एक विशुद्ध धार्मिक सस्था है, उसकी शाति प्रियता और समझौते के प्रत्येक मार्ग को अपनाने की पुरानी परम्परा को ध्यान में रखते हुए तथा आर्यसमाज की सगठन भावना का आदर करते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने समिति के आग्रह को स्वीकार किया इसके लिए समिति उनको हार्दिक बधाई देती है।

२ यह भी निश्चय किया गया कि आगामी २४ अगस्त को सारी परिस्थिति पर विचार करने तथा सत्याग्रह के भावी कार्यक्रम की घोषणा करने के हेतु आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन आमन्त्रित किया जाय।

1 The Sarvadeshik Bhasha Swatantrya Samiti carefully considered the question of proper and suitable solution of the language tangle in Punjab The correspondence between the President Shri Ghanashyam Singh Gupta and Punjab Governor were read out at the meeting and Shri Jayachand Vidyalankar and Shri Ram Narain Choudhary gave the summary of their efforts and their talks with the high governmental authorities regarding the solution of the language problem

After carefully considering all these matters the Samiti came to the conclusion that Shri Swamy Rameshwaranand ji Maharaj be requested that he should postpone his idea of starting Satyagraha The Samiti appreciates his spirit of sacrifice and indomitable courage Aryasamaj is purely a religious body and has always been a votary of peace and has always welcomed all

channels of peaceful settlement

Taking into consideration this tradition of Arya samaj and also sense of discipline in the organisation Swamyji Maharaj has accepted the advice of the Samiti for which the Samiti heartily congratulates him

2 It is also resolved that on 24th August, 1959 a Sammelan of representatives of Aryas be called with a view to review the whole situation and announce the future programme of Satyagraha

इस निश्चय का प्राय सभी क्षेत्रों में स्वागत हुआ है। सहयोगी नवभारत ने २५.५.५६ के अ क में अपनी प्रतिक्रिया निम्न प्रकार व्यक्त की है —

"दिल्ली में सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने ६ घण्टे तक विचारविमर्श के बाद यह निश्चय किया है कि स्वामी रामेश्वरानन्द जो २६ मई से हिन्दी रक्षा आदोलन पुन प्रारम्भ करना चाहते थे वह अभी न किया जाय किन्तु यदि आगामी तीन मास में सरकार की ओर से कोई ऐसा कदम नहीं उठाया जाता जिससे यह समस्या हल हो जाय तो फिर २४ अगस्त को समस्त देश के आर्य नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया जाय जिसमें समस्त स्थिति पर पूर्ण रूप से विचार हो और सत्याग्रह के भावी कार्य क्रम की घोषणा की जाय। कम से कम २६ मई से आदोलन शुरू करने की बात अभी टल गयी, इस पर सतोष व्यक्त किया जायगा।

दो वर्ष पूर्व २६ मई से ही हिन्दी रक्षाके लिए सत्याग्रह शुरू किया गया था जो सात मास बाद २४ दिसम्बर को स्थगित हुआ था। पजाब में कोई न कोई आदोलन चलता ही रहता है अथवा आदोलन होने का एक प्रकार का तनाव बना रहता है। इससे जहा यह प्रकट होता है कि पजाब के लोग जीवन वाले हैं वहा सीमान्तर होने से इस राज्य में जिस प्रकार शात वातावरण चाहिए वह इनके कारण नहीं रह पाता।

अपनी भाषा के प्रति आर्य नेताओं का कितना प्रेम है और उसके लिए कितनी बेचैनी है यह इस बात से प्रकट हो जाता है कि दिल्ली की बैठक में स्वामी रामेश्वरानन्द, बताया जाता है, इसलिये कि आदोलन २६ मई से ही शुरू किया जाय कई बार उठकर बाहर गये। अपनी भाषा के प्रति ऐसा ही अनुराग और भावना होनी चाहिए। परन्तु एक बात का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि भावुकतावश विवेक न खो दिया जाय।

पिछले आदोलन का जो परिणाम निकला वह सर्वविदित है। उससे स्वय भाषा स्वातन्त्र्य समिति भी सतुष्ट नहीं, तभी तो उसे दुबारा आदोलन चलाने की दिशा में सोचना पड रहा है। समिति का कहना है कि सरकार ने जो आश्वासन दिये वे पूरे नहीं हुए। इस बात से ऐसा लगता है कि बातचीत स्पष्ट नहीं हो पायी थी अन्यथा एक बार आदोलन स्थगित होकर दुबारा करने का अवसर ही क्यों आता।

इस बीच राज्यके राज्यपाल, सद्भावना समिति के सदस्य तथा श्री रामनारायण चौधरी ने समस्या के हल करने की दिशा में प्रयत्न किए हैं किन्तु अभी तक ऐसा लगता है कि आदोलन करने के पक्षवाले तत्व उनसे सतुष्ट नहीं हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो हिन्दी आदोलन चलाकर राज्य के ऐसे तत्वों को जो राज्य की शाति के मार्ग में बाधा बन जाते हैं अप्रत्यक्ष रूप से ताकत पहुँचाने के पक्ष में नहीं हैं। ऐसे व्यक्तियों के प्रयत्नों और परामर्श के कारण ही २६ मई की तारीख टली है।

अपनी भाषाको समृद्ध करने में सहयोग किया जाय, उसके न्याय्य पद के लिए भी यत्न किया जाय किन्तु जल्दबाजी में कोई ऐसा पग न उठाया जाय जिससे भाषा को लाभ के बजाय हानि हो जाने का डर हो। देश में हिन्दी भाषा के प्रश्न को लेकर कई क्षेत्रों से विरोध की आवाज उठी है।

निस्सदेह पिछले हिन्दी सत्याग्रह ने ऐसी आवाज को अप्रत्यक्ष रूप से बल प्रदान किया। इसलिए अब आगे कोई भी कदम सोच समझकर ही उठाना चाहिए।

आर्य समाज की शाखाए देश भर मे फैली है। इसके बराबर दूसरी कोई समाज सगठित नहीं है। इसलिए इस शक्ति का सदुपयोग ही होना चाहिए। इस प्रकार म पग नहीं उठाया जाना चाहिए, जिससे शक्ति का अपव्यय होने का खतरा हो। यही आशा की जाती है कि हर कार्य विवेक पूर्ण ढग से सोच समझकर ही किया जायगा।'

पजाब सरकार भाषा समस्या का जिस ढग से समाधान करना चाहती है उसके सम्बन्ध मे समाचार पत्रों में पर्याप्त चर्चा चल रहा है। उस ढग के विषय में आर्य जगत मे जो प्रतिक्रिया हुई है वा हो सकती है, उसका किंचित आभास सहयोगी वीर अर्जुन को निम्नांकित सम्पादकीय टिप्पणी (२६।५।५६) से मिल सकता है —

एक समाचार है कि पजाब सरकार की द्विसदस्यीय समिति १५ जून तक अपना प्रतिवेदन सरकार को भेज देगी। उसकी सिफारिश यह होगी कि सच्चर फार्मूला समाप्त कर दिया जाये। पजाबी क्षेत्र की एक मात्र भाषा पजाबी घोषित की जाये और हिन्दी क्षेत्र की हिन्दी। पजाबी को दो लिपियों में लिखे जाने का सुझाव अभी न उठाया जाये। हिन्दी क्षेत्रमें पजाबी पढ़ाई ऐच्छिक कर दी जाये और गोलमेज सम्मेलन करके इस फार्मूले की स्वीकृति दे दी जाये। समाचार मे कहा गया है कि हरियाना के सभी नेताओं ने यह फार्मूला मान लिया है और पजाबी क्षेत्र के सिखों को भी यह स्वीकार है। इस क्षेत्र के हिन्दुओं को पूछने की आवश्यकता न पहले समझी गई न अब समझी गई है।

प्रश्न यह होगा कि ऐसी स्थिति में गोलमेज सम्मेलन की क्या आवश्यकता है, उस समिति की शिफारिश का कुछ अर्थ है तो यह कि हिन्दी क्षेत्र में पजाबी की अनिवार्यता समाप्त कर दी जाये और पजाबी क्षेत्र में उसे और भी कड़ा कर दिया जाए और वहा के लोगों से यह रियायत, कि वह अपने बच्चों की शिक्षा का माध्यम चुन सकते हैं, छीन लीजाए। स्पष्ट है कि यह फामूला पजाबी क्षेत्र के हिन्दुओं पर ठोंस दिया जाए तो वे रो धोकर चुप हो रहेंगे क्योंकि उनमें प्रतिरोध करने की शक्ति नहीं परतु वे उसे सामूहिक रूप से स्वीकार न करगे। इस समय सारे पजाब के हिन्दुओं या कम के कम आर्य समाजियों का एक मोर्चा है। इस फामूले के द्वारा इस मोर्चे में मत भेद पैदा करने का प्रयत्न किया जाएगा और यदि हरियाना प्रात वालों ने समझा कि हमारा काम तो बन गया अब हमें क्या? तो पजाबी क्षेत्र के हिदुओं को अकेले यह लडाई लडनी होगी। २२ मई को सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अधिवेशन मे पडित जयचन्द विद्यालकार भी सम्मिलित हुए और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मोर्चा न लगाया जाए ताकि भाषा की समस्या का ऐसा समाधान ढूढा जा सके जिस पर दोनों पक्ष सहमत हों। क्या यह हल हिन्दुओं को स्वीकार्य हो सकता है इस हल का एक ही मतलब है कि यदि २४ अगस्त को होने वाला आर्य महासम्मेलन देश की वतमान परिस्थितियों को देखते हुए सत्याग्रह स्थगित करना चाहेगा, तो भी न कर सकेगा। समाचार मे कहा गया है कि हरियाना के सब नेता इस फामूले पर सहमत हैं। मुझे पता नहीं कि सकेत किन नेताओं की ओर है, क्योंकि २२ मई को भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक में वहा के जो प्रतिनिधि सम्मिलित हुए, उन्होंने तो स्पष्ट कहा कि हम लोभ अथवा धोखे में नहीं आएगे और हिन्दी क्षेत्र से पजाबी की अनिवार्यता हटा कर पजाबी क्षेत्र में पजाबी की अनिवार्यता अक्षुण्ण रखने का प्रयत्न किया गया तो हम वहा के आर्यों का साथ देंगे। मतलब यह कि यदि सद्भावना समिति की यह सिफारिश है, तो समझ लेना चाहिए कि यह समिति एक वर्ष तक योंही वीराने में भटकती रही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

२४-५-५६

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का वार्षिक साधारण अधिवेशन २४-५-५६ को श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली—१ में सम्पन्न हुआ। श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त, श्री प०अलगूराय जी शास्त्री, श्री स्वा० आनन्दभिक्षु जी, श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज श्री स्वामी व्रतानन्द जी महाराज, श्री मिहिरचन्द जी धीमान (बंगाल) श्रीयुत प० भगवान स्वरूपजी न्याय भूषण, श्री भवानीलाल भारतीय (राजस्थान) डा० महावीर सिंह जी, श्री भारतभूषण त्यागी (मध्य भारत) श्री विश्वम्भर प्रसाद (मध्य प्रदेश) श्री प० वासुदेव शर्मा रामनारायण शास्त्री, श्री वैद्यनाथ प्रसाद (बिहार) श्री वेणी भाई आर्य, एल० के नन्दवाना (बम्बई) श्री डी० डी० पुरी (पूर्व अफ्रीका) श्री प्रिंसिपल महेन्द्र प्रताप शास्त्री (उत्तर प्रदेश) श्री आचार्य भगवानदेव जी, श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती (पंजाब) श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्रीयुत ला० रामगोपाल जी, श्री कविराज हरनामदास बी० ए०, ला० हंसराज गुप्त, श्री प्रो० रामसिंह एम० ए० श्री प० विनायकराव वार ऐटला, प० नरेन्द्र जी (हैदराबाद) प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित, श्रीमती शकुन्तला जी गोयल आदि २ देश और विदेश के ६१ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन की कार्यवाही प्रात ९ बजे आरम्भ हुई और १॥ बजे मध्यान्होत्तर तक चलती रही। वार्षिक रिपोर्ट व आय व्यय स्वीकृत होने पर आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। सभा ने बजट पास करने तथा न्याय सभा की नियुक्ति करने का अधिकार अन्तरंग सभा को दे दिया।

मध्यान्होत्तर ३ बजे से कार्य विभाजन के लिए नवीन अन्तरंग सभा की बैठक हुई जिसमें १० उप समितियां नियुक्त हुईं। बजट लगभग ३ लाख का प्रस्तुत किया गया था।

नवनिर्वाचित पदाधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य

१—श्रीयुत बा० पूर्णचन्द जी ऐडवोकेट (प्रधान)
२— बा० कालीचरण जी आर्य (उपप्रधान)
३— प्रो० रामसिंहजी एम ए („
४— , मिहिरचन्द जी धीमान् (उपप्रधान)
५— प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री (मन्त्री)
६— „ नरदेवजी स्नातक (उपमन्त्री)
७— „ भगवती प्रसाद जी (उपमन्त्री)
८— „ ओम्प्रकाशजी कपड़ेवाले (कोषाध्यक्ष)
९— „ आचार्य विश्वश्रवा जी (पुस्तकाध्यक्ष)

अन्तरंग सदस्य

१-श्रीयुत जगनन्दनलाल जी ऐडवोकेट उत्तरप्रदेश
२- „ प्रो रतनसिंहजी एम ए उत्तर प्रदेश
३- „ रामनाथजी भल्ला (पंजाब)
४- „ प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्तजी दीक्षित (पंजाब)
५- „ प० भगवान स्वरूप जी न्यायभूषण (राजस्थान)
६- „ बटकृष्ण जी वर्मन (बंगाल)
७- „ प० विनायकराव जी विद्यालंकार एम पी (आन्ध्र)
८- „ रामनारायण जी शास्त्री (बिहार)
९- „ डा० महावीरसिंह जी (मध्य भारत)
१०- „ विश्वम्भर प्रसाद जी (मध्य प्रदेश)
११- „ एल के नन्दवाणा जी बम्बई)
१२- „ डी० डी० पुरी जी (ईस्ट अफ्रीका)
१३- „ ला० हंसराजजीगुप्त (आजीवन सदस्यों से)
१४- „ स्वामी अभेदानन्द जी महाराज (जनरल चुनाव से)
१५- „ स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज (जनरल चुनाव से)
१६- प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री(जनरल चुनाव से)

श्री नोतन दास जी चावला सर्वसम्मति से आगामी वर्ष के लिए आडीटर निर्वाचित हुए।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

का

इक्यावनवां वार्षिक वृत्तान्त

[१-३-५८ से २८-२-१९५९ तक]

निर्माण व्यवस्था

इस वर्ष भी इस सभा में गत वर्ष की भांति १५ प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाएं सम्मिलित रहीं। वर्ष के अन्त में यह सभा निम्न प्रकार १३६ सदस्यों का समुदाय थी।

१	प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि सदस्य	१०३
२	भूतपूर्व प्रधान	३
३	प्रतिष्ठित	५
४	आजीवन सदस्य	२६

श्रीयुत प० शिवशंकर जी (बम्बई) के निधन से इस वर्ष १ स्थान रिक्त हुआ।

सम्बद्ध प्रान्तीय सभाएं प्रतिनिधिसदस्यसख्या

(१)	आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश	२५
(२)	,, ,, ,, पंजाब	३५
(३)	,, ,, ,, बिहार	११
(४)	,, ,, ,, बंगाल आसाम	८
(५)	,, ,, ,, मध्यभारत	३
(६)	,, ,, ,, मध्य प्रदेश	२
(७)	,, ,, ,, राजस्थान	७
(८)	,, ,, ,, मध्यदक्षिण(हैदराबाद)	४
(९)	,, ,, ,, सिन्ध	१
(१०	,, ,, ,, बम्बई राज्य	६
(११)	,, ,, , पूर्वीय अफ्रीका	१
(१२)	,, ,, ,, दक्षिण अफ्रीका	०
(१३)	,, ,, ,, फीजी	०
(१४)	,, ,, ,, मौरीशस	०
(१५)	,, ,, ,, सुरीनाम डचगायना	०
		१०३

अधिकारी

(१) प्रधान—श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज

(२) उपप्रधान—(१) श्रीयुत प० नरेन्द्र जी

(३) ,, (२) श्रीयुत बा० पूर्णचन्द्र जी

(४) ,, (३) श्रीयुत पं०मलगूरायजी शास्त्री

(५) मन्त्री—श्रीयुत ला० रामगोपालजी

(६) उपमन्त्री—श्री पं० प्रकाशवीरजी शास्त्री एम पी

(७) ,, श्री प्रो० रत्नसिंह जी

(८) कोषाध्यक्ष—श्रीयुत बालमुकन्द जी आहूजा

(९) पुस्तकाध्यक्ष—श्रीयुत नरदेवजी स्नातक एम.पी

अन्तरंग सदस्य

(१) श्रीयुत रामनाथ जी भल्ला
पंजाब सभा के प्रतिनिधि रूप में।

(२) श्रीयुत पं० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित
पंजाब सभा के प्रतिनिधि रूप में।

(३) श्रीयुत बा० जगनन्दन लाल जी ऐडवोकेट
उत्तर प्रदेश सभा के प्रतिनिधि रूप में

(४) श्रीयुत प्रिंसिपल महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री
उत्तरप्रदेश सभा के प्रतिनिधि रूप में।
(५) श्रीयुत मिहिरचन्द जी धीमान
बंगाल आसाम के प्रतिनिधि रूप में।
(६) श्रीयुत डा० महावीर सिंह जी
मध्य भारत सभा के प्रतिनिधि के रूप में।
(७) श्रीयुत रामानन्द जी शास्त्री
बिहार सभा के प्रतिनिधि के रूप में।
(८) श्रीयुत प० विनायक राव जी एम० पी०
मध्य दक्षिण सभा के प्रतिनिधि रूप में
(९) श्रीयुत पं० विजयशंकर जी
बम्बई सभा के प्रतिनिधि रूप में।
(१०) श्रीयुत प० भगवान स्वरूप जी
राजस्थान सभा के प्रतिनिधि रूप में,
(११) श्रीयुत डी० डी० पुरी जी
ईस्ट अफ्रीका के प्रतिनिधि रूप में।
(१२) श्रीयुत प्रो० रामसिंह जी
आजीवन सदस्यों के प्रतिनिधि रूप में,
(१३) श्रीयुत पं० हरिशंकर जी शर्मा
जनरल प्रतिनिधि
(१४) श्रीयुत वेणी भाई जी आर्य
जनरल प्रतिनिधि
(१५) श्रीयुत पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार
(१६) श्रीमती माता प्रियम्वदा देवी जी
जनरल प्रतिनिधि

नोट—श्रीयुत पं० विजयशंकर जी के निधन से एक अन्तरंग सदस्य का स्थान रिक्त रहा।

स्वदेश प्रचार (१)

उड़ीसा

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष में श्रीयुत स्वामी ब्रह्मानन्दजी के निरीक्षण में निम्नलिखित कार्यकर्ता कार्य करते रहे :—

(१) श्री शुक्रा मुंडा (२) श्री बिरसा मुंडा
(३) श्री डा० एन० महन्तो चिकित्सक
(४) रंगाधर आर्य (५) श्री रघुनाथ महापात्री
(६) श्री स्वामी सत्यानन्द जी (७) श्री चन्द्रसिंह

श्री शुक्रा मुंडा को सार्वदेशिक सभा से, श्री रघुनाथ महापात्री, श्री बिरसा मुंडा को दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर से, श्री रंगाधर आर्य को दक्षिण श्री आर्य समाज भवानीपुर कलकत्ता तथा वेद प्रचारिणी सभा हीराकुद से वेतन मिलता है। श्री डा० एन० महन्तो, श्री स्वामी सत्यानन्द जी तथा श्री चन्द्रसिंह अवैतनिक रूप से कार्य करते हैं।

पान पोष, राउरकेला, राजगांगपुर तथा हीराकुद इन चार केन्द्रों से कार्य होता है जो सुन्दरगढ़ जिले के अन्तर्गत हैं।

श्री शुक्रामुंडा और बिरसा मुंडा पहले ईसाई पादरी थे और ईसाई मत से पुनः हिन्दू धर्म में लाये गए थे। वे बड़ी श्रद्धा और लगन से कार्य करते हैं।

डा० एन० महन्तो राउरकेला केन्द्र में दातव्य औषधालय के संचालक हैं। श्री रंगाधर जी कटक जिले के निवासी हैं और राउरकेला केन्द्र को सम्भाले हुए हैं। श्री चन्द्रसिंह राजगांगपुर केन्द्र में कार्य करते हैं और दयानन्द सेवा आश्रम के नाम से दातव्य औषधालय का संचालन कर रहे हैं।

इस वर्ष निम्न प्रकार शुद्धियां हुईं —

१—श्री शुक्रा मुंडा जी द्वारा	२८०
२—श्री बिरसा मुंडा जी द्वारा	१८१
३—श्री रंगाधर आर्य द्वारा	५
४—श्री रघुनाथ महापात्री द्वारा	८६
योग	५५२

इसके अतिरिक्त ३५६ व्यक्तियों को ईसाई बनने से बचाया गया।

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने इस वर्ष

६८२ व्याख्यान दिये, ४१५ स्थानों का भ्रमण किया, २ पाठशालाएं खुलवाई जिनमें २०० बच्चे नि शुल्क शिक्षा पा रहे हैं।

इस वर्ष राउरकेला,सुन्दरगढ़ और समडेगा में आर्य समाज की स्थापना हुई। ३ अपहृत देवियों का उद्धार किया गया।

१९५४ में यह केन्द्र स्थापित हुआ था। इस वर्ष के अन्त तक ३८६७ ईसाइयों की शुद्धि हुई। १४४८ नरनारियों को ईसाई होने से बचाया गया। २७ पीड़ितों (देवदा) का उद्धार करके उनका आर्यों के साथ विवाह कराया गया। ५ पाठशालाएं तथा दातव्य औषधालय खोले गये।

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी जिस त्याग और लगन से कार्य कर रहे हैं वह सर्वथा प्रशंसनीय है।

आय-व्यय का लेखा विवरण

आय

१६१०) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
६८५।) दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर
६००) स्त्री आर्यसमाज, भवानीपुर कलकत्ता
४८०) वेद प्रचारिणी सभा हीराकुद
१००) श्री प्रभुदास जा भाई ५५ केनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता
११८) आर्य समाज नामनेर, छावनी आगरा
१९१) आर्य समाज राजा मंडी, आगरा
१२०) आर्य समाज नाई मंडी, आगरा
१११) आर्य समाज फ्री गंज चौक आगरा
८८) आर्य समाज समस्माबाद
४०) आर्य समाज मालवीय कुंज
४२०) अन्यान्य दाताओं से।

४८१३।।)

व्यय

६६०) दक्षिणा श्री शुक्रा मुण्डा जी आर्य प्रचारक
५०६।।-) दक्षिणा श्री बिरसा मुण्डा प्रचारक
४७५।।≈) दक्षिणा रघुनाथ महापात्रो
६००) दक्षिणा रगाधर आर्य
६५०) भोजन व्यय श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी
१५०) भोजन व्यय श्री स्वामी सत्यानन्द जी
१८०) वेतन सेवक
१२०) सहायता दातव्य औषधालय
३५३) गृह निर्माणादि
१८०।) डाक व्यय
३८८) मार्ग व्यय

४८६६।।)

नैपाल प्रचार

इस वर्ष भी नैपाल प्रचार का कार्य गौर बाजार (नैपाल) स्थित एक हिन्दी विद्यालय और एक दातव्य औषधालय के संचालन तक ही मुख्य रूप से सीमित रहा।

दातव्य औषधालय ३-५-५८ को स्थापित हुआ वर्ष भर में ३२०१ रोगियों की नि शुल्क चिकित्सा की गई। जिला मेडिकल आफिसर की प्रेरणा पर औषधालय के डाक्टर दो बार जंगली और पहाड़ी क्षेत्रों में गये। १६६२ व्यक्तियों को हैजे और चेचक के इंजेक्शन लगाये गये। इन यात्राओं का लाभ उठाते हुए आर्य समाज का प्रचार कियागया। बहुत बड़ी सख्यामें हैंडबिल और छोटे २ ट्रैक्ट वितरित किये गये।

हिन्दी विद्यालय में नैपाल राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत पाठविधि पाचवीं श्रेणी की प्रचलित की गई है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन सभी श्रेणियों के लिए एक घंटा धर्म शिक्षा के लिए नियत किया गया है जिसमें सन्ध्या हवन एव स्वस्तिवाचन के मन्त्र सिखाये जाते हैं और धर्म शिक्षा की पुस्तकें व्यवहार भानु, आर्य उद्देश्य रत्नमाला, बाल सत्यार्थप्रकाश तथा सत्यार्थप्रकाश आदि २ पढ़ाये जाते हैं। कार्य विवरणान्तगत वर्ष

में छात्रों का औसत ५५ रहा। पांचवीं श्रेणी के ६ छात्रों में से ५ उत्तीर्ण होकर उच्च कक्षा वाले विद्यालय में चले गये।

कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर बागमती के नदी के तट पर लगने वाले मेले में तथा गौर बाजार में महावीरी झंडे के मेले में आर्य समाज का प्रचार किया गया।

बागमती के मेले में ४२ भूले हुए बच्चों की रक्षा की गई। बिहार प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, श्री बा० वैद्यनाथ प्रसाद जी बी० ए० और श्री नन्दलाल जी भजनो पदेशक, ने १५ दिनों तक काठमाडू एवं भिन्न २ स्थानों में खुली सभाओं और समारोहोंमें आर्यसमाज का प्रचार किया। सभाओं में वहा के गणमान्य सज्जन और आफिसर भी सम्मिलित होते रहे। आर्यसमाज का संगठन सुन्दर रीति से करा दिया। काठ माडू आर्यसमाज के प्रधानमंत्री श्री हरिहरसिंह प्रधान एक उत्साही प्रभावशाली व्यक्ति हैं। १ मास इन्होंने बिहार प्रतिनिधि सभा का आतिथ्य स्वीकृत करके बिहार का दौरा किया। स्वर्गीय शहीद शुक-राज शास्त्री की बहिन चन्द्रकान्तादेवी ने उस समय नेपाल प्रचार का सारा आर्थिक भार उठाया। आर्य-समाज मन्दिर बनाने के लिए बड़ी तत्परता से कार्य कर रही हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार की देख रेख में यह कार्य हुआ, कई बार गौरबाजार संस्थाओं का निरीक्षण किया। इनके अतिरिक्त आर्य समाज के उपदेशक सर्व श्री नन्दलाल जी, श्री पं० वसुमित्र शास्त्री आदि २ ने भी इनसस्थाओं को देखा और इनके कार्य के प्रति सन्तोष व्यक्त किया। नेपाल राज्य के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर तथा स्कूलों के इंस्पेक्टर ने भी संस्थाओं का निरीक्षण किया।

हिन्दी विद्यालय के अधीन एक पुस्तकालय, और वाचनालय भी है जिसमें अब तक १७५ पुस्तकें संगृहीत हुई हैं। वाचनालय में कई आर्य सामाजिक तथा अन्य पत्र पत्रिकाएं आती हैं। इस वर्ष इस पुस्तकालय और वाचनालय से लगभग १००० व्यक्तियों ने लाभ उठाया है।

हिंदी विद्यालय में २ अध्यापक तथा औषधालयमें एक चिकित्सक कार्य करते है। सभा विद्यालय को ९२)तथा चिकित्सालय को ३०) कुल १२२) मासिक का अनुदान देती रही है। चिकित्सालय को फरवरी ५६ से सभा का अनुदान बन्द कर दिया गया है। सभा इस अनुदान का राशि को नेपाली भाषा में आर्य साहित्य के अनुवाद और प्रकाशन पर व्यय करना अधिक आवश्यक समझती है। यह भी यत्न किया जा रहा है कि औषधालय स्वावलम्बी बन जाय। राज्य से अनुदान प्राप्त करने का यत्न हो रहा है।

नेपाल में आर्य समाज के प्रचार और विदेशी ईसाइयों की अराष्ट्रीय गतिविधियों के निराकरण की अत्यन्त आवश्यकता है। विदेशी ईसाइयों की प्रगतिया वहा एक बहुत बड़ा खतरा बनती जा रही हैं। ये लोग वहा की सर्वसाधारण जनता की निर्ध-नता, अज्ञान, भोलेपन तथा सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक पिछड़ेपन का अनुचित लाभ उठा कर ईसाइयत का बड़े वेग से प्रसार कर रहे हैं। सभा शीघ्र ही वहा सुयोग्य उपदेशक को भेज कर स्थिति को सभालने और आर्यसमाज को एकशक्ति बनाने का यत्न कर रही है।

बिलोनिया (त्रिपुरा केन्द्र)

इस केन्द्र की स्थापना सन् १९४७ में साम्प्र-दायिक उपद्रवों के समय श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी जी के प्रयत्न से हुई थी और उसी समय त्रिपुरा राज्य ने यह भूमि प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम को प्रदान की थी। कुल भूमि वहा की प्रचलित माप के अनुसार १४ कानी एक गण्डा तथा दो कड़ा है जो उत्तर प्रदेश के अनुसार १२॥ बीघा

कही जा सकती है। भूमि की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल आसाम के नाम पर तत्कालीन राज नियम के अनुसार श्री रघुनन्दन लाल जी के नाम है। श्री रघुनन्दन लाल जी उस समय आर्य समाज रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता के मन्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल आसाम के उपमन्त्री थे। भूमि कर केवल १०) वार्षिक है।

इस भूमि के कुछ भाग पर एक साधारण बाग है जिसमे कुछ वृक्ष अलीचो के तथा कुछ कटहल के हैं। बाग के फलों की बिक्री से २००) वार्षिक तक की आय होती है। इतनी ही राशि मकानों की मरम्मत पर लग जाती है। यहां पाच मकान हैं जो हिन्दी विद्यालय (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की परीक्षाओं के लिए अभिप्रेत) अतिथिशाला आदि के रूप मे प्रयुक्त होते हैं।

यह केन्द्र पूर्वीय पाकिस्तान की सीमा पर स्थित है। १९४६–४७ में इस केन्द्र से पीड़ितों की सहायता एव रक्षा का बड़ा उपयोगी कार्य किया गया था। इस मुख्य केन्द्र के अतिरिक्त लखीचरा तथा बगाफा में जो जगलों और पहाड़ों के बीच स्थित है दो केन्द्र और हैं। इन केन्द्रों से आर्य समाज के प्रचार का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु इन केन्द्रों के आस पास बगाली और पर्वतीय जनता बसती है जिनमे प्रचार की सफलता बहुत दुरुह है। प्रान्तीय भावना, भाषा की विभिन्नता, खान पान में मासादि का अधिक प्रचलन, पुराने अन्ध विश्वास आदि तत्व ऐसे हैं जो प्रचार की तात्कालिक सफलता में बाधक है।

अप्रैल १९५८ की राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा की विभिन्न परीक्षाओं में ३० छात्र सम्मिलित हुए जिनमे २० लड़किया थीं। १९५६ में १२५ छात्र छात्राए बैठे। राजकीय शिक्षा विभाग ने १९५६ में पुस्तकालय को २०००) तथा फर्नीचर आदि के निमित्त ८००) अर्थात् कुल १८००) सहायता दी जो व्यय कर दी गई। आश्रम के प्रवन्ध कर्त्ता श्री पं० सदाशिव जी हैं जो पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपदेशक थे। स्थानीय महिला समिति द्वारा सचालित केन्द्र में समिति की सदस्याओं को हिंदी पढाने के लिए श्री सदाशिव जी अवैतनिक रूप से जाते हैं।

इस केन्द्र का व्यय भार मुख्यत सार्वदेशिक सभा पर रहा है। केन्द्र मे किसी त्यागी, तपस्वी और आर्य समाज के प्रचार की धुन वाले महानुभाव को बिठाने का प्रयास हो रहा है। केन्द्र को आर्यसमाज की प्रगतियों का और विदेशी ईसाई मिशन की अराष्ट्रीय प्रगतियों के निराकरण का प्रमुख स्थल बनाने का यत्न किया जा रहा है।

गत अप्रैल मास में श्रीयुत प० रघुवीर सिंह जी शास्त्री सार्वदेशिक सभा की ओर से केन्द्र का निरीक्षण करने गए थे। उन्होंने १५-२० दिन का समय लगाकर निरीक्षण किया और अपनी विस्तृत रिपोर्ट जिसमें कई मूल्यवान् सुझाव थे सभा में प्रस्तुत की। इस रिपोट पर सभा की ७-६-५८ की अन्तरग बैठक में विचार होकर निश्चय हुआ कि इस केन्द्र की भूमि सार्वदेशिक सभा के नाम मे परिवर्तित कराई जाय और केन्द्र की व्यवस्था व प्रचार पर इस सभा की ओर से ७५) मासिक तक व्यय किया जाय। आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल से यह कार्य कराने का यत्न किया जा रहा है।

श्रीयुत रघुवीर सिंह जी शास्त्री उपर्युक्त यात्रा में राज्याधिकारियों से भी मिले और केन्द्र के लिए राजकीय सहायता प्राप्ति का यत्न किया।

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी का इस केन्द्र केसाथ प्रारम्भ से ही घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। इसी केन्द्र से उन्होंने १९४६ १९४७ में प्रशसनीय सहायता कार्य कराया था। तत्कालीन महाराजा त्रिपुरा से उन्हीं की प्रेरणा पर यह भूमि प्राप्त हुई थी। वे श्री श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री के परामर्श से गत

जनवरी ५६ में राज्याधिकारियों से मिलकर शीघ्र से शीघ्र राजकीय सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करने के लिए त्रिपुरा गए। वहीं अपनी आवश्यकताओं का ब्यौरा तैयार कराया। उसके अनुसार पुनर्वास विभाग के अधिकारियों से मिलकर एक प्रार्थना पत्र दिया। इन दोनों सज्जनों के प्रयास सफल हुए और सरकार ने विद्यालय तथा औषधालय भवन के निर्माणार्थ २५१००) का अनुदान स्वीकृत किया जो आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल को प्राप्त हो गया है।

आसाम

इस प्रान्त में सभा की ओर से श्री पं० जयकान्त आर्य प्रचारक कार्य करते रहे। चेंगा, गणकपाड़ा, शान्तीपुर, गोहाटी, रावली, हाजो, हालाकुप आदि २ स्थानों पर प्रचार हुआ। कार्य का विवरण इस प्रकार है —

८० व्याख्यान, १० सत्यार्थप्रकाश कथाएं, ४ संस्कार,—१ अन्न प्राशन, २ नामकरण, १ जातकर्म

लगभग ११०० मील की यात्रा की गई और १६०० व्यक्तियों तक आर्य समाज का सन्देश पहुँचाया गया।

आसाम में प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है। आर्यसमाज के प्रचार को बढाने के लिए सभा बड़ी चिन्तित और यत्नशील है। योग्य उपदेशकों की खोज की जा रही है। आशा है आगामी वर्ष एक दो और उपदेशकों के वहां पहुंच जाने से कार्य की प्रगति बढ़ जावगी।

करनाटक प्रचार

गत मई (५८) मास में वैद्य श्रीयुत कृपाराम जी शास्त्री उत्तर भारत से प्रचारार्थ मैसूर गए। मैसूर समाज के वर्तमान अधिकारी मुख्यत श्रीरामशरणजी आहूजा बड़े उत्साही सज्जन हैं। वे उस क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचार को बढ़ाने और उसे शक्तिशाली बनाने के यत्न में हैं। श्री वैद्य कृपाराम जी के वहां पहुँच जाने से कार्य की प्रगति बहुत बढ़ी है। सभा उनको निर्वाहार्थ ५०) मासिक देती है।

कार्य का विवरण इस प्रकार है :—

व्याख्यान	२७६
शास्त्रार्थ	७८
लेख	२८
संस्कार व यज्ञ	२१०

पंच महा यज्ञविधि, आर्योद्देश्य रत्नमाला तथा वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी कन्नड में अनूदित हुई।

आर्य समाज मैसूर के मन्दिर के लिए भूमि क्रय की गई।

५ विद्यार्थियों को हिंदी की सिद्धान्त रत्न की परीक्षा की तैयारी कराके परीक्षा में बिठाया गया।

बिल्लरी आर्य समाज को सगठित किया गया।

दातव्य चिकित्सालय में १२००० रोगियों की चिकित्सा की गई।

४ ईसाई परिवारों को शुद्ध किया गया। अनेक परिवारों को ईसाई होने से रोका गया।

आर्य वीर दल द्वारा आर्य बालकों में व्यायाम और ब्रह्मचर्य का भाव भरा गया।

विदेश प्रचार (२)

लन्दन प्रचार

श्रीयुत धीरेन्द्रजी शील शास्त्री ने अपने कालेज से बचे अतिरिक्त समय में गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी आर्य समाज का प्रचार कार्य किया।

वे १० से ३० अगस्त और दो सितम्बर तक पेरिस में यूनस्को की एक विचार सभा में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रहे। सम्मेलन का विचारणीय विषय था "पूर्व और पश्चिम के बीच पारस्परिक भ्रान्तियों के कारणों की समीक्षा और एक दूसरे को ठीक ठीक समझने के उपाय।"

वह प्राध्यापकों, पत्रकारों, विशेषज्ञों व राजनीतिज्ञों का समारोह था। २७ देशों के ६० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्री धीरेन्द्र जी ने आर्य समाज के दृष्टिकोण के अनुसार उन भ्रान्तियों का कारण और उनके निवारण के उपाय सुझाये जो बहुत पसन्द किए गए। श्री शील जी ने इस यात्रा मे कई शिक्षा केन्द्रों तथा अन्य सामाजिक धार्मिक सस्थाओं में भी कुल मिलाकर ११ भाषण दिए। वे एक सप्ताह के लिए माल्टा भी गए जो कथोलिक सम्प्रदाय का गढ है। वहा भी उनके ३ भाषण हुए और भूतपूर्व प्रधान मन्त्रियों से भट की। श्री शील जी बी० बी० सी० लन्दन से हिन्दी का कार्यक्रम भी प्रसारित करते हैं।

ब्रिटिश गायना —(दक्षिण अमेरिका)

कार्य विवरणान्तगत वर्ष में श्रीयुत प० उषर्बुध जी ब्रिटिश गायना तथा डच गायना में प्रचार कार्य करते रहे।

श्री पडित जी के यत्न से ज्योर्जटाउन की एक देवी ने १० एकड भूमि ६६६ वर्ष के पट्टे पर आर्य समाज को दान में दी है, जो आर्य वीर दल के प्रयोग के लिए अभिप्रेत है। पट्टा सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के नाम मे लिखा जायगा जिससे इस भूमि पर अन्तिम स्वामित्व सभा का रहने से भूमि सुरक्षित रह सके। इस भूमि पर आर्य वीर दल ब्रिटिश गायना की ओर से पुस्तकालय, युवक शिक्षण केन्द्र, व्यायाम शाला और वानप्रस्थ आश्रम बनाने की योजना है। सभा भवन के लिए ६४५८) जमा हो चुका है जिसमें से भूमि को ठीक करने तथा टीन और फूस के घर बनाने में ५१५०) व्यय हो चुका है। ४३०८) बैंक में सार्वदेशिक सभा के नाम में जमा है। २८ दिसम्बर १९५८ से ४ जनवरी ५६ तक आश्रम में आर्य वीर दल शिविर लगा जिसमें ६० आर्य वीरों ने शिक्षण प्राप्त किया। यहा अब तक का यह सबसे बडा शिविर था। १४ दीक्षित वीरों ने अपना जीवन स्वदेश (ब्रिटिश गायना) की सेवा मे अर्पित करने का वचन दिया।

आश्रम का उद्घाटन ब्रिटिश गायना के सचार मन्त्री श्री रामकरणजी ने ४-१-५६ को किया। इस समारोह में श्री शर्फी (ससद सदस्य) श्री हैडाक एक अग्रेज, राइस डेवी लपमेंट कम्पनी के मैनेजर तथा अन्य बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। बहुत से प्रेमी जन तो २०० मील की दूरी तक से भी आकर सम्मिलित हुए थे। ८ वर्ष की बालिका इन्दिरा गोसाई के योगासनों के प्रदर्शन आश्चर्यजनक थे। जार्जटाउन के तीनों मुख्य पत्रों के रिपोर्टरों तथा गवनमेंट इनफार्मेशन के प्रतिनिधियों न भी निमन्त्रण पर भाग लिया और कायक्रम की विस्तृत रिपोर्ट तथा चित्र छापे।

श्री हैडोक, श्री रामकरण जी तथा श्री शर्फी महोदय ने अपने भाषणों में आर्य समाज और श्री प० उषर्बुध जी के कार्य की भूरि भूरि प्रशसा की। इसके अतिरिक्त ११ अगस्त तक मोटस ग्राम में शिविर लगा जिसमें ६० वीर प्रशिक्षित हुए। इस प्रकार ब्रिटिश गायना में आर्य वीर दल के ८ शिक्षण शिविर श्री उषर्बुध जी के द्वारा लगाए जा चुके हैं जिनमें लगभग १००० आर्य वीर प्रशिक्षित हो चुके हैं।

अन्य कार्य

स्केलडन में प्राइमरी स्कूल दृढ किया गया। यहा सम्पूर्ण शिक्षा ईसाई स्कूलों के हाथ में है। आर्य समाज का यह प्रथम प्राइमरी स्कूल है। नि शुल्क सस्कृत कक्षा गत अक्टूबर मास से चल रही है। यह कक्षा प्रति बुधवार और रविवार को अपराह्न में लगती है। इसमें केवल ३५ वयस्क विद्यार्थी पढते हैं जिनमें दूकानदार, किसान, तथा सरकारी कर्मचारी सम्मिलित हैं।

वेद मन्दिर में मासिक सत्संग के स्थान में साप्ताहिक सत्संग का क्रम जारी किया गया।

रेडियो पर वैदिक प्रार्थनाओं और उपदेशों का क्रम जारी हुआ। पारिवारिक सत्संगों का उपक्रम प्रारम्भ किया गया। लगभग २०० व्याख्यान दिए गए। ५० स्थानों पर कई सहस्र मील की यात्रा की गई।

ब्रिटिश गायना में हिन्दुओं के सामाजिक, धार्मिक और नैतक स्तर को ऊंचा उठाने की बड़ी भारी आवश्यकता है। मांस और मदिरा का खुला प्रचार है।

अमेरिकन आर्यन लीग को सुसंगठित करके इसे एक जीवित जाग्रत संस्था बनाये जाने का प्रयत्न जारी है।

श्री पं० उषर्बुधजी ब्रिटिश गायना और डच गायना में जो कार्य कर रहे हैं वह प्रशंसा के योग्य है।

सुरीनाम डच गायना (दक्षिण अमेरिका)

श्रीयुत पं० देवप्रकाश जी पातंजल ने आर्य प्रतिनिधि सभा सुरी नाम के उपदेशक के रूप में कार्य किया परन्तु दुर्भाग्य से आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों तथा उनमें पारस्परिक मनोमालिन्य हो जाने के कारण उन्हें वहां से भारत लौट आना पड़ा। वहां सार्वदेशिक सभा की भूमि और समाज भवन के रूप में पर्याप्त सम्पत्ति है जिसका उपयोग आर्यसमाज पारामारिबो करता है। इस सम्पत्ति के सदुपयोग और सुरक्षा के लिए कानूनी और वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। श्रीयुत पं० उषर्बुध जी से इस कार्य में पर्याप्त सहायता मिल रही है। साथ ही आर्य समाज के कार्य और प्रभाव को बढ़ाने का भी यत्न किया जा रहा है। श्री पं० जी कईबार स्थिति के निरीक्षण और उसे ठीक करने के लिए वहां गए। वहां उन्होंने पर्याप्त प्रचार किया तथा रेडियो से अनेक भाषण दिये।

मौरीशस प्रचार

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष मे मोरीशस रहे। वहां वे सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्य समाज की संपत्ति को सुरक्षित तथा शक्तियों को सुसंगठित करने के गुरुतर एवं अत्यन्त आवश्यक कार्य मे संलग्न हैं। वे वैयक्तिक मानापमान और कष्टोंकी परवाह न करते हुए भी यहां आर्य समाज को इस प्रकार संगठित करने के प्रयत्न में है कि जिससे आर्यसमाज का भविष्य बहुत उज्ज्वल बन जाय।

श्री स्वामी जी महाराज के सुपुर्द आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य सभा दोनों सभाओं को एक करने का कार्य किया हुआ है। श्री स्वामी जी महाराज आर्य सभा मौरीशस के आजीवन तथा अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए हैं।

इससे पूर्व वहां परोपकारिणी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा नाम की दो सभाएं थीं। श्री स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रयत्न से दोनों सभाएं एक हो गई थीं और उनका नाम "आर्य सभा" रखा गया। यह सभा इस समय सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध है। परन्तु श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के भारत लौटने के कुछ समय पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य सभा वालों में पुनः विघटन हो गया।

श्री स्वामी जी महाराज को अपने कार्य में सफलता मिल रही है।

वे समय समय पर यज्ञ, उपदेश, और समाजों की प्रगतियों के निरीक्षण का कार्य करते रहते हैं।

राजार्य सभा

इस वर्ष इस सभा के प्रधान श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त तथा मन्त्री श्रीयुत पं० शिवदयालु जी रहे।

७ और ८-२-५६ को दिल्ली में राजार्य सभा की एक बैठक हुई और इसी के साथ विशिष्ट आर्य

जनों का एक कन्वेंशन इस बात पर विचार के लिए हुआ कि आर्य समाज किस प्रकार देश की राज-नीति को ऐसा मोड़ दे सकता है जिससे देश में वैदिक आदर्शों पर अवलम्बित कल्याणकारी राज्य की स्थापना और देश की आत्मा सुरक्षित रह सके।

इस कन्वेंशन में निम्न लिखित प्रस्ताव पारित हुआ —

"इतिहास इस बात का साक्षी है कि परि स्थितियां ऐसी आ रही हैं जब कि विशुद्ध धार्मिक संस्थाओं को भी समय २ पर राजनैतिक प्रगतियों में भाग लेना पड़ा।

आर्य समाज के कई प्रतिष्ठित व्यक्ति इस बात का अनुभव करते हैं कि स्वराज्य प्राप्त के पश्चात् सुराज्य लाने में कई प्रकार की बाधाएं वर्तमान हैं और बढ़ती जा रही हैं अत इस सम्मे-लन की राय है कि इस बात को हर दृष्टि से देखते हुए एक योजना का प्रारूप बनाने के लिए निम्न लिखित सज्जनों की एक समिति बनाई जाती है। वह समिति अपनी योजना का प्रारूप ३ मास के भीतर २ सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को भेजे जो एक बृहत् सम्मेलन के समक्ष प्रस्तुत किया जाय।

१—श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री (प्रधान)
२—श्री महा० कृष्ण जी
३—श्री पं प्रकाशवीर जी शास्त्री (मन्त्री)
४—श्री प्रो० शेरसिंह जी
५—श्री पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री
६—श्री प्रो० रामसिंह जी
७—श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त
८—श्रीयुत ला० रामगोपाल जी
९—श्री पं० शिवदयालु जी
१०—श्रीयुत ओम्प्रकाश जी त्यागी
११—श्रीयुत चरणदास जी पुरी ऐडवोकेट

इस समिति को अपने में सदस्य बढ़ाने का भी अधिकार दिया गया।

राजार्य सभा के मन्त्री द्वारा लिखित "वैदिक राष्ट्र धर्म" नामक ट्रैक्ट छपवाया गया।

साहित्य प्रचार

आर्य समाज का इतिहास

इस वर्ष श्रीयुत प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने आर्य समाज के इतिहास का तीसरा भाग तैयार करके हस्तलेख सभा में भेजा तथा इतिहास सम्बन्धी विशिष्ट सामग्री भी कार्यालय में सुरक्षित कराई। इस भाग में कुछ विवरण अभी देने शेष हैं जो प्रदेशीय सभाओं तथा समाजों से प्राप्त न हो सके। इस प्रकार के विवरणों को प्राप्त करके तथा इतिहास में उन्हें समाविष्ट करके इतिहास की पाण्डुलिपि निरीक्षणार्थ उपसमिति के सदस्यों को भेजी जायगी।

बृहद् विमान शास्त्र

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष में सभा की ओर से जो अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित कराया गया है वह है 'बृहद् विमान शास्त्र"। इस ग्रन्थ में महर्षि भारद्वाज प्रणीत यन्त्र सर्वस्वान्तर्गत यति बोधानन्द कृत श्लोक बद्ध वृत्ति सहित वैमानिक प्रकरण का आवश्यक टिप्पणियों सहित सरल तथा स्पष्ट भाषानुवाद प्रस्तुत किया गया है। भाष्य-कार आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक हैं। उन्होंने सभा से कोई पारश्रमिक लिए बिना प्रकाशनार्थ सभा को प्रदान किया जिसके लिए सभा उनकी कृतज्ञ है।

ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का अंग्रेजी संस्करण

भारत की अंग्रेजी भाषा भाषी विशेषत विदेश की जनता की माग और देर से अनुभूत एक बहुत बड़ी कमी की पूर्त्यर्थ सभा ने इस वर्ष ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का द्वितीय अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित किया है। यह प्रकाशन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रकाशन है और

प्रथम सस्करण को प्रकाशित हुए बहुत समय व्यतीत हो चुका था। उसी की अनुमति से यह द्वितीय सस्करण छपा है। यह अनुवाद स्व० श्री प० घसीराम जी कृत है।

डेली प्रेयर आफ एन आर्य

सन्ध्या का यह अनुवाद स्व०श्री प्रो०सुधाकर जी एम० ए० कृत है जो अ ग्रेजी पढ़ी लिखी जनता में बड़ा लोकप्रिय रहा है परन्तु चिरकाल से यह पुस्तक प्राप्य न थी इसलिए जनता की बढ़ी हुई माग की पूर्त्यर्थ इस वर्ष इस पुस्तक का नया सस्करण सभा द्वारा प्रकाशित कराया गया है। सभा ने इस पुस्तक के प्रकाशन का स्वत्वाधिकार श्री स्व० प्रो० सुधाकर जी की धर्मपत्नी से प्राप्त कर के इसे धर्मार्य सभा द्वारा सशोधित सन्ध्या के अनुसार श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति से सशोधित कराया है जिसके लिए सभा श्री प० धर्मदेव जी को धन्यवाद देती है।

आर्य समाज के नियमों व उपनियमों का अंग्रेजी अनुवाद

कई वर्ष पूर्व सभा ने आर्य समाज के नियमों व उपनियमों का अ ग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कराया था। इस वर्ष इनका दूसरा सस्करण प्रकाशित कराया गया।

सभा के नियमों का अंग्रेजी अनुवाद

सभा के नियमों के अ ग्रेजी अनुवाद की कमी एक बहुत खटकने वाली कमी थी। इस वर्ष इस कमी की पूर्ति कर दी गई है। अ ग्रेजी के नियम छप चुके हैं। अनुवाद का सशोधन कार्य श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज महोदय ने किया है। सभा उनकी कृतज्ञ है।

अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश

भाषा और अनुवाद दोनों दृष्टियों से उत्कृष्ट अ ग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश की सशोधित प्रति तैयार करने का कार्य सभा की प्रार्थना पर श्रीयुत बा० रतनलाल जी (भूतपूर्व सब जज) एडवोकेट मेरठ ने अपने जिम्मे लिया था परन्तु खेद है कि स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण वे इस कार्य को सम्पन्न करने में असमर्थ रहे। अब यह कार्य अन्य किसी आर्य विद्वान् के अधीन करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

चीनी सत्यार्थप्रकाश

श्रीयुत प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय के सत्प्रयत्न से चीनी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद और प्रकाशन का कार्य सम्पन्न हो चुका है। प्रकाशित ग्रन्थ की २४ प्रतिया सभा में प्राप्त हो चुकी हैं। यह ग्रन्थ हागकाग में छपा है जहा से सम्पूर्ण स्टाक को चीन तथा कलकत्ता भेजे जाने की आवश्यक अनुमति के लिए भारत के चीनी दूतावास और केन्द्रीय भारत सरकार से आवश्यक पत्र व्यवहार हो रहा है। इस कार्य को श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० सभा उपमन्त्री ने अपने हाथ में लिया हुआ है।

बर्मी सत्यार्थप्रकाश

श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के प्रयत्न से सत्यार्थप्रकाश के बर्मी भाषा में अनुवाद का कार्य सम्पन्न हो चुका है। चीनी तथा बर्मी सत्यार्थप्रकाश के अनुवाद और प्रकाशन के व्यय की उत्तरदायिता स्व० श्री गोविन्दराम जी ने अपने जिम्मे ली थी। अपने जीवन काल में उन्होंने इस दायित्व को निभाया था परन्तु उनकी आकस्मिक मृत्यु के कारण श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय को ७६०) बर्मी सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद के व्यय की पूर्ति करनी पड़ी। अत २३।११।५८ की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार सार्वदेशिक सभा ने ७६०) की यह राशि अपने कोष से देने का निश्चय किया है।

दयानन्द और सायण

श्रीयुत पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने "दयानन्द और सायण" नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित कराया है जिसमें सायण और महर्षि दयानन्द की वेद भाष्य शैली पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करके महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण की वरिष्ठता दिखाई गई है। सभा ने प्रोत्साहन स्वरूप २००) की पुस्तकें क्रय की हैं।

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि

श्रीयुत प० भवानीलाल जी शर्मा अमरावती निवासी ने जिन्होंने 'सार्वदेशिक' पत्र से प्रभावित होकर उसकी सहायतार्थ ५०००) की राशि से एक स्थिर निधि स्थापित की थी, इस वर्ष ५०००) की दूसरी राशि से सत्यार्थप्रकाश के निरन्तर प्रकाशन के लिए एक और स्थिर निधि स्थापित की है। सभा की २४-८-५८ की अन्तरंग के निश्चयानुसार यह दान और इसकी शर्तें स्वीकृत हुई है।

पुस्तक भण्डार (बिक्री विभाग)

इस वर्ष इस विभाग में निम्नलिखित पुस्तकें छपीं —

क्रम० सं० नाम पुस्तक	संख्या	लागत
१-इन्ट्रोडक्शन टू दी वेदाज़	१०००	१५६४)१६
२-विमान शास्त्र	१०००	३७८१)
३-डेली प्रेयर आफ एन आर्य	२०००	३०७)
४-आर्य पर्व पद्धति	२०००	१५६२)२५
५-आर्यसमाजके नियमोपनियम	२०००	१२८)
६-आर्य समाज के अंग्रेजी नियमोपनियम	१०००	१११)५०
७-चमड़े के लिए गोवध	२०००	२२८)
८-वैदिक राष्ट्र धर्म	३०००	२४७)
योग		७९२८)६४

बिक्री

इस वर्ष १२५४४)४४ नये पैसे की बिक्री हुई जिसमें से निम्न प्रकार १६५८)८० का व्यय हुआ।

डाक व्यय आदि	९१५)०५
वेतन लेखक	६००)
विज्ञापन व्यय	१४३)७५
	१६५८)८०

हानि लाभ

स्टाक इस वर्ष के अन्त पर	६७८०२ ३७
बिक्री वर्ष भर की	१२५४४)४४
	८०३४६)८१
प्रारम्भिक स्टाक	६१४०४)४०
नया स्टाक	१,५०५,९८
	७६९१०,३८
मास लाभ	२४२५,४३
व्यय	१६५८)८०
नैट (विशुद्ध लाभ)	७६७)६३

पुस्तकालय (स्थिर)

इस पुस्तकालय में वर्ष के अन्त में विविध विषयों की ५२६४ पुस्तकें १००१८ ६२ मूल्य की हैं गत वर्ष ५२०३ पुस्तकें ९८१८)२७ के मूल्य की थीं। इस वर्ष ६१ पुस्तकों की वृद्धि हुई जिनमें से २८ पुस्तकें क्रय की गई। शेष ३३ पुस्तकें सार्वदेशिक में समालोचनार्थ, भेंट और दान में प्राप्त हुई।

सार्वदेशिक पत्र

इस वर्ष भी पत्र का सम्पादन सभा मन्त्री द्वारा हुआ। इस वर्ष चन्दे और विज्ञापन से कुल आय ५७०३)३८ हुई। छपाई कागज वेतन लेखक और डाक व्ययादि में ६७४८)९३ व्यय हुआ। घाटा १०४५)५५ रहा। गत वर्ष घाटा ८५६)११ था।

फरवरी के अन्त में ग्राहक संख्या ८६५ रही। गत वर्ष यह सख्या ८०१ थी।

दिल्ली में ईसाई प्रचार निरोध कार्य

२३ जून सन् ५७ को ओखला के पास मसीह-गढ़ ग्राम के सभी ईसाई लोग सभा के कार्यकर्ता श्री पं० रुचिराम जी के प्रयत्न से शुद्ध हुए थे। ये लोग ४० वर्ष तक ईसाई बने रहे उनको पादरी ने २० २० बीघे जमीन खेती करने के लिए देदी थी। इस समय ५० परिवार खेती करते हैं। शुद्धि के बाद मसीह गढ का नाम रामगढ रखा गया। ग्राम में एक चर्च बना हुआ है। यह कथोलिक मिशन कहाता है। इसका सम्बन्ध इटली के पोप से है। परन्तु अमेरिका कथालिक मिशन की ओर से एक हस्पताल रामगढ के पास बना हुआ है। रामगढ़ ग्राम के पास इस मिशन की ५०० बीघे जमीन और है जिसमें पादरी स्वय काश्त कराता है। इस ग्राम के शुद्ध होने पर इस मिशन ने मुकद्दमों का ताना बाना रखा है। सार्वदेशिक सभा की ओर से मुकद्दमो की पैरवी को जा रही है। दो अभियोगों में सफलता मिली चार अभियोग पादरी ने वापस ले लिए।

जून १९५७ से ही रामगढ में आर्यसमाज स्थापित है, साप्ताहिक सत्सग लगता है। आर्य-समाज लाजपत नगर और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की ओर से प्रचार कार्य में बड़ी सहायता मिलती है। रामगढ में एक प्राइमरी पाठशाला चल रही है। २०) मासिक अखिल भारतीय आर्य (हिंदू) धर्म सेवा सघ से पाठशाला को सहायता मिल रही है। श्री प० जी के प्रयत्न से सोशल एजुकेशन विभाग की ओर से मार्च ५८ से रामगढ़ में २ स्कूल चल रहे हैं। बयस्कों के लिए एक रात्रि पाठशाला है और दूसरा स्कूल देवियों के लिए है।

६-७-५८ को छपरौली (मेरठ) में २६६ ईसाइयों की शुद्धि श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी की अध्यक्षता में हुई। इसके पश्चात् वहां एक अछूतोद्धार पाठशाला स्थापित की गई है। इस समय ११८ लड़के पढ़ रहे हैं तथा ३ अध्यापक हैं। श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी ने सेवा सघ से १०८) सहायता दिलाई।

श्रीयुत पं० रुचिराम जी ने दिल्ली के आस-पास के ग्रामों में घूम कर लोगों को ईसाई बनने से रोकने का सफल यत्न किया।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, आर्य समाज करोलबाग दिल्ली श्री पंडित जी के कार्य में पूर्ण सहयोग देते रहे। कोटला मुबारिकपुर के श्री डा० देशराज जी रामगढ़ में नि शुल्क चिकित्सा करते दवाई बांटते हैं। सभा इन सभी को धन्यवाद देती है।

श्री मास्टर पोहकरमल जी का कार्य

सभा के कार्यकर्ता और मुख्तार आम श्रीयुत मास्टर पोहकरमल जी के कार्य का विवरण इस प्रकार है —

२३-९-५८ को ग्राम मीतली में ४११ ईसाइयों की शुद्धि हुई। उस दिन ग्राम बिनौली (मेरठ) में समसो नाम की एक २१ वर्षीया मुस्लिम युवती को शुद्ध करके उसका नाम शान्ती देवी रखा और उस का विवाह उसी समय वहीं के एक ब्राह्मण युवक ताराचन्द के साथ कर दिया गया।

श्री आचार्य भगवान देव जी के विरुद्ध दो मुकद्दमें रोहतक की पुलिस ने चलाए जिनकी पैरवी करके सफलता प्राप्त की।

इस समय निम्नलिखित अभियोग सभा की ओर से दायर हैं जिनकी श्री मास्टर जी बड़ी लग्न से पैरवी कर रहे हैं —

नाम अभियोग

१—श्री ला० श्रीराम जी दिल्ली
२—„ „ „

३—श्री ला० बाबूराम जी शाहदरा की वसीयत
४—आर्यसमाज आर्य नगर पहाड़गज
५—आर्य समाज आर्य नगर पहाड़गज दिल्ली
६—चन्दो देवो के मकान का मुकद्दमा
७—किशोरीलाल जी की वसीयत
८—फीरोजपुर लाठी चार्ज अभियोग
९—मोहरी ट्रेन दुर्घटना

कार्य जो हो रहा है

१—दो निगरानियों में हाईकोट में सफलता प्राप्त हुई।
२—फौजदारी धारा ४२० में लोअर कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध सेशन कोर्ट में अपील दायर की हुई है।
३—यह केस सेशन अदालत में चल रहा है।
४—श्री कर्मचन्द जी आदि के विरुद्ध फौजदारी केस चल रहा है।
५—दीवानी मुकद्दमा चल रहा है।
६—दीवानी में केस चल रहा है।
७—दीवानी में केस चल रहा है।
८—मुआवजे के लिए १२ दावे सीनियर सबजज फिरोजपुर की अदालत मे चल रहे हैं।
९—चार दावे मुआवजेके लिए दिल्ली की कोर्ट में चल रहें है।

इनके अतिरिक्त धारा १८८के ७ मुकद्दमे हिन्दी आंदोलन के दिनों के श्री गुमनानी मजिस्ट्रेट की अदालत में, ११ मुकद्दमे मोगल केस के श्री राजेन्द्र सिंह मजिस्ट्रेट की अदालत में दिल्ली मे विचाराधीन थे। ये केस वापिस ले लिए गए।

इनके अतिरिक्त किरायेदारों से किराए मोर्गेज होन वालों से किराए एव असल राशि मद्धे ३११२८) १६ नए पैसे की वसूली की।

ये सब मामले प्राय श्री रामचन्द्र जी खन्ना ऐडवोकेट के सुपुर्द हैं जिनकी व बड़े परिश्रम और मनोयोग से पैरवी कर रहे हैं। सभा उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती है।

सभा के कानूनी परामर्शदाता

सभा की अन्तरग सभा ने अपनी २३-११-५८ की बैठक में कानूनी परामर्श देने के लिए निम्न लिखित वकीलों का एक परामर्श दातृ मण्डल नियुक्त किया है। आवश्यकतानुसार इनमें से किसी एक वा सबका परामर्श लिया जाता है —

१—श्रीयुत ला० नवनीतलाल जी दिल्ली।
२—श्रीयुत रामचन्द्र जी खन्ना दिल्ली।
३—श्रीयुत सोमनाथ जी मरवाहा दिल्ली।

अनुसधान विभाग

अनुसधान विभाग को सुनिश्चित योजना के अनुसार व्यवस्थित करने के उद्देश्य से अन्तरग सभा ने दिनाक ७-६ ५८ की बैठक में योजना बनाने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की एक उपसमिति बनाई —

१—श्रीयुत प० बुद्धदेव जी विद्यालकार।
२—श्रीयुत स्वामी ब्रह्ममुनि जी।
३—श्रीयुत प० रघुवीरसिहजी शास्त्री (सयोजक
४—श्रीयुत प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड।

श्रीयुत रघुवीरसिह जी शास्त्री समयाभाव के कारण इस समिति का कार्य न कर सके अत उनके स्थान मे श्रीयुत प० बुद्धदेव जी विद्यालकार सयोजक नियुक्त हुए। वे योजना बना रहे हैं। इस बीच में सभा के आदेशानुसार वेद के हिन्दी अनुवाद का कार्य बन्द कर दिया गया है।

विरोधी साहित्य

निशिकान्त—

श्री विष्णु प्रभाकर कृत और आत्माराम एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित 'निशिकान्त" नामक उपन्यास पजाब विश्वविद्यालय के बी० ए० के पाठ्य क्रम में नियत है। इसमें आर्यसमाज के प्रवतक महाष

दयानन्द के सम्बन्ध में बड़ी घृणित, असत्य एवं अपमान जनक बातें लिखी गई थीं तथा आर्य समाज और उसके कार्यों तथा कार्यकर्ताओं को बदनाम करने का दुष्प्रयत्न किया गया था। अत्यन्त आक्षेप योग्य स्थल इस प्रकार थे —

१—शुद्धि का रहस्य पृष्ठ ६४-६५
२—आर्यों द्वारा शुद्ध हुए व्यक्तियों का अपमान ११६-११७
४—आर्यसमाज का विधवाओं के प्रति अन्याय, १६०, १६१, २११, २३६
५—आर्यसमाज की सत्ता की खिल्ली २०६

इस प्रकार की आपत्तिजनक पुस्तक का विरोध स्वाभाविक था आर्य समाजों ने, आर्य जनता ने और आर्य पत्रों ने इस पुस्तक का तीव्र विरोध किया। आर्य समाजों ने प्रस्ताव पारित करके अपने क्षोभ और विरोध का प्रकाश किया और इस पुस्तक को पाठ्य क्रम में से निकाल देने की माग की।

सभा की ओर से १६-१०-५८ को विश्वविद्यालय पंजाब के वाइस चांसलर महोदय को एक विशेष पत्र लिखकर पुस्तक को पाठ्य क्रम में से तत्काल हटा देने की मांग की गई। इस पत्र का उत्तर पंजाब के शिक्षा मन्त्री श्री अमरनाथ जी विद्यालंकार ने अपने ११-११-५८ के विस्तृत पत्र द्वारा सभा को दिया और लिखा "कुछ भी हो बालकों के हाथ में जो पुस्तकें जाती हों, उनमें हीन पात्रों से भी ऐसे आपत्ति जनक वाक्यों का प्रयोग करवाना अनुचित और आपत्ति जनक है। इसलिए मैं स्वयं भी पुस्तक को पाठ्य क्रम में रखने योग्य नहीं समझता। इस पत्र की कापियां मैं चांसलर तथा वाइस चांसलर महोदय को भेज रहा हूं।"

पंजाब विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री जे आर. अग्निहोत्री ने पंजाब के शिक्षा मन्त्री को पत्र सं० २३५६१। डी० एम० दिनांक २८-११-५८ के द्वारा लिखा :—

Kindly refer to your Exdt. No-6371-G M O, dated the 15-11-58 sending to this office copy of letter which you have written to Shri Ram Gopal, Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, New Delhi Regard ng the book (Nishikant) by Vishnu Prabhakar for the B A (Hindi Elective) examination of 1960

I am to inform you that the syndicate of this University at its meeting held on November 8, 1958, has alreadydecided to remove this book from this course of reading for the B.A Hindi Elective examination of 1960 The recommendations of the syndicate will be considered by the Senate at its next meeting.

I am sending a copy of this letter to the Secretary Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, New Delhi, for his information.

प्रसन्नता है कि श्री प्रिंसिपल सूर्यभानु जी के प्रस्ताव को स्वीकार कर सीनेट ने इस पुस्तक का १९६० के पश्चात पाठ्य-क्रम में से निकाल देने का निश्चय किया है। प्रकाशकों ने पुस्तक में से आपत्तिजनक स्थल निकाल कर नया संस्करण छपवा दिया है अतः अब तक यह संशोधित संस्करण प्रचलित रहेगा।

सत्यार्थप्रकाश दर्पण

सत्यार्थप्रकाश के १२ वें समुल्लास के खण्डन में एक पुस्तक जैनियों की ओरसे "सत्यार्थ दर्पण" नाम से प्रकाशित हुई थी। इसका दूसरा संस्करण १९३० में हुआ था। इस पुस्तक में आर्य समाज

और महर्षि दयानन्द पर अनेक आक्षेप किए गए हैं। सर्वसाधारण जनता में इस पुस्तक के द्वारा बहुत भ्रम फैलाया जाता रहा है। इस पुस्तक की एक प्रति प्राप्त करके श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी को निरीक्षण और उत्तर के लिए भेजी हुई है।

सम्पर्क विभाग

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने अपनी २३-११ ५८ की बैठक में सम्पर्क विभाग की योजना इस प्रकार स्वीकार की है —

उद्देश्य

१—(क) लोक सभा के जो सदस्य आर्यसमाज के सदस्य हों अथवा आर्यसमाज के हितैषी तथा प्रशंसक हों उनके साथ सम्पर्क स्थापित करना तथा बनाए रखना।

(ख) उन्हें आर्य समाज की गतिविधि से परिचित करना तथा आर्य समाज विषयक कठिनाइयों के निराकरण तथा सुविधाओं की प्राप्ति में उनका सहयोग प्राप्त करना।

२—उड़ीसा, आसाम मद्रास, बंगाल आदि २ प्रदेशों के आर्य (हिन्दू) संस्कृति प्रेमी सदस्यों से सम्पर्क स्थापित करके उन प्रदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार की प्रगति को बढ़ाने में उनका सहयोग प्राप्त करना।

३—विदेश के राजदूतों को मिलकर उन्हें आर्यसमाज का आवश्यक साहित्य भेंट करना तथा आर्यसमाज की शिक्षा एवं कार्यों से परिचित कराना।

४—समय समय पर लोक सभा के सदस्यों तथा विदेश के भारत में आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को सभा के कार्यालय में तथा आर्यसमाज के विशेष आयोजनों में आमन्त्रित करके उन्हें अपनी प्रगतियों से परिचित कराना तथा अपनी सामूहिक शक्ति का परिचय देना। इस कार्य में प्रेस सम्मेलन के आयोजनों का भी आश्रय लेना।

५—यह विभाग सभा के एक उपमन्त्री के आधीन रहेगा। इस कार्य के लिए विशेष स्टाफ आवश्यक होने पर उसकी नियुक्ति सभा मन्त्री, सभा प्रधान की सहमति से अन्तरंग सभा द्वारा कराई जा सकेगी।

६-इस कार्य के लिए प्रति वर्ष सभा के बजट में व्यय के लिये उचित राशि रखी जाया करेगी।

उपसमितियां

अन्तरंग सभा ने आगामी वर्ष के लिए कार्य विभाजन करते समय अपनी ६ ६ ५८ की बैठक में निम्नलिखित उपसमितियां नियुक्त की —

आर्य नगर गाजियाबाद

१—श्रीयुत ला० बालमुकन्द जी आहूजा
२—श्रीयुत बा० कालीचरण जी आर्य
३—श्रीयुत ला० हरशरणदास जी
४—श्रीयुत ला० बनवारीलाल जी आर्य
५—श्रीयुत प्रो० रत्नसिंह जी
६—श्रीयुत ला० रामगोपाल जी (संयोजक)

इस समिति की बैठकें २४-७-५८, १ १० ५८, तथा १३-१२ ५८ को हुई।

उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने टाउन प्लैनिंग ऐक्ट के अनुसार गाजियाबाद के लिए एक मास्टर प्लैन बनाया है जिसका सभा की भूमि पर दुष्प्रभाव पड़ने की आशंका हो गई है। यह क्षेत्र लाइट इण्डस्ट्रीज के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। सभा की भूमि निवास के लिए अभिप्रेत है। अतः इस भूमि की सुरक्षा और उसे उपर्युक्त ऐक्ट के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है। सभा ने यह कार्य श्री प्रो० रामसिंह जी के सुपुर्द किया हुआ है जो बड़े मनोयोग पूर्वक इसे करते रहे हैं। श्री ला० हरशरणदास जी तथा श्री ला० बनवारीलालजी इस कार्य में सभा तथा श्री प्रोफेसर

साहब को मूल्यवान सहयोग दे रहे हैं।

धन विनियोग समिति

१—श्रीयुत बालमुकन्द जी आहूजा (संयोजक)
२— „ डी० डी० पुरी जी
३— „ प्रो० रामसिंह जी एम० ए०
४— „ हंसराज जी गुप्त
५—सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी

इस समिति की एक बैठक २३-४-५८ को श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली में हुई। इसका निश्चय इस प्रकार है —

"सभा के लिए आसफअली रोड दिल्ली स्थित मकान क्रय करने का विषय प्रस्तुत होकर सभा कोषाध्यक्ष द्वारा मकान की स्थिति बताई गई। निश्चय हुआ कि सभा कोषाध्यक्ष को अधिकार दिया जाय कि वे प्रत्येक प्रकार का कानूनी सन्तोष करके और सभा मन्त्री से परामर्श करके ४४१०००) तक में मकान क्रय कर लेवें और रजिस्ट्री करालेवें।" मकान क्रय किया गया।

नैतिक उत्थान समिति—

१—श्रीयुत बा० पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट, (संयोजक)
२—श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा
३—श्रीयुत पं० नरेन्द्र जी
४—श्रीयुत आचार्य भगवान देव जी
५—श्रीयुत प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री
६—श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार
७—श्रीमती शकुन्तला देवी जी गोयल

इस विभाग की रिपोर्ट इस प्रकार है —

१—इस वर्ष इस विभाग की ओर से साहित्य के वितरण का कार्य विशेष रूप से हुआ—

(अ) अनुशासन का विधान गायत्री
(ब) ईश्वर उपासना व चरित्र निर्माण
(स) अपराध निरोध
(द) चरित्र निर्माण

ये चारों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पहली पुस्तक श्रीयुत धर्मपाल जी के दान से छपी है। दूसरी श्रीयुत परमेश्वर सिंह सूर के दान से छपी है और लागत मात्र मूल्य १५ नए पैसे में बिक्री की जाती है। अपराध निरोध नाम की पुस्तक आगरा जिला मद्यपान निषेध समिति की ओर से प्रकाशित हुई है। इसकी भूमिका श्रीयुत कमलापति त्रिपाठी गृहमन्त्री उत्तर प्रदेश ने लिखी है। चरित्र निर्माण नामक पुस्तक आगरा बुक स्टोर वालों के अपने व्यय से छपी है।

१—वैदिक विधान और चरित्र निर्माण
२—दौलत की मार

ये दोनों पुस्तकें प्रेस में हैं। दोनों के दानी भिन्न २ हैं।

समय समय पर उत्सवों और त्यौहारों पर नोटिस बाटे गए। ७ से १४ नवम्बर तक आगरा में अपराध निरोध सप्ताह मनाया गया। गाजियाबाद इटावा, बुलन्दशहर, सासनी, बिजनौर, हल्द्वानी, मथुरा में प्रचार हुआ। अलीगढ़ में भी प्रचार हुआ व शिकोहाबाद में भी शिक्षा संस्थाओं में अनुशासन की भावना लाने के लिए प्रयत्न किया गया।

"कल्याण" मासिक में लेख प्रकाशित हुआ

"आर्य मित्र" में व अन्य आर्य पत्रों में आठ-दस लेख प्रकाशित हुए। लगभग ५०० प्रतिज्ञा पत्र भरवाये गए। चरित्र निर्माण के कार्य में अब विशेष प्रगति आ गई है। इस कार्य को साधु सेवक समाज, भारत सेवक समाज, इत्यादि ने अपना लिया है।

आचार्य जयराम शर्मा मथुरा वाले ने अब अपनी सारी शक्ति इसके लिए लगादी है। एक नई पुस्तक निकाली गई है। राज्य का भी इस पर पूरा ध्यान है। अब यह परिस्थिति आ गई है कि यदि बलपूर्वक विधि के अनुसार सारे देश में प्रचार हो तो देश का भी भला होगा और आर्यसमाज का गौरव बढ़ेगा।

श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी इस कार्य को बड़ी लग्न से कर रहे हैं। सभा उनकी कृतज्ञ है।

आर्य वीर दल

१—सभा मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी (पदेन)
२—कोषाध्यक्ष श्री ला० बालमुकन्द जी आहूजा
३—श्री मिहिरचन्द जी धीमान रक्षा सचिव
४—श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान सचालक
५—श्रीयुत भारत भूषण जी त्यागी
६— „ बाल दिवाकर जी हस दल अधिष्ठाता

आर्य वीर दल की रिपोर्ट पृथक् दी गई है।

गोरक्षा समिति

१—श्रीयुत प० प्रकाशवीर जी शास्त्री
२— „ प० बुद्धदेव जी विद्यालकार
३— „ प्रो० रामसिंह जी
४— „ प० नरेन्द्र जी
५— , आचार्य रामानन्द जी शास्त्री
६— „ डा० महावीर सिंह जी
७— „ मिहिर चन्द्र जी धीमान्
८— „ बालमुकन्द जी आहूजा
९— , ला० रामगोपाल जी (सयोजक)

ईसाई प्रचार निरोध उपसमिति—

१—श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त
२— , प्रो० रामसिंह जी
३— „ डा० महावीर सिंह जी
४— „ कविराज हरनामदास जी
५— „ ओम्प्रकाश जी त्यागी
६— „ प० शिवदयालु जी
७— „ आचार्य रामानन्द जी शास्त्री
८— „ प० बुद्धदेव जी विद्यालकार
९— „ प० नरेन्द्र जी (सयोजक)
१०— „ ला० रामगोपाल जी

यह विभाग श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के अधीन रहा।

रेडियो प्रचार

अखिल भारतीय आकाशवाणी दिल्ली से इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर श्रीयुत प० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित का महर्षि जीवन पर वार्ता ता० ८-२-५८ को प्रसारित हुआ। आकाशवाणी से चुने हुए वेद मन्त्रों के रिकार्ड भरवाने का यत्न किया जा रहा है।

सार्वदेशिक सभा की सम्पत्ति

सार्वदेशिक भवन

यह सभा का अपना भवन है जो एस्प्लेनेड रोड पर स्थित है इस भवन को श्रीमती जानकी देवी ने अपने स्व० पति ला० ज्योतिप्रसाद जी की पुण्य स्मृति में सभा को दान दिया था। यह भवन १७०) मासिक पर किराए पर चढ़ा हुआ है।

श्रद्धानन्द बलिदान भवन

इस भवन के नीचे की दोनों दुकानें ९७)७५ मासिक पर किराए पर चढी हुई हैं।

रामलीला ग्राउड के पास अपना भवन क्रय कर लेने पर सभा का कार्यालय गत जुलाई मास से इस भवन मे आ गया है।

इस वर्ष सभा ने १९९६)९७ व्यय करके बलिदानवाले कमरे का फर्श तथा जीना ठीक कराया है। फर्श मार्बिल चिप्स का बनाया गया है तथा जीना तुड़वा कर नए सिरे से इस ढग से बनवा दिया गया है कि चढ़ने में ऊचाई के कारण जो असुविधा होती थी वह अब नहीं रही है। उपर्युक्त कमरे को एक हाल का रूप दे दिया गया है। उसे अन्य प्रकार से भी इस ढग से सुसज्जित किया जा रहा है जिससे उसे बलिदान भवन का वास्तविक रूप प्राप्त हो जाय। उसमें आर्य समाज के विविध हुतात्माओं के चित्र भी लगाने का आयोजन किया जा रहा है। कारपोरेशन टैक्स

इत्यादि में ८२३)३८ व्यय हुआ।

बलिदान भवन के उपयोग का प्रश्न उपस्थित होने पर ७६५८ की अन्तरग सभा ने योजना बनाने के लिए एक उपसमिति निम्नलिखित सदस्यों की बनाई थी —

(१) श्रीयुत बालमुकन्द जी आहूजा (सयोजक)
(२) ,, प० प्रकाश वीर जी शास्त्री
(३) ,, प० बुद्धदेव जी विद्यालकार
(४ प० नरेन्द्र जी
(५) ,, ला० रामगोपाल जी
(६ ,, प्रो रतनसिह जी
(७ ,, नरदेव जी

इस समिति की योजना थी कि बलिदान भवन का कमरा जिसमे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान हुआ था सुरक्षित रखा जाय और इसे बलिदान भवनका रूप दिया जाय। २४ ८ ५८ की अन्तरग मे उपसमिति की रिपोर्ट प्रस्तुत हुई। सभा न यह विषय पुनर्विचार के लिए उपसमिति को भेजा समिति की १३ १० ५८ की बैठक मे पुनर्विचार होकर निश्चय हुआ —

(१) जिस कमरे मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान हुआ था उस कमरे को सुरक्षित रखा जाय

(२) तीसरी मजिल के दोनों कमरे छोड कर बरामदा तथा दूसरी मजिल का कार्यालय वाला कमरा किराये पर दे दिया जाय।

(३) इस किराये की आय से आसाम, मद्रास, उडीसा, नपाल आदि २ के विद्यार्थियों को उपदेशक रूप में प्रशिक्षित किया जाय।

(४) सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्दजी आहूजा तथा सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी किराए की राशि तथा किराएदारकानिर्णयकरदेवें। किराए दारों में आर्यों को प्राथमिकता दी जाय।

(५) इस निश्चय पर तत्काल कार्यवाही करने के लिए समस्त अन्तरग सदस्यों की लिखित सम्मति मागी जाय। अधिकांश सम्मतियां पक्ष में आने पर प्रधान जी की अनुमति से निश्चय क्रिया मे लाया जाय और आगामी अन्तरग से इसकी पुष्टि करा ली जाय।

अन्तरग सदस्यो से प्राप्त अधिकाश सम्मतिया इस निश्चय के पक्ष मे थीं। तदनुसार प्रधान जी की आज्ञा से ३२५) मासिक पर कार्यालय वाला कमरा तथा बरामदा आर्यसमाज के एक हितैषी को किराए पर दे दिया गया। प्रशिक्षण केन्द्र को सम्भालने के लिए श्रीयुत प० रामचन्द्र जी देहलवी को तैयार करने के लिए यत्न किया जा रहा है।

दयानन्द भवन

यह भवन सभाने ४५१२८३)५०में क्रय किया। ४३६०००) भवन का क्रय मूल्य था और १५२८३) ५० भवन की रजिस्ट्री आदि पर व्यय हुआ। यह रामलीला मैदान के निकट आसफअली रोड पर स्थित है। यह भवन निम्न प्रकार किराये पर चढा हुआ है —

(१) बेसमेंट (तहखाना) डनलप रबर
कम्पनी ८७५) मा०

(२) आधा भाग (ग्राउन्ड फ्लोर)
अमेरिकन एम्बेसी का एक कार्यालय १५५०),,

(३) आधा भाग (ग्राउन्ड फ्लोर)
धरमसिह एण्ड को दिल्ली १४८०) ,,

(४) फर्स्ट फ्लोर (ऊपरी पहली मजिल)
लिप्टन कम्पनी १२५०) ,,

४७७५)

दूसरी मजिल मे सभा का कार्यालय स्थित है।

मकान का म्युनिसिपल नम्बर ५।३ है। इसकी रजिस्ट्री नई दिल्ली के रजिस्ट्री कार्यालय में हुई। यह भवन श्री प्रतापचन्द गुलाठी से क्रय किया गया। कार्पोरेशन के टैक्स इत्यादि में

७७३६)४९ व्यय हुआ।

इस भवन में जहां सभा के धन का बहुत अच्छा विनिमय हुआ है वहा सभा के कार्यालय को उपयुक्त स्थान पर ले जाने की चिरकाल से अनुभूत आवश्यकता की पूर्ति भी हो गई है।

इस भवन को क्रय करने कार्यालय को उत्तम ढग से इसमे व्यवस्थित करने तथा उपयुक्त किराये दारों को चुनकर किराये पर चढाने का सर्वाधिक श्रेय सभा के कोषाध्यक्ष श्रीयुत ला० बालमुकन्द जी आहूजा को प्राप्त है। २३ ११ ५८ की अन्तरग सभा ने एक प्रस्ताव पारित करके इस सेवा के लिए श्री आहूजा के प्रति आभार प्रदर्शित किया

मान्य अतिथि

इस वर्ष इस नये भवन में १२ सितम्बर को पजाब के राज्यपाल श्रीयुत नरहरि विष्णु गाडगिल महोदय का सभा की ओर से स्वागत किया गया। इस समारोह में आर्य समाज के प्रमुख २ महानुभाव तथा नगर क गण्यमान्य हिन्दू उपस्थित थे। सभा उपप्रधान श्री अलगूराय जी शास्त्री ने मान्य अतिथि का परिचय देते हुए सभा और आर्य समाज की ओर से उनका अभिनन्दन किया। सभा के कोषाध्यक्ष श्री ला० बालमुकन्द जी ने उन्हें विशिष्ट साहित्य भेंट किया। श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने उपस्थित सज्जनों का परिचय दिया। श्रीयुत गाडगिल महोदय ने आर्य समाज और उसके कार्य की प्रशसा करते हुए पजाब मे हिन्दी और प जाबी की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अपने पूर्ण सहयोग और योगदान का आश्वासन दिया।

दूसरे मान्य अतिथि जिनका इस वर्ष दयानन्द भवन मे अभिनन्दन किया गया बम्बई के सुप्रसिद्ध आर्य धर्म प्रेमी व्यवसाय विशारद श्री धरमसी खटाउ थे। उनके सम्मान में २४ ? ५९ को चाय गोष्ठी भी आयोजित हुई जिसमें दिल्ली के गण्य मान्य आर्यों ने भाग लिया। श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने उपस्थित सज्जनों का मान्य अतिथि को परिचय कराया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपालजी ने सर्वप्रथम पुष्पहार पहना कर उनका अभिनन्दन किया। श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती महामंत्री ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से अभिनन्दन किया। श्री प० अलगूराय जी शास्त्री सभा उपप्रधान ने अपने सारगर्भित भाषण में आर्य समाज और सार्वदेशिक सभा का मान्य अतिथि का परिचय कराया। श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी सचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने सभा की ओर से चुना हुआ आर्य साहित्य तथा महर्षि दयानन्द का मढा हुआ चित्र भेंट किया। यह सब आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के मन्त्री श्री वेणी भाई जी आर्य के उद्योग का फल था।

श्रद्धानन्द नगरी

श्रद्धानन्द नगरी (पहाड़गज) दिल्ली में इस सभा के अधीन श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा निर्मित दो भवन आर्यसमाज मन्दिर और पाठशाला भवन है। इन दोनों की लागत ६०९३ है।

आर्य समाज मन्दिर पर श्री कर्मचन्द आदि ने अवैध अधिकार कर रखा है। मन्दिर को इस अवैध अधिकार से मुक्त करने के लिए ९ व्यक्तियों के विरुद्ध सभा की ओर से फौजदारी केस चल रहा है।

पाठशाला भवन और उसकी सम्पत्ति पर अवैध अधिकार करने के आरोप में इन्हीं ९ व्यक्तियों पर दीवानी केस चलाया गया है।

वैदिक आश्रम ऋषिकेश

इस आश्रम की भूमि तथा उस पर बने हुए मकानों का मूल्य ९५ हजार रुपया है और यह सभा की सम्पत्ति है। यह आश्रम प्रबन्ध के लिए वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के अधीन किया हुआ है

जिसको ओर से श्री स्वामी देवानन्द संन्यासी प्रबन्ध करते हैं। इस आश्रम के मकानों में विशेष नियमों के अनुसार यात्रियों को ठहरने की सुविधा दी जाती है।

आश्रम की ओर से १ तख्त एक चारपाई, पानी की बाल्टी, भोजन बनाने के बर्तन और २-३ दिन के लिए कम्बल दे दिया जाता है।

जोधपुर की सम्पत्ति

जोधपुर मे निम्नलिखित सम्पत्ति सभा के नाम है —

(१) ५६५५ वर्ग गज भूमि सर प्रताप हाईस्कूल के सामने श्री रणछोड दास के मन्दिर के पास।

(२) आर्य श्मशान २७१२ वर्ग गज भूमि।

(३) गुरुकुल मारवाड़ मंडोर ७ मकान, कुल भूमि २५३६६ वर्ग गज।

(४) गौशाला मारवाड मंडोर—१ कोठरी (चारा डालने की) ४ अन्य कोठरिया व २ बाडे, भूमि ३० हजार वर्ग गज।

इस जायदाद के प्रबन्धादि के लिए सभा की ओर से श्री आत्माराम जी परिहार जोधपुर निवासी के नाम मुख्तार नामा दिया हुआ है। प्रबन्धार्थ इस सम्पत्ति को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सुपुर्द किये जाने का प्रस्ताव सभा के विचाराधीन हैं।

श्रीयुत ला० जगन्नाथ जी का दान

श्रीयुत ला० जगन्नाथ जी दिल्ली निवासी ने अपनी ५०००) की जीवन बीमा पालिसी इस सभा के नाम में दान दी हुई है। सभा की अन्तरंग सभा ने अपनी २४ ४ ४८ की बैठक में इस दान को स्वीकार किया था। इस राशि में से दानी की इच्छानुसार २०००) श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम (अलीगढ़) को दिये जायेंगे।

चन्द्रभानु वेदमित्र स्मारक स्थिर निधि

यह निधि श्री चन्द्रभानु जी रईस तीतरों (सहारनपुर) निवासी की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्रीयुत म० वेदमित्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदत्त ५०००) के दान से मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्थापित हुई थी। दानी की इच्छानुसार इस राशि के व्यय से आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है। अबतक इस निधिसे १६ पुस्तकें छप चुकी हैं।

दक्षिण अफ्रीका वेद प्रचार सीरीज़

२० ८ ५० की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार यह निधि श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के १३३५८) के दान से स्थापित हुई थी जिसके वर्ष के अन्त में ७६४)६४ शेष हैं। यह धन उन्हें दक्षिण अफ्रीका से वहां के आर्य भाइयों की ओर से निजी व्यय के लिए भेंट रूप मे मिला था। इस निधि के धन से अब तक सनातन धर्म और आर्य समाज लाइफ आफ्टर डैथ तथा एलीमेंटरी टीचिंग्स आव हिन्दू इज्म पुस्तकें छपी हैं।

दयानन्द आश्रम निधि

इस निधि के २२५० के ब्याज से शुद्ध हुए भाइयों को सहायता की जाती है मुख्यतया विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां दी जाती हैं। इस वर्ष भी एक लड़के और लड़की को ५) मासिक छात्रवृत्ति दी गई।

श्रीमती चन्दो देवी का दान

आर्य समाज मौठ की मस्जिद दिल्ली के उत्साही मन्त्री श्री देवदत्तसिंह के यत्न से श्रीमती चन्दो देवी ने अपना जंगपुरा नई दिल्ली स्थित मकान जिसका मूल्य लगभग ८०००) है जिसमें २६७ वर्ग गज भूमि ६० फुट लम्बी ४० फुट चौड़ी है अपने पति स्व० श्री कन्नू सैनी की स्मृति में दान किया। सभा के नाम रजिस्ट्री दि० १२-५ ५१ को हुई। पट्टा सभा के नाम में परिवर्तित हो चुका है।

इस मकान पर श्रीमती चन्द्रो देवी के रिश्तेदारो ने अनधिकृत कब्जा किया हुआ है। नियमित कब्जा प्राप्त करने के लिए कानूनी कार्यवाही की जा रही है।

नये दान

गत वर्ष ४० ०) की एक जीवन बीमा पालिसी इस सभा को दान मे मिली। इसके ब्याज से रग्गूमल आर्य गर्ल हायर सेकेण्डरी स्कूल नई दिल्ली की ६, १० और ११ श्रेणियों की उन छात्राओं को छात्रवृत्ति दी जाया करेगी जो धर्म शिक्षा आदि विषयों में सवप्रथम रहा करेंगी।

श्री ला० बाबूराम (शाहदरा निवासी) स्मारक निधि

देहली शाहदरा के प्रसिद्ध और वयोवृद्ध आर्य स्व० ला० बाबूराम जी ने जिन्होंने जीवन पर्यन्त आर्य समाज की सेवा की और जो चिरकाल पर्यन्त देहली शाहदरा की आर्य सामाजिक प्रगतियों के प्राण रहे सभा मन्त्री की विशेष प्रेरणा पर एक वसीयत के द्वारा अपनी सम्पत्ति का जो दान किया है उसमें से सभा को ४५ सहस्र नकद, १ मकान लगभग ४०००) का तथा १ प्लाट २०० गज का प्राप्त होगा। वसीयत को क्रियान्वित कराने का यत्न हो रहा है तथा इस सम्बन्ध में आवश्यक कानूनी कार्यवाही की जा रही है।

सभा के अधिकारियों का भ्रमण

सभा मन्त्री ने कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष में दिल्ली प्रदेश, पजाब, काशमीर, उत्तर प्रदेश आदि के लगभग ५०० आर्य समाजोंका भ्रमणकिया। आर्य समाजोंकी अवस्था का निरीक्षण किया। आर्यसमाज की उन्नति और प्रचार कार्य की वृद्धि के सम्बन्ध में कार्यकर्ताओं के साथ विचार विनिमय किया और सावजनिक सभाओं मे भाषण दिए। दिल्ली तथा उसके बाहर अनेक आर्यसमाजों के उत्सवों तथा सम्मेलनों मे भाग लिया। अबोहर में ७-१२-५८ को एक सार्वजनिक स्वागत मे ५०१) की थैली भेंट की गई जो उन्होंने कन्या पाठशाला अबोहर को सहायतार्थ देदी। लगभग ४० आर्य समाजों के उत्सवों मे तथा २५ सम्मेलनों मे भाग लिया। सभामत्री ने यह सब प्रचार तथा निरीक्षण अपने व्यय पर किया।

सभा उपप्रधान श्रीयुत प० अलगूराय शास्त्री

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष मे सभा उपप्रधान श्रीयुत प० अलगूराय जो शास्त्री ने टकारा की यात्रा की जहा आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के तत्वावधान मे एक आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। सम्मेलन मे श्री शास्त्री जी के कई भाषण हुए। टकारा में उपस्थित बम्बई प्रान्त के प्रमुख २ आर्य कार्यकर्ताओं की गोष्ठी मे आर्यसमाज की उन्नति के सम्बन्ध में विचार हुआ तथा आवश्यक निर्देश दिए गए। वहा से मोरवी तथा बम्बई गए। मोरवी मे कई व्याख्यान हुए। बम्बई में सार्वजनिक भाषणों के अतिरिक्त वहा आर्य समाज के सदस्यों के पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने का यत्न किया। श्री शास्त्री जी इस प्रसग मे पुन १२-१-५६ को बम्बई गए। बम्बई जाने से पूर्व मध्यप्रदेश का भ्रमण किया। नागपुर मे १०-१-५६ को प्रान्त के कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन रखा गया था। उस मे सम्मिलित होकर आर्यसमाज की उन्नति के उपायों पर विचार विमर्श हुआ और आवश्यक निर्देश दिए गए।

टकारा और नागपुर की यात्राओं में मार्गवर्ती स्थानों के आर्य भाईयों ने स्टेशनों पर पहुंचकर श्री शास्त्री जी के दर्शन किए और उनसे आवश्यक निर्देश प्राप्त किए।

श्री शास्त्री जी ने आर्यसमाज और अभी हाल में हिंदी आदोलन के प्रति जो सेवाए की हैं उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करने और उनसे निर्देश

प्राप्त करने के लिए जनता बहुत उत्सुक रही है।

दक्षिण प्रचार

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष मे दक्षिण प्रचार योजना के अन्तर्गत इस प्रकार कार्य हुआ —

२ उपदेशक तथा १ बुर्रकियादल (लोक गीत शैली पर प्रचार करना) कार्य करता रहा। १२६ स्थानों का भ्रमण किया गया जिसमें समस्त आन्ध्र प्रान्त सम्मिलित है। लगभग ४०० ईसाई परिवारों की शुद्धि हुई। २० आर्य समाजों की स्थापना की गई जिनमें २ समाए गन्टूर जिले की राजमहेन्द्री तथा विशाखापट्टम सम्मिलित है।

निम्नलिखित ट्रैक्ट तिलगु भाषा मे छपवाकर वितरित किए गए।

एवरू रक्षा कुड	३०००
मुक्तिदाता	५०००
धधकता भारत	५०००

श्री नारायण स्वामी जी महाराजकृत आर्य समाज क्या है ट्रैक्ट तिलगु में अनूदित हुआ। उसकी छपी हुई १०० प्रतिया वितरित हुई।

हिन्दी के विविध ट्रैक्ट ६००० की सख्या में बाटे गए।

विरजानन्द पाठशाला कोत्तागुडा के बालकों में सध्या हवन के साथ धर्म शिक्षा का क्रम जारी रहा। कई स्थानों पर १ १, २ २ मास जम करप्रचार कार्य किया गया। अनेक उत्सवों तथा सम्मेलनों में प्रचार का सफल आयोजन रहा।

विद्यार्य सभा

इस सभा ने इस वर्ष जो कार्य किया उसका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

आर्य सिद्धान्त परीक्षाएँ

ये परीक्षाए श्रावणी और बसन्त पचमी पर हुई विवरण इस प्रकार है —

(२) बसन्त पंचमी परीक्षा

परीक्षा	पजीकृत	सम्मिलित	उत्तीर्ण	प्रतिशत
विशारद	५६४	४६३	३५३	७६
भूषण	७३	५६	३७	६६
रत्न	२०	१६	१२	७५

(१) श्रावणी

परीक्षा	पजीकृत	सम्मिलित	उत्तीर्ण	प्रतिशत
विशारद	३०३	२६५	२०४	७७
भूषण	२१	१६	१४	८७
रत्न	१६	१५	१३	८६

भूषण परीक्षा मे गुरुकुल मोहिया का सुरेन्द्र कुमार तथा विशारद में फीरोजपुर के अमृतलाल तथा दिल्ली की कुमारी मजु सर्व प्रथम रही।

गत वर्ष परीक्षार्थी सख्या ९२६ थी इस वर्ष ६६७ रही। गत वर्ष १२ केन्द्र थे इस वर्ष ३४ केन्द्र रहे। गत वर्ष परीक्षा शुल्क २५४) था इस वर्ष ७८६) हुआ।

१—ये परीक्षाए उत्तरोत्तर लोकप्रिय हो रही हैं

२—विद्यार्य सभा के अन्तर्गत एक गुरुकुलीय शिक्षा परिषद् की स्थापना अभीष्ट है जो समस्त गुरुकुलों के लिए एक पाठ्यक्रम, एक नियमावली तथा एक सी उपाधिया निर्धारित कर सके।

३—आर्ष पाठ विधि के गुरुकुलों के लिए आर्षपाठ्य क्रम की एकता को दृष्टि में रखते हुए महर्षि दयानन्द पाठ विधि की परीक्षाओं का सचालन निश्चित किया। यह विषय सार्वदेशिक सभा के विचाराधीन है।

४- इस वर्ष विद्यार्य सभा की साधारण सभा का १ अधिवेशन तथा कार्यकारिणी के २अधिवेशन हुए। विद्यार्य सभा के प्रधान श्री स्वामी अभेदानद जी महाराज कार्यकर्ता प्रधान श्री प० भीमसेन जी विद्यालकार मत्री श्री आचार्य वीरेन्द्र जी उपमन्त्री श्री प० धर्मवीर जी वेदालकार हैं।

इस सभा के अधिकारी बडे उत्साह से कार्य कर रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल वार्षिक विवरण

मार्च ५८ से फरवरी ५९ तक

पूर्व वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष आर्य वीर दल ने सर्वत्र अच्छी प्रगति की है। इसका मूल कारण यह रहा है कि आर्य वीर दल की नियमावली मे नये सशोधनों के अनुसार दल के प्रान्तीय कार्य कर्ताओं को दल के सचालन में भाग लेने का अवसर मिला। इसके कारण स्वनिर्मित योजनाओं को क्रियात्मक रूप देने में सर्वत्र उत्साह रहा। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश, बगाल, बम्बई, पजाब, तथा मध्य भारत मे आर्य वीर दल की व्यवस्थित दैनिक, साप्ताहिक तथा साधारण शाखाये कार्य रही हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि लगभग सभी प्रांतों में आर्य वीर दल के कार्यकर्त्ता तथा प्रचारक अवैतनिक हैं। वर्तमान् समय में श्री देवीप्रसादजी आर्य, उत्तर प्रदेश श्री ब्रह्मदेवसिंह जी, बगाल, श्री गौरीशकर जी कौशल मध्य भारत श्री एम० के० अमीन, बम्बई श्री कविराज केवलराम जी हिमाचल प्रदेश, श्री मुरारीलाल जी पजाब, श्री राजेन्द्र जी बिहार, श्री सुखदेव जी आर्य राजस्थान तथा श्री चन्द्रप्रकाश जी दिल्ली मे आर्य वीर दल के सचालन का कार्य कर रहे हैं। श्री काशीनाथ जी शास्त्री, श्री रामसिंहजी आर्य तथा श्री रामगोविन्दजी सार्वदेशिक आर्यवीर दल शिक्षक और श्री सत्यपाल जी, श्री वेदव्रत जी, श्री स्वा० सर्वानन्द जी, श्री पूरनचन्द जी तथा वैंकटराव जी प्रान्तीय शिक्षकों के रूप में कार्य कर रहे है। सभा इन सभी कार्य कर्त्ताओं की सेवाओं के प्रति आभार प्रकट करती है।

प्रांतीय दलों में मध्य भारत का आर्य वीर दल प्रत्येक दृष्टि से प्रशसनीय कार्य कर रहा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लगभग सभी कार्यकर्त्ता योग्य अध्यापक हैं, और इनको सभी शाखाये ग्रामीण क्षेत्रों में है। यहा दल की ओर से सन्ध्या शाखाये विशेष रूप से लगाई जाती हैं जिनके द्वारा ग्रामीणों मे वैदिक धर्म का भी प्रचार किया जाता है। दल की ओर से सम्मेलन तथा आवश्यकता पड़ने पर शास्त्रार्थों का भी आयोजन किया जाता है।

खेद के साथ कहना पड़ता है कि प्रांतीय दलों को आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओरसे जो सहयोग मिलना चाहिए, वह नहीं मिल रहा है। यदि प्रत्येक सभा कम से कम एक प्रचारक भी इस कार्य पर लगादे तो हजारों नवयुवक नवयुवतियां आर्य वीर दल और आर्य वीराङ्गना दल के द्वारा आर्यसमाज में प्रविष्ट हो जांय। सौभाग्य से बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस दिशा मे पहिल कर दी है और उसने २०००) दल कार्यके लिए देना निश्चित किया है। वर्तमान समय में श्री रामसिंह जी सभा की ओर से वहा कार्यकर रहे हैं।

वर्तमान समय में समस्त प्रांतों में दल की दैनिक, साप्ताहिक तथा साधारण शाखाओ की कुल सख्या ४१२ है और साधारण, व्रति, तथा दीक्षित आर्य वीरों की सख्या १३४२८ है।

शिविर—

इस वर्ष वाराणसी, लखनऊ, कलकत्ता, हावड़ा, कानपुर, विदिसा, हुसगाबाद, सल्याणा (हि०प्र०), चण्डीगढ़, पठानकोट तथा बम्बई में कुल मिलाकर १५ सप्त दिवसीय शिक्षण शिविर लगाये गये। कानपुर जिले में ५ शिविर ग्रामीण क्षेत्रों मे लगाये जिनका आयोजन श्री मास्टर नवलकिशोर जी ने किया। लगभग सभी शिविर प्रधान सचालक श्री ओम्प्रकाश त्यागी की अध्यक्षता में लगे। श्री बाल दिवाकर जी हस उ०प्र० सचालक ने होशगाबाद के शिविर का सफल सचालन किया, और बम्बई शिविर में दल के प्र०मन्त्री श्री जगदेव जी ने

सहयोग दिया। इन शिविरों में ८४५ आर्य वीरों ने शारीरिक, मानसिक एव चारित्रिक शिक्षण प्राप्त किया। इन शिविरों पर लगभग १८०००) रु० व्यय हुआ जिसे प्रांतीय आर्य वीर दल समितियो ने शुल्क व दान मे जमा किया। श्री काशीनाथ जी शास्त्री तथा श्री रामसिंह जी ने इन शिविरों के शिक्षण का कार्य किया। अत धन्यवाद के पात्र है,

सम्मेलन—

वाराणसी, कलकत्ता, दारानगर, कानपुर, पठानकोट दिल्ली, दानापुर (बिहार), रक्सौल, आदि स्थानों पर दल की ओर से आर्य वीर दल सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

निरीक्षण—

प्रधान सचालक श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने बंगाल, उत्तर प्रदेश, पजाब, बम्बई तथा मध्यभारत के आर्य वीर दलों का निरीक्षण किया। प्रधान मन्त्री श्री जगदेव जी ने मध्य भारत तथा पजाब के दलों और श्री बालदिवाकर जी हस उपप्रधान सचालक ने उत्तर प्रदेश के आर्य वीर दलों का निरीक्षण किया।

परीक्षा—

देश के नवयुवक नवयुवतियों में आर्य सिद्धान्तों का प्रचार कर उन्हें आर्य समाज की ओर आकर्षित करने के लिये सार्वदेशिक आर्य वीरदल ने डाक द्वारा 'सत्यार्थप्रकाश' की परीक्षायें चालू की हैं। इन परीक्षाओं का सर्वत्र बड़ा स्वागत हुआ है। अब तक इनमें १७६ परीक्षार्थी बैठ चुके हैं। इन परीक्षाओं मे ऐसे विद्यार्थियों ने भी भाग लिया है जो सत्यार्थप्रकाश से सर्वथा अपरिचित थे। इस परीक्षा के द्वारा आसाम, मद्रास, उड़ीसा आदि प्रांतों में भी आर्य समाज का प्रचार करने की आर्य वीर दल योजना बना रहा है।

ईसाई प्रचार निरोध—

देश में विदेशी पादरियों के अराष्ट्रीय प्रचार को अनुभव करते हुये दल ने इसका सक्रिय विरोध करने का निश्चय किया। इसने इस कार्यमें सार्व० सभा को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया है। जून मास में छोटा नागपुर के हजारीबाग जिले में एक शिक्षण शिविर सार्वदेशिक सभाके अन्तर्गत दल लगा रहा है।

विदेशों में आर्य वीर दल—

वर्तमान में नैरोबी, ब्रिटिश गायना, मारीशस, जजीबार तथा नेटाल में आर्य वीर दल तथा आर्य वीराङ्गना दल की शाखाये लग रही है। ब्रिटिश गायना में दल उपप्रधान सचालक श्री उषर्बुध जी के नेतृत्व मे बहुत ही प्रशसनीय प्रगतिकर रहा है। वहा के दल ने जहा आर्यसमाज की कायापलट कर उसे प्रगति प्रदान की है वहा सरकार की प्रशंसा का भी वह पात्र बना है। इस समय दल वहा शक्ति रूप में है और सभी सस्थायें इसकी शक्ति का लोहा मानती है।

दल—कार्य के साथ साथ श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान सचालकने सार्वदेशिक सभाके लगभग सभी रचनात्मक कार्यों में सक्रिय सहयोग दिया है।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन

हिंदी सत्याग्रह के स्थगन की तिथि २७ दिसबर १९५७ से ही सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य स मति पजाब में सद्भावना एव शांति का वातावरण बनाने में यत्नशील रही, जिससे सरकार द्वारा भाषा समस्या का उपयुक्त एवं स्थायी समाधान प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो। यद्यपि सरकारकी ढील और उपेक्षा के कारण जनता में तीव्र असन्तोष तथा क्षोभ बढ़ता रहा और उनकी आशा निराशा में बदलती गयी, तथापि समिति ने जनता का रोष सह कर भी सरकार को कठिनाईयों में पड़ने से बचाकर शांतिपूर्ण

वातावरण में ही इस समस्या के समाधान के लिए यथेष्ट तत्परता दिखायी। आर्यसमाज क्योंकि एक सांस्कृतिक धार्मिक तथा राष्ट्रसेवी संस्था है इस कारण वह सर्वदा राष्ट्र के निष्पक्ष एवं विवेकशील लोगों की दृष्टि में अपनी परम्पराओं के अनुरूप ही युक्तिवादी बना रहना चाहता है। इस आलोच्य वर्ष की समिति की सारी गतिविधि हमारी इस स्थापना की पुष्टि ही करती है --

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की एक आवश्यक बैठक २७-४-५८ को श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त की अध्यक्षता में दिल्ली में हुई जिसमें सरकार से अनुरोध किया गया कि वह भाषा समस्या का हल करने के लिए शीघ्र ही सक्रिय पग उठाए। साथ ही निश्चय किया गया कि हिंदी रक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में भावी कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए ६ जून को भाषा स्वातन्त्र्य समिति और सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा की संयुक्त बैठक बुलाई जाय।

६ जून को एक बैठक हुई जिसमें हिंदी रक्षा समिति पंजाब,सार्वदेशिकसभा की साधारणसभा के सदस्यों तथा आमन्त्रित अनेक आर्य नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। यह सभा लगभग ६ घंटे तक होती रही। अनेक सदस्यों ने अपनेविचार रखे। उन विचारों का सार यह था कि अपनी मांगों की स्वीकृति के लिए शीघ्र ही ठोस पग उठाया जाय। अन्त में इस कार्य के लिए एक संघर्ष समिति का बनाया जाना निश्चित हुआ और समिति के सदस्यों की नियुक्ति का अधिकार भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त को दिया गया।

श्रीयुत घनश्यामसिंह जी ने समिति के निम्न लिखित सदस्य मनोनीत किए —

१—श्री प्रो० शेरसिंह जी (अध्यक्ष)
२—श्रीयुत रघुवीरसिंह जी शास्त्री (संयोजक)
३—श्री वीरेन्द्र जी एम० ए०
४—श्रीयुत ला० रामगोपाल जी
५—श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती
६—श्रीयुत प्रिंसिपल भगवान दास जी
७— ,, वीर यज्ञदत्त जी
८— कैप्टन केशवचन्द्र जी
९— पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
१०— ,, पं० नरेन्द्र जी
११— ,, स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज

आन्दोलन का किस समय क्या रूप हो इसका उत्तरदायित्व निर्धारण इस समिति पर ही छोड़ा गया।

देश के प्रायः सभी उत्तरदायित्वपूर्ण पत्रों ने इस निश्चय का स्वागत किया और सरकार को शीघ्र से शीघ्र समस्या का समाधान करने की बल पूर्वक प्रेरणा की। उन्होंने सरकारको यह भी चेतावनी दी कि हिंदी सत्याग्रह को तत्काल प्रारम्भ न करने को आर्य समाज की दुर्बलता न समझे अपितु उसकी सद्भावना समझे जिससे प्रेरित होकर उसने सत्याग्रह स्थगित किया और अब भी स्थगित रखा हुआ है।

संघर्ष समिति की नियुक्ति पर कुछ स्वार्थी तत्वों ने यह भ्रम फैलाने का दुष्प्रयत्न किया कि आर्य जनता का श्री घनश्यामसिंह जी के नेतृत्व में विश्वास नहीं रहा है। बात सर्वथा इसके विपरीत थी। समिति के मन्त्री ने एक प्रेस वक्तव्य के द्वारा इस भ्रम का निवारण कर दिया और स्पष्ट किया कि श्री गुप्त जी सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के यथापूर्व प्रधान हैं और आन्दोलन का नेतृत्व उन्हीं के हाथ में है। संघर्ष समिति के प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी ने प्रधानमन्त्री श्री पं० जवाहर लाल जी की सेवा में २४-८-५८ को एक स्मृति पत्र भेजा जिसमें कि प्रधानमन्त्री के अतिरिक्त गृह मन्त्री श्री पं० गोविन्द वल्लभ पंत, पंजाब के मुख्य

मन्त्री श्री प्रतापसिंह कैरों तथा कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री ढेबर भाई आदि नेताओं के वक्तव्यों एवं पत्रों को उद्धृत करते हुए अनुरोध किया गया कि सरकार इस विषय मे दिए गए आश्वासनों एव वचनों की पूर्ति करने की उदारता दिखाए। परन्तु इस स्मृति पत्र का जो उत्तर प्रधानमंत्री महोदय ने दिया वह सर्वथा निराशाजनक था। स्मृति पत्र में तथ्यो और युक्तियों से यह स्पष्ट कर दिया गया था कि उन्हें आर्यसमाज के विचारों की पवित्रता और सद्भावना पर विश्वास करना चाहिए और उसे पुन अग्नि परीक्षा में न डालना चाहिए। शासकों ने आर्यसमाज की सद्भावना का उत्तर आश्वासन देने पर भी सद्भावना से नहीं दिया है।

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की १५-८-५८ की बैठक में यह विषय पुन विचारार्थ उपस्थित हुआ। इस बीच में भाषा समस्या के समाधान के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जो यत्न हुए वे भी बताए गए। अन्त में समिति ने निम्नलिखित निश्चय किया।

"इस समिति की राय है कि शासन की ओर से अभी तक जो उदासीनता पजाब की भाषा समस्या को हल करने के बारे में रही है वह निराशा जनक है अत यह समिति सार्वदेशिक सभा से सिफारिश करती है कि आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकृत व्यक्तियों एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक बैठक इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए बुलाई जाय।"

इसी बीच २ नवम्बर ५८ को पजाब हिंदी रक्षा समिति का एक सम्मेलन अम्बाला में हुआ जिसमें यह प्रस्ताव पारित हुआ।

प्रस्ताव

पजाब हिंदी रक्षा समिति के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ हिंदी प्रेमियों का यह सम्मेलन हार्दिक क्लेश से यह अनुभव करता है कि सरकार की ओर से पजाब की भाषा समस्या के सन्तोषजनक समाधान सबंधी अनेक आश्वासन दिये जाने पर जो गतवर्ष हिंदी सत्याग्रह स्थगित किया गया था, उस पर सरकार ने सर्वथा निश्चेष्ट और अकमर्ण्य रह कर आज दस मास बीतने पर भी कोई पग न उठा कर दु खजनक विश्वासघात किया है और निकट भविष्य मे उसके कुछ क्रियाशील होने की सभावना तो एक तरफ रही पजाब सरकार हिंदी पर आघात पहुँचाने के लिए और हिंदी प्रेमियों पर अत्याचार करने के विरुद्ध उल्टी प्रतिशोधात्मक कार्यवाहियां कर रही है।

ऐसी अवस्था में यह सम्मेलन बडे अनुरोध से सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति तथा सार्वदेशिक आर्य नेताओं से प्रार्थना करता है कि शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक आज से दो मास के भीतर स्थगित सत्याग्रह को पुन सचालन करने की योजना घोषित कीजावे। यह सम्मेलन यह भी स्पष्ट रूप से प्रकट कर देना चाहता है कि पजाब की हिंदी प्रेमी जनता इस सत्याग्रह में अधिक विलम्ब सहन नहीं करेगी और अपने भाग्य का स्वय निश्चित निर्णय करने पर विवश हो जायगी।

२२-११-५८ को दयानन्द भवन दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज के प्रधानत्व में एक सम्मेलन हुआ। इस में सार्वदेशिक सभा, भाषा स्वातन्त्र्य समिति, हिंदी रक्षा समिति पजाब, प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों तथा विशिष्ट आर्य जनों ने बहु सख्या में भाग लिया। इस सम्मेलन में हिंदी रक्षा समिति पजाब के २ नवम्बर ५८ वाले प्रस्ताव के साथ ही सारी परिस्थितिपर पर्याप्त विचार विनिमय हुआऔर निश्चय किया गया कि आगामीदिन होने वाली सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा की बैठक

इस सम्बन्ध में जो निर्णय करे, वही स्वीकार किया जाय। जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा दि० २३-११-५८ की बैठक में पारित प्रस्ताव

जिन परिस्थितियों में आर्य समाज का सत्याग्रह स्थगित किया गया था वह साधारण जनता और विशेषत सुविज्ञ आर्य जगत् को ज्ञात ही है। हमारे सत्याग्रहियों की बिना शर्त रिहाई की गई तब इस सम्बन्ध मे यह स्पष्टी करण मांगा गयाकि क्या यह शासन की ओर से सद्भावना का द्योतक है इस पर स्पष्ट रूप से उत्तर मिला कि यह सद्भावना का ही द्योतक है और सब समस्याओं के समाधान के लिए प्रारम्भिक पग है। साथ ही शासन के उत्तरदायी नेताओं ने सार्वजनिक एव व्यक्तिगत रूप से पजाब की भाषा समस्या के समाधान के लिए आश्वासन देते हुए कहा कि सद्भावना के परिणाम स्वरूप सारी बातें अनुगत होंगी। आर्य समाज की परम्परा को देखते हुए इसमें सभी सहमत थे कि सद्भावना का उत्तर हमारी ओर से सद्भावना ही होना चाहिए और परिणाम स्वरूप सत्याग्रह स्थगित किया जाय।

परन्तु इसका अत्यन्त खेद है कि सत्याग्रह स्थगन के अनन्तर सद्भ वना के परिणाम स्वरूप शासन के उत्तरदायी महानुभावों द्वारा घोषित जो अनुवर्ती पग उठाये जाने चाहिये थे वे नहीं उठाए गए। अत इसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया यह हुई कि जनता में निराशा एव अविश्वास की भावना दिनों दिन बढती गई और अपनी मांगों की पूर्ति के लिए पुन आदोलन करने की मांग तीव्र होगई। इसी के फलस्वरूप पजाब हिन्दी रक्षा समिति के २ नवम्बर वाले अम्बाला अधिवेशन का प्रस्ताव समक्ष आया। यह सभा इस प्रस्ताव की भावना का पूर्ण आदर करती है और यह भी अनुभव करती है कि उसमें पजाब की जनता के विचारों का वास्तविक चित्रण है।

यह सभा सब बातों पर विचार करके इस परिणाम पर पहुची है कि यदि आर्य समाज को सत्याग्रह करना पड़े तो सत्यता और सद्भावना के नाते उसका सिर राष्ट्र के सभी विचारशील तत्त्वों एव परम्परा के समक्ष ऊंचा रहेगा और उसके कटु परिणामों का उत्तरदायित्व केवल शासन पर होगा। परन्तु आर्यसमाज एक धार्मिक तथा सांस्कृतिक संस्था है जो सदा शांति का उपासक रहा है और राष्ट्र की सुरक्षा, अभिवृद्धि तथा उन्नति का पोषक रहा है। अत समय की परिस्थितियों और विशेषत पजाब के राज्यपाल श्री एन० वी० गाडगिल के यत्नों एव वक्तव्यों को दृष्टि में रखते हुए इस सभा की राय है कि आगामी पग उठाने से पूर्व उनके प्रयत्नों के परिणाम की प्रतीक्षा की जाय और यदि तीन मास के पश्चात भी कोई सन्तोषजनक बात न हुई तो अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन बुला कर सत्याग्रह का अन्तिम निर्णय किया जाय।"

इस बीच में पजाब सरकार द्वारा भाषा समस्या के समाधान के लिए नियुक्त सद्भावना समिति ने जिसके सदस्य भाई जोधसिंह और श्री प० जयचन्द्र जी विद्यालंकार हैं सक्रियता दिखानी आरम्भ की। पजाब के राज्यपाल श्री गाडगिल महोदय भी इस दिशा मे प्रयत्नशील रहे। उन्होंने अपने प्रेस वक्तव्यों तथा निजी वार्तालाप में प्रगट किया और आश्वासन दिया कि वे शीघ्र ही भाषा समस्या का सन्तोषजनक समाधान करने में समर्थ होंगे। यह भी प्रगट किया कि उक्त सद्भावना समिति १५ अप्रैल तक अपनी रिपोट उन्हें प्रस्तुत कर देगी। पजाब राज्य के शिक्षा मन्त्री श्री प० अमरनाथजी विद्यालंकार ने २१ फरवरी ५६ को एक विशेष प्रेस वक्तव्य देकर सरकारी नीति की घोषणा स्पष्ट शब्दों में की। यह वक्तव्य निम्नलिखित हैं। इसकी विशेषता यहहै कि पहली

बार सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समितिको मान्यता प्रदान की गई और आय समाज की सद्भावना की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए सद्भावना समिति की रिपोट आने तक प्रतीक्षा करने की आर्य समाज को सीधी अपील की गई। भाषा स्वातन्त्र्य समिति अभी भी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रही है।

आर्य जनता ने जिसकी भावना इस विषय में बड़ी उग्र है, सयम और अनुशासन का वही उदात्त परिचय दिया है जिसकी उससे आशा की जाती है। सार्वदेशिक सभा और भाषा स्वातन्त्र्य समिति उनकी भावनाओं से अनभिज्ञ नहीं है और उनका पूर्णतया आदर करती है परन्तु समिति का यत्न यही है कि भावी सघर्ष टालने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया जाए जिससे देश का विचारशील वर्ग आर्य समाज पर उतावलेपन के कारण अवाछनीय स्थिति की उत्पत्ति का दोषारोपण न कर सके और यदि आर्य समाज को कदाचित पुन सघर्ष के लिए विवश होना पडे तो अन्तिम सफलता तक उसका पग पीछे न हटे। आर्य समाज जब चाहे सघर्ष प्रारम्भ कर सकता है परन्तु उसे समस्त परिस्थितियों और उनकी जटिलताओं को सामने रख कर ही कोई निर्णय करना है

भाषा समस्या के विषय मे पजाब सरकार की चिन्ता

शिक्षा मन्त्री का वक्तव्य

३ मास की अवधि की समाप्ति पर जो सत्याग्रह आन्दोलन को पुनर्जीवित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने नियत की थी पजाब राज्य के शिक्षा मन्त्री श्रीयुत अमरनाथ जी विद्यालकार ने प्रेस को निम्नलिखित वक्तव्य दिया जो सरकारी नीति का द्योतक समझा जाता है। यह अवधि सभा की २३ ११ ५८ की अन्तरग के निश्चयानुसार २२ फरवरी को समाप्त हो रही थी —

वक्तव्य

अभी हाल मे पजाब की विधान सभा में तथा उससे बाहर पजाब के भाषा विवाद तथा दो सुप्रसिद्ध एव अनुभवी विद्वानों (भाई जोधसिह और प० जयचन्द्र विद्यालकार) से निर्मित सद्भावना समिति के कार्य की चर्चा हुई थी।

मेरा यह दृढ मत है कि सद्भावना समिति की नियुक्ति के द्वारा पजाब सरकार ने पारस्परिक सद्भाव और परामर्श के वातावरण मे समस्या के सर्व सम्मत समाधान की दिशा मे क्रियात्मक पग उठाया था। सरकार की यह कार्यवाही ठीक ही थी। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ है कि अब भी सरकार के विरुद्ध यह आरोप लगाया जा रहा है कि वह आवश्यक रूप से समाधान मे विलम्ब कर रही है।

मैं समस्त सम्बद्ध जनों को यह विश्वास दिला देना चाहता हू जैसा कि मैंने कल पजाब की विधान सभा में विश्वास दिलाया था कि सरकार इस बात के लिए बडी चिन्तित और उत्सुक है कि इन सब प्रश्नो का सर्वसम्मत स्थिर समाधान ज्ञात हो जाय। इसी उद्देश्य को लक्ष्य मे रख कर सद्भावना समिति की नियुक्ति की गई थी। यह सन्तोष की बात है कि प्राय सभी ने इन दो विद्वानों के चुनाव का स्वागत किया था जो इस अत्यन्त जटिल कठिन और परिश्रम साध्य कार्य के सर्वथा उपयुक्त है।

भावात्मक पहलू

यह समिति समय २ पर अपनी रिपोर्ट सरकार को देती रही है। उसकी यह उत्कट इच्छा है कि उसका कार्य शीघ्र से शीघ्र पूरा हो जाय और कोई उपयुक्त मार्ग ढू ढ निकाला जाय। इस समिति के

सुझाव वस्तुत मूल्यवान् और समस्या के समाधान में सहायक सिद्ध होंगे। सरकार की प्रबल इच्छा है कि यह समिति अपने कार्य में सफल हो।

मैं यह भी स्पष्ट किये देता हू कि इस समिति का स्वरूप जाच कमीशन जसा नहीं है जिससे भिन्न २ दृष्टिकोणों को एकत्र करके फैसला देने की आशा की जा सके। उन बातों का जो विशुद्ध तर्क सगत न होकर भावात्मक और मनोवैज्ञानिक हों न्यायिक निर्णयों की सहायता से स्थिर समाधान प्राप्त नहीं किया जा सकता। विविध वर्गों को दृष्टिकोणों की जटिलताए समझाने और अधिक से अधिक सहमति प्राप्त करने के लिए विनम्र मिशनरी भाव मे सत्प्रयत्न किये जाने की परमा वश्यकता है। अत इस समिति के जिम्मे सद्भाव उत्पन्न करने का कार्य है और अभिलषित परि णामों की प्राप्ति के लिए समिति के काय मे विलम्ब का हो जाना अनिवार्य सा ही है।

सहयोग के लिये धन्यवाद

सरकार समस्त सम्बद्ध वर्गों की भावनाओं का आदर करती है। वस्तुत मुझे हर्ष है कि जिम्मेवार क्षेत्रों की अपील के उत्तर स्वरूप आर्य समाज की सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने जल्दबाजी में कोई कार्यवाही न करने का बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय किया है। सरकार उन सबकी कृतज्ञ है जिन्होंने सद्भावना समिति को उसके कठिन कार्य मे अपना सहयोग और साहाय्य प्रदान किया है। हमारी यह आशा और प्रबल इच्छा है कि पजाब की जनता के समस्त वर्गों के सहयोग से पारस्परिक सहमति पर आधारित भाषा समस्या का न्यायपूर्ण और स्थिर समाधान हो जायगा।

इस बात को लक्ष्य मे रख कर मैं पजाबियों के समस्त वर्गों विशेषत उन सस्थाओं से जो इन प्रश्नों पर सीधे रूप में अपने विचारों का प्रचार कर रही हैं अपील करता हू कि वे पूर्ण सयम और धैर्य से काम लें और इस प्रकार शान्त विचार और विवाद के लिए पजाब में सद्भावना और मित्रता का वातावरण उत्पन्न करने और बनाये रखने में अपना सक्रिय योग देवें।

हमारे जनतन्त्रात्मक ढाचे मे जहा जनता के समस्त वर्ग अपने २ दृष्टिकोणों को व्यक्त करने, उन पर बल देने, उनका प्रचार करने और उनके लिए आन्दोलन तक करने में स्वतन्त्र हैं, एक मात्र उचित मार्ग यही है कि पूर्ण शान्त और सौहार्द-पूर्ण वातावरण में पारस्परिक विचार और विवाद का आश्रय लिया जाय।

हमारे देश के इतिहास के इस सकटपूर्ण काल में सच्चे नागरिकों के रूप में एक दूसरे के प्रति अधीर बनने से काम न चल सकेगा भले ही एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने और मानने में कुछ समय और लग जाय।

(ट्रिब्यून २२ २ ५६)

आर्थिक विवरण

कार्यविवरणान्तर्गत वर्ष में हिंदी निधि में ५३४५)१५ की आय हुई जिसमे फीरोजपुर काड की जाच के सिलसिले में वकील की फीस के रूप में सार्वदेशिक सभा द्वारा खर्च की गई राशि में से १०००) पजाब सरकार से प्राप्त राशि भी सम्मिलित है। गत वर्ष का २४८२२८)६२ शेष था। इस प्रकार हिंदी निधि की राशि २५३५७३)७७ हो गई थी जिसमें से इस वर्ष २८६८३)२७ व्यय हुआ। २२४८६०)५० सभा के खाते मे जमा है और शेष पत्र में अंकित है।

फीरोजपुर काड और मौहरी ट्रेन दुर्घटना के पीडितों और हुतात्माओं के उत्तराधिकारियों के लिए क्षतिपूर्ति के लिए क्रमश ६ तथा ४ दावे २६०००) तथा ६००००) के किए गए हैं जिन पर वकीलों की फीस के अतिरिक्त ३६६०)तथा ४६००)

स्टाम्प मे ८२९०) व्यय हुआ। ये केस फीरोज़पुर और दिल्ली में चल रहे हैं ये राशिया अभी खर्च में नहीं दिखाई गई है अभियोगों के निर्णयों के बाद दी जायगी।

जलन्धर काड सम्बन्धी अभियोगों में सभा ने २२५०) व्यय किया। हुतात्मा सोमनाथ की पत्नी को एक साथ २००) सहायतार्थ दिये गये और क्रमश ५०) मासिक की सहायता देना आरम्भ किया। यह सहायता दी जा रही है। हुतात्मा गिरधारीलाल जी की पत्नी को १०) मासिक की सहायता दी जा रही है।

मौहरी ट्रेन दुर्घटना के हुतात्मा श्री नेतराम जी की पत्नी तथा पीड़ित श्री जगमोहनसिंह को सरकार की ओर से क्रमश ५२००) तथा २३८०) क्षतिपूर्ति की राशिया प्राप्त हो गई है। हुतात्मा सुमेरसिंह जी के परिवार को ३००) की राशि पजाब सरकार ने दी जो उनके उत्तराधिकारियों ने सुमेरसिह स्मारक निधि में दान कर दी है। सभा की ओर से नेतराम जी की पत्नी तथा जगमोहनसिंह जी को क्रमश २५) व २०) मासिक की सहायता दी जा रही है। इसके अतिरिक्त २००) व १५०) की एक साथ सहायता दी गई। ५०) श्री रामस्वरूप जी पीड़ित को दिये गये।

सरकारी कर्मचारियों की सहायतार्थ जो आदोलन में सर्विस से पृथक हुए हैं १०००)की सहायता दी गई।

इनके अतिरिक्त श्री रामनाथ जी कालिया के केस में अब तक ४००) सहायता दी गई। श्री आचार्य भगवान देव जी के केस मे ३००) इस वर्ष वकील की फीस इत्यादि में व्यय हुआ। फीरोज़पुर काड के पीड़ितों को इस वर्ष निम्न प्रकार ४००) की सहायता दी गई —

२००) श्री सीताराम जी भाटिया सनावर (पटियाला)
१००) श्री हरबशलाल जी | आर्य प्रतिनिधि
१००) सत्यपाल जी महाजन | सभा पजाब द्वारा।

इस वर्ष फीरोज़पुर काड विषयक वकील की फीस पर ७३१) व्यय किया गया।

सत्याग्रहियों वा उनके परिवारों को १२८१) की सहायता दी गई।

सरकारी आज्ञाओं की अनभिज्ञतावश जिन सत्याग्रहियों से सत्याग्रह के समय के जुर्माने वसूल करने का सरकारी यत्न हुआ उनकी सहायता की गई और जुर्माने की वसूली रुकवाई गई।

इस समय तक सरकारी कर्मचारियों की पुन नियुक्ति की समस्या बनी हुई है जिसके समाधान के लिए भाषा स्वातन्त्र्य समिति प्रयत्नशील है। इस दिशा मे प्रगति हुई परन्तु अभी उल्लेखनीय परिणाम सामने नहीं आया।

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त तथा मन्त्री श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री हैं।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

वर्ष के अन्तर्गत सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के दो अधिवेशन हुए जिनमे विशेष रूप से निम्नलिखित बातो पर विचार हुआ।

१—ऋग्वेद की ऋक्सख्या १०५२२ है। यही ऋषि का मत है।

२—विवाह सस्कार मे आसन परिवर्तन की विधि अनावश्यक है। ऋषिने कही इसका विधान नही लिखा।

३—विवाह सस्कार मे वर या वधू को आगे या पीछे चलाने की विधि अनावश्यक है यह भी ऋषि समत नही है ।

४—कई वर्ष से यज्ञ की पद्धति के स्वरूप पर विचार चल रहा था इस वर्ष यज्ञ की सब पद्धतियो का प्रामाणिक स्वरूप अन्तिम रूप से निश्चित कर दिया गया जो प्रेस मे है

५—ऋषि जन्मतिथि तथा आर्यसमाज स्थापना तिथि पर वर्षान्तिर्गत विचार चलता रहा पर अन्तिम निर्णय नही हो सका है ।

६—धर्मार्य सभा के किसी भी निर्णय को कोई भी विद्वान् आह्वान कर सकता है । धर्मार्य सभा के विद्वान् उसके साथ विचार करने को सदा प्रस्तुत है । ओम्प्रकाश शास्त्री महोपदेशक आ० प्र० नि० सभा यू०पी० के आह्वान पर उनको निमन्त्रित करके वृक्ष जीव विषय पर विचार हुआ ।

७—गुरु विरजानन्द जी का श्लोकबद्ध जीवन चरित्र तथा गुरु विरजानन्द जी के लिखे ग्रन्थ वाक्य मीमासा आदि का पता धमार्य सभा के विद्वानो ने लगाया है । सार्वदेशिक सभा को उनकी प्राप्ति के सम्बन्ध मे लिखा गया है । आचार्य विश्वश्रवा, मत्री

उपसंहार

वर्ष का विवरण समाप्त करने से पूर्व यह लिखते हुए दुख होता है कि इस वर्ष श्रीयुत प० विजयशकर जी, श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, श्री प० सूर्य्यदत्त जी, (हैदराबाद) विद्याभास्कर श्री रामावतार शर्मा, श्री प० बस्तीराम जी के निधन से आर्यसमाज की महती क्षति हुई ।

रामगोपाल
सभामन्त्री



॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

शेष-पत्र (बैलेन्स-शीट)

दिनांक २८—२—१९५९ को

दातव्य

स्थिर निधियाँ		
वेद प्रचार	५००००)	
देश देशान्तर प्रचार	५००००)	
भारतीय स्टेट	५००००)	
रक्षा निधि	२५०००)	
सार्वदेशिक भवन	२४५००)	
ऋषिकेश भवन	१४०००)	
चन्दो देवी भवन	८०००)	
आर्य साहित्य प्रकाशन	१२०००)	
हुतात्मा परिवार सहायता	१५०००)	
चन्द्रभानु वेदमित्र स्मारक	५०००)	
श्री भवानीलाल गज्जूमल जी शर्मा अमरावती	५१५०)	
गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट	२०००)	
श्री शिवलाल वेद प्रचार	६५०)	
श्री ढोढाराम चूड़ामणि वेद प्रचार	५०१)	
श्रीमती सोमा महतो सुन्दर देवी वेद प्रचार	१००)	२६१९०१)

सम्पत्ति तथा प्राप्तव्य

भूमि व भवन			
श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली		३०५००)	
सार्वदेशिक भवन दिल्ली		२४५००)	
दयानन्द भवन, नई दिल्ली		४५१२८३)५०	
ऋषिकेश भवन		१४०००)	
शोलापुर आर्य समाज मन्दिर		१४९२२)६२	
चन्दो देवी भवन		८४३३)	
श्रद्धानन्द नगरी आर्यसमाज मन्दिर	३९१६)		
,, ,, पाठशाला भवन	२७४७)	६६६३)	
गाजियाबाद भूमि	२७०४६)०३		
कूप आर्य नगर गाजियाबाद	२९६७)४७	३००१३)५०	५८०३१५)६२
इन्वेस्टमेन्ट्स			
शेयर्स सार्वदेशिक प्रकाशन लि० दिल्ली		९९३०)	
शेयर्स आर्य साहित्य मंडल लि० अजमेर		३०)	९९६०)

विशेष निधियाँ			
दलितोद्धार	३०००)		
ब्याज	४७४)०६	३४७४)०६	
दयानन्द आश्रम		२५५०)	
श्रद्धानन्द नगरी		६६६३)	
ब्याज हुतात्मा परिवार सहायता		१८७३)१४	
ब्याज गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट		३६१)६६	१४५६५)८६
पीड़ित सहायता निधियाँ			
जनरल		३९२३९)६२	
बंगाल		१००००)	
पंजाब		३१८)०३	४९५५७)६५
दक्षिण भारत प्रचार निधियाँ			
केशवार्य हाई स्कूल हैदराबाद दक्षिण		२५०००)	
हैदराबाद स्टेट मन्दिर निर्माण		५०४४)४१	
शोलापुर आर्य समाज मन्दिर		१५०००)	
आर्य समाज कार्केच मन्दिर		१०२५)	४६०६९)४१
विदेश प्रचार निधियाँ			
अमेरिका		४५००)	
सिंहला		१०००)	
जनरल		१६२१)८८	
बगदाद फण्ड		१२७२)	

व्यय			
मकानों तथा भूमि पर (सुरक्षित)		१३१०००)	
सार्वदेशिक प्रकाशन लि० दिल्ली		३०८६)८०	
प्रभात आश्रम सिरसा (बरेली)		१०००)	१३५०८६)८०
फर्नीचर			
गत शेष-पत्र के अनुसार	६८९४)४६		
इस वर्ष की वृद्धि	१२८५४)८५	१९७४९)३१	
इस वर्ष की बिक्री से	५००)		
घिसाई	५००)	१०००)	१८७४९)३१
स्थिर पुस्तकालय			
गत शेष-पत्र के अनुसार		८९५७)२५	
इस वर्ष की वृद्धि		८२)४८	९०३९)७३
पुस्तकों का स्टाक			६७८०२)३७
कागज़ का स्टाक			१५५)८८
डिपोजिट्स			
बिजली कम्पनी दिल्ली		४१३)	
दिल्ली नगर पालिका दिल्ली		५०)	४६३)
प्राप्तव्य			
ब्याज बैंकों तथा अन्यों से	१४६३)		
किराया मकानों आदि से	४७६३२)५०	४९०९५)५०	
प्रदेशीय सभाओं से			
बंगाल	१००००)		

उपदेशक तैयारी		२००)	२०८६३)८८
प्रकाशन निधियाँ			
चन्द्र भानु वेदमित्र स्मारक		५५१०)८६	
आर्य साहित्य		४२२६)७७	
श्री नारायण स्वामी पुस्तक		२७१२)६६	
श्री भवानीलाल जा शर्मा अमरावती			
सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन		५०००)	
श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय पुस्तक		६९०)१९	
दक्षिण अफ्रीका वेद प्रचार सीरीज		७६४)६४	
आर्य सिद्धान्त विरोधी खण्डनी		२६०)१४	
आन्ध्र साहित्य		८२९)	
अन्य		६७६४)४५	२९७५६)७१
सत्यार्थ प्रकाश रक्षा निधि		२२२६१)६१	
सिंधी सत्यार्थ प्रकाश रक्षा निधि		७०८६)१२	२९३४७)७३
हिन्दी निधि		२२४८९०)५०	
हुतात्मा सुमेरसिंह परिवार सहायता		५६१ ७०	
स्मारक हुतात्मा सुमेरसिंह		३०९)५०	२२५७६५)७०
अन्य निधियाँ			
दयानन्द पुरस्कार	४००००)		
ब्याज	५००)	४०५००)	

सिंध	७९७५)		
हैदराबाद दक्षिण)	२४०)६३		
उत्तर प्रदेश	१००८)७१		
कर्नाटक	६२९२)७५		
पंजाब	१५१,२५		
राजस्थान	३८ ७५	२५७१०)१३	
केशवार्य हाई स्कूल हैदराबाद (दक्षिण)		२५०००)	
प मदनमोहन विद्यासागर जी(आन्ध्रसाहित्यके)		८ ९)	
धर्मप्रयोग व्यय		१३७९६ ११	
आर्य समाज इतिहास व्यय		१५२०)४४	
पुस्तकों के विविध सज्जनो से		४११७)४५	
विविध सज्जनों से अगाऊ			
कार्यालय के कर्मचारी	१३८४)५२		
अन्य	१ ५)६२	२१३८)१४	
ऋण स्टाफ प्रोवीडेन्ट फण्ड रर		२२९०)	
पंजाब हिन्दी रक्षा समिति अम्बाला		१०५०)	१२२२४८)७७
नकद तथा बैंकों में			
पंजाब नेशनल बैंक लि० अजमेरी गेट दिल्ली चलता		१७७८)८२	
पंजाब नेशनल बैंक लि० अजमेरी गेट दिल्ली सेविंग एकाउन्ट		२२७३)५३	
नकद कार्यालय में		१ ५ ।	४१५३)८५

अनुसन्धान		१२९६४)९१	
गोरक्षा आन्दोलन		९४५२)७२	
उपदेशक विद्यालय		१४००)	
आर्य समाज सहायता		५०)	
दयानन्द समैपुर पाठशाला		५४६)८७	
टंकारा आर्य समाज मन्दिर		३५३)०६	
दयानन्द कीर्ति मन्दिर		२२२)	
आर्य नगर गाजियाबाद (सुरक्षित)	५२५०८)०७		
,, ,, ,, (सुरक्षितहोनेवाले)	१४९२२)२५	६७४३०)३२	
बंगाल प्रचार		४५२३)३७	
महानिधि		११२६२)२५	
आर्य कुमार सभा सहायता		७६)	
शुद्धि अभियोग सहायता		२०५)	
आर्य समाज नयाबास मन्दिर		१०१)	१४९०८७)५०
स्टाफ प्रोवीडेन्ट फण्ड			१४११९)१५

धरोहरें

आर्य समाज कराची	११७१३)३२	
आर्य समाज हैदराबाद सिंध	१३६)५०	
कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाशादि प्रकाशन	६०४०)	

विविध

अगाऊ किराया मकान	२८०४६)३७		
इलाहाबाद बैंक लि०चा०चौ० दिल्ली (ओवर ड्राफ्ट)	१६१८८)७७		
अन्य	११५६४)३४	५५७९९)४८	७३६८९)३०

आय व्यय खाता

गत शेष पत्र के अनुसार	३७१२५)५९	
इस वर्ष की अधिक आय	८२)८२	३७२०८)४१
सर्व योग		९५१९७५)३३

सर्वयोग ९५१९७५)३३

नई दिल्ली
१२ ५ ५६

हमारी आज की रिपोर्ट के आधीन प्रमाणित
नारायणदास कपूर
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

अमेरानन्द	रामगोपाल	बालमुकन्द आहूजा	रघुनाथप्रसाद पाठक	प्रेमचन्द
सभा प्रधान	सभा मन्त्री	सभा कोषाध्यक्ष	कार्यालयाध्यक्ष	एकाउन्टेन्ट

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली १

आय-व्यय १-३-१९५८ से २८-२-१९५९ तक

आय			
पंचमाश (सम्बद्ध प्रदेशीय सभाओं से)		२०५९)७४	
सभा सदस्यता शुल्क		१६२)	२२२१)७४
दान आर्य समाज स्थापना दिवस		१७१६)७६	
विविध दान		४९५)५०	
दल सहायता आर्य वीर दल	१७४)६७		
आय आर्य वीर दल	५०)३७		
परीक्षा शुल्क आर्य वीर दल	६२)	२८९)३४	
दान चरित्र निर्माण		२५)	
ईसाई प्रचार निरोध प्रचार (श्री बिड़ला जी से)		२४००)	४९२६)६०
आय विद्यार्य सभा			
परीक्षा शुल्क		७८६)२४	
सदस्यता शुल्क		३६)	८२२)२४
आय सार्वदेशिक पत्र			
चन्दा व विज्ञापन			५७०३)३८

व्यय			
वेतन कर्मचारी	१२१२३)८१		
दत्ताश लेखक पुस्तक भण्डार व सार्वदेशिक पत्र	१२००)	१०९२३)८१	
प्रोवीडेन्ट फण्ड सभा का भाग		६१४)७९	११५३८)६०
अधिवेशन व्यय		६०७)१३	
माग व्यय अन्तरंग सदस्य		४८१)०८	
विद्यार्य सभा			
माग व्यय अन्तरंग सदस्य	६३३)५२		
अन्य व्यय	१०८३)६१	१७१७)१३	
धर्मार्य सभा			
मार्ग व्यय अन्तरंग सदस्य	३०६)०५		
अन्य व्यय	११)८५	३१७)९०	
राजार्य सभा		४३६)६४	
घिसाई फर्नीचर		५००)	
विविध व्यय		४९८६)०७	९०४८)६५

अनुसन्धान निधि		
आय	५)५०	
निधि से	७२६)४१	७३१)६
मास लाभ पुस्तक भण्डार		२४३६)४
ब्याज व मकान किराया		
किराया बलिदान भवन	२५७५)४२	
,, सार्वदेशिक भवन	२०४)	
,, दयानन्द भवन	३०८६६)२७	
,, शाहदरा मकान	१ ६)८१	
,, रहन के मकानों से	८२६८)५०	
ब्याज बैंकों आदि से	३६८४)३०	४७८४४)३०
हिंदी रक्षा आन्दोलन		
दान	५३४५)१५	
निधि से	२३३३८)१२	२८६८३)२७
बंगाल प्रचार		
दान	१००)	
निधि से	७२२)४७	८२२)४७
आर्य नगर गाजियाबाद		
आय लोज	१७)८१	
निधि से	३९१)६५	४०६)४६

व्यय सभा के भवन		
बलिदान भवन	२८२०)३५	
सार्वदेशिक भवन	२२२)१७	
दयानन्द भवन	७७३६)४६	
शाहदरा मकान	२२)७६	
व दादेवी भवन	६)२०	१०८०८)४०
व्यय आर्य वीर दल संगठन		
मार्ग व्यय उपसमिति सदस्य	७८)५२	
वेतन प्रधान सेनापति		
व अन्य व्यय	४४८६)२५	४५६७)७७
व्यय आर्य नगर गाजियाबाद		४०६)४६
सार्वदेशिक पत्र		
छपाई, कागज, वेतन व डाक व्ययादि		६७४८)६३
प्रचार व्यय		
दक्षिण भारत	५५८६)३७	
नैपाल	१७४६)३५	
आसाम	४५६ ३०	
शुद्धि	२८७)२५	
साहित्य	६८७)६६	
विदेश	५०४)२२	
ईसाई प्रचार निरोध	५२४२)६५	
त्रिपुरा (बंगाल)	८२२)४७	
चरित्र निर्माण	२४१)१२	

		सत्यार्थ प्रकाश हीरक जयन्ती		३१)५७	१५६१०)२६
		व्यय अनुसन्धान विभाग			
		वेतन कार्यकर्त्ता व अन्य व्यय			७३१)६१
		व्यय पुस्तक भण्डार			१६५८)८०
		व्याज विविध निधियों को दिया			५२०)
		व्यय हिंदी रक्षा आन्दोलन			२८६८३)२७
		व्यय आर्य महा सम्मेलन			११६)५७
		अभियोग व्यय			
		कस्टोडियन		३७८)५३	
		मठगुलनी		३२२६)५०	३६०८)०३
		बट्टा खाता			
		कस्टोडियन से मकान किराया कम मिला			४६८)
			योग		६४५१८)६८
		अधिक आय इस वर्ष में (शेष पत्र में आय व्यय खाते में सम्मिलित)			८२)८२
सर्व योग	६४६०१)८०		सर्व योग		६४६०१)८०

नई दिल्ली
१२-५-१६५६

नारायणदास कपूर
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

अभेदानन्द	रामगोपाल	बालमुकन्द आहूजा	रघुनाथप्रसाद पाठक	प्रेमचन्द
सभा प्रधान	सभा मन्त्री	सभा कोषाध्यक्ष	कार्यालयाध्यक्ष	एकाउन्टेन्ट

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मनी आर्डर और चैक इस प्रकार आने चाहिये।

मनी आर्डर

१—मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-१

२—मनी आर्डर सभा मन्त्री के नाम से नही आने चाहिये। इससे मनी आर्डर के मिलने मे कुछ विलम्ब हो जाने की आशका रहती है।

३—मनी आर्डरों की कूपन पर भेजने वाले का नाम पता व राशि अनिवार्यत अकित होने चाहिये।

चैक व पोस्टल आर्डर

सार्वदेशिक सभा तथा सार्वदेशिक पत्र के लिये यदि कोई सभा को चैक या पोस्टल आर्डर भेजे तो वे केवल **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** के नाम मे लिखे होने चाहिये। क्रास हों तो अच्छा है

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली १

सार्वदेशिक मे विज्ञापन देकर लाभ उठावे

विज्ञापन के रेट्स

		एक बार	तीन बार	छः बार	बारह बार
१	पूरा पृष्ठ (२०×३०)	१५)	४०)	६०)	१००)
	आधा " =	१०)	२५)	४०)	६०)
	चौथाई ,,	६)	१५)	२५)	४०)
	⅛ पेज	४)	१०)	१५)	२०)

विज्ञापन सहित पेशगी धन आने पर ही विज्ञापन छापा जाता है।

२ सम्पादक के निर्देशानुसार विज्ञापन को अस्वीकार करने, उसमें परिवर्तन करने और उसे बीच में बन्द कर देने का अधिकार 'सार्वदेशिक' को प्राप्त रहता है।

व्यवस्थापक—'सार्वदेशिक' पत्र, दयानन्द भवन, नई दिल्ली १

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं। हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड से काला हो जाता है, यह तेल दिमागी ताकत और आखो की रोशनी को बढाता है। जिन्हे विश्वास न हो वे मूल्य वापिस की शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो तो ३॥)।

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों, औरों की भाति, मै अधिक प्रशसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ७ दिन के लेप से सफेदी का दाग पूरा आराम न हो तो मूल्य वापस। मूल्य लगाने का ३) खाने का ४) रु० है।

धनवन्तरि औषधालय नं० ११, पो० शेखपुरा, जिला मुंगेर (बिहार)

Regd No D 51

उत्तम ग्रन्थो के स्वाध्याय से अपना जीवन यज्ञमय बनायें

स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी के अमूल्य ग्रन्थ आपके आध्यात्मिक मित्र हैं।

इन्हें मंगा कर अवश्य पढे और दूसरों को पढने की प्रेरणा करें!

योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यो को उद्घाटित करते हुए उन विधियो को बतलाया गया है जिन से प्रत्येक आदमी योग के अभ्यासो को कर सकता है

मूल्य १।

उपनिषद् रहस्य

ईश केन कठ, प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय और बृहदारण्यकोपनिषद् की बहुत सुन्दर, ओजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें। मूल्य क्रमश'

।=), ॥), ॥), ।≈), ।=), ।), ।), १), ४)

मगाने में शीघ्रता करें।

मृत्यु और परलोक

इसमें मृत्यु का वास्तविक स्वरूप, मृत्यु दु खद क्यों प्रतीत होती है ? मरने के पश्चात जीवकी क्या दशा होती है ? एक योनि से दूसरी योनि तक पहुँचने मे कितना समय लगता है ? जीव दूसरे शरीर में कब और क्यो जाता है, आदि महत्वपूर्ण प्रश्नों पर गम्भीर विवेचन किया गया है। अपने विषय की अद्वितीय पुस्तक है। मूल्य १।)

कर्त्तव्य दर्पण

आर्य समाज के मन्तव्यो, उद्देश्यो, कार्यों, धार्मिक अनुष्ठानो पर्वों तथा व्यक्ति और समाज को ऊंचा उठाने वाली मूल्यवान् सामग्री से परिपूर्ण—पृष्ठ ४००, सफेद कागज, सचित्र और सजिल्द। मूल्य ॥।)

रियायती मूल्य ॥≈)

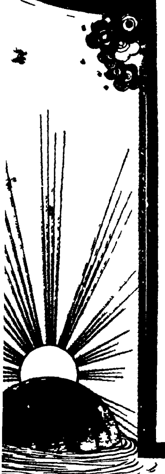
मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली–१

सार्वदेशिक प्रेस, पाटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली—७ में छपकर रघुनाथ प्रसाद जी पाठक प्रिंटर और पब्लिशर के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली–१ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सार्वदेशिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान

श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट का

आर्य जगत् से अनुरोध

भारतवर्ष में ग्यारह वर्ष से अधिक स्वराज्य प्राप्ति को व्यतीत हो चुके है फिर भी दशा चिन्ताजनक है। अधिकारों की आंधी चल रही है, कर्तव्य की ओर ध्यान नहीं है।

साम्यवाद का तूफान उठा हुआ है, सम्पत्ति के सदुपयोग की ओर ध्यान नहीं है। सम्प्रदायवाद का अन्धकार है, धर्मके मौलिक सिद्धान्तों की ओर ध्यान नहीं है। विज्ञापन की चकाचौंध है ज्ञान बढ रहा है परन्तु ज्ञान के आदिमूल और आदि स्रोत की ओर ध्यान नहीं है। बढता हुआ विज्ञान ससार के विनाश का कारण बन रहा है, न ईश्वर का ज्ञान है न आत्मा का। राजनीति की दल दल प्रचलित है परस्पर का क्लेश और द्वेष बढ रहा है। सद्भावना और शान्ति को स्थान नहीं।

इन त्रुटियों का निराकरण महर्षि दयानन्द के आदेश के अनुसार आर्य समाज ही कर सकता है। आर्यजगत से अनुरोध है कि वह परस्पर की कलह और द्वेष को त्याग एक दूसरे के विरुद्ध नोटिस छापने को निन्दनीय समझें।

सम्पादक—सभामन्त्री
सहायक सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक | मूल्य स्वदेश ५) विदेश १० शिलिंग | जुलाई १९५९

विषय सूची

वैदिक धर्म प्रचारार्थ ट्रैक्ट

	मूल्य प्रति	सैकडा
१ आर्यसमाज के मन्तव्य	)०६ प्रति	५)
२ शकासमाधान	)०३ ,,	३)
३ पूजा किसकी	)०३ ,,	२)५०
४ आर्यसमाज	)०३ ,,	२)५०
५ भारत का एक ऋषि	)०६ ,,	५)
६ ऋग्वेद मे देवृकामा या देवकामा	)०६ ,,	५)
७ गो करुणानिधि	)०६ ,,	४)
८ गोहत्या क्यों ?	)१२ ,,	१०)
६ चमडे के लिये गोवध	)१८ ,,	१५)
१० गोगान	)०३ ,,	२ ५०
११, सन्ध्यापद्धति	)१२ ,,	१०)
१२. मासाहार घोर पाप	)१२ ,,	१०)
१३ आर्य शब्द का महत्व	)०६ ,,	७)५०
१४ दशनियम व्याख्या	)०६ ,,	७)५०
१५ तीर्थ और मोक्ष	)०६ ,,	७)५०
१६ ग्रहण और दान	)०६ ,,	७)५०
१७ भारतवर्ष मे जाति भेद	)०६ ,,	७)५०
१८ भारत मे ईसाई षड्यन्त्र	)२५ ,,	२०)
१६ ईसाईयों से सौ प्रश्न	)१२ ,,	१०)
२० स्वतन्त्रता खतरे में	)०३ ,,	२)५०
२१ वैदिक राष्ट्र धर्म	)२० ,,	१५)
२२ प्रजापालन	)०५ ,,	३॥)
२३ नारायण स्वामीजी की सक्षिप्त जीवनी	)०६ ,,	५)
२४ सिनेमा मनोरजन या सर्वनाश	)१२ ,,	१०)
२५, सत्यार्थप्रकाश की रक्षा मे	)०६ ,,	५)
२६. मुर्दों को क्यों जलाना चाहिए	)०६ ,,	७)५०
२७ आर्यसमाजों के सा स. का कार्यक्रम	)०६ ,,	५
२८ आर्य समाज के नियमोप-नियम	)०६ ,,	

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन नई दिल्ली-१

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

(सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष ३५ { जौलाई १९५९ आषाढ २०१६ वि० दयानन्दाब्द १३५ } अङ्क ५

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् ! यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमय सोम आह तवा हमस्मि सख्ये न्योकाः ॥

ऋग्वेद मण्डल ५ सू० ४४ म० १४

पदार्थ –(य) जो (जागार) अविद्या रूप निद्रा से उठ के जागने वाला है (तम्) उसको (ऋच) ऋचाओं के सदृश जन (कामयन्ते) कामना करते हैं और (य) जो (जागार) अविद्या रूप निद्रा से उठ के जागने वाला है (तम्) उस को (उ) भी (सामानि) सामवेद के विभाग (यन्ति) प्राप्त होते हैं और (य) जो (जागार) अविद्या रूप निद्रा से उठ के जागने वाला (तम्) उस को (अयम्) यह (सोम) सोमलता आदि ओषधियों का समूह वा ऐश्वर्य के सदृश (न्योका) निश्चित स्थान वाला (सख्ये) मित्रत्व में (तव) आपका (अहम्) मैं (अस्मि) हू इस प्रकार (आह) कहता है ।

भावार्थ ––जो वेद विद्या को प्राप्त होने की इच्छा करते हैं उन को ही वेद-विद्या प्राप्त होती और जो मनुष्य आदिकों के साथ मित्रता करता है वह बहुत सुख को प्राप्त करता है ।

Be vigilant always !

He who is ever vigilant, i e, applies himself diligently to dispel ignorance, to him learned people, desire like the Riks (holy verses of the Rig Veda) he who is vigilant, to him, the parts of the Sama Veda proceed him who is ever vigilant, the Soma the groups of drugs like some plant or like effulgenee, the holder of the firm position (the utter-most limit of all—God) thus addresses, "I am always abiding in your friendship

A man, desirous of obtaining the knowledge of the Veda, acquires it (the knowledge of the Veda and a man who always abides in friendship with all the Creatures (may they be human beings or other living beings) enjoys great comfort (Bliss falls to his part)

Professor—Hans Raj Soien.
81/D Kamla Nagar, Delhi

सम्पादकीय

जनतन्त्र या परतन्त्र

आर्य समाज का संगठन महर्षि दयानन्द ने जनतन्त्रात्मक बनाया। जिस समय ऋषि ने यह व्यवस्था स्थापित की उस समय धार्मिक क्षेत्र की तो बात ही क्या राजनीतिक क्षेत्र में भी जनतन्त्र का विशेष प्रवेश या प्रभाव न था यह तो जनतन्त्र का युग ही माना जाता है और धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक सभी क्षेत्रों में जनतन्त्र की तूती बोल रही है। परन्तु कटु सत्य है कि जनतन्त्र की आज निर्मम हत्या हो रही है, उसकी मौलिकता को कुचला जा रहा है। निर्वाचन को जनतन्त्र का वरदान या प्रमुख आधार माना जाता है, परन्तु उस पर सबसे घातक प्रहार निर्वाचन द्वारा ही हो रहा है और यह निर्वाचन मानो वरदान न रहकर अभिशाप सा लगने लगा है। केवल शक्ति परीक्षण तथा व्यक्तिगत अहम्भाव की संतुष्टि ही निर्वाचन का प्रयोजन रह गयी है। यह दोष आर्य समाज को भी ग्रस रहा है। राजनीतिक दलों में सत्ता हथियाने की होड़ के कारण यह विकार पैदा होता बात समझ में आती है क्योंकि उन दलों की कोई ऐसी विशेष आचारसंहिता या नैतिक स्तर नहीं है जो सदस्यों की निम्नस्तरीय स्वार्थ लिप्सा पर अंकुश रख सके, परन्तु आर्य समाज में तो ऐसी बात नहीं, इसका तो जन्म ही उस वैदिक धर्म के प्रचार के लिए हुआ है जिसकी यम नियमों वाली आचार संहिता अनुपम मानी जाती है। इसके तो मौलिक दस नियमों में अन्तिम नियम पुकार पुकार कर कह रहा है—'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये।"

यदि केवल क्रान्तदर्शी महर्षि के प्रतिपादित इस एक 'परतन्त्र' शब्द का ही रहस्य हम समझ सकें तो हमारी आखों पर पड़ा अधिकारवाद या अहम्भाव का आवरण तुरन्त दूर हो जाय। प्रतीत होता है कि जनतन्त्र की वास्तविक स्थिति की व्याख्या 'परतन्त्र' शब्द से ही होती है। सामाजिकता की चरितार्थता इसी में है कि व्यक्ति का पृथक कोई अस्तित्व नहीं रहता, समष्टि की मुख्यता हो जाती है। व्यक्तित्व से ऊपर उठना पड़ता है। व्यक्ति की अपनी सम्मति, इच्छा या आग्रह का महत्त्व घट जाता है, उसे दूसरे लोगों की सम्मति, इच्छा या आग्रह से सहमत होना चाहिये, उसका आदर करना चाहिये। बस यही जनतन्त्र की परतन्त्रता है। इसी आधार पर निर्वाचन व्यवस्था की नींव रखी गयी है। संगठन अथवा संस्था में निर्वाचन या मताभिव्यक्ति का केवल इतना ही प्रयोजन होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अथवा सदस्य अपनी इच्छा प्रकट कर सके परन्तु आशा यह न रखे कि उसी की बात को मुख्यता मिलेगी। जब विभिन्न व्यक्तियों में चुनाव का प्रसङ्ग हो, अथवा किसी विचारणीय विषय पर वादविवाद का अवसर उपस्थित हो तो प्रत्येक सदस्य का अधिकार है कि अपना मत स्वतन्त्रता पूर्वक प्रकट करे, बस उसका यह अधिकार इतने तक ही सीमित है, अतः स्वाभाविकतया यह यहीं समाप्त या कृतार्थ हुआ समझना चाहिए। अन्त में जो निर्णय बहुमत का हो जाय, उसे शिरोधार्य करना चाहिये। चाहे पदाधिकारी ऐसे व्यक्ति चुने जायें कि जिन्हें हमारा मत प्राप्त नहीं हुआ, परन्तु निर्वाचन के पश्चात् हमें इस प्रकार मनोयोग के साथ उन्हें सहयोग देना चाहिये मानो हमारे ही बनाये हुए हैं और उनकी सफलता अथवा असफलता के साथ हमारा सबका अथवा हमारे संगठन का भाग्य जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार जो बात विचार-विनिमय या वादविवाद के अनन्तर स्वीकृत हो जाय, उसे प्रत्येक सदस्य का हार्दिक समर्थन प्राप्त होना चाहिये। यही वह अंश है जिसे जनतन्त्र में

'परतन्त्र' शब्द से अभिहित किया गया है। जनतन्त्र में स्वेच्छा प्रकाशन को पहला अवसर प्राप्त होता है परन्तु स्वेच्छाचार को वहां कोई स्थान नहीं मिलता। स्वेच्छा प्रकाशन रूपी स्वतन्त्रता कुछ क्षण रहकर शेष सारा समय परतन्त्रता के लिये छोड़ देती है।

आर्य समाज के सगठन मे नीचे से लेकर ऊपर तक निर्वाचन प्रणाली लागू है। आर्य समाज, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इन सभी का निर्वाचन प्राय प्रतिवर्ष होता है निर्वाचनों के कारण प्रतिद्वन्द्विता का उत्पन्न होना अस्वाभाविक तो नहीं परन्तु ठीक भी नहीं है। परन्तु खेद है कि आज हम इस प्रतिद्वन्दिता को ही पकड़ कर बैठ गये है। उचित मार्ग तो यही है कि निर्वाचनों में प्रतिद्वन्द्विता न आने दी जाय और यदि आ भी जाय तो निर्वाचन समय तक ही सीमित रखें और उसके पश्चात् प्रत्येक सदस्य निर्वाचित व्यक्तियोंको सहयोग देना अपना कर्तव्य समझे। यह उसके सदा ध्यान में रहे कि समाज तभी स्थिर रह सकता है जब कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा का बलिदान करने के लिये तैयार रहे। हमें यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि जहा तक आर्य जनता का सम्बन्ध है, वह बहुत ही सगठन प्रिय तथा अनुशासन परायण है। वह व्यक्तियों की अपेक्षा सभा को महत्व देती है। बार बार देखा गया है कि कोई अधिकारी आये और कोई जाये जनता तो सभाओं के आदेशों की ओर ताकती रहती है। बहुत बार ऐसे प्रसग उपस्थित हुए कि कुछ व्यक्तियों ने अपने प्रभाव का गलत अनुमान करके आर्य जनता को केवल इसलिये सगठन से विरत करने का यत्न किया कि तत्कालीन अधिकारी उनके मनोनुकूल न थे, परन्तु जनता ने उनकी उपेक्षा करके संगठन का ही साथ दिया। यही वह शक्ति है जिसके आधार पर आर्य समाज का सगठन जीवित है या प्रगति कर रहा है। अत आर्य जनता तो इस भावना के लिये बधाई की ही पात्र है। परन्तु ईर्ष्या द्वेष अथवा दलबन्दी का जितना भी समावेश दीखता है, उसका उत्तरदायित्व मुख्यतया विशिष्ट कहे या समझे जाने वाले व्यक्तियों की ही सकीर्ण मनोवृत्ति है। बड़प्पन अथवा वृद्धता तो उदारता तथा विशालहृदयता के क्षितिज पर ही निखर सकती है। नेतृत्व के लिए लोकसंग्रह का गुण परम आवश्यक है। आर्य समाज के विशिष्ट या अग्रणी कहे जाने वाले लोगों में यह अवाञ्छनीय प्रवृत्ति घर कर रही है कि वे सगठन में परतन्त्रता की स्थिति को स्वीकार करने मे अपने आपको असमर्थ पाते है। निर्वाचन का अर्थ यही है कि निर्वाचित व्यक्ति सदा यह समझता रहे कि अगले निर्वाचन में यह स्थान दूसरा व्यक्ति लेगा। ऐसी अवस्था में यदि दूसरा व्यक्ति आ जाता है तो कोई अनहोनी बात नहीं समझनी चाहिये। एक बार किसी पद पर आ गये तो उसके साथ मोह हो जाना ऐसी दुर्बलता है जिसका ग्रास किसी भी धार्मिक एव समझदार व्यक्ति को नहीं होना चाहिए। यह स्थिति बड़ी ही भयानक है कि, पहला अधिकारी दोबारा न चुना जाय तो वह यह सोचे कि नये अधिकारियों की किसी भी प्रकार की असफलता से उसका महत्त्व प्रतिपादित अथवा चमत्कृत होगा। बहुमत के निर्णय का आदर करने में सभी व्यक्तियों की शोभा है और सगठन को शक्ति मिलती है। यह प्रवृत्ति तो अत्यन्त ही अवाञ्छनीय है कि सार्वजनिक रूप से एक-दूसरे की अप्रतिष्ठा को प्रोत्साहित किया जाय। किसी साथी में कोई त्रुटि भी दीखती है तो अखबारों या विज्ञापनों के द्वारा उसे प्रकाशित करने से हानि ही होती है। पवित्र आशय का मार्ग तो यही है कि उस व्यक्ति का प्रेम पूर्वक उस ओर ध्यान आकृष्ट किया जाय। इस प्रकार चलने से बहुत सी कटुतायें तो यों ही समाप्त हो सकती हैं

जैसा कि मैंने आरम्भ की पंक्तियों में लिखा है कि आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने ही इस संस्था के संगठन के रूप में इस देश में जनतन्त्र को मूर्तरूप दिया था, अतः जनतन्त्र की पवित्रता की रक्षा का उत्तरदायित्व आर्य जनों पर उसी प्रकार है जैसा कि ऋषि के अन्य विचारों अथवा कार्यों का। आर्य समाज को आज जनतन्त्र के रक्षक के रूप में आगे आकर मार्ग दिखाना चाहिये। यह तभी सम्भव है जब हम पहले अपने अपने घर में इसे सुरक्षित रखने का यत्न करें।

रघुवीरसिंह शास्त्री

❀

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

प्रेस कान्फ्रेंस

१०।६।५९ को दयानन्द भवन में आयोजित एक प्रेस कान्फ्रेंस में आर्य समाज के भावी कार्य क्रम पर प्रकाश डालते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत बा० पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट ने स्पष्ट किया कि आर्य समाज यद्यपि आधुनिक अर्थ में राजनीतिक संस्था नहीं है किन्तु राजनीति में नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए वह सदा प्रयत्नशील रहा है और रहेगा।

शिक्षा के सम्बन्ध में आर्य समाज के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि स्कूलों में धार्मिक शिक्षा के पक्ष में और सह शिक्षा के विरोध में जनता में जागृति उत्पन्न करने के लिए आर्य समाज को उग्र आन्दोलन करना होगा।

पञ्जाब सरकार ध्यान दे

पिछले दिनों कुछ समाचार पत्रों में छपा था कि पञ्जाब राज्य सरकार आने वाले चुनावों की सूचियां पञ्जाबी क्षेत्र में गुरुमुखी लिपि में ही छपवाने का विचार रखती है। इस सम्बन्ध में पञ्जाब में बहुत विवाद चलता रहा है। पञ्जाब राज्य सरकार की इस कार्यवाही से यह विवाद और भी उग्ररूप धारण कर लेगा। अतः इस विवाद के सम्यक परिहार के लिए यह उचित जान पड़ता है कि पञ्जाब के दोनों क्षेत्रों के लिए सूचियां देवनागरी और गुरुमुखी दोनों ही लिपियों में छपवाई जाय। यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि स्वयं तथाकथित पञ्जाबी क्षेत्र में गुरुमुखी लिपि को जानने वालों की संख्या बहुत कम है। यदि पञ्जाबी क्षेत्र में चुनाव की सूचियां एक मात्र गुरुमुखी लिपि में छपेंगी तो बहुसंख्यक मतदाता अपने मत दान के ठीक २ प्रयोग के अधिकार से वञ्चित हो जायगे। फलतः चुनाव न्यायपूर्ण निष्पक्ष और ठीक न हो सकेगा। यह बात स्वयं वर्तमान राज्य सरकार की स्थिरता के लिए भी घातक सिद्ध हो सकती है। राज्य सरकार को साम्प्रदायिक तत्त्वों के प्रभाव से ऊपर उठकर असाम्प्रदायिक और उदारनीति के अवलम्बन का ही परिचय देना चाहिए।

श्रीयुत बेकार बी. ए. बी. टी.

१३।६।५९ के ब्लिट्ज़ में पृष्ठ २० पर 'श्रीयुत बेकार' बी ए बी टी के शीर्षक से एक बेकार नवयुवक की करुण कथा प्रकाशित हुई है। लेखक ने जानबूझकर नवयुवक का वास्तविक नाम नहीं दिया है। उस नवयुवक की करुण कहानी उसी के शब्दों में इस प्रकार है —

'मैं एक ग्रेजुएट बी ए बी टी बेकार नवयुवक हूं। एक पक्के आर्य समाजी परिवार से मेरा सम्बन्ध है। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल में हुई और उसके बाद डी ए वी हाई स्कूल और कालेज में। मैं एक साधारण मध्यवित्त, परिवार का सदस्य हूं, न राजकुमार हूं और न भिखारी हूं।

'१९५७ ई० में मैंने बी टी पास किया। मैं तब से अब तक बेकार बैठा हू। मैं प्रत्येक स्थान पर प्रार्थना पत्र भेजता रहा हू। मैंने स्कूलों में, दफ्तरों में और व्यापार सस्थानों में प्राथना-पत्र दिए परन्तु कहीं पर भी काम न मिला अपनी सस्थाओं में नौकरी प्राप्त करने में मुझे सफलता इसलिए न मिली कि सिफारशें प्राप्त करने के लिए मैंने सन्यासियों के जूते नहीं चाटे। मैंने प्रत्येक प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा के लिए भी यत्न किया परन्तु सफल न हुआ क्योंकि मुझे किसी एम पी एम एल ए या मन्त्री का सिफारशी पत्र उपलब्ध न हुआ यद्यपि अनेक स्थानों पर मुझ से बहुत कम योग्यता के लोग लगा दिए गए। मैंने नौकरी प्राप्त करने के लिए धर्म परिवर्तन की बात भी सोची। वे सब भी मुझे ईसाई या मुसलमान बनाने के लिए तो उत्सुक थे परन्तु नौकरी की गारन्टी किसी ने न दी।

'मैंने अम्बाला, देहरादून और शिमला मे कुलीगीरी करने का भी यत्न किया। परन्तु उससे भी काम न चला। मेरी शिक्षा मेरे मार्ग का काटा बन गई। मजदूरों ओर मालिकों को मेरे इरादों पर सन्देह हुआ, कुछ ने मुझे कम्यूनिस्ट समझा और कुछ ने मुझ पर सी आई डी का आदमी होने का दोषारोपण किया। हरिद्वार का एक बडा धनी सेठ मुझे डाकुओं के एक गिरोह का सदस्य समझ बैठा।"

"मैं छोटे से छोटा काम करने के लिए उद्यत हू चाहे वह गाव के स्कूल की अध्यापकी हो, रेलवे स्टेशन पर कुलीगीरी हो और चाहे किसी होटल की बैरागिरी हो। मैं आज बहुत भूखा हू क्या मेरा देश मुझे भूखों मरने देगा?"

इस नवयुवक की दुरवस्था के प्रति हमारी सहानुभूति है। यत यह नवयुवक आर्ग परिवार से सम्बद्ध है अत आर्य समाज का इसके मामले में अधिक चिन्तित होना स्वाभाविक है। नवयुवक का नाम और पूरा पता ज्ञात किया जा रहा है जिस से इस सम्बन्ध में यथोचित कार्यवाही की जाय। आर्य समाज विनय नगर नई दिल्ली के मन्त्री श्रीयुत मनोहर लाल जी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस विषय की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया और उक्त पत्र का कटिंग भिजवाया है।

विशेषाधिकार

उपर्युक्त शीर्षक से सहयोगी ट्रिब्यून अपने १७-६ ५९ के अक में लिखता है —

'पजाब के हरिजन सेवक सघ' ने 'भाईचारे' का एक नवीन प्रोगम निर्धारित किया है। इस प्रोगम के अनुसार सघ अपनी शाखाओं को निर्देश देगा कि वे केवल उन सदस्यों की भरती करें जो हरिजनों के साथ अपने घरों में और जब हरिजनों द्वारा उनके घरों मे आमन्त्रित किए जाय तो मिलकर भोजन करे। इस भोजन का उद्देश्य सवर्णों एव तथाकथित हरिजनों को एक दूसरे के अधिकाधिक निकट लाना और इस प्रकार जाति गत भेदभाव का मिटाना ही है। जहा तक विदित हुआ है सघ और उसकी शाखाओं की सदस्य सख्या बड़ी परिमित है और यह माना जा सकता है कि ये सदस्य अस्पृश्यता निवारण मे आस्था रखते है। भ्रातृत्व की भावना जाग्रत करने के प्रोगम से हरिजनोद्धार का कार्य करने के उन सदस्यों के निश्चय को बल मिलेगा। परन्तु जन साधारण के विषय में क्या रहेगा? अधिक समय पर्यन्त शिक्षा और प्रचार का कार्य करने से ही सर्व-साधारण के हृदयों मे घर की हुई भेदभाव की भावना तिरोहित हो सकेगी सौभाग्य से इस राज्य(पजाब) में अस्पृश्यता की समस्या इतनी उग्र नहीं है जितनी अन्य कतिपय राज्यों में है। लोगों की सहिष्णुता उनकी उदार भावना, महात्मा गाधी के कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होने से बहुत पूर्व आर्यसमाज आदि सगठनों के अस्पृश्यता निरोधी अभियानों के कारण

सवर्णों को हरिजनों से प्रथक् करने वाली दीवारें प्राय आज नहीं खडी है और जो कुछ भेदभाव है भी वह भी धीरे २ लुप्त हो रहा है। परन्तु शिक्षित हरिजनो में एक घातक प्रवृत्ति घर करती जा रही है। आर्थिक तथा अन्य कई कारणों से ये शिक्षित हरिजन यद्यपि गला फाड २ कर जातपात का खडन करते हैं तथापि हिन्दू समाज मे घुल मिल जाना नहीं चाहते। उनमे से बहुत से खुले रूप मे सवर्ण हिन्दुओं से पृथक अनिश्चित काल त अपनी स्वतन्त्र सत्ता बनाए रखनेका प्रचारक हैं प्रथकता की यह भावना जो विशेष अधिकारों के उप भोग से उत्पन्न हुई है बडी भयावह सिद्ध होसकती है और राष्ट्रीय एकता में विश्वास रखने वाला कोई भी व्यक्ति इसे एक क्षण के लिए भी सहन न करेगा। डा० गोपीचन्द भार्गव को सघ की मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए इस भावना की अनुभूति हुई। उन्होंने कहा कि राज्य सरकारों ने केन्द्र को सुझाव दिया है कि जन्म के आधार पर विशेषा धिकार न दिए जाय अपितु प्रजा के विविध वर्गों के आर्थिक दृष्टि से पिछडपन के आधार पर दिए जाय। केन्द्रीय सरकार को इस सुसगत सुझाव को स्वीकार कर लेना चाहिए क्योंकि यह न्याय और औचित्य पर अवलम्बित है और जाति या वर्ग के भेदभाव से शून्य पिछडी हुई समस्त प्रजा के प्रति विशेष व्यवहार को सुरक्षित करता है। अच्छा तो यह होता कि पिछडे वर्ग के लोगों को आर्थिक दृष्टि से अन्य वर्गों के स्तर पर शीघ्र से शीघ्र लाया जाता और विशेषाधिकारों की प्रणाली को सदैव के लिए मिटा दिया जाता। परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि जब किन्हीं वर्गों को जन्म या आर्थिक पिछडेपन के आधार पर विशेषाधिकार दे दिए जाते हैं तो उनसे निहित स्वार्थों की उत्पत्ति हो जाती है और इस प्रकार के स्वार्थ उन्हें स्थायी रूप देनेके प्रत्येक प्रत्यन में निरत रहते हैं। जब कभी इन निहित स्वार्थों का अन्त करने का प्रस्ताव आता है तो अन्याय एव पक्षपात के आधार पर उस प्रस्ताव का विरोध किया जाता है"

जिसके बिना देश मृतवत है :-

आज जब लोग परस्पर बातचीत करते है तो दुःख से कहते हैं कि हमारे देश में सदाचार कम होता जा रहा है और भ्रष्टाचार अधिक। नित्य की साधारण बातों में ऐसा देखा भी जा रहा है। एक बडे सज्जन ने बताया कि लखनऊ से एक मित्र ने दो बार उन्हे खरबूजे भेजे। रेल गाडी सीधी लखनऊ से देहरादून आती है। वहा से मसूरी पहाड पर बस द्वारा माल जाता है। दोनो बार चौथाई से अधिक खरबूजे निकल गए अथवा निकाल लिए गए। रेलों में होने वाले ऐसे भ्रष्टाचार की अक्सर आलोचना होती रहती है। कचहरी का कुछ कहना नहीं। सरकारी सडक व मकानों के विभागों का वृत्तान्त तो सब ही जानते है। अस्तेय, अपरिग्रह आदि केवल बोलने और सुनने मे ही समाप्त होते जा रहे हैं।

वे १९३१ की योरोप यात्रा और १९५६ की चीन यात्रा की आप बीती सुनाने लगे, चैस्टर से डबलिन जाने के लिए कुछ यात्रा रेल में और कुछ नौका द्वारा होती है उनके पास दो बक्स थे जिन को कुली ने भीड के कारण बिना रसीद पर्चे के तथा बिना तोले असबाब की गाडी में रख दिया और उन्होंने डबलिन उतर कर उनको अपना लिया किसी ने न पूछा कौन हो और किसका असबाब है

उनके एक मित्र ने कलकत्ते की अग्रेजी दुकान पर कपडा सिलवाया और उसके पैसे दे दिए। किन्तु पहनने पर वह ठीक न उतरा। इसका पता उन्हें बर्मा मे लगा वहा उसी कम्पनी की एक शाखा थी। वहा कपडे लौटा लिए और दाम वापस कर दिए गए।

पेकिंग में एक कोट की जेब के १००) तलाश करने से नहीं मिल रहे थे। दूसरे दिन उत्तरीय नगर मेंधोबी के यहा से जब कोट आया तो उसने १००) निकालकर उनके हवाले किए। वियना में

श्रमजीवियों की बस्ती में अनेक सुविधाओं क साथ पुस्तकालय भी है उसका कोई सरचक नहीं। लोग पुस्तक ले जाते हैं और पढकर रख जाते है। उन्होंने देखा कि हमारे यहा पुस्तकों क पन्ने क पन्ने काट लिए जाते हैं। आक्सफोर्ड पुस्तकालय में भारतीय युवक विशेषत इसक अपराधी कहे जाते है।

ऐसी दशा मे सदाचार और सयम की हमारे लिए बडी आवश्यकता है। सयम का अथ है अपने विकारों पर तथा अपने ऊपर काबू रखना इसकी व्याख्या गीता क दूसरे अध्याय मे भली भाति की गई है अथात् काम क्रोध और लोभ को अमर्यादित होने से रोकना। देश और समाज बिना सदाचार क मृतवत है।

पुनर्जन्म की घटना

बरेली के २६ ६ ५९ के समाचार क अनुसार यहा के एक मुस्लिम अध्यापक श्री इस्मतउल्ला अन्सारी के पाच वर्षीय पुत्र करीमउल्ला ने अपने पूव जन्म की अनेक घटनाए बताकर एक ओर जहा सैकडों व्यक्तियों को आश्चय मे डाल दिया है वहा दूसरी ओर बड बड मौलवियों के समक्ष एक विकट समस्या खडी कर दी है। इस्लाम धम के अनुसार जीवों का पुनज म नहीं होता।

पाच वर्षीय बच्चे ने जब नवाबगज क एक पुराने जमीदार की पुत्रवधु का हाथ पकडकर कहा कि यह मेरी बीबी है तो सब आश्चय मे पड गये।

घटना का विवरण इस प्रकार है कि लडक के पिता जनाब इकरामअली के यहा बच्चों को पढाते थे। एक दिन ईद पर मास्टर साहब अपने लडके के साथ जब वहा गये तो लडका हाथ छुडाकर एकदम शीघ्रता से मकान के अन्दर चला गया। बताया गया है कि अन्दर चारपाई पर श्री इकराम अली की विधवा पुत्रवधु बैठी हुई पान लगा रही थी। लडके ने उन्हे देखते ही कहा— फातमा एक पान हम भी खायेंगे।

अपरिचित लडक के मुह से अपना नाम सुनकर पुत्रवधु को चक्कर आ गया। दो क्षण के पश्चात् उन्होंने आखें खोलकर देखा तो लडका तीन दरवाजों को पारकर एक कमरे का द्वार खोलने का प्रय न कर रहा था यह कमरा पुत्रवधु का था। फातिमा बेगम ने लडके को गोद में लेना चाहा किन्तु उसने कहा— तुम मेरी बीबी हो फातिमा। मै अपनी कुर्सी पर बैठू गा।

ज्ञात हुआ कि फातमा बे म के पति मोहम्मद फारुख की मृ यु आज से ठीक पाच वष पूव हुई थी। बच्चे की बात सुनते ही फातमा बेगम मूर्छित होकर गिर पडी। घर के अ य ला। बाहर से मास्टर साहब और जनाब इकरामअली को ले आये। दोनो ने देखा कि लडका फातिमा बेगम के कमरे की नीच लगी हुई चटखनी हटाकर अन्दर एक कुर्सी पर बैठा हुआ है। थोडी देर बाद होश आने पर फातिमा बेगम ने घबराते हुए सारी बातें जनाब इकरामअली को सुनाई। पहले तो उन्होंने इस बात को हंसी मे उडाते हुए मन का वहम बताया कि तु जब लडके ने उनसे कहा कि अब्बा मियां सलाम। आप मुझ नहीं पहचानते म फारुख हू।' तो इकरामअली भी चक्कर खाकर गिर पडे लडके ने घर वालों को बताया कि मेरा बैंक मे ३००० रु जमा है। उसन यह भी बताया कि मैने अपने बडे भाई उमर आदिल के पास ५००० रु पाकिस्तान भेजा है।

ध्यान रहे कि उमर आदिल आजकल लाहौर में है और जूतो की तिजारत करते है। मृतक मोहम्मद फारुख का इरादा पाकिस्तान जाकर तिजारत करने का था।

जनाब इकरामअली ने कहा कि पुनज म में मैं विश्वास नहीं करता कि तु मेरी आखों के सामने जो प्रत्यक्ष प्रमाण है उन्हें मै झुठलाना नहीं चाहता। आपने बताया कि उक्त लडक ने मेरी पुत्रवधु फातिमा की वह तमाम बातें बताई हैं जो मेरे मरहूम पुत्र मोहम्मद फारुख के अलावा किसी

को भी मालूम नहीं थीं। लड़के ने यह भी बताया है कि उसके ससुर के यहां एक बन्दूक थी जिसे किसी ने चुरा लिया था।

(नवभारत टाइम्स २७ ६ ५९)

इस घटना की राज्याधिकारियों के समक्ष ठीक २ जांच की परमावश्यकता है। आर्य समाज बरेली को तत्काल इस विषय मे उचित कार्यवाही करनी चाहिए।

श्री गोस्वामी जी

श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी के निधन से पंजाब के सार्वजनिक जीवन मे एक बहुत बड़ी कमी व्याप्त हो गई है। उन्होंने निरन्तर कई वर्ष तक हिन्दू समाज की सेवा की और पंजाब के सार्वजनिक जीवन को प्रभावित किया। यद्यपि वे सनातन धर्मी थे तथापि उदार थे। हिन्दू हित के प्राय प्रत्येक कार्य में वे आर्य समाज इत्यादि सभी को सहयोग देने मे समुद्यत रहते थे। पंजाब के सार्वजनिक जीवन मे सचमुच उनका अभाव चिरकाल तक खटकेगा।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

केरल के ईसाई

सहयोगी वीर अर्जुन लिखता है --

केरल में कैथोलिक ईसाई दूसरे ईसाईयों से अधिक हैं। वे २१ लाख १० हजार है एवं दूसरे ईसाई १३ लाख ५० हजार। इस प्रकार कुल ईसाई ३४ लाख है। कैथोलिक ईसाई दो वर्गों मे विभाजित है। इस विभाजन में हिंदुओं की जाति पांति भी एक कारण है। एक वर्ग का नाम है सीरियन कैथोलिक एवं दूसरे का लटिन कैथोलिक। पहला वर्ग जो अधिक शिक्षित एवं प्रगतिशील है उन लोगों पर आधारित है जिन्हें सैंट टामस ने ईसाई बनाया था। इसमे वह ईसाई भी सम्मिलित हैं जो स्याम (सीरिया) से केरल मे स्थानांतरित होकर आए थे। दूसरा वर्ग उनका है जिसे सैंट फ्रांसिस जैवियर ने मछियारों एवं अन्य पिछड़ी जातियों में से ईसाई बनाया था। दोनो के पृथक् २ संगठन हैं और अपने आर्च बिशप हैं। केरल में चर्च अत्यन्त धनी हैं। उनकी सम्पत्ति भी है और उनके पास प्रचुर धनराशि भी है। इसमे से बड़ा अंश वह है जो केरल के हिंदु राजाओं द्वारा ईसाई मिशनों को दान स्वरूप दिया गया है। चर्च की सम्पत्ति कितनी है इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता क्योंकि उसके आय व्यय का विवरण प्रकाशित नहीं किया जाता। इसकी सम्पत्ति का प्रबन्ध एक बिशप के आधीन है जिसने प्रबन्ध में सहायतार्थ पादरियों की एक कौंसल बना रखी है। बिशप और यह कौंसल सांसारिक ईसाईयों के समक्ष किसी प्रकार भी उत्तरदायी नहीं। वह अपनी विस्तृत साधनों से प्राप्त आय को जिसप्रकार चाहे खर्च कर सकतेहैं। ये पादरी तथा वहां की सब संस्थाएं केरल के कम्युनिस्ट मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध संगठित हो गई हैं। हमारे प्रधानमंत्री महोदय सब कुछ प्रत्यक्ष रूपसे देख आए है। उनके विचार में जो आंदोलन इस समय वहां हो रहा है उसका अनुमान बाहर से नहीं लगाया जा सकता। यह साम्प्रदायिक आन्दोलन नहीं अपितु प्रांत के तमाम दलों की ओर से है। इसकी नींव बड़ी गहरी है। इस आन्दोलन मे ईसाई भी सम्मिलित हैं। मुसलमान भी औरनायर भी। कांग्रेस, प्रजा समाजवादी, समाजवादी, क्रांतिकारी समाजवादी और मुस्लिम लीग भी। मुसलमान २५ लाख के लगभग बताए जाते हैं और पुराने विचारों के है। यह मुसलमान कहां से आए। इतिहास बताता है कि मालाबार के एक हिंदु राजा ने विचार किया कि अपने क्षेत्र की विशेष वस्तुएं विदेश भेजी जायें जिससे देश का व्यापार उन्नत हो। जब उसने अपने मन्त्री से यह आशय प्रकट किया तो उसने कहा कि पहले राज पुरोहित से परामर्श कर लें। राजपुरोहित ने कहा कि शास्त्र समुद्रोल्लघन की आज्ञा प्रदान नहीं करता इस पर उस राजा ने अरब से नाविक मगवाये।

(शेष पृष्ठ २५५ पर

चरित्र-निर्माण

[लेखक—श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रयाग]

चरित्र निर्माण सब से कठिन काम है। चरित्र निर्माण पर लेख लिखना आसान, कविता करना आसान और व्याख्यान देना आसान है, परन्तु अपने चरित्र का निर्माण अत्यन्त क्लिष्ट है।

चरित्र निर्माण के लिये तीन चीज़ें चाहियें। एक प्रबल इच्छा शक्ति, दूसरी सामाजिक परिस्थिति, तीसरा उच्च आदर्श। सभी जानते हैं कि सदाचारी होना चाहिये। सभी जानते हैं कि सदाचार के मोटे नियम क्या हैं? सभी जानते हैं कि दुराचार बुरी चीज़ है परन्तु फिर भी संसार में दुश्चरित्रता की शिकायत ही रहती है। इस का कारण यह है कि यद्यपि सदाचार अच्छी चीज़ है फिर भी दुराचार में एक विशेष रस है जिस की ओर आकर्षित न होने के लिए साहस चाहिये।

सभी मनुष्य सत् चरित्र के मूल्य को नहीं जानते। कभी कभी यह लगता है कि दाल में नमक के समान झूठ भी जीवन को मजेदार बना देता है। बिना झूठ के काम नहीं चलता। ऐसा सभी मनुष्यों का विश्वास है। यह तो सब जानते हैं कि शत् प्रतिशत झूठ बुरी चीज़ है, यह व्यवहार्य भी नहीं है परन्तु इस के साथ ही शुद्ध, विशुद्ध सत्य भी व्यवहार्य नहीं प्रतीत होता। प्रसिद्ध है कि 'सत्यमेव जयते" सत्य का ही विजय होती है। परन्तु विजय की अन्तिम प्राप्ति से पहले बीच में भी तो बहुत से काम पड़ते हैं, इस लिए झूठ को कुछ न कुछ स्थान तो दिया ही जाता है।

यदि मनुष्य को यह विश्वास हो जाय कि दुराचार आत्मा का घातक है, तो भी इस विश्वास को कार्यरूप में लाने के लिए आत्मिक बल चाहिए क्योंकि हमारे चारों ओर प्रलोभन लगे रहते हैं। इन से बचना कठिन होता है। घर में मिठाई रखी है। माता से माँगने पर मिले या न मिले इसलिये बच्चा चुरा लेता है। सच बोलने पर मार पड़ेगी, इसलिये झूठ का आश्रय लेने लगता है। जो बात घर में बच्चे पर लागू होती है वही समाज या देश में बड़े आदमियों पर। बात वही है क्षेत्र बदल जाता है। क्लर्क रिश्वत लेता है। वकील मुकदमों में झूठ बोलता या झूठ बुलवाता है। दुकानदार कम तोलता या कम नापता है। असली माल में नकली मिला देता है। निर्वाचन (इलैक्शन) में मतदाता और मत आदाता दोनों सुभीते के अनुसार झूठ बोलते हैं। गुरु चेलों में अन्ध विश्वास उत्पन्न करने के लिये झूठ बोलता है और चेले भी गुरु से अनुचित लाभ उठाने के लिये झूठ का व्यवहार करते हैं। पुजारी उपासकों की जेब से धन खींचने के लिये इष्टदेव के विषय में झूठी बातें फैलाता है और उपासक भी सड़ी गली चीज़ देवता को भेंट करके झूठ के मूल्य को सिद्ध करते हैं। राजनैतिक क्षेत्रों में अलकृत झूठ को प्रशस्त समझा जाता है। अतः कहना चाहिये कि झूठ और दुश्चरित्रता का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। यह आकाश के समान व्यापक है। यदि ऐसा न होता तो हम सब मुमुक्षु जीवन मुक्त और मुक्त होते।

फिर भी सृष्टिक्रम में झूठ को स्थान नहीं इसलिये जब झूठ मात्रा से बढ़ जाता है तो हाहाकार मच जाता है।

जो व्यक्ति 'अपना' चरित्रनिर्माण करना

चाहता है उसे इच्छा शक्ति को बढ़ाना पड़ता है। मैंने यहां 'बनना' शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि मेरी धारणा है कि हम दूसरों का चरित्र नहीं बना सकते। उस पर केवल कुछ दूरस्थ प्रभाव ही डाल सकते हैं। अपना चरित्र बनाना ही अपने अधिकार में है। यदि हम बार बार यह सोचें कि दुश्चरित्रता से हमीं को हानि होती है, तो सतत् प्रयत्न के पश्चात् हम में इच्छा शक्ति बढ़ जाती है और हम प्रलोभनों से बच सकते हैं। परन्तु है यह अत्यन्त कठिन बात।

समाज की परिस्थिति का वैयक्तिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है। वह दो प्रकार से, एक तो हम दूसरों को दुश्चरित्र में फंसा हुआ देखते हैं और यह समझ लेते हैं कि ऐसा तो सभी करते हैं। बेटा बाप को झूठ बोलते देखता है। छोटा अफसर बड़े अफसर को झूठ बोलते देखता है। छोटा व्याख्यान दाता बड़े व्याख्यान दाता को जान बूझ कर असत्य प्रमाण और असत्य युक्तियां देते देखता है। अतः उसे भी प्रलोभन होता है कि इस असत्य से प्राप्त विजय या यश से क्यों न लाभ उठाया जाए। दूसरे कभी कभी सामाजिक परिस्थिति ऐसे बिगड़ जाती है कि धर्म पर चलने वाले को झूठ बोलने वाले की अपेक्षा अधिक विपत्तियां सहनी पड़ती हैं। एक सुन्दर स्त्री को सतीत्व की रक्षा करना कितना कठिन होता है। मध्य कालीन राजस्थान का इतिहास बताता है कि रूपवती राजकन्याओं को अपना धर्म बचाने के लिए अधिकतर विष पीना पड़ा। यह उदाहरण जहां उन कन्याओं की वीरता को जताते हैं, वहां यह भी सिद्ध करते हैं कि उन दिनों की राजपूतों की सामाजिक अवस्था अत्यन्त दूषित और लज्जा जनक थी। जिस समाज में सच बोलना कठिन और आपत्तिजनक हो और मक्कारों का बोलबाला हो वहां सच्चरित्रता कठिन हो जाती है। कभी कभी आदर्श भी दुश्चरित्रता को प्रलोभन देते हैं। युधिष्ठिर ने झूठ बोला था। श्रीकृष्ण ने अमुक स्थान पर छल से शत्रु को मारा था। अमुक नेता ने अमुक स्थान पर कपट या चालाकी से अपने देश को इतना लाभ पहुंचाया। ऐसे दृष्टान्तों से इतिहास और धर्मशास्त्र भरे पड़े हैं और इस शिक्षा से प्रेरित होकर बहुधा मनुष्य अपने कर्तव्य से गिर जाते हैं। जो नहीं गिरते उनको उन के साथी बदनाम करते हैं। महात्मा गांधी को तो कई बार अपने मित्रों के हाथों ही बदनाम होना पड़ा। क्योंकि बहुत से लोग ऐसे हैं जो वैयक्तिक रूप से चाहे झूठ और हिंसा को बुरा ही समझें, परन्तु देश, धर्म और समाज के हित में भीषण से भीषण पापों को भी बुरा नहीं समझते। भारवि ने किरातार्जुनीय काव्य में द्रौपदी के मुख से यह कहलाया है —

> व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्।
> भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः॥

अर्थात् जो मूर्ख लोग मक्कारों से मक्कारी नहीं करते वे शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

इस प्रकार की शिक्षाएं जब तक प्रचलित हैं चरित्र निर्माण के लिये उपयुक्त स्थान नहीं मिल सकता। कुछ लोग ऋषि वचनों को भी तोड़ मरोड़ कर अपने अनुकूल बना लेते हैं। आर्य समाज का सातवां नियम है —

"सब से प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बरतना चाहिये।" सत् चरित्रता के लिये यह एक बहुत अच्छा नियम है, परन्तु मैंने कई आर्य सामाजिकों को जो 'जैसे को तैसा' नियम के विश्वासी हैं यह कहते सुना है कि 'यथा योग्य का अर्थ ही यह है कि जो अपने साथ असत्य का व्यवहार करे उसके साथ असत्य का ही व्यवहार करना चाहिये। लोहा लोहे को काटता है, इन लोकोक्तियों का कुछ भी लौकिक मूल्य क्यों न हो एक बड़ी हानि यह होती है कि सत्य और अहिंसा

का मूल्य सापेक्ष रह जाता है। अर्थात् जहा लाभ की आशा हो वहा सत्य और अहिंसा का बरताव करो, जहा काम अन्यथा चलता हो वहा इन शुभ गुणों की आवश्यकता नहीं। जब यह सिलसिला शुरू हो गया तो इस का अन्त नहीं मिलता। दूर मे पानी मिलता ही जाता है। इस प्रकार 'चरित्र' और 'दुश्चरित्र' की भेदक भित्ति गिर जाती है। चरित्र निर्माण का सब से बड़ा घातक यह सिद्धात है कि धर्म और जाति के लिए असत्य और 'अहिंसा', भी दोष नहीं। व्यक्तिगत लोभ या व्यक्तिगत कमजोरिया इतने पाप नहीं करातीं, जितना कि धर्म के लिए होता है। क्योंकि अन्य पापी तो अपने को पापी समझ कर कभी पछताते भी हैं परन्तु धर्म या समाज के लिए पाप करने वाला तो डके की चोट अभिमान पूर्वक अपने पापों की घोषणा करता है। उसे विश्वास है कि ईश्वर उस के पापों के लिये उस को दण्ड नहीं, अपितु इनाम देगा। आजकल सत्याग्रहों की एक धूम सी मची है और जब मैं इन का विश्लेषण करता हू तो इन में सब से बडी हत्या 'सत्य' और 'सच्चरित्रता' की पाता हू। 'वीरता' और 'निडरपन' के भीतर अनेक पाप छिप जाते हैं। भावनायें कुछ होती हैं और उन को कुछ कह कर प्रकट किया जाता है। असद्भावना को सद्भावना और सद्भावना को असद्भावना कहा जाता है। नेताओं के लिये सभी कुछ विहित है। ऐसे वातावरण में चरित्र निर्माण कैसे किया जाय यह एक पहेली है।

आर्यसमाज के भीतर भी यह रोग उतना ही कम है, जितना अन्यत्र। एक दल दूसरे दल को और एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को दोषी ठहराता है। अत स्थिति वैसी की वैसी ही रहती है।

आर्यसमाज मे बहुत से व्यक्ति हैं जो सच्चरित्रता के वैयक्तिक रूप पर ध्यान देते हैं। यथाशक्ति झूठ नहीं बोलते, बुरी आदतों से बचे रहते हैं, दूसरों से द्वेष भी नहीं रखते, परन्तु आर्यसमाज में ऐसों का कोई मान नहीं। उनको मूर्ख समझा जाता है। यह बात नहीं कि सच्चरित्रता और दुश्चरित्रता का भेद लोगों को ज्ञात नहीं। सब दिल में जानते हैं कि अमुक व्यक्ति में अमुक दोष है परन्तु अपने दल के पक्ष को पुष्ट करने वाले का हर दोष क्षम्य है। चरित्र की कसौटी दल के पक्ष की पुष्टि है।

ऐसी दशा में चरित्र निर्माण के प्रश्न को उठाना कुछ अधिक उपयोगी प्रतीत नहीं होता। यदि किसी व्यक्ति को अपने चरित्र निर्माण की आकाक्षा है तो वह थोड़े से धर्म ग्रन्थों के पाठ से व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है और यदि वह व्यक्तिगत सुधार करना चाहे तो कर सकता है। परन्तु उसको मानापमान का विचार छोड़ देना पड़ेगा। समाज या नेताओं से उसे आशा नहीं रखनी चाहिए। 'वह और उसका ईश्वर' इतने तक ही सीमित रहना पड़ेगा। स्वामी जी महाराज ने शायद वर्तमान परिस्थिति को दृष्टि में रखकर ही सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में मनुस्मृति का यह श्लोक उद्धृत किया था —

समानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादपि।
अमृतस्यैव चाकांक्षेदवमानस्य सर्वदा ॥

(आर्यवीर चरित्र निर्माण अक)

पूना में पौराणिकों द्वारा आयोजित सपशु वाजपेययाग— और मेरे ११ दिन

[लेखक—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री]

महाराष्ट्र की प्रसिद्ध नगरी पूना में एक पशुबलियुक्त वाजपेय याग चल रहा है। इसकी योजना एक महाराष्ट्रीय सज्जन के पच्चीस सहस्र रूपये के दान से की गयी है। महाराष्ट्र तथा बाहर के बहुत से पौराणिक विद्वान् उसमें भाग ले रहे हैं। अप्रैल में बम्बई में मैंने इस यज्ञ की चर्चा सुनी थी परन्तु यह विश्वास नहीं था कि इसमें पशुबलि दी जावेगी। क्योंकि कुछ वर्ष पहले भी पूना में ऐसा ही वाजपेय यज्ञ हुआ था परन्तु जनता और आर्यों के अनुरोध से उसमें पशुबलि नहीं दी गई थी। कहते हैं कि उपलक्षण के रूप में आटे का पशु उसमें भी प्रयुक्त किया गया था। यज्ञ का बड़े धूमधाम से प्रचार हो रहा था और साथ ही स्थानीय आर्य समाज पूना और जनता की ओर से भी इस पशुबलि का घोर विरोध किया जा रहा था। यह बात गत अप्रैल मास की २०, २१ तारीख तक की है।

मैं बम्बई से वापस अपने स्थान पर नासिक आ गया। वैदिक रिसर्च का एक बड़ा भारी कार्य उठा रखा है उसमें ही तल्लीन था कि २३ अप्रैल को पूना आर्य समाज के मन्त्री का एक्सप्रेस तार मिला। तार में लिखा था "पशुसहित याग हो रहा है और शास्त्रार्थ होने वाला है अतः आप शीघ्र ही पहुचें।" अनेक कार्यों के होते हुए भी इस परिस्थिति में पहुँचना आवश्यक था। मैंने सब छोड़कर पूना के लिए प्रस्थान किया। मन्त्री को तार दे दिया कि मैं आ रहा हूँ। २४ अप्रैल को सायंकाल मैं पूना पहुँचा। यज्ञ का प्रारम्भ स्यात् २५ से होने वाला था। पूना पहुँचने पर आर्य समाज के प्रधान बख्शी दुर्गादास जी ने सारी परिस्थिति से अवगत कराया। आर्य समाज ने पर्याप्त विरोध किया था। जनता भी इस यज्ञ के कर्त्ताओं के अनुकूल नहीं मालूम पड़ती थी पत्रों में भी इस कार्य के प्रतिकूल विचार व्यक्त किये जा रहे थे। प्रधान आर्य समाज ने बताया कि जनमत को उभाड़ने के अतिरिक्त उन्होंने वैधानिक रूप से भी जनता में खुले रूप में किये जाने वाले इस कार्य के रोकने की कार्यवाही की थी। परन्तु इस कार्यवाही को देखकर यज्ञ के कर्त्ताओं ने इसे व्यक्तिगत धार्मिक कृत्य घोषित कर दिया। इस घोषणा के हो जाने के बाद कृत्य का रूप व्यक्तिगत और सीमित हो गया अतः वैधानिक रूप से यह नहीं रोका जा सकता था। प्रधान समाज ने मुझे यह सब ब्योरा सुना दिया और यज्ञ कर्त्ताओं को एक शास्त्रार्थ का आह्वान छपाकर भेज दिया। इसके पूर्व भी उन्होंने एक आह्वान भेजा था। एक पत्र उन्होंने श्री श्रीधर शास्त्री वारे को भेजा कि आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री पधारे हैं, वे आपके मित्र हैं आपसे वार्तालाप करना चाहते हैं। समय नियत कर लिखें।" ज्ञात रहे कि यह श्रीधर शास्त्री वारे ही इस यज्ञ को कराने वाले विद्वान् हैं। महाराष्ट्र के कर्मकाण्डी पौराणिक विद्वानों में इन की ख्याति है।

रात्रि में यज्ञ की वेदी जहां पर बन रही थी, प्रधान के साथ मैं उक्त शास्त्री जी से मिलने गया। शास्त्री जी बड़े प्रेम और आदर से सदा की भांति मिले। वार्ता के दौरान में मैंने उनसे कहा कि मित्र के रूप में मेरी यही सलाह है कि आप यज्ञ तो करें परन्तु पशुबलि कार्य को छोड़ दें। इससे

जनता में आपके कार्य की प्रशंसा होगी। साथ ही सभी की सहानुभूति भी बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। विवशता है। भले ही उसे हमारा अन्धविश्वास समझें अथवा परम्परा से आयी हुयी श्रद्धा समझें —यह कृत्य तो अब किया ही जावेगा।" मैंने कहा यह कर्म अवैदिक है, शास्त्रार्थ करके निश्चय करलें।" उन्होंने कहा 'मैं शास्त्रार्थ आपसे नहीं कर सकता। आप इसे हमारा अन्ध विश्वास समझें। परन्तु यह करना है।' शास्त्रार्थ का इनकार होने पर मैं प्रधान के साथ वापस आर्यसमाज मन्दिर को चला। श्री बारे शास्त्री ने बड़े आदर के भाव व्यक्त किये। मैंने देखा कि मेरी यहां पर कारगर नहीं होती दीखती और शास्त्रार्थ की करने को इनमें से कोई तैयार नहीं। अतः अब दूसरा ही मार्ग अपनाना चाहिए। प्रधान आर्य समाज ने कहा कि अब यही ठीक है कि नोटिसों और समाचार पत्रों में शास्त्रार्थ का चेलेंज प्रकाशित कर दिया जावे और दो चार रोज उसकी प्रतीक्षा करते हुये समाज मन्दिर एवं शहर में एक अन्य स्थान पर भाषण तथा शंका समाधान रखा जावे। इनमें यह बतलाया जावे कि यह कार्य अवैदिक है। समाज की ओर से ऐसा ही किया गया। दिन समाप्त हो गये परन्तु शास्त्रार्थ करने को कोई नहीं आया। अतः अब वहां बैठा रहना उचित न समझकर गृह वापस आने की तय्यारी की जाने लगी। पिम्परी आर्य समाज के लोगों ने कहा कि दो दिन उनके यहां और दो दिन किरकी मे भी भाषण हो जावे। मैंने स्वीकार कर लिया। पिम्परी गया और वहां का प्रोग्राम समाप्त कर पूना आने वाला था कि सूचना मिली कि शास्त्रार्थ का आह्वान् आया है। पूना आने पर पता चला कि मेरे पूना से चले जाने का समाचार पाकर कुछ नवयुवक पण्डितों ने एक समाचार पत्र में यह आह्वान किया है कि यदि सोमवार को शंकराचार्य मठ में पण्डितों की सभा में वे नहीं आये, तो आर्य समाजकी हार समझीजावेगी। यह शनिवार का दिन था। उनका ख्याल था कि मैं नासिक चला गया हूं और सोमवार प्रातः तक वहां पहुंच सकूंगा नहीं और उनकी बात बन जावेगी। परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम था कि मैं वहीं पर था। यह सभा भी इनकी थोड़े से पण्डितों की थी और चाहते थे कि आर्य समाज के भी दस पांच आदमी आवें। उन्होंने शास्त्रार्थ तो देखा नहीं था। समझते थे कि डिबेटिंग क्लब की तरह होगा।

रात्रि में पूना समाज के उपप्रधान श्री दानसहाय आर्य कुछ और कार्यकर्त्ताओं के साथ समय और नियम आदि का निर्णय करने के लिये उन पण्डितों के पास गये। पहले वे यज्ञ समिति के मन्त्री के पास गये और पूछा कि क्या शास्त्रार्थ का आह्वान आपकी ओर से है? उन्होंने जवाब दिया कि उनकी ओर से कोई आह्वान नहीं दिया गया है। पुनः ये लोग स्थानीय शंकराचार्य मठ में गये और पूछा कि क्या वहां से आह्वान किया गया है। श्री शंकराचार्य जी ने उत्तर दिया कि उनकी ओर से शास्त्रार्थ का कोई आह्वान् नहीं है। पुनः ये उन युवकों के पास गये। उन्होंने उत्तरदिया कि उन्होंने तो उनको पंडित सभा में बुलाया है और बन्द कमरे में केवल वार्तालाप होगा। दश से ज्यादा व्यक्ति वहां नहीं आ सकते और वार्तालाप भी संस्कृत में ही होगा। आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने कहाकि शास्त्रार्थ का आह्वान् स्वीकार है आप चल कर आर्य समाज मन्दिर में नियम आदि का निर्णय करलें। अतः वे लोग समाज में मेरे पास आये संस्कृत में वार्तालाप करने लगे। मेरी तरफ से आधे घण्टे तक परिमार्जित संस्कृत में उन्हें उत्तर दिया गया। संस्कृत का भाषण सुनकर उनके चेहरेपर अन्तर पड़नेलगा। वे चाहतेथे कि शास्त्रार्थ का एकही निर्णायक हो। समाज चाहता था कि दोनों तरफसे दो निर्णायक अथवा मध्यस्थ हों। वे कहते थे कि शास्त्रार्थ बन्द कमरेमें होगा और संस्कृत में ही होगा। आर्य समाज चाहता था कि शास्त्रार्थ

जनता में होगा और संस्कृत का अनुवाद जनता को हिन्दी में सुनाया जावेगा। स्थान खुला और पब्लिक का होगा। वे किसी बात पर तयार नहीं हो रहे थे। अतः यह मान लिया गया कि हम एक निर्णायक को भी मान लेंगे। बहुत ननु नचके बाद निश्चय हुआ कि शास्त्रार्थ जनता में होगा। आर्य समाज का एक ही पंडित सबसे क्रम से शास्त्रार्थ करेगा। विरोधी पक्ष के चार पंडित अथवा दश पंडित होंगे। शास्त्रार्थ संस्कृत मे होगा परन्तु हिन्दी में उसका अनुवाद जनता को सुना दिया जावेगा। सोमवार को ६ बजे रात्रि मे शास्त्रार्थ होगा। शास्त्रार्थ का चैलेंज देने वाले जिज्ञासु भाव से यह कर रहे है। उनका यज्ञ करने वाला अथवा किसी संस्था से सम्बन्ध नहीं है। स्थान और मध्यस्थ का नाम कल सूचित किया जावेगा। दूसरे दिन पता चला कि वे एक मध्यस्थ नहीं दो मध्यस्थ चाहते हैं। सायंकाल पता चला कि वे जनता में शास्त्रार्थ नहीं करना चाहते। केवल व्यक्तिगत वार्तालाप से उन का मतलब है जो व्यक्तिगत है। शास्त्रार्थ नहीं करना चाहते। उन्होंने समाचार पत्र में इस आशय का समाचार भी निकलवाया। आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को बड़ा क्षोभ हुआ। श्रीदानसहाय आर्य उपप्रधान समाज और श्री विजयकुमार चौकसे उनके पास गये। उन्होंने उनसे कहा कि जनता में शांतिभंग हो जावेगी। वे शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार नहीं है। वे तो अपना व्यक्तिगत विचार विमर्श ही करना चाहते थे। श्री दानसहाय जी ने कहा कि आप डरे नहीं जनता में शांतिभंग न होने दी जावेगी। इसकी जिम्मेदारी समाज लेने को तैयार है। परन्तु इस पर भी विपक्षी लोग शास्त्रार्थ के लिए तैयार नहीं हुए। इस पर उसी पत्र में जिसमें उन लोगों का समाचार छपा था श्री दान-सहाय आर्य ने वक्तव्य दिया कि शास्त्रार्थ का आह्वान् करनेवाले शास्त्रार्थ करने को तय्यार नहीं। वे एक प्रकार से अपना आह्वान् वापस ले चुके हैं अतः हम किसी व्यक्तिगत विचार सभा में जाने को तैयार नहीं। हमारी शास्त्रार्थ की स्वीकृति खुले जनता में शास्त्रार्थ करने की थी। जिसे करने को विपक्षी दल तय्यार नहीं। जब शास्त्रार्थ की कोई सम्भावना न रही तो मैं वापस नासिक आ गया। यज्ञ अभी हो रहा है। उसमें पशुबलि भी सुना है की जा रही है। जनता की ओर से विरोध भी जोरों का चल रहा है।

यहां पर विचार सामने यही खड़ा होता है कि क्या इन यज्ञों में ऐसा ही होता रहेगा। कबतक यह पाखण्ड चलता रहेगा। आर्यसमाज को चाहिए कि वह यज्ञों की विधियों को दुरस्त कर उनका विशुद्ध रूप लोगों के समक्ष रखे। थोड़े से विद्वान् हैं जो इन कार्यों को कर सकते हैं। नये विद्वान् ऐसे पैदा नहीं हो रहे हैं। यदि इनसे काम न लिया गया तो बाद में बहुत पछताना पड़ेगा। सभी श्रौतसूत्रों और ब्राह्मणों का ऊहापोह कर यज्ञों की विधियों को स्पष्ट कर देना एक आवश्यक कार्य है।

—यदि यज्ञ में बलि देने से प्राणी स्वर्ग में जाता है तो मनुष्य अपने माता-पिता पुत्र तथा कुटुम्बियों की बलि देकर यज्ञ क्यों नहीं करते ?

लाजाहोम की परिक्रमाओं में वर आगे और वधू पीछे चले

(लेखक—स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती, आर्यसमाज, हापुड)

[गताङ्क से आगे]

श्री रामअवतार जी ! संस्कार चन्द्रिका, संस्कार-विधि भाष्य तथा आर्य विवाह पद्धति आदि ग्रन्थ संस्कार विधि के व्याख्या ग्रन्थ होने के कारण जहां तक ये अपने व्याख्येय ग्रन्थ के अनुकूल हैं वहां तक तो मान्य और इसके विपरीत अमान्य समझे जायगे। सार्वदेशिक सभा ने आज तक इन ग्रन्थों को कभी भी आर्य जगत् के लिये प्रामाणिक घोषित नहीं किया तो अप्रामाणिक घोषित करने का प्रश्न ही नहीं उठता। ये ग्रन्थ विभिन्न आर्य विद्वानों ने अपने व्यक्तिगत परिश्रम से अपने ही दायित्व पर लिखे हैं। भूल सभी से सम्भव है। मैं भी भूल कर सकता हूं आप भी भूल कर सकते हैं और अन्यों से भी भूल हो सकती है। इसलिए यदि उक्त ग्रन्थों में किसी कारण वश भूल से यह लिख दिया गया कि "परिक्रमा करते समय तीन बार वधू आगे और एक बार वर आगे रहे' तो हम इसे सुधार लेवें यही समुचित उपाय है। इसी प्रकार के अनेक विवादों को सुलझाने के लिए इस समय सार्वदेशिक धर्मार्य सभा विचार कर रही है। हमें धैर्य के साथ उसके निर्णय की प्रतीक्षा करनी चाहिये।

श्रीमन् ! आपने अपने लेख में आधुनिक व्याख्या नाम से सार्वदेशिक के पृ० १६० पर जो ये पंक्तिया लिखी हैं कि "पृथिवी सूर्य की वर्ष में यानी तीन अयनों की प्रदक्षिणा करती है और सूर्य पृथिवी की एक ही दिन में प्रदक्षिणा कर लेता है।' इन्हें पढ़ कर आश्चर्य होता है कि एक आर्य समाज का मन्त्री यह क्या लिख रहा है। मेरे प्यारे बन्धु ! उत्तरायण और दक्षिणायन नाम से अयन दो ही हैं तीन नहीं, और न ही सूर्य पृथिवी की परिक्रमा करता है अपितु पृथिवी २४ घण्टे से कुछ ही कम काल में अपनी कील पर एक बार घूम लेती है, जिससे दिन रात बनते हैं और वर्ष भर में सूर्य के चारों ओर घूम कर सूर्य की एक प्रदक्षिणा पूरी करती है जिससे ऋतु अयन और वर्ष बनते हैं कहिये, कैसी रही आपकी आधुनिक व्याख्या !

लेख के अन्त में भी आपने और एक ऐसी ही बात लिख दी है कि 'रक्षा करने वाला सदैव पीछे रहता है।" आपके विचार से जयद्रथ बध के दिन उसकी रक्षा के लिए सारी सेना उसके आगे और उसे सब से पीछे करना भारी भूल थी, पर वास्तव में जब तक वह सेना के पीछे और सेना उसके आगे रही उसकी रक्षा होती रही और ज्यों ही आपके मतानुसार वह अपने रक्षक दल के आगे आया अर्जुन ने तत्काल सवरा के लिए उसका जीवन दीप बुझा दिया। श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी की रक्षा की अपने पीछे रथ में बैठा कर। अर्जुन ने सुभद्रा की रक्षा की अपने पीछे रथ में बैठा के पृथ्वीराज ने संयोगिता की रक्षा की अपने पीछे घोड़े पर बैठा कर। यदि ये तीनों जन आपके मतानुसार रुक्मिणी, सुभद्रा और संयोगिता को अपने आगे रख कर उनकी रक्षा का यत्न करते तो कभी भी उन्हें न बचा पाते और स्वयं जेल के सींकचों में बन्द होते। भाई मेरे ! अब तक तो यही नियम रहा है कि 'रक्षक आगे और रक्ष्य पीछे रहे।" सचमुच करना भी ऐसा ही पड़ेगा यदि किसी की रक्षा करनी है तो ! साथ ही आप

को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हम एक शास्त्रीय विषय पर विचार कर रहे हैं मनघड़न्त कल्पनाओं पर नहीं। इस लिये भी आपकी कल्पित व्याख्याओं का कोई मूल्य नहीं है। वेद मन्त्रों पर विचार —

श्री राम अवतार जी! आपने मेरे प्रस्तुत मन्त्र में आये "अनुव्रता" पद का अर्थ "अनुकूल वर्तन हारी" दिया है। ठीक है, इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं यही सही इसी मार्ग पर स्वयं भी तो चलिये। अथर्ववेद १४। १ के ५६ वें मन्त्र मे आया "अन्वर्तिष्ये" पद और अथर्ववेद के १४। १ के ४२ वें मन्त्र में आया "अनुव्रता" पद ये दोनों सोपसर्ग 'वृतु वर्तने" इस एक ही धातु के रूप हैं इसलिए यदि अनुव्रता पद का अर्थ अनुकूल वर्तने वाली किया जावेगा तो "अन्वर्तिष्ये" का अर्थ भी मैं अपने इन नवागत मित्रों सहित इस वधू के 'अनुकूल वर्तूंगा' यह होगा पीछे चलूंगा यह नहीं। क्योंकि बरात में समागत वर के समस्त मित्रों के लिए ही मन्त्र में 'सखिभि:" इस बहुवचन का प्रयोग हुआ है। आपके मतानुसार तो प्रदक्षिणा करतेसमय लगभग सभी बरातियों को वर के साथ प्रदक्षिणा करने का विधान हो जाता है और ऐसा करना एक उपहासास्पद क्रिया होगी वास्तव में वर का यह कहना कि मैं अपने इन नवागत मित्रों सहित इस वधू के अनुकूल वर्तूंगा यह तो एक आदर्श है पर वर अपने सब मित्रों सहित वधू के पीछे २ चल कर परिक्रमा करे इसमें कौन सा आदर्श है और कौन सा विधान? इस लिए बात वही ठीक है जो मैं अपने पिछले लेख में सप्रमाण सिद्ध कर चुका हूं कि "लाजाहोम की परिक्रमाओं में वर आगे और वधू पीछे रहे।

पाणिग्रहण की क्रिया लाजाहोम की परिक्रमाओं के पश्चात् वधू वर द्वारा दी गई "भगाय स्वाहा" और "प्रजापतये स्वाहा" इन आहुतियों के साथ समाप्त होती है। गृभ्णामि ते सौभागत्वाय हस्तम् से लेकर प्रजापतये स्वाहा तक एक कर्म है और इस सम्पूर्ण कर्म में वर वधू के आगे रहेगा। जैसा कि आपने भी अथर्ववेद १४। १। ५६ का जयदेव भाष्य लिखते हुए 'धाता विपश्चित पति मस्यै विवेद भगो राजा पुर एतु प्रजानन्" इस मन्त्र भाग का अर्थ 'ऐश्वर्यवान् चित्त को अनुरंजन करने में समर्थ ज्ञानी पुरुष कन्या का पाणिग्रहण करने के लिए आगे आवे" यह लिखा है। 'पुर कन्याया अग्रे एतु गच्छतु" इत्यर्थ। इण गतौ। अर्थात् पाणिग्रहण की सम्पूर्ण क्रिया में प्रदक्षिणा करते समय वर वधू के आगे चले। पाणिग्रहण की क्रिया में पाणिग्रहण के छ मन्त्रों के पश्चात् की एक और लाजाहोम की तीन इस प्रकार सब मिला कर चार प्रदक्षिणायें होनी हैं। इन सब में उपरोक्त मन्त्र के आधार पर वर आगे और वधू पीछे रहेगी।

"भगस्त्वेतो नयतु हस्त गृह्य" इस मन्त्र में हस्त गृह्य (हाथ पकड़ कर) पद बड़ा मार्के का है, जो स्पष्ट घोषणा कर रहा है कि हाथ पकड़ कर ले जाने वाला हमेशा आगे रहता है और जिसका हाथ पकड़ के ले जाया जाता है वह पीछे होता है। लोक मे भी ऐसा ही व्यवहार देखने में आता है कि जब कभी हाथ पकड़ के ले जाने का अवसर स्वस्थ या रुग्णावस्था मे भी आता है तो सर्वत्र हाथ पकड़ने वाला आगे और जिसका हाथ पकड़ा है वह पीछे चल रहा है। सो इस प्रकार पक्षपात और दुराग्रह को छोड़ कर विचार करने से यही सिद्ध होता है कि वेद, ब्राह्मण, गृह्यसूत्र और संस्कार विधि इन सबका यही मत है कि "पाणिग्रहणस्थ लाजाहोम की परिक्रमाओं में सर्वत्र वर आगे होगा और वधू पीछे रहेगी।

स्वाध्याय का पृष्ठ

सत्य ही मानवता का सार है

पश्चिम में जागृति पीछे से हुई और इसने भौतिकवाद को अग्रस्थान प्रदान कर विज्ञान और उद्योग का विकास किया है। भौतिक तत्त्वों का अन्वेषण करके शक्ति के स्वरूप का प्रकटीकरण किया है। इन सब अनुसंधानों के पीछे एक परम-तत्त्व की मुख्यता है, आखिर, ऐसे आध्यात्मिक अनुमान पर ये लोग भी पहुँच गए है।

इस वैभव और उत्तराधिकार से सुसज्जित होकर हम मानवता के विकास मे किस प्रकार योग दे सकते हैं, यह महत्त्व की बात है। यह काम सहज नहीं है। हम जीवन मे मौलिक तत्त्व को ध्यान में रक्खें तो हमारा मार्ग सरल हो जाता है।

पहली बात है जीवन के व्यवहार मे सत्य का विकास। हमें विचार पूर्वक झूठ बोलने के प्रसगों से बचना चाहिए। सत्य क्या है और झूठ क्या है यह परखना कठिन नहीं है। बालक और निरक्षर तथा मूढ़ समझे जाने वाले लोग भी सत्य क्या है और झूठ क्या है इसका भेद बता सकते हैं। हमारा धर्माचरण, प्रार्थना, सत्सग इन सबका प्रयोजन सत्य का आचरण है।

परन्तु सत्याचरण पुस्तकीय उपदेश से साध्य नहीं हो सकता इसके लिए तो योग्यता और उद्यम की आवश्यकता है। सृष्टिक्रम मे हमें निश्चित स्थान प्राप्त है। उसको सुशोभित करने वाले अपने कर्त्तव्य को हम स्वीकार करे तो उसके धारण पोषण के लिए नियम पूर्वक अपने हिस्सेके कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए निष्ठा पूर्वक परिश्रम करना आवश्यक है। इसी में योग्यता और सच्चाई है। इससे अपना पिंड छुड़ाकर भागने में मानवता नहीं है।

हमें प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और दया का विकास करना चाहिए। सृष्टि को किसने पैदा किया, यह प्रश्न सहज ही है और इसमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा की बात आती है। हम ईश्वर को मानें या न मानें परन्तु सृष्टि में जो क्रमबद्धता और नियम दीख पड़ते हैं ऐसी प्रतीति हुए बिना नहीं रहती कि उनका कर्त्ता कोई होना चाहिए। उस शक्तिके सामने हम कितने असहाय हैं यह विचार करके हम विनम्रता सीखें और जगत् पिता की गोद में सिर धरकर शांति से रहें।

(श्री मोरार जी देसाई वित्तमन्त्री
कल्याण के मानवता अंक मे
प्रकाशित लेख का अवतरण
(पृ० १८३-१७४

आदर्श पुरुष के लक्षण

विश्व के आदि काल से सच्चे मानव की खोज है। आज से लाखों वर्ष पहले यही प्रश्न नारद ने आदि कवि वाल्मीकि से किया था। नारद पूछते है—ऐसा मानव कहा है ?

कोन्वस्मिन् साम्प्रत लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥
चारित्रेण च को युक्त सर्व भूतेषु को हितः।
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चक प्रियदर्शनः ॥
आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् को ऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातक्रोधस्य सयुगे ॥

(वाल्मीकि रामायण प्रथम कांड)

इस समय ससार मे ऐसा मनुष्य कौन है जो गुणवान, वीयवान् धमज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवक्ता और अपने व्रत पर दृढ़ रहने वाला हो, चरित्रयुक्त हो सब प्राणियों के हित में लगा हो, विद्वान सामर्थ्य युक्त और प्रियदर्शन हो, आत्मा को जानने वाला, क्रोध को जीतने वाला तेज युक्त और किसी से ईर्ष्या न करने वाला हो तथा यदि कभी उसे अन्याय के विरुद्ध क्रोध आ जाय तो उसके क्रोध से देव भी भयभीत हो जाते हों।

इस प्रकार नारद ने १६ गुणों का वर्णन किया जो मनुष्य मे होने चाहिएं। नारद के इस प्रश्न के उत्तर में वाल्मीकि मुनि कहते हैं।

इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी॥
बुद्धिमान्नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः॥
महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिंदमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः॥

इक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न 'राम' नाम का एक आदर्श मानव है जिसका नाम जनता में बड़ा प्रसिद्ध है। वह जितात्मा, महान बलशाली तेजस्वी, धैर्ययुक्त और सयमी है। वह बुद्धिमान, नीतिज्ञ, उत्तम वक्ता, शोभायुक्त और शत्रुओं का नाश करने वाला है। उसके कधे सुपुष्ट और ऊचे हैं। भुजाएं विशाल हैं, गर्दन शेर की तरह उतार चढ़ाव वाली है और ठोडी गढ़ी हुई है। उसकी छाती विशाल है, धनुष बड़ा है, शरीर गठा हुआ है और शत्रुओं का दमन करने वाला है। उसकी भुजाएं घुटनों तक लम्बी हैं उसका मस्तक और ललाट सुन्दर है और वह विक्रम शाली है।"

यह है आदर्श मानव का स्वरूप। वाल्मीकि द्वारा वर्णित २२ गुणों की एक विशेषता है जो नारद के प्रश्नात्मक वर्णन में नहीं है। वाल्मीकि ने अपने उत्तर में जहां श्री राम के आत्मिक मानसिक, बौद्धिक और नीति युक्त गुणों की चरम सीमा का निदर्शन किया है वहां उनके सुदृढ़, सुगठित और बल युक्त शरीर की भी उपेक्षा नहीं की है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा रह सकता है और 'मानवता' शरीर के द्वारा मूर्त्त रूप में प्रकट होनी चाहिए आदि कवि ने इसी अटल सत्य की पुष्टि अपने वर्णन में की है।

निर्वाचन

'निर्वाचन में सबको समानाधिकार न मिलना चाहिए। मूर्ख के मत से विद्वान के मत का मूल्य अधिक है। अत एक शिक्षित को कम से कम ४, उससे कम शिक्षित को ३ उससे कम को २ और अत्यन्त साधारण पठित को १ मत प्रदान करने का अधिकार होना चाहिए।

(जान स्टुअर्ट मिल कृत लिबर्टी पुस्तक पृ०५१)

नस्ल की श्रेष्टता का सिद्धांत गलत है

जाति अर्थात् रुधिर से अपने को श्रेष्ठ मानने का सिद्धान्त केवल हिन्दुओं में नहीं संसार की सब नस्लों मे पाया जाता है। दक्षिण अफ्रीका में काले गोरे का जो भेद चल रहा है वह भी नस्ल के आधार पर बनी अपने को श्रेष्ठ मानने की नीति का ही परिणाम है। ससार में रुधिर का इतना संमिश्रण हुआ है कि कहीं कोई भी व्यक्ति शुद्ध रुधिर का नहीं है। डा० अम्मोन के मित्र रिपले ने लिखा है कि जब डा० अम्मोन को कहा गया कि बिल्कुल शुद्ध नस्ल के किसी व्यक्ति का फोटो दिखलाएं तो वे चक्कर में पड़ गए। उन्होंने हजारों सिरों का माप लिया था परन्तु यदि किसी का सिर एक नस्ल का था, तो नाक दूसरी नस्ल की थी, नाक एक नस्ल की थी तो आख किसी और नस्ल की थी। भिन्न २ नस्लों में रुधिर का संमिश्रण इतना अधिक हुआ है कि हम फ्रेंच नस्ल, जर्मन

नस्ल या अ ग्रेजी नस्ल इन शब्दों का प्रयोग ही नहीं कर सकते। इन्हें नेशन तो कहा जा सकता है नस्लें नहीं। इंग्लैंड को ऐंग्लो सैक्सन कहा जाता है परन्तु उसमें ट्यूटॉनिक रक्त मौजूद है। जर्मनी को ट्यूटॅनिक कहा जाता है परन्तु उसमें भी अन्य रुधिर मिले हुए हैं। जर्मनी के जो भाग्य विधाता थे, जो नस्ल के सिद्धान्त को लेकर उसे आसमान में चढ़ा रहे थे उनके चेहरों को देखने से मालूम पड़ जाता था कि उनमें से कोई भी शुद्ध नौरडिक अर्थात् आर्य नस्ल के चेहरे का न था।

भिन्न २ नस्लों की खोपड़ियों के माप, मस्तिष्कों की तोल और बुद्धि की परीक्षाओं से भी नस्ल की श्रेष्ठता प्रतिपादित न हो सकी।

हम प्रायः सुनते हैं कि भारतीय लोग नस्ल से आलसी होते हैं। यहूदी क्रूर और कंजूस होते हैं। मंगोल सुस्त और जुआरी होते हैं। गोरी नस्लें परिश्रमी और उद्यमी होती हैं। जर्मनों के लिए कहा जाता है वे धीरे २ प्रतिक्रिया करते हैं परन्तु एक बार उठ खड़े हों तो शक्ति के भंडार हो जाते हैं। अंग्रेज हर बात में पहल करते हैं, गीदड़ भभकी देते हैं, परन्तु समझौते के लिए सदा तय्यार रहते हैं, आचार के पक्के होते हैं, फ्रैंच बड़े बातून होते हैं, मिलनसार होते हैं परन्तु अंग्रेजों के से समर्थ नहीं होते परन्तु यह विचित्रता नस्ल के कारण नहीं है। रुधिर के समिश्रण के कारण कोई भी नस्ल शुद्ध पवित्र नहीं है। ऐसी अवस्था में हम किस नस्ल का क्या स्वभाव और क्या आचार है यह निश्चय पूर्वक नहीं कह सकते। हम सिर्फ इतना ही कह सकते हैं कि नस्ल के आधार पर खड़ी की गई श्रेष्ठता का सिद्धान्त गलत है।

नस्ल के विषय में संयुक्त राष्ट्र संघ की सांस्कृतिक संस्था यूनेस्को की ओर से १६४६ में भिन्न २ राष्ट्रों के शरीर के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाले मानव शास्त्रियों की पेरिस में बैठके हुई जिनमें विचार विनिमय के बाद जो निश्चय किया गया उसका सार निम्नप्रकार है—

'किसी शारीरिक या मानसिक गुण का किसी नस्ल के साथ किसी प्रकार का कार्यकारण का सम्बन्ध नहीं है इसलिए उचित यही है कि 'नस्ल' शब्द को हम अपनी शब्दावली में से हटा दें और इसके स्थान में जाति समूह शब्द का प्रयोग करें।'

(समाज शास्त्र के मूल तत्त्व)
पृ० २२३

नालन्दा विश्व विद्यालय

नालन्दा विश्व विद्यालय का नाम नालन्दा कैसे पड़ा ? इस विषय में विविध मत उपलब्ध होते हैं। एक मत यह है कि देश के विद्यानुरागी राजा महाराजाओं से अपरिमित सहायता, मिलती रहने के कारण ही इस स्थान का नाम नालन्दा (अनन्त दान) पड़ा। नालन्दा में कमल के पुष्प बहुत होते हैं। पं० हीरानन्द शास्त्री ने इसी के आधार पर नालन्दा की व्युत्पत्ति नल (कमल के फूल) से बताई है। चीनी यात्री इत्सिंग का कथन है कि संघाराम के दक्षिण के आम्र वाटिका के बीच स्थित सरोवर के निवासी नागों के नाम पर ही यह स्थान नालन्दा के नाम से विख्यात हुआ। परन्तु हुए नत्साग का दूसरा ही मत है। उसका कहना है कि भगवान बुद्ध जब बोधि सत्त्व का जीवन व्यतीत कर रहे थे एक बहुत बड़े राजा ने संघाराम को ही अपनी राजधानी बनाया। जीवों के प्रति बहुत दयालु होने दुःख दर्द दूर करते रहने के कारण वे न अलन्दा (अनन्त उदारता के अवतार) के नाम से विख्यात हुए और इस स्थान का नाम नालन्दा पड़ गया।

तक्षशिला विश्वविद्यालय

कुछ इतिहासकारों के अनुसार रत के पुत्र तक्ष ने अपने नाम पर ही इस नगर को बसाया था। तक्ष चीनी भाषा का भी शब्द है जिसका अर्थ होता है पहाड़। इस प्रकार तक्ष शिला का अर्थ पहाड़ की शिला हुआ जो उसकी रचना के अनुसार ठीक प्रतीत होता है। इसके अवशेष रावलपिंडी से उत्तर पश्चिम की ओर २० मील की दूरी पर सरायकेला के उत्तर पूर्व में स्थित है।

(विश्व ज्योति मई ५६ पृष्ठ २८-३१)

शंका समाधान

महर्षि जीवन

(१)

मूर्ति पूजा कैसे प्रचलित हुई ?

दानापुर में जोन्स महाशय ने श्री स्वामी जी से निवेदन किया "हिन्दुओं में मूर्ति पूजा क्यों है ?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया "आर्यों के धर्म और धर्म ग्रन्थों में प्रतिमा पूजन की आज्ञा नहीं है। इसके चलने का कारण यह प्रतीत होता है कि पहले लोग अपने मृत महापुरुषों की मूर्तियां बनवा कर घरों में रखते थे। उन्हें अपने पूज्य पुरुषों का स्मारक चिन्ह समझते थे। कालान्तर में उन्हीं प्रतिमाओं को वे प्रेम से पूजने लगे। आपके मत (ईसाई) में भी लोग ईसा और मरियम की मूर्तियां रखते हैं, इनका पूजन भी करते हैं। अविद्या की ये बातें दोनों मतों में समान हैं।"

(२)

मौलवी के प्रश्नोत्तर

उदयपुर पधारने के एक मास बाद मौलवी अब्दुररहमान ने स्वामी जी से प्रश्नोत्तर किये वे लिखे जाते थे। वे नीचे अंकित किये जाते हैं।

प्रश्न—ऐसा कौन सा धर्म है जिसकी धर्म पुस्तक सब मनुष्यों की बोल चाल और प्राकृत नियमों को सिद्ध करने में प्रबल हो ? जितने मत मिलते हैं वे भिन्न २ देशों की भाषाओं में भिन्न भिन्न नियमों से ऐसे बने हैं कि एक दूसरे से मेल नहीं खाते। जहां जो मत उत्पन्न हुआ है उसके सारे गुण वहीं तक सीमा बद्ध हैं। मतों में एक दूसरे से ऐसे भिन्न चिन्ह पाये जाते हैं जिन्हें दूसरे देखना भी अच्छा नहीं समझते। ऐसी अवस्था में सच्चा धर्म कौन सा है ?

उत्तर—मत सम्बन्धी सारी पुस्तकें हठ धर्मी से भरी पड़ी है इसलिए उनमें विश्वास के योग्य एक भी पुस्तक नहीं है। मेरी सम्मति में जो पुस्तक ज्ञान सम्बन्धी है वही सत्य है। उसमें पक्षपात नहीं हो सकता। ऐसी ही पुस्तक का सृष्टिक्रम के अनुकूल होना सम्भव है। मेरे आज तक के अन्वेषण में वेद ही ऐसी पुस्तक है। वह किसी देश की भाषा में नहीं है। वह ज्ञानमय है और उसकी भाषा भी ज्ञान भाषा है। वेद पर ही निश्चय लाना चाहिये।

प्रश्न—क्या वेद मत की पुस्तक नहीं है ?

उत्तर—नहीं, वह ज्ञान की पुस्तक है।

प्रश्न—मत का आप क्या अर्थ करते हैं ?

उत्तर—पक्षपात युक्त मन्तव्यों के समुदाय को मत कहते हैं ?

प्रश्न—क्या वेद में सब गुण पाए जाते हैं ?

उत्तर—हां, पाये जाते हैं।

प्रश्न—आपने कहा कि वेद किसी देश की भाषा में नहीं है। जो भाषा किसी देश की नहीं, वह सब भाषाओं पर प्रबल कैसे हो सकती है ?

उत्तर—जो भाषा देश विदेश की होती है वह व्यापक नहीं हो सकती।

प्रश्न—जब वह भाषा किसी देश की नहीं है

धार्मिक प्रवचन

धर्म्म से मनोबल दृढ़ होता है। मनोबल मनुष्य का मुख्य बल है। उसकी दृढ़ता से सम्पूर्ण जीवन में दृढ़ता आना स्वाभाविक है। स्वास्थ का अपव्यय रोकने का उपाय मनोनिग्रह है। शारीरिक अपराध तभी होते हैं जब मन मलिन, निर्बल और चचल होता है। मानसी चिकित्सा धार्मिक सिद्धातों के अनुशीलन से होती है।

धर्म निर्धारित आचार-व्यवहार से शरीर की सुरक्षा होती है, इसे कौन नहीं मानेगा। ब्रह्मचर्य पालन गार्हस्थ जीवन की सुव्यवस्था आदि धर्म के ही अ ग हैं। धर्म में ब्रह्मचर्य पर विशेष बल दिया जाता है। ब्रह्मचर्य ही अमृत है। 'अमृते ब्रह्मचर्यम्' (महाभारत)। वास्तव में प्राण प्रतिष्ठा का सर्वोत्तम साधन ब्रह्मचर्य ही है। वही अमृतत्वदायक है। धर्म उसी मार्ग की ओर सकेत करता है।

यथाधर्म सत्कर्म करने से मनुष्य की आयु उसके कर्मों से नापी जाती है। एक अंग्रेजी विचारक ने लिखा है कि उसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से जीवित माना जाता है जो सद् विचार, सद्-भावना और सत्कर्म से युक्त होता है-He most lives who thinks most feels the noblest and acts the best.

चलते फिरते श्मशान का कोई महत्त्व नही है। थोड़े समय में भी मनुष्य अधिक काम करके अपने जीवन को बढ़ा सकता है।

सदाचार से सामाजिकता बढती है—सहानुभूति, सहयोग और सद्व्यवहार का प्रचार होता है। सामाजिक वातावरण में नैतिकता की प्रतिष्ठा, शान्ति एव पवित्राचार होने से सर्व साधारण के स्वास्थ्य पर उसका मूक प्रभाव पड़ता है। दूषित वातावरण में जीवन के किसी अ ग का स्वाभाविक विकास नहीं हो सकता। धार्मिक आचरण से जो लोक कल्याण होता है उसका लाभ प्रत्येक सामाजिक प्राणी को मिलता है। अपने लिए नहीं। दूसरों के लिए भी—उस समाज के लिए जिसके हम एक अ ग हैं-सदाचार का पालन करना हमारा जीवन धर्म है। जीवन इसी प्रकार सुरक्षित रह सकता है।

तो वह सब पर प्रबल कैसे हो सकती है?

उत्तर—जैसे आकाश किसी एक स्थान का नहीं है परन्तु सर्वत्र व्यापक है ऐसे ही वेदों की भाषा देश भाषा न होने से सब भाषाओं में व्यापक है।

प्रश्न—यह भाषा किसकी है?

उत्तर—ज्ञान की।

प्रश्न—इसका बोलने वाला कौन है?

उत्तर—इसका बोलने वाला सर्वदेशी परब्रह्म है।

प्रश्न—इसका सुनने वाला कौन है?

उत्तर—इसके सुनने वाले अग्नि आदि ४ ऋषि सृष्टि के आदि में हुए हैं। उन्होंने परमात्मा से सुन कर सब को सुनाया है।

प्रश्न—ईश्वर ने यह भाषा उन्हीं को क्यों सुनाई? क्या वे इस बोली को जानते थे?

उत्तर—वे सर्वोत्तम थे। ईश्वर ने ही उनको तत्काल भाषा का भी ज्ञान करा दिया था।

प्रश्न—इसमें आप क्या युक्ति देते हैं।

उत्तर—कारण के बिना कार्य नहीं होता यही युक्ति है और ब्रह्मादि ऋषियों की साक्षी है।

शंकराचार्य

[लेखक—पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०]

मध्ययुग में जिन ऋषियों और मुनियों ने वैदिक ज्ञान के प्रसार में अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है उनमें आचार्य शकर का अपना प्रमुख स्थान है। इस प्रकार के दार्शनिक जो अपने विचारों से जगत् को कम्पायमान करदें और सर्वसाधारण के साथ २ पण्डित मण्डली में भी खलबली मचादें, ससार में कभी २ ही उत्पन्न होते हैं। बत्तीस वर्ष की छोटी सी अवस्था में यह सन्यासी शताब्दियों से प्रचलित अनीश्वरवाद और और वाममार्ग के गढ़ों को धरती में मिला देगा और ऐसा ठोस साहित्य भारत को देकर जायगा जो बाद् में भी आसानी से वह सिद्धान्त सिर न उठा सकें, यह आज आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। परन्तु उनकी अलौकिक प्रतिभा और कार्य प्रणाली ने यह सब कुछ सत्य कर दिखाया।

अष्टवर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्वशास्त्रवित् ।
षोडशे कृतवान् भाष्य द्वात्रिंशे मुनिरभ्यगाद ॥

आठ वर्ष की अल्पायु में चारों वेद और बारह वर्ष की अवस्था तक सारे शास्त्र उनको बुद्धिगम्य हो गये। सोलहवें वर्ष में वेदान्त भाष्य किया और बत्तीसवें वर्ष में परलोक मार्ग के राही बन कर चल पड़े। यह उनकी जीवनयात्रा का एक सूक्ष्मवृत्त है जो किसी सस्कृत के कवि ने कभी लिखा था।

मालाबार प्रदेश के कालड़ी गाव में शिवगुरु नामक एक नम्बूद्रि ब्राह्मण के घर इस प्रतिभाशाली बालक का जन्म सम्वत् ८४५ विक्रमी में हुआ। क्योंकि माता पिता को अपनी ढलती हुई आयु में इस बालक के दर्शन हुए थे इसलिए इनकी सभाल और देख रेख की भी समुचित व्यवस्था रखी गई। पर यह किसी को क्या पता था कि औरों की तरह गृहस्थ आश्रमीय शृ खला में एक नई कड़ी जोड़ने यह बालक ससार में नहीं आया अपितु अनात्मतत्व और अनैतिकता के बन्धनों में जकड़ी भगवती श्रुति की शृ खलायें तोड़ने आया है। कुछ तो परिवार के सास्कृतिक वातावरण और कुछ तत्कालीन परिस्थितिया ऐसी आकर मिलीं जिससे बालक शकर के प्रसुप्त सस्कार जागृत हो उठे। किसी ज्ञानी गुरु की खोज में शकर का मन विह्वल रहने लगा। "जिन खोजा तिन पाइया" आखिर आचार्य गोविन्दपाद् के चरणों तक यह बालयती पहुच ही गया। उन्होंने भिन्न २ प्रश्नों द्वारा शिष्य की प्रतिभा का पहले तो यथावत् परीक्षण किया पर तु जब सब तरह से अनुकूल पाया तो विद्यादान का कार्य आरम्भ कर दिया। सभी शास्त्रों में शकर की अद्भुत गति देख कर आचार्य गोविन्दपाद् के आनन्द की सीमा न रही। दर्शन के जटिल प्रश्नों का समाधान जब शकर करते थे तो आचाय भी चकित रह जाते थे। इस प्रकार सवशास्त्र पारगत और विद्यानिष्णात शकर ने गुरु से सन्यास की दीक्षा भी ग्रहण की और शकराचार्य बन अपनी दिग्विजय यात्रा पर निकल पड़े। बौद्धमतावलम्बी पण्डित और वाममार्गीय जगत् में हलचल उत्पन्न हो गई। आत्मनास्तिक्य और वेदों के अप्रमाणत्व का जब शकराचाय ने प्रबलतम युक्तियों से खण्डन किया एव आत्मसत्ता तथा श्रुति के प्रमाण दोनों की फिर से स्थापना की तो भारत स्तम्भितसा होकर इस अद्भुत विद्वान् को देखने लगा।

अपने छोटे से जीवन में गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, माण्डूक्यकारिका आदि अनेकों ग्रन्थों पर शकराचार्य ने यों तो भाष्य किये हैं पर-तु उस समय की स्थिति को सुधारने के लिये उनके हाथ में जो सबसे बड़ा अस्त्र आया वह वेदान्त दर्शन का भाष्य था। व्याससूत्रों की व्याख्या सम्बन्धी

आल इण्डिया रेडियो के सौजन्य से प्राप्त।

यह एक महान् ग्रन्थ है। युक्तियों की शैली तो इस में इतनी निराली है कि जो मनुष्य दर्शनशास्त्र से कुछ बौद्धिक भोजन लेना चाहते हैं उन्हें साव धानी से इसका अध्ययन करना चाहिए। प्रतिपक्ष का खण्डन भी आचार्यशकर की अपनी ही एक निजी विशेषता है। राजा बलि के लिए प्रसिद्ध है कि जब प्रतिपक्षी उनके सामने आता था तो उस का आधा बल महाराज बलि में आ जाता था वही आधा बल दूसरे आधे को परास्त करने के लिये पर्याप्त होता था और अपने बल को प्रयोग मे लाने की उन्हें आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। ठीकइसी प्रकार शकराचार्य भी दार्शनिक क्षेत्र के राजा बलि हैं प्रतिपक्षी की प्रतिज्ञाओं और लक्षणों का ऐसा अद्भुत विश्लेषण करते हैं और यथासम्भव जितन विकल्प उठ सकते हैं उनको उठाकर परिशेष न्याय द्वारा उसका इस प्रकार खण्डन करते हैं कि प्रतिपक्षी स्वय डांवाडोल हो उठता है। यही सब कारण थे कि थोडे से समय में शकर स्वामी दिग्विजय कर सके और लुप्त प्राय वैदिक धम को पुनर्जीवित करने में समथ हुए।

शकराचार्य को अपनी इस धार्मिक विजय यात्रा में जो भी सम्भव कष्ट हो सकते थे उन सबका ही सामना करना पड़ा। पण्डितों ने खीझकर इनको विष देने और मार डालने तक के भी षड्यन्त्र रचे पर "जाको राखे साइया मार सके ना कोय"। उन के वह कुप्रयास स्वय उनकी ही नैतिक मृत्यु का कारण बने।

जब शकराचार्य ने सत्य सनातन वैदिक धर्म की स्थापना और निरीश्वरवाद का देश में चारों ओर घूम २ कर विरोध आरम्भ किया तो तत्कालीन पण्डित समाज इन्हें नास्तिक पाखण्डी आदि कह कर बदनाम करने लगा लेकिन जैसा पहले से सुनते आये हैं असत्य की जड नहीं होती वे पण्डित भी एक २ कर परास्त होने लगे। उसके बाद शकरा चार्य ने फिर उन पण्डितों का आह्वान किया जो बड २ राजाओं और महाराजाओं के यहा धर्माचार्य बने बैठे थे और उन महाराजाओं को सत्य से सवथा दूर रख रहे थे। उन राजाओं में एक सुधन्वा नामक राजा भी थे जिनके दरबार में जाकर राज पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिये उन्होंने चुनौती दी थी। पहले तो राज पण्डितों ने मुण्डित मस्तक, अज्ञात कुलशील आदि कह कर शकर स्वामी की उपेक्षा की परन्तु जब राजा सुधन्वा को इस बात का पता लगा तो उन्होंने सत्यासत्य का निर्णय कराने के लिए इन पण्डितों को विवश किया। राजदरबार में ही इस शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। राज पण्डितों ने इस तेजस्वी सन्यासी को नाना प्रकार से पराजित करने की चेष्टा की। वाममाग के कुकर्मों का उल्लेख कर वैदिक धर्म की उन्होंने निन्दा करनी चाही जिससे सर्वसाधारण जन शकराचार्य को वाममार्गी समझकर घृणा करने लगे परन्तु बौद्ध पण्डित का यह तीर भी खाली ही गया। अब तो बौद्ध पण्डित बहुत ही घबराये। परन्तु करते क्या? अन्ततोगत्वा शास्त्रार्थ हुआ और उसमें बौद्ध पण्डितों को अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी और साथ ही साथ महाराज सुधन्वा के राजदरबार से उनको विदा भी लेनी पडी। सुधन्वा स्वय शकराचार्य के शिष्य हो गये। जब शकराचार्य महाराज सुधन्वा की राजधानी से चलने लगे तो राजा ने स्वय उनके साथ चलने का आग्रह किया परन्तु शकराचार्य ने ऐसा करने से मना कर दिया। अन्त में राज्य से कुछ रक्षा करने वाले सैनिक सुधन्वा ने शकराचार्य के साथ भेज दिये। इससे उनको अपना कार्य करने में पर्याप्त सुविधा हुई। बनारस, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी, उज्जैन औरनासिक आदि २ स्थानों पर चारों ओर अपनी इस दिग्विजय यात्रा में अपने प्रमुख शिष्य पद्मपाद, हस्तामलक, समित्पाणि, शुद्धिकीर्ति, आनन्दगिरि आदि के साथ शंकराचार्य ने भ्रमण किया। जिधर होकर भी यह प्रकाण्ड पण्डित मण्डली निकल जाती थी उधर ही वैदिक वैजयन्ती लहराती हुई दिखाई देने

लगती थी। अपने इस भ्रमण में शंकर स्वामी ने उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चारों दिशाओं में वैदिक धर्म प्रचार के लिये एक एकमठ भी स्थापित किया। हिमालय की गोद में बसे बद्रिकाश्रम में अथर्ववेद के प्रचार के लिए जोशीमठ की स्थापना की और अपने एक प्रमुख शिष्य सनन्दन को अध्यक्ष के रूप में यहा पर बैठाया। यहा से प्रस्थान करके दक्षिण की ओर चले और तुगभद्रा नदी के किनारे यजुर्वेद के प्रचार के लिये शृ गेरी मठ की स्थापना की जहा अपने सुयोग्य शिष्य सुरेश्वराचार्य को वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए बैठाया। अनेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए शकराचार्य योगि राज श्री कृष्ण की लीला भूमि द्वारिका में भी पहुचे और समुद्र तट पर सामवेद प्रचार के लिए शारदा मठ की स्थापना की। इसी प्रकार ऋग्वेद के प्रचा रार्थ एक पीठ स्थापित की। चारों वेदों की प्रतिष्ठा के लिए भारत के भिन्न २ भागों में इन मठों के रूप में वैदिक धर्म की रक्षा के लिए चार सुदृढ़तम चौकिया शकराचार्य ने स्थापित करदीं जो आज भी यथावत् विद्यमान हैं।

शकराचार्य को अपने जीवन काल में वैदिक धर्मानुरागी कुछ अन्य विद्वानों से भी मिलने का अवसर मिला जिनमें श्री कुमारिल भट्ट का नाम प्रमुख है। ये सात्विक विद्वान आर्ष सिद्धान्तों के तो पण्डित थे परन्तु नास्तिक दर्शनों से अनभिज्ञ होने के कारण इनके प्रचार कार्य में बड़ी बाधा उपस्थित होती थी। छद्मवेष धारण कर कुमारिल ने नास्तिकों की पाठशालाओं में प्रवेश किया और उनके शास्त्रों के मर्म को भी अच्छी तरह समझ लिया। कई स्थानों पर बौद्ध पण्डितों से शास्त्रार्थ भी किए लेकिन अन्त में स्वय इस महा विद्वान को न जाने क्यों अपने जीवन से इसलिए घृणा हो गई कि उसने छिप कर क्यों विद्या प्राप्त की है और यह घृणा बढ़ते २ आत्मग्लानि में यहा तक परिणत हो गई कि कुमारिल भट्ट ने धान की भूसी में तिल तिल कर अपना शरीर भस्म कर अपनी जीवन लीला समाप्त की। कुमारिल जाते जाते ससार को एक सुयोग्य शिष्य देकर गये जिनका नाम था मण्डन मिश्र। मण्डन मिश्र और शंकराचार्य का एक शास्त्रार्थ भी बहुत प्रसिद्ध है जिसमें शकराचार्य ने मण्डन मिश्र की पत्नी उभय भारती सरस्वती को ही मध्यस्थ बनाकर शास्त्रचर्चा आरम्भ की थी। मण्डन मिश्र के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि जब शकरा चार्य इनसे मिलने के लिए गए और माहिष्मती नामक नगर के बाहर किसी पानी भरने वाली पनि-हारिन से उन्होंने मण्डन मिश्र का घर पूछा तो उसने उत्तर दिया —

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं
वीरांगना यत्र गिरोगिरन्ति
द्वारस्थ नीडान्तरसन्निरुद्धा
अवेहि तन्मण्डनमिश्रवासः

अर्थात् वेद स्वत प्रमाण हैं अथवा उसे प्रमाणित करने के लिए किसी अन्य ज्ञान की आवश्यकता प्रतीत होती है इस प्रकार के वाक्य तोता, मैना जिस घर के दरवाजे पर बैठ कर बोल रहे हैं तो समझ लेना वही मण्डन मिश्र का निवास स्थान है। मण्डन मिश्र और शकराचार्य के शास्त्रार्थ में जब मण्डन मिश्र हार गये तो उन्होंने शकराचार्य का शिष्य होना स्वीकार कर लिया, इस पर मण्डनमिश्र की पत्नी उभयभारती ने कहा जब मैं इनकी अर्धांगिनी हू तो मुझे बिना जीते आप इन्हें कैसे पराजित मानते हैं। शकराचार्य ने फिर परमविदुषी उस देवी से भी शास्त्रार्थ किया। परन्तु शंकर के अगाध पाण्डित्य का लोहा अन्तमें उसे भी मानना पड़ा। इस तरह पति पत्नी दोनों ने श्रद्धा के साथ गैरिक वस्त्र धारण कर शकराचार्य की शिष्यता स्वीकार कर ली।

अपने जीवन काल में शकराचार्य भले ही भारत की सीमा न पार कर सके हों परन्तु अवैदिक सिद्धान्तों को उन्होंने भारत की सीमा से बाहर कर दिया। विश्वमें उनकी अकाट्य युक्तिया और मौलिक सिद्धान्त इतने व्यापक हो गये हैं जिनसे वह आजजगद् गुरु शकराचार्य के रूप में स्मरण किये जाते हैं।

महिला जगत

नारी मे श्रद्धा-विश्वास क्यों अधिक होता है ?

[लेखक—श्री माधवानन्द जी]

पुरुष और स्त्री मे जो शारीरिक एव मानसिक भेद देख पड़ता है उसका मूल कारण उनके मस्तिष्का मे वतमान परमाणु विभिन्न है। प्रत्येक जीवन के मस्तिष्क में ०२ शाक्तया हैं।१०मस्तिष्क के दाई ओर १ बाई ओर १ ब्रह्मरन्ध्र मे और एक तालु मे। किसी भी जीव के मस्तिष्क मे इन सम्पूर्ण शक्तियों का उद्घाटन नहीं पाया जाता किसी एकाध शक्ति का ही प्राधान्य होता है। किसी में ज्ञान शक्ति का विशेष प्रादुर्भाव देखा जाता है किसी में भाषण शक्ति का तो किसी में लेखन शक्ति का ब्रह्मरन्ध्र मे जो इक्कीसवी शक्ति है उसका नाम है अणु तत्व और वह आध्यात्मिक शक्ति का केन्द्र है। वैसे तो ब्रह्म सब व्यापक है पर इस पाचं भौतिक शरीर मे ब्रह्म का जो अस्तित्व है वह ब्रह्मरन्ध्र स्थित अणु शक्ति मार्ग द्वारा ही सवतो भावेन प्रसारित होता है। तालु के नीचे जो शक्ति है उसका नाम पार्थिव शक्ति है। इस पार्थिव तत्त्व में अग्नि तत्व का अंश अधिक है। इस कारण सूर्य द्वारा ही इसको जीवन मिलता है। हमारे शरीर में स्थित सूर्य और बाह्य सूर्य दोनों एक ही है। सूर्य ही स्थावर जगम का आत्मा है जैसा कि उपस्थान के मंत्रों में कहा गया है सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुश्च सूर्य और चन्द्र दोनों से जड और चेतन जगत् को जीवन मिलता है। स्त्री अपने पार्थिव तत्त्व द्वारा इस जीवन को प्राप्त करती है और पुरुष अपने अणु तत्त्व द्वारा। सूर्य की लगभग १ हजार किरणें हैं जिनके गुण और प्रभाव पृथक २ हैं और सब देशों में विभिन्न रूप से पड़ती हैं। पुरुष का तत्त्व सूर्य की पहली और दूसरी किरण को अधिक आकृष्ट करता है और स्त्री का तत्त्व सूर्य की तीसरी किरण को खींचता है। सूर्य की इस तीसरी किरण में तमोगुण की अधिकता है। स्त्रियों के पार्थिव केन्द्र मे तमोगुण के अंश अधिक हैं। तमोगुण का अधिष्ठान होने के कारण तथा तमोगुण का ही आकर्षण करने के कारण स्त्रियों मे श्रद्धा विश्वास की अधिकता होती है। तमोगुण क्रोध, श्रद्धा, विश्वास आलस्य निद्रा आदि ७ विभागों में व्यक्त है। इनमे श्रद्धा विश्वास को छोड़कर शेष सभी धाराए दुःख प्रद है बशर्त श्रद्धा विश्वास जमाने वाला या जो कुछ वह कह रहा है वह यथार्थ और हितकारी हो। या तो सत्व गुण मे श्रद्धा विश्वास की मात्रा अधिक होती है क्योंकि सत्त्वगुणी जीव 'ज्ञानानुपूर्वी होते हैं अथवा तमोगुणी जीवों में श्रद्धा विश्वास का प्राधान्य होता है क्योंकि तमोगुण मे शका समाधान के लिए अवकाश नहीं रहता स्त्रियों मे तमोगुण की मात्रा अधिक होने के कारण उनमें श्रद्धा विश्वास की भावना प्रबल होती है इसलिए पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों को बहकाना या फुसलाना अधिक सरल होता है। यदि वे 'अज्ञ' हों तो उनकी श्रद्धा प्राप्त करना सरल है क्योंकि किसी विषय मे ऊहा पोह यातर्क वितक करनेकी सामर्थ्य का उनमे अभाव है। यदि वे 'विशेषज्ञ' हों तो भी उनका विश्वास भाजन बनाना कठिन नहीं 'क्योंकि एक तो विदुषी होने के नाते किसी विषय को हृदयङ्गम करने की प्रखरता उनमें होगी ही और दूसरे उनका स्त्रीत्व ही उन्हें तमोगुण का श्रद्धा विश्वास का अधिष्ठान बना देता है।

साहित्य समालोचना—

वेदो का यथार्थ स्वरूप

लेखक-श्रीयुत प धर्मदेव विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

साइज $\frac{१८ \times २६}{८}$ पृ० ५०८

प्रकाशक–आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब होशियारपुर रोड जलधर

मूल्य ६/५० नया पैसा

यह ग्रन्थ बहुत खोज के पश्चात लिखा गया है। वेदों के सम्बन्ध मे जितनी बातें जानने योग्य हैं सब पर इसमे प्रकाश डाला गया है। जिन बातो के प्रचार से वेदों के सम्बन्ध मे भ्रम फैला हुआ है उनका बलपूर्वक युक्ति और प्रमाणों से खडन एव निराकरण किया गया है। 'वैदिक यज्ञ' नाम की बदनाम पुस्तक का बडा उत्कृष्ट उत्तर प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार के ग्रन्थ की अग्रेजी भाषा मे प्रकाशन की अत्यावश्यकता है क्योंकि वेदों के सम्बन्ध मे अग्रेजी पढे लिखे लोगों में जिनमे इस देश के लोग भी सम्मिलित है और जो विदेशीय विद्वानों एव लेखको के विचारों को पढ कर अपनी धारणाए बना लेते है बडा भ्रम व्याप्त है।

श्रीयुत प० जी की यह कृति बहुत अच्छी है। इसके लिए वे बधाई के पात्र है—

उपर्युक्त पंक्तियों मे सक्षेपत सूर्य किरण सिद्धात द्वारा नारी मे तमोगुण की प्रधानता दिखला कर उसे श्रद्धा विश्वास का नैसर्गिक अधिष्ठान बताया गया है। नारी जाति के इतिहास में उसकी इस श्रद्धा विश्वास की भावना ने जो अनुपेक्षणीय योग दिया है उसके मूलमे यही वैज्ञानिक रहस्य छुपा हुआ है। इसी भावना के बल पर नारी जहा पथ भ्रष्ट हुई है वहा उसने अपार आध्यात्मिक उन्नति भी की है। दूसरी ओर पाखण्ड और दुराचारियो ने भी नारी को इस दुर्बलता का अनुचित लाभ उठा कर उसे अपनी नारकीय वासनाओं की तृप्ति का साधन बनाया। इसलिए इस सावधानी की आवश्यकता है कि नारी की श्रद्धा भावना को जाग्रत करने वाला व्यक्ति सदाचारी हो क्योकि अनुभव यही बताता है कि स्त्रिया अपात्रों के प्रति भी श्रद्धा विश्वास करके अपना सवस्व खो बैठती हैं। स्त्रिया कुशिक्षा को भी हृदयङ्गम कर सहज ही मार्ग भ्रष्ट हो जाती है। यही कारण है कि भारतीय शास्त्रकारों ने नारी की निरतर रक्षा करने का सत्परामर्श दिया है।

(विविध समाचार)

क्वीन्सलैंड की सरकार गुप्तचरविभाग स्त्रियोंको सौंपने की योजना बना रही है। राज्य के पुलीस कमिश्नर ने इस निर्णय की व्याख्या करते हुए बताया "जब स्त्रिया सत्य की खोज मे लगती है तो उनकी वैयक्तिक नैसर्गिक विशेषताए सहायता करती है।

ऊंची एडी के जूतों से हानियां

लदन की विविध फर्मों ने अपनी महिला कर्मचारियों को आदेश दिया है कि वे २५ मार्च से ऊंची एडी के जूते पहन कर काम पर न आए। एक युवक ने कहा कि इन जूतों से देवियों के स्वास्थ्य को हानि पहुचने के साथ २ दफ्तरो और फैक्ट्रियों के फर्श को बहुत हानि पहुँचती है।

केरल में देविया

मुख्य मन्त्री नम्बूदरी पाद ने राज्य की विधान सभा मे २३ मार्च को बताया 'राज्य की नौकरी में ½ स्थानों पर स्त्रिया काम करती हैं। सरकारी विभागों में स्त्रियों का प्रतिशत २४.२ है। १६ स्त्रिया इजीनियरिंग विभाग में काम करती हैं।'

भारत में नारी का स्थान

मैसूर के श्री ऐच सी दासप्पा ने लोक सभा में श्री आचार्य कृपलानी के इस कथन का खडन करते हुए कि प्रतिरक्षा विभाग मे स्त्रियो को न लिया जाना चाहिए कहा 'स्त्रियों को अबला न समझना चाहिए। देश प्रेम और त्याग पर एक मात्र पुरुष का ही एकाधिकार नहीं है।"

बाइबिल

समीक्षा

प्राय यह कहा जाता है कि बाइबिल से कोई भी बात सिद्ध की जा सकती है। परन्तु बाइबिल से किसी बात को सत्य सिद्ध करने से पूर्व बाइबिल का सत्य सिद्ध किया जाना आवश्यक है क्योंकि यदि बाइबिल सत्य न हो अथवा इसका सत्यता सदिग्ध हो तो इसका प्रमाण माननीय नहीं हो सकता।

बाइबिल के ईसाई व्याख्याकार एव समस्त ईसाई पडे और प्रचारक यह कहकर कि बाइबिल सत्य बातों से परिपूर्ण ईश्वरीय ग्रन्थ है प्रजा पर बाइबिल को थोपते रहे हैं। उनमे आपस में वाद विवाद होता रहा है और बाइबिल के विशेष २ भागों और सदर्भों के काल्पनिक अर्थों के विषय मे एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप होते रहे हैं। किसी ने कहा और इस बात पर जोर दिया कि अमुक सदर्भ का अर्थ अमुक है, दूसरे ने कहा कि इसका अथ इससे सर्वथा भिन्न है तीसरे ने कहा इसका अर्थ न यह है और न वह है और दोनों से भिन्न है। इसे उन लोगों ने 'बाइबिल को समझने की सज्ञा प्रदान की।

जो उत्तर मैने देखे है वे सब पुरोहितों द्वारा लिखे गए है और ये पवित्र हस्तिया अपने पूर्ववर्त्ती पुरोहितों के समान तर्क वितर्क और झगडा करती और बाइबिल को समझने का बहाना बनाती है। प्रत्येक भिन्न प्रकार से ही इसे सम झता है परन्तु प्रत्येक इसे सर्वोत्तम रीति से समझने का दावा करता है। वे सब एक मात्र यह कहने मे सहमत हैं कि थोमस पेन इसे नहीं समझता है।

सबसे पहली बात समझने की यह है कि बाइबिल को ईश्वरीय पुस्तक मानने के लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध है या नहीं?

इस पुस्तक मे ऐसी बातें अ कित है जो परमात्मा के आवश्यक आदेश से की गई बताई जाती है। वे बात मानवता और नैतिक न्याय भावना को ठेस पहुँचाने वाली हैं। वे बातें उन बातो से मिलती जुलती है जो फ्रास में राब्स, पिपरे, केरियर, जोसफ ली-वेन तथा ईस्ट इ डीज मे इ गलिश शासन ने की हैं अथवा आधुनिक काल मे अन्य हत्यारों द्वारा की जाती है। जब हम उन पुस्तकों मे जो मूसा, जोशुआ आदि २ कृत बताई जाती है यह पढते हैं कि इसराइली लोग निर्दोष देशों की प्रजा पर चुपके से टूट पडे उन्होंने लोगों को मौत के घाट उतारा उन्होंने न बच्चों को छोडा और न बूढों को उन्होंने पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों का भयकर सहार किया और कोई भी व्यक्ति जीवित न छोडा और जब हम उन पुस्तकों में ऐसे सदर्भ पाते हैं जिनका बार २ भयावह वर्णन किया जाता है तब क्या हम उन बातों को निश्चयपूर्वक सही मान सकते हैं? क्या हम यह मान सकते हैं कि सृष्टि के रचयिता ने इस प्रकार के दुष्कृत्यों को करने की अनुमति दी होगी? क्या हम यह मान सकते हैं कि इस प्रकार के वर्णनों से परिपूर्ण पुस्तकें उसकी आज्ञा से लिखी गई होंगी?

किसी कहानी की प्राचीनता उसके सत्य होने का प्रमाण नहीं होती। परमात्मा पर ऐसे दुष्कृत्यों का थोपाजाना जो दण्डयोग्यअपराध कोटि मेंआते हैं हत्याएँ और वे भी छोटे २ निमम बच्चों की-गम्भीर विषय है। बाइबिल हमे बताती है कि ये हत्याएँ परमात्मा के आवश्यक आदेश से की गई थीं। अत बाइबिल में विश्वास करने का अर्थ है परमात्मा की धार्मिकता और उसकी नैतिक न्याय-भावना में विश्वास का परित्याग क्योंकि उस

थोमस पेन कृत 'एज आव् रीजन' पर आधारित।

आर्य समाज की चिनगारियाँ

[लेखक— श्री स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

श्री लाला साईं दास जी

लाला जी आर्य समाज लाहौर के प्रथम प्रधान थे। जिस समय डाक्टर रहीमखा जी के गृह पर आर्य समाज की स्थापना हुई क्योंकि वहा महर्षि जी ठहरे हुये थे उसी समय लाल साईं दास जी प्रधान बनाये गये और अपने जीवन के अन्त समय तक आप प्रधान रहे। उस समय के वृद्धों तथा युवकों पर उनका प्रभाव था। प० गुरुदत्त जी महात्मा हसराज जो आदि को आर्य समाज में लाने वाले आप ही थे। आपके सम्बन्ध में मैं एक बात लिखना चाहता हू वह शताश देने की है।

आर्य समाज के उपनियमानुसार प्रत्येक सदस्य को अपनी आयका शताश प्रतिमास चन्दा देना होता है। वे न्यायालय में रीडर थे। एक बार आप जब अपना वेतन लेकर आर्य समाज में आये तो आपको वहा चपरासी न मिला और न ही कोई अन्य अधिकारी वहा था। आप ३ घण्टे तक मदिर मे प्रतीक्षा करते रहे और तीन घण्टे क पीछे जब चपरासी आया तो आपने उसे अपना शताश दे दिया और उसे आज्ञा दी कि प्रत्येक मास के आरम्भ की तिथियों मे आप आर्य समाज मन्दिर में हो रहा करे बाहर न जावे। उसने कहा प्रधान जी, आर्य समाज के काम पर हो जाना होता है।" उन्होंने कहा 'आगे को इन दिनों वह काम छोडदे क्योंकि मुझे आज तीन घण्टे आपकी प्रतीक्षा करनी पड़ी मेरा नियम है जिस दिन मुझे वेतन मिलता है मैं वेतन लेकर सीधा आर्य समाज मे आता हूँ और शताश देकर अपने घर जाता हू क्योंकि मेरा नियम है जिस समय तक मै शताश न दू अपने वेतन का धन घर नहीं ले जाता।"

आर्य समाज के सदस्य को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

पुस्तक में रोते और मुस्कराते हुए बच्चे भी अपराधी मान लिए गए हैं। बाइबिल का अध्ययन करते हुए मानव हृदय से कोमलता, सहानुभूति और दया की प्रत्येक भावना को निकाल देना अनिवार्य होता है। जहा तक मेरा अपना सम्बन्ध है मैं कह सकता हू कि बाइबिल की अप्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिए यदि मेरे पास कोई और प्रमाण न भी हो तब भी बाइबिल को सत्य न मानने के लिए मेरा त्याग पर्याप्त है जिससे मेरी पसन्द का निरूपण हो सकता है।

बाइबिल के विरुद्ध अन्य भी अनेक साक्षियां उपलब्ध हैं जिनको पुरोहित लोग अस्वीकार नहीं कर सकते। उन साक्षियों से प्रमाणित है कि बाइबिल ईश्वरीय पुस्तक का श्रेय प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है। बाइबिल के समर्थकों का कहना है कि यह ग्रन्थ किसी भी प्राचीन ग्रन्थ के समान प्रामाणिक है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम किसी प्राचीन ग्रन्थ में विश्वास रखते हैं तो अन्य ग्रन्थ में भी विश्वास रखना चाहिए।

यूकलिड कृत रेखागणित एक प्राचीन ग्रन्थ है जिसकी प्रामाणिकता को सभी लोग स्वीकार करते हैं। इसका कारण यह है कि हम ग्रन्थ के रचयिता को एक ओर छोड दें तब भी इसमें समय, स्थान और परिस्थिति से सम्बद्ध प्रत्येक वस्तु स्वय सिद्ध है। इस पुस्तक में वर्णित विषय अब भी उतने ही मान्य और युक्तियुक्त हैं जितने प्रारम्भ में थे। उसके रचयिता को हम जानते हों या न जानते हों

(शेष पृष्ठ २३१ पर)

महाराष्ट्र में महर्षि दयानन्द का स्मारक

(लेखक—श्री हरि सखाराम तु गार, ५०० ध्रुवपेठ-हैदराबाद न० ६)

महर्षि दयानन्द जी का स्मारक अखिल विश्व में आर्य समाज के रूप से अमर बना है। आय समाज ने महर्षि के नाम पर अनेक प्रकार की धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, संस्थायें स्थापित करके श्री दयानन्दर्षिका नाम व काम भारतीयों के अ त करण में श्रद्धेय बना दिया है। महाराष्ट्र भूमि—आद्य छत्रपती श्री शिवाजी महाराज की क्षात्रभूमि, श्री सद्‌गुरु रामदास स्वामी की ब्राह्म भूमि महर्षि दयानन्द जी के आगमन से, उनके भाषण, प्रवचन आदि से पुनीत बनी हुई है। महर्षि का नाम, आर्य समाज का काम सनातन वैदिक धर्म का धाम महाराष्ट्र बन जावे एतदर्थ भूतकाल मे महाराष्ट्र के मान्यवर नेतागण स्वर्गीय न्या० मू० रानडे, श्री गोपालरावजी देशमुख, श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी, श्री सेठ बाबा जी अना जी तारकर तथा श्रीमन्महाराज शाहु छत्र पति कोल्हापुर नरेश इत्यादिकों ने देशकाल परि स्थित्यनुरूप बहुत कुछ किया है।

२–कोल्हापुर नरेश श्रीमन्महाराज शाहु छत्रपती के निमन्त्रण पर १६१८ से १६२६ तक आठ साल कोल्हापुर मे आर्य समाज की भरसक सेवा करने का सौभाग्य प्रस्तुत नम्र 'आर्य सेवक' को प्राप्त हुआ है। इ स १६२० साल में कोल्हापुर आर्य समाज द्वारा महाराष्ट्र में आर्य समाज का वाङ्मय अखड रूप से निर्माण होता रहे इसी हेतु से स्व० छत्रपति महाराज ने कोल्हापुर आर्य समाज को पाच हजार रुपयों की उदार देणगी देकर "आर्य भानु" नाम का मुद्रणालय स्थापन करके मराठी मे साप्ताहिक "आर्यभानु पत्र" शुरू किया था। आर्य भानु प्रेस का मुद्रक, व्यवस्थापक तथा पत्र का सपादक, प्रकाशक का प्रथम डिक्लेरेशन मेरे ही नाम का कर दिया था। इस कालावधि में मराठी भाषा में (१) महर्षि दयानन्द चरित्र व कामगिरी (२) आर्यसमाजाचा सदेश ये बडी पुस्तकें और अस्पृश्योद्धार, शुद्ध सगठन वेद ईश्वरप्रणीत आहेलकाय ? वैदिक सन्ध्योपासना, सत्यार्थप्रकाश का १३ १४ समुल्लास का मराठी अनुवाद ऐसे छोटे छोटे ट्रक्टादि की रचनायें प्रस्तुत आर्य सेवक ने आर्य समाज के आश्रय मे की है।

१६२३ मे श्री शाहु छत्रपती का देहान्त हुआ। राजाराम कालेज के प्रिन्सिपल डा० बाल कृष्ण इहलोक छोड गये। १६३६ मे, तब कोल्हापुर आर्य समाज का भविष्य अन्धकारमय दिखने लगा तथापि आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय जो 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' देहली के मन्त्री थे आपने व प्रो० अविनाशचन्द्र बोस न उस समय बडी दूरदर्शिता से काम लिया। कोल्हापुर आर्य समाज की श्रद्धानद स्मारक, आर्य भानु प्रस आदि जो चल अचल सपत्ति १२०००) की लागत की थी उसका ट्रस्ट निर्माण किया। ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन दिनाक २१ जनवरी १६४३ मे हुआ है। मतलब यह था कि श्री शाहु के पश्चात् एव आर्य समाजी नेताओं के अभाव में भी कोल्हापुर आर्य समाज का प्रचार कार्य सुचारु रूप से चले। प्रचार कार्य चलाने के लिये ट्रस्टीओं ने कोल्हापुर आय समाज को प्रतिवर्ष ट्रस्ट की जो आय होगी उसका ⅙ भाग देणगी (gront)रूपसे देना तय किया ट्रस्टडीड की और उल्लेखनीय शर्त यह कि, ट्रस्टी न० १ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' देहली नामिनेट करे। (That if the place of trustee No 1 falls

vacant, it will be filled by a nominee of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, Delhi)

३ अध्यापकीय कार्य मे दीर्घ काल व्यतीत होने से मेरा अपना दृढ मत बन गया है कि आर्य युवक व युवतिओं को सुशील, सदाचारी, चारित्र्य सम्पन्न बनवाना हो तो युवक युवतिओ को महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के सिद्धान्तो से अहर्निश परिचित रखना होगा। नवभारत का उज्वल भविष्य भावी सन्तानों पर सवर्थैव निर्भर है। गत दो तीन साल मे मुझे महाराष्ट्र, विदर्भ, मराठवाडा आदि विभागों मे घूमने का सुअवसर मिला था महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज का सन्देश सुनने को आर्य साहित्य पढने को महाराष्ट्र का युवक वर्ग उत्सुक दीख पडा। महाराष्ट्रीय लोकमत की निदर्शक हस्तपत्रिकाए मराठी मे न० १ २, ३ सन् १९५७ में प्रकाशित हो गयी है। खेद है स्थलाभाव के कारण उपरोक्त पत्रकों का हिन्दी अनुवाद मै इस समय दे नहीं सकता। पत्रक न० ३ 'आर्यधर्म साहित्य निर्मिती' की व्यवस्था की पूर्वतयारी कोल्हापुर आर्यसमाज के माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डा० काटे तथा बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्व० श्री प० विजयशकर जी के प्रोत्साहन के कारण मैने शुरू की। यही काम १९५७ के ऋषि निर्माण दिन से पुनरपि कर रहा हूँ व अन्त तक करता रहूँगा।

कोल्हापुर आर्यसमाज ने अपनी दिनाक ११ फरवरी १९५७ को सभा में निम्नाशयका ठराव सम्मत करके रखा है —

'अकेला कोल्हापुर आर्यसमाज द्रव्याभाव के कारण बड २ काम करने मे असमर्थ है। महाराष्ट्र की अन्य आ स शाखायें सम्मत करेंगी तथा इस कार्य में ब० प्र० आ० प्र० सभा स्वतन्त्र निधि खड़ा करेंगी तो कोल्हापुर आर्यसमाज इतर समाजों के माफक अपना हिस्सा देगा।"

उपरोक्त आर्य समाज का ठराव मैने प० विजयशकर जी को बतलाया, वह पडित जी को बडा ही पसन्द आया पडित जी मे महाराष्ट्र वद प्रचार के प्रति बडी आस्था थी। बम्बई प्र० आ० प्र० सभा का मुखपत्र आर्यप्रकाश' दिनाक ०१ अगस्त १९५७ के अ क में पडित विजयशकर जी ने महाराष्ट्र मे वैदिक साहित्य प्रचार' शीर्षक देकर लिखा है —

"महाराष्ट्र में वेद प्रचारार्थ श्रीमती मुम्बई प्र० आ० प्र० सभा ने गत साल मराठी भाषी उपदेशक की नियुक्ति की। इस साल से मराठी भाषा मे आर्यसमाज का साहित्य उपलब्ध हो एतदर्थ सभा के प्रधान ने ट्रक्ट आदि लिखवाकर प्रकाशित करने का सकल्प किया है। प्रथम 'आर्यसमाजाची नितान्त आवश्यकता' नाम की छोटी सी पुस्तिका मुद्रित करने को दी गई है।" प्रधान जी के सकल्प का महाराष्ट्र हार्दिक स्वागत कर रहा है। सभा के उपदेशक श्री हरि सखाराम तु गार अपने दौरे में लोगों को प्रधान जी के सकल्प का परिचय करा रहे हैं। फलश्रुति निम्न प्रकार हुई है, यह प्रसन्नता की बात है। महर्षि दयानन्द वैदिक साहित्य प्रसारक मण्डल का इगतपुरी से कार्य प्रारम्भ हो गया है। पत्रक न० ३ मराठी में प्रकाशित हुआ है जिसमे मडल का उद्देश्य, निधि आदि का स्थूल स्वरूप स्पष्टतया निवेदन किया है।

उद्देश्य वैदिक साहित्य, महर्षि दयानन्द के ग्रन्थोंका मराठी इग्लिश भाषाओंमे प्रकाशन आर्य समाज साहित्य का मराठी अनुवाद करना आदि। २ सस्ते भाव मे स हित्य बिक्री ३ मराठी के प्रतिष्ठित लेखकों से ग्रन्थ रचना कर लेना ४ साप्ताहिक पाक्षिक या मासिक पत्र प्रकाशित करना।

द्रव्यनिधि —प्रत्येक १० दस रुपयों का एक शेअर ऐसे पाच सौ शेअर्स बिक्री करके ५००० रुपयों का, प्रारभिक कार्यार्थ, द्रव्यनिधि इकट्ठा करना।

४ महाराष्ट्र मे महर्षि दयानन्द का स्मारक ग्रथ अखिल भारतीय स्वरूप का होगा । लाखो रुपयों का द्रव्यनिधि इकट्ठा होगा इसमें शक नहीं। इसमें कोई शक लेगा तो मानों वह महाराष्ट्रीयों के कतृत्व शक्ति पर अविश्वास रखता है। आज फक्त वतमान काल मे मराठाभाषी जनता का प्रतिनिधिक ऐसा एक मध्यवर्ती मण्डल स्थापन करके पंडित विजयशकर जी के सकल्पानुसार प्रारभिक काय पर व्यय करने के लिये केवल ५००० पाच हजार रुपयों का द्रव्यनिधि इकट्ठा करना है। प० विजय शकर जी के जीवन मे ही ऐसा एक तात्पुरता (Interine) कामचलाऊ मण्डल इगतपुरी (नासिक) मे दिनाक १९ सितम्बर १९५७ कोश्रीमान बाबूलाल गोकुल की अध्यक्षता में स्थापन होकर ५० ६० रुपया भी इकट्ठ किय गये थे। हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे ब० प्र० आ० प्र० सभा व्यस्त होने के कारण तथा प० विजयशकर जी की अकस्मात मृत्यु होने के कारण मण्डल का कार्य रुका हुआ है। कोल्हापुर आर्य समाज की छत्रपति निष्ठा, उमकी साहित्याभिरुचि और प० विजयशकर जी की महाराष्ट्र वेद प्रचार की आस्था उनके पश्चात ब० प्र० आ० प्र० सभा के पदाधिकारियों मे है ऐसा समझ कर प्रस्तुत नम्र आर्य सेवक ने महाराष्ट्र मे महर्षि दयानन्द वै० ग्र० सा० प्र० मण्डल का कार्य, दो साल तक, अवैतनिक रहकर, आगे बढन का दृढ निश्चय किया है। दो साल के बाद वह गृहस्थाश्रम से मुक्त होकर स्वतन्त्रतया समाज सेवा करेगा।

५ कोल्हापुर आर्य समाज को तथा ब० प्र०आ० प्र सभा का एतद् प्रसग नम्र परन्तु प्रकट प्रार्थना करना चाहता हू कि महाराष्ट्र मे आर्य समाज का धु वाधार प्रचार हो, विशेषत साहित्य निर्मित हो एसी शुभ कामना श्री शाहू छत्रपती की थी अपनी शुभ कामना क्रियान्वित करन के लिये छत्रपती न १९२ साल मे मुद्रणालय निमाण किया। श्री शाहु छत्रपती की शुभ कामना मफल करना कोल्हापुर आर्य समाज का आवश्यक कतव्य है। श्रीछत्रपती के कारण महाराष्ट्र का नतृत्व कोल्हापुर को प्राप्त हुआ है।

बम्बई प्र० आ प्र० सभा के मान्यवर पदाधिकारिओं! महाराष्ट्र वेद प्रचार की जिम्मेदारी आप पर है। आपकी सभा नागपुर, हैदराबाद से बहुत पुरानी है। तीन करोड मराठी भाषी जनता का धार्मिक उत्थान करना न करना आपके आधीन है। कोल्हापुर का आप अपनी उचित सलाह देते रहिये, उसका योग्य मार्ग दर्शन करते रहिये। इगतपुरी में जो १९५७ को तात्पुरता महर्षिदयानन्द वै० ग्र० सा० प्र० मण्डल स्थापित हुआ उसको अपने सभा की मान्यता प्रदान करके महाराष्ट्र मे महर्षि दयानन्द स्मारक का कार्य वृद्धिगत करने में आप सहभागी बने, इतनी ही प्रार्थना है।

(पृष्ठ २३६ का शेष)

इससे उसकी प्रामाणिकता मे कोई अन्तर नहीं आता। परन्तु जो पुस्तकें मूसा, जोशुआ सेमुएल इत्यादि २ के नाम से प्रचलित है उनके विषय में यह नहीं कहा जा सकता। इन पुस्तकों में साक्षिया विद्यमान हैं परन्तु वे अविश्वसनीय वस्तुओं को प्रमाणित करने की ओर प्रेरित है परमात्मा केसाथ साक्षात् वार्तालाप, मनुष्य के आदेश पर सूर्य और चन्द्र का खड़ा हो जाना आदि २ बातें ऐसी हैंजिन्हें सही स्वीकार नही किया जा सकता। (क्रमश)

चरित्र निर्माण की रूपरेखा

आर्य समाज के नियम और उप-नियमो के आधार पर

[लेखक—श्रीयुत बाबू पूर्णचन्द जी ऐडवोकेट, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]

आय समाज के उप नियम सख्या ४ में आय सभासद् इस प्रकार अकित है —

'जिनका नाम किसी आर्य समाज मे सदाचार से एक वष+अकित रहा हो और वे अपनी आय का शताश मासिक वा वार्षिक या० २५० रु० वार्षिक वा अधिक दान उस समाज को देते रहे हो और जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्सगों मे कम से कम २५ प्रतिशत हो तो वे आर्य सभासद् हो सकते है।'

उप नियम ४ ख में सदाचार की परिभाषा यह दी गई है। (ख) उपधारा (क) में प्रयुक्त सदाचार की परिभाषा इस प्रकार है —सध्या और नित्य कर्म, शुद्धवृत्ति, वैदिक सस्कार, पतिव्रत तथा पत्नी व्रत आदि सदाचार है। व्यभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यों और मासादि अभक्ष पदार्थों का सेवन, जुआ चोरी, छल कपट, रिश्वत आदि दुराचार हैं।

आर्य समाज के १० नियमों में से नियम ५, ६, ७, ८ धारा व्यक्तियों के चरित्र निर्माण के लिये अनिवाय है। छटे में ससार का उपकार इस आधार पर माना गया है कि प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करे और इसी प्रकार नम्बर ४ और ५ में सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने पर बल है और ५ मे सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार करके करने का आदेश है और ७वें में प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार वरतने के लिए निर्देश है।

आय सभासद् को प्रतिनिधि निर्वाचित प्रान्तीय सभा के लिये होने का अधिकार है इसी प्रकार प्रतिनिधिसभा से सार्वदेशिकसभा में प्रतिनिधि होकर जाने का अधिकार है। निर्वाचित प्रतिनिधि सभा प्रतिज्ञा पत्र इस प्रकार है —

मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि आर्यसमाज के उप नियमों की धारा स० ४ में वर्णित सदाचार को स्वीकार करता हू और उसे जीवन में धारण करने का उद्योग करूगा परमात्मा इसमें मेरे सहायक हो।

इन सबको देखने से विदित होता है कि आय समाज मे सभासद् व आय सभासद् होने के लिए सदाचारी होना अत्यन्त अनिवार्य है और चरित्र निर्माण आदोलन इस लिये आवश्यक है कि आर्य सभासद् बनाते समय इन नियमों की ओर जितना ध्यान देना चाहिये वह नहीं दिया जाता।

ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण मे

(अ) महर्षि दयानन्द ने नियमो मे व्यक्तिगत चरित्र निर्माण पर बल दिया जैसा ऊपर दर्शाया गया है।

(ब) महर्षि ने पाखन्ड खन्डनी पताका लगाकर १८५८ मे पाखन्डो के खडन के लिये बल दिया। लोकसम्बन्धी और परलोक सम्बन्धी पाखडों के निराकरण के लिये महर्षि का उपदेश और सदेश रहा।

(स) सत्यार्थप्रकाश मे दसवा समुल्लास आचार और अनाचार के विषय में लिखा गया।

(द) सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास और तीसरे मे व्यक्तियो के निर्माण को पूरी व्यवस्था दी गई है।

(ख) सत्यार्थप्रकाश के साथ २ महर्षि ने व्यवहारभानु लिखा और व्यवहार भानु में आजकल की जो व्यवहार की दूषित मनोवृत्ति हैं उसका चित्र खेंचा है और व्यापार मे ईमानदारी पर बहुत बल दिया है।

सार्वदेशिक सभा के निश्चयों के आधार पर

(अ) आर्य महासम्मेलन हैदराबाद में चरित्र निर्माण आन्दोलन की पुष्टि में प्रस्ताव स्वीकार हुआ और वह प्रस्ताव नम्बर १ था। सन् १९५५ में सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा दिनांक १ मई सन ५५ को चरित्र निर्माण के सम्बन्ध का निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार हुआ जो जनसम्पर्क का आवश्यक अंग बताया गया।

"चरित्र निर्माण सम्बन्धी आंदोलन अधिक तीव्रता से सचालित किया जाये जिससे देश में से भ्रष्टाचार व अन्य बुराइयां दूर हो सकें और स्वराज्य प्राप्ति के साथ २ सुराज्य भी हो सके। इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिये आर्य सभासदों व आर्य कार्यकर्ताओं को इस कार्य पर विशेष बल देना चाहिए और आर्य समाजों से यह भी अनुरोध है कि आर्य सभासदों की सूचि बनाते समय सदाचार सम्बन्धी नियमों पर विशेष ध्यान रक्खें।"

(ब) इस निश्चय के अनुसार सार्वदेशिक सभा ने सर्व सम्मति से एक पृथक् विभाग स्थापित किया जिसका अधिष्ठाता या सयोजक मैं नियुक्त हुआ और जिसके व्यय के लिए स्वीकारी हुई और पिछले तीन सालों में अर्थात ५६, ५७, ५८ में यह विभाग बराबर कार्य करता रहा जिसकी रिपोर्ट प्रत्येक वर्ष में अंकित है।

आर्य समाज के अन्तर्गत इसका स्वागत

आर्य वीर और आर्य, के विशेषांक चरित्र-निर्माण के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं।

(ब) आर्य मित्र में बीसों लेख इस सम्बन्ध के प्रकाशित हुए हैं और पृथक् रूप से विज्ञप्तियां भी प्रकाशित हुई हैं।

(स) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने भी इस कार्य के लिये एक विभाग बनाया हुआ है।

(द) मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने अभी हाल में एक उपसमिति इस कार्य के लिए बना दी है जिसकी सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई है जो सार्वदेशिक में भी प्रकाशित हुई है जिसका शीर्षक "चरित्र निर्माण समिति सागर" है।

(य) अनेकों समाजों में उत्सवों के अवसरों पर चरित्र निर्माण सम्मेलन इस अवधि में हुए और हो रहे है। अभी झांसी में १२ मई से लेकर १८ तक सारा उत्सव ही इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ।

इस आन्दोलन का आर्य जगत् से बाहर के क्षेत्र में स्वागत और समर्थन

(अ) आचार्य तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन इसी की पुष्टि में है।

(ब) आचार्य श्रीराम शर्मा, मथुरा वालों ने इसको अपना लिया है और जीवनयज्ञ नाम से एक पत्रिका निकलने लगी है।

(स) कल्याण का मानवता अंक अभी विशेषांक निकला है जिसमें इसी विषय पर बहुत से लेख हैं।

(द) साधु सेवक समाज ने भी इस चरित्र-निर्माण और नैतिक उत्थान आन्दोलन को अपने कार्यक्रम का आवश्यक अंग बना लिया है।

(य) भारत सेवक समाज ने भी इसी प्रकार इसको आवश्यक समझकर अपनी कार्य सूचि में सम्मिलित किया है।

(ल) केन्द्रीय सरकार और उत्तर प्रदेशीय सरकार ने भी इस सम्बन्ध की कई विशेष आज्ञायें निकाली हैं और समितियां बनादी हैं। उत्तर प्रदेश में अपराध निरोध और भ्रष्टाचार निरोध के उद्देश्य से दो समितियां कार्य कर रही हैं जिनमें सरकारी

और गैर सरकारी सदस्य सब मिलकर कार्य कर रहे हैं।

इस आन्दोलन की उपयोगिता

भ्रष्टाचार बढ रहा है, खाने पीने की चीजों और औषधियों मे मिलावट होरही है। रिश्वत लेने देने का बाजार गर्म है और प्रजातन्त्र के नाम पर जो निर्वाचन हो रहे हैं उनमे वोट देने वाले और लेने वाले अनेक प्रकार के चरित्र दोष के अपराधी दिखाई देते हैं। बिना चरित्र के कोई निर्माण व्यवस्था सफल नहीं हो सकती, और न कोई व्यापार और व्यवहार कुशलता से हो सकता है और न कलाकौशल की उन्नति हो सकती है। स्वराज्य का रूप देने के लिये यह आन्दोलन अत्यन्त अनिवार्य और उपयोगी है।

अब तक के आन्दोलन का परिणाम

पिछले तीन वर्ष में जो आन्दोलन हुआ है, साहित्य का प्रकाशन हुआ है और भ्रमण का कार्य हुआ है उसका एक रूप से तो परिणाम निराशा जनक प्रतीत होता है कि भ्रष्टाचार और अपराध बढते हुए दृष्टिगोचर हो रहे हैं। वास्तविक परिस्थिति ऐसी नहीं है। इस आन्दोलन का यह प्रभाव हुआ है कि जो भ्रष्टाचार और अपराध रूढी के रूप में हो रहे थे और जिनको विशेष रूप से बुरा नहीं समझा जाता था अब बुरा समझा जाने लगा है और करने वाले और न करने वाले सब इस को बुरा मानने लगे हैं और बुरा कहने लगे हैं अब आशा यह की जा सकती है कि जब इसको अधिक संख्या बुरा कहने वाली और समझने वाली है तो इसके समाप्त होने की आशा भी की जासकती है। यह एक मनोविज्ञान का प्रश्न है, इसको एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है। जब महर्षि दयानन्द ने अछूतोद्धार आन्दोलन आरम्भ किया उस समय अछूत अपने को विशेष रूप से पद दलित व पीड़ित समझते थे और अपने को ऊंचा समझने वाले हो उनको अछूत समझना अपना अधिकार समझते थे। जब तीव्र आन्दोलन हुआ तो दोनों ओर से भावनाओं में परिवर्तन आया। समाज सुधार के क्षेत्र में महात्मा गांधी के प्रभाव से यह आन्दोलन राजनैतिक क्षेत्र का अंग बना और वहां से अब राष्ट्रीय विधान का अंग हो गया है। इतनी रूप रेखा होने पर भी अभी तक यह कलंक पूर्ण रूप से नहीं मिटा है परन्तु भविष्य में मिट जाने की आशा की जा सकती है। इसलिए ऐसे शुभ आन्दोलनों के परिणाम की चिन्ता न करके प्रत्येक आर्य समाज के हितैषी सदस्य और नागरिक को इसको सफल बनाने के लिए कटिबद्ध रहना चाहिए।

आर्य समाज की विशेषता

वर्तमान परिस्थिति में आर्य समाज ही वह संस्था है जो इस आन्दोलन को सफल बना सकती है जिसके पास महर्षि के आदेश के अनुसार इस की पूर्ण रूपरेखा है जिसके नियमों में ऐसा उल्लेख है और जो राजनीति की झंझटों और दलदलों से इस समय तक सुरक्षित है। यदि आर्यसमाज सारे विश्व मे और देश मे इस आन्दोलन को प्राचीन आदर्शों के आधार पर सफल बनाने में लग जाये तो आर्य समाज का भविष्य बहुत उज्ज्वल और महान है।

आर्य जगत से अनुरोध

(अ) सब प्रतिनिधि सभाओं से अनुरोध है कि वह अपने क्षेत्र मे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक पृथक् विभाग बनालें और तत्परता से कार्य आरम्भ करें।

(ब) प्रत्येक आर्य समाज अपने अन्तर्गत एक उपसमिति बना ले और इस कार्य को तीव्रगति से आरम्भ करे। पहले आन्तरिक सुधार की ओर ध्यान हो फिर बाहर की ओर। आर्य सभासदों की सूचि बनाते समय सदाचार के नियम पर पूर्ण ध्यान

श्री विद्यानन्द विदेह की वेदव्याख्या पर एक दृष्टि

(लेखक—श्री राजेन्द्र नाथ जी शास्त्री सहायक मन्त्री सार्वदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली)

श्री विद्यानन्द विदेह की वेद भाष्य विषयक मान्यताए एव धारणाएँ, ऋषि दयानन्द एव प्राचीन परम्पराओं का विरोध करती हैं। यही कारण है कि उनका वेद भाष्य बिना नकेल के ऊट के समान आवारा हो गया है। समस्त भाष्य ऋषि दयानन्द के भाष्य से विपरीत हैं। श्री विदेह जी ने 'वेदभाष्य की योजना' शीर्षक पृ० ३ पर प्रकाशित किया है कि—

(क) "वेद के अभिप्राय को पाने की चाबी वेदों के अगभूत शिक्षा कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द ज्योतिष विज्ञानों को मान लिया गया है वेद के अध्ययन के लिए इन अगों के ज्ञान की नितान्त आवश्यकता मानी जाने लगी। फल यह हुआ कि जिन वेदों के मर्मों की खोज ऋषि (आत्मदर्शी, तत्त्वज्ञानी) जन किया करते हैं, वे वेद शुष्क, कुण्ठमति वैयाकरणों और शब्द शास्त्रियों की पाठशाला मे तराशे जाने लगे। वेद ने अपना अभिप्राय उन्हें अभिव्यक्त ही नहीं किया। वैदिक साहित्य एव वैदिक विद्वानों का इतिहास यह सिद्ध कर रहा है कि कोरे वैयाकरण कोरे बुद्धिवादी शुष्क, साधन हीन, तार्किक, याज्ञिक एव मीमासक कभी भी वेद के यथार्थ तक पहुचने मे सफल नहीं हुए हैं सफल हुए है तो ऋषि मनीषी जन ही वर्तमान युग में वेदों का तात्पर्य क्यों नहीं स्पष्ट हो पा रहा। कारण यह है कि अन्त स्साधक इस क्षेत्र मे नहीं आ रहे।" पृ० ३

यह सब बातें ऋषि भाष्य के विषय मे ही हैं। क्नी विदेह जी को स्पष्ट नहीं हो पा रहा। वही अगो के विज्ञान के आधार पर बनाया गया है। ऋषि ही वैयाकरण, बुद्धि वादी, शुष्क,तार्किक याज्ञिक एव मीमासक थे। इसीलिये विदेह जी का भाष्य ऋषि भाष्य से सर्वथा विपरीत है।

१. समस्त वेद मन्त्र स्वर रहित छापे गये हैं।
२. ऋषि, देवता छन्द तक भी वेद मन्त्रों के नहीं दिये गये हैं।

दिया जाये।

(ख) प्रतिज्ञा पत्र छपवाकर बहुत बड़ी सख्या मेंहस्ताक्षर कराये जाये प्रतिज्ञा पत्र कार्यालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली से प्राप्त किये जा सकते हैं। प्रतिज्ञा पत्र भरवाने का महत्व इससे ही विदित है कि आर्यसमाज के उपनियमों में और आर्य प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमों मे इस का उल्लेख है। बिना सदाचार के नियम पालन किये कोई आर्य सभासद् प्रतिनिधि नहीं हो सकता और प्रतिनिधियों के बिना आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सत्ता नहीं रह सकती। इसलिए यदि सत्ता को बनाये रखना है तो इस आन्दोलन को सफल बनाना महान आवश्यक है।

(ग) आर्यसमाज के आन्दोलन में ईश्वर की सत्ता मे विश्वास और उसका सर्व व्यापक और न्यायकारी होना दो ऐसे आधार हैं जो इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अत्यन्त आवश्यक है। जितने पाप, भ्रष्टाचार और अपराध होते हैं उनके करने वाले के मन में दो भावनायें स्थान रखती हैं। एक यह कि मेरा पाप छिपा रहेगा दूसरे यह कि मैं अपने पाप के परिणाम से किसी न किसी प्रकार बच जाऊगा। यदि छिपकर और बचकर की भावना का निराकरण हो जाये तो पाप भ्रष्टाचार और अपराधों की भावनाओं का अन्त हो जायेगा। महर्षि दयानन्द की आस्तिकता की भावना, रूढिवाद, अन्ध विश्वास और पाप क्षमा होने की भावना से सदा मुक्त हैं।

३ पद पाठ भी स्वर रहित है। जान पड़ता है कोई मस्कृत का काव्य है।

४ अपने को सिद्ध योगी होने का ढोंग पूरा लिखा है। यथा—

"सिद्ध शिला पर ध्यानावस्थित हो गया। (पृ १८ म० ४)। म॰याह्नोत्तर सिद्ध शिला से नीचे उतरकर स्वगृह को जाते हुए मार्ग में एक चट्टान पर मुझे एक अपरिचित नवागन्तुक सन्यासी दिखाई पड़ा पवन से इधर उधर उड़ते हुए जिस के लम्बे व लों ने मुझे अपनी ओर आकृष्ट किया। परिचय प्राप्ति की मेरी इच्छा पर उसने कहा "मुझ से मेरे अपने विषय में कुछ न पूछिये।" यदि आप किसी सेवा के लिये आदेश करेंगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।" मैंने निवेदन किया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने मेरे नाम से सम्बोधन कर के कहा —

"वेदों का सही और सच्चा अर्थ करना है, तो योगाभ्यास कीजिये, सयम पूर्वक समाधि में उतरिये।" कुछ क्षणों के मौन के बाद उसने फिर कहा —

"वेदेतर समस्त ग्रन्थों (e ६ अङ्गों, उप ङ्गों ब्राह्मणों, उपवेदों, समालोचक) का आश्रय छोड़िये। वेदों का मर्म जानना है तो वेदों के अन्दर बैठकर वेद मन्त्रों पर मनन कीजिये। अन्त श्रुति और अन्तर्ज्योति के बिना वेदों के वास्तविक अर्थ का प्रकाश नहीं हो सकता।" मै कुछ कहना ही चाहता था, कि वह फिर कहने लगे —

"आपने सब कुछ तो पढ़ा है, पर पुराण नहीं पढ़े पुराणों ने आपका क्या बिगाड़ा है। पुराण, कुराण बाइबिल सब पढ़िये, और सबकी वैदिक व्याख्या कीजिये। सब वेदों की धारायें हैं। इस प्रकार ही ससार में वेदों को फैलाया जा सकता है।"

इतना कहकर वह उठ खड़ा हुआ और चलते कहता गया, 'ऋषि, देवता, छन्द और स्वरों में न उलझिये। इन पचड़ों ने ही वेद का विकास रोक रखा है। वेदों के इन बन्धनों को तोड़िये। वेदों को बन्धन मुक्त कीजिये।" पृ० २० स० १५ १६ सीताराम कुटी के पास एक अन्य अपरिचित नवा गन्तुक सन्यासी के दर्शन हुए। तोनों वृक्ष की छाया में बैठकर बातचीत करने लगे। मुझे सम्बोधन कर सन्यासी बोले —

'आप पिछले जन्म के वेद और योग के अभ्यासी हैं। आप वेदों का अध्ययन और योगा भ्यास कीजिये। आपको शीघ्र दोनों में सिद्धि प्राप्त होगी। "

६ ऋषि दयानन्द सम्मत एव आर्य जगत द्वारा आजतक स्वीकृत प्रचारित नैरुक्त शैली के श्री विदेह जी कट्टर विरोधी हैं देखिये पृ० १९ पर ७ ८ सख्या —

७ मन्त्रार्थ की अनिश्चितता का और परिणाम स्वरूप वेदों की दिखाई पड़ने वाली असम्बद्धता का मुख्य कारण मुझे प्रतीत हुआ—व्याकरण वाद, व्युत्पत्तिवाद, प्रमाणवाद, विनियोगवाद, यज्ञवाद, तन्त्रवाद, इतिहासवाद और गाथावाद

८ व्याकरण वादी और व्युत्पत्तिवादी भ व्यकार यह भूल गए कि वेदों की भाषा वैदिक भाषा है, सस्कृत नहीं। वे यह भी भूल गये कि वेदों का अथवा वैदिक भाषा का व्याकरण स्वय वेद है केवल वेद हैं। सस्कृत के व्याकरण से वेदों के सम्पूर्ण शब्दों का अर्थ तथा उनकी व्युत्पत्ति सिद्ध करना वेद के वेदत्त्व को नष्ट करना है।

७ सार्वदेशिक सभा यह पास कर चुकी है कि 'ॐ' का इस प्रकार लिखना वाममार्गी प्रथा है। अत 'ओ३म्' ही लिखा जाये। पर पौराणिकों को साथ लेने के लिए विदेह जी ने इसी ॐ को सर्वत्र छापा है।

८ विदेह-वेद भाष्य को देखकर हमारी धारणा बनी है कि यह प्राचीन परम्पराओं से उन्मुक्त

'छायावादी' वेद भाष्य है। जिसमें तथ्य नहीं, तीतर की आवाज पर जैसे अटकले लगाई जाती हैं वैसे अटकले ही- जो कर्ण प्रिय हैं, मनोरजन परिपूर्ण हैं—तनिक यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के पहले मन्त्र का भाष्य देखिये—

"ऋत्वनुसार यौवनावस्था को प्राप्त एक युवक के हृदय में भी एक स्वाभाविक कमनीय कामना अ कुरित होती है, किसी सुयौवना सुन्दरी का प्रेमा धार बनकर उसके हृदय मे अपना हृदय रखने की उसे अपने हृदय से लगाने और स्वय उसके हृदय से लगने की, उसे अपन हृदयासन पर सुशोभित करके उसे अपने हृदय की रानी बनाने की

'हृदयेश्वरी' वहि के लिए अपने हृदयासन के लिए, अपने हृदय पर सुशोभित करके अपनी हृदयेश्वरी बनाने के लिए, अपने हृदय से लगाकर अन्त शान्ति पाने के लिए, मैं तुझ प्रिया को, तुझ सेवनीया को सम्यक सींचता हू। अपने हृद यासन पर सचारता हू शीतल जल की तरह अपने हृदय में सींचता हू। हृदय से प्यार करता हू।

पृ० ७६

देखे आपने प्रयसी के लिए विदेह जी के हृदयोद्गार। कालिदास को मात कर दिया है।इसी प्रकार 'हृदयेश' सम्बोधन से प्रेमी के प्रति प्रेयसी के उद्गार व्यक्त किए हैं

यह वेद भाष्य है। जिसकी गन्धमन्त्र केकिसी शब्द में नहीं, वहा तो वर्हि और वेदी का ही उल्लेख है।

आगे पृ० ८ पर लिखा है —

"समस्त शरीरमें व्याप्त रहने से वीर्य का नाम विष्णु है। स्तुप कहते हैं शिखा, शिखर, सर्वोच्च स्थल को किसी भा स्थल के सबसे ऊचे स्थान को स्तुप कहते हैं।"

बस विष्णु का स्तुप क्या हुआ विचार कर लीजिये?

गृहस्थ आश्रम का बडी हो महिमा यजुर्वेद २।२ मे दिखाई है यहा तक लिख डाला— पृ० ८१

"अभ्युदय का ही नहीं, निश्श्रेयस का व्यु न्दन भी यह गृहसस्था ही है। गृहस्थाश्रम! तू विष्णु का सानु है। विष्णु की प्राप्ति का सर्वोच्च स्थल है।"

आगे यहा तक लिख डाला—

"जिन्होंने न परिवार परिजन से प्यार किया, न दाम्पत्य स्नेह से स्निग्धता की अनुभूति प्राप्त की, वे यदि ईश्वर भक्त बने भी तो शुष्क दार्शनिक भक्त ही बने, तल्लीन और तन्मय गहन भक्त नहीं। यों यत्र तत्र कहीं कोई अपवाद हुआ तो क्या।'

यह इशारा किस २ की ओर है। और सुनिये-

"दाम्पत्य प्रेम से ही प्रभु प्रेम जाग्रत होता है। यह कहावत अक्षरश सत्य है।

इन भावो अर्थो की गन्ध कहीं भी तो वेदमत्र में नहीं है।

श्री विदेह का पूरा ही भाष्य इस प्रकार की अनर्गल बातों से भरा है इस प्रकार का व्यक्ति यदि आर्य समाज का अ ग बन सकता है तो सब ढोंगी, पाखण्डी, अनर्गल प्रलापी आर्य समाज के प्रचारक बनाये जा सकते है। यदि सभा चाहे तो धर्मार्य सभा विदेह के पूरे भाष्य पर रिपोट दे सकती है, उपर्युक्त प्रश्नों मे स्थाली पुलाक न्याय से दिग्दर्शन मात्र कराया गया है।

॥ ओ३म् ॥

॥ गोभिरष्टरेभामतिम् दुरेवाम् ॥

विरजानन्द संस्कृत परिषद्

संस्कृत भाषा और वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ एवं वर्तमान युग में संस्कृत के आदि प्रचारक महात्मा विरजानन्द के स्मारक रूप में २५ ११ १९५१ को "विरजानन्द संस्कृत परिषद्" की स्थापना हुई थी जिसकी ओर से संस्कृत प्रसून, संस्कृत विनोद, संस्कृत विज्ञ तथा संस्कृत प्रवीण—इन चार संस्कृत परीक्षाओं का आयोजन किया गया है।

साथ ही जो किसी कारण से संस्कृत न पढ सकें उन्हें वैदिक संस्कृति एवं धर्म से परिचित कराने के लिए सिद्धान्त प्राज्ञ, सि   मणि, सिद्धान्त वागीश और सिद्धान्त प्रभाकर—इन चार परीक्षाओं को हिन्दी भाषा के माध्यम द्वारा १३ नवम्बर १९५५ से चालू किया गया है

इन परीक्षाओं में छः मुख्य विशेषताए ये हैं —

(१) प्रत्येक परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण पत्र एवं उसकी उपाधि दी जाती है।

(२) प्रत्येक व्यक्ति चाहे जिस परीक्षा में बैठ सकता है। वह चाहे तो एक साथ संस्कृत तथा हिन्दी परीक्षा में बैठ सकता है क्योंकि ये आगे पीछे होती हैं।

(३) इन्हें इस प्रकार बनाया गया है कि घरेलू काम काज एवं साधारण शिक्षा प्राप्त करते हुए भी परीक्षार्थी इन्हें दे सकें।

(४) सभी पाठ्य पुस्तकें शिक्षात्मक एवं ज्ञान वर्धक हैं।

(५) परीक्षा शुल्क बहुत ही कम है अर्थात् क्रमशः १), २), ३), तथा ४) है।

(६) विशेष पद प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को पारितोषिक भी मिलता है।

आर्य जनता से निवेदन है कि वह इन परीक्षाओं का प्रचार अपने गुरुकुलों, स्कूलों, कालिजों पाठशालाओं, पुस्तकालयों, समाजों, आर्य कुमार सभाओं एवं अन्य संस्थाओं और धर्म स्थानों में करने की कृपा करें, और साथ ही स्थानीय स्त्री पुरुषों, बालक-बालिकाओं को प्रेरित करें कि वे अधिक से अधिक संख्या में इनमें सम्मिलित हों। आठों परीक्षाओं में मिलाकर जहा न्यून से न्यून ५ परीक्षार्थी हो जावे और कोई विश्वस्त सज्जन केन्द्राध्यक्ष बनना स्वीकार कर लें, वहा केन्द्र स्थापित कर दिया जाता है। इन परीक्षाओं की पाठविधि परीक्षाओं की नियमावली, केन्द्र स्थापनार्थ आवेदन पत्र, तथा परीक्षार्थी-आवेदन पत्र पत्र डालकर नि शुल्क मगवाये जा सकते हैं।

आपको सूचनार्थ निवेदन है कि ये परीक्षायें प्रति वर्ष दशहरे के पश्चात पड़ने वाले रविवारों को होती हैं। निश्चित तिथि की सूचना बाद में दी जावेगी।

परीक्षार्थी आवेदन पत्र १६ अगस्त ५९ तक बिना विलम्ब शुल्क के तथा ३१ अगस्त १९५९ तक १) प्रति आवेदन पत्र विलम्ब शुल्क सहित स्वीकार किये जायेंगे।

आशा है इस पुनीत कार्य में परिषद् को जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

जगन्नाथ

बी० ए०, एम० एल० बी०, जे० डी०

प्रभाकर, सिद्धान्त शास्त्री,

परीक्षा मन्त्री, बाजार सीताराम, दिल्ली

श्री भूपनारायणसिंह जी की सेवा क्यों समाप्त की गयी ?

दैनिक वीर अर्जुन दिल्ली के १६-६-५६ के अंक में "छोटा नागपुर संकट में" शीर्षक से श्री महाशय कृष्ण जी का एक लेख छपा है। इस लेख में सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी की यह शिकायत अंकित की गई है कि सार्वदेशिक सभा के नए अधिकारियों ने श्री भूपनारायणसिंह जी उपदेशक की सेवाएं समाप्त कर दी हैं जो बड़े सफल प्रचारक हैं, और आप विपत्तियों और कष्टों का सामना करते हुए भी छोटा नागपुर में ईसाई प्रचार निरोध का कार्य कर रहे हैं। इस प्रसंग में श्रीयुत ला० रामगोपाल जी ने कहा है कि उक्त उपदेशक बिहार सभा की ओर से काम कर रहे थे परन्तु बिहार सभा उनके वेतन का दायित्व न ले सकी इस पर सार्वदेशिक सभा ने यह दायित्व अपने ऊपर ले लिया था।

परन्तु सत्य यह है कि आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार को प्रारम्भ से ही श्री भूपनारायणसिंह जी की इस नियुक्ति पर आपत्ति थी और उक्त सभा ने २१ अप्रैल से उन्हें अपनी सेवाओं से पृथक् कर दिया था। जब सार्वदेशिक सभा द्वारा उन्हें आर्थिक सहायता दिये जाने की बात बिहार सभा को ज्ञात हुई तो उसने सार्वदेशिक सभा में एक कड़ा विरोध पत्र भेज कर इस पर आपत्ति उठाई। इस विरोध पत्र के आने पर सभा के अधिकारियों के समक्ष इस सहायता को बन्द करने के सिवा अन्य कोई चारा न रह गया था अतः विवश होकर यह सहायता बन्द कर दी गई। इसका कारण भी श्री भूपनारायणसिंह जी को लिख कर भेज दिया गया था।

सभा के नए अधिकारियों ने तो केवल उस भूल का सुधार किया है जो सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी के द्वारा हो गई थी। सम्बद्ध सभा की अनिच्छा और विरोध के होते हुए उस सभा के अनुशासन को चुनौती देने वाले किसी भी व्यक्ति को सार्वदेशिक सभा द्वारा शरण दिया जाना उचित नहीं है। यदि यह प्रथा पड़ जाय तो सभाओं के अन्य कर्मचारियों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ कर अनुशासन को धक्का लग सकता है। संगठन की शिरोमणि सभा होने के नाते सार्वदेशिक सभा का परम कर्तव्य है कि प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं की मान मर्यादा का ध्यान रखें।

सार्वदेशिक सभा ने ईसाई प्रचार निरोध का कार्य अपने कार्यक्रम में से नहीं निकाला है। उड़ीसा आदि में पूर्ववत् कार्य हो रहा है और इस वर्ष यह कार्य उड़ीसा आदि के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों में भी बढ़ाया जायगा।

मुझे दुख है कि सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से ज्ञात किए बिना अतथ्य और भ्रमजनक बातें लिखी गई जिनका हमें प्रतिवाद करना पड़ा।

रघुवीरसिंह शास्त्री

सभा मन्त्री

वैदिक धर्म प्रसार
और सूचनायें

—आर्य समाज गया का १६वां वार्षिकोत्सव ३० मईसे २ जूनतक ससमारोह मनाया गया। श्री प० बिहारीलाल शास्त्री श्री बलवीर जी शास्त्री के उपदेश हुए तथा श्री नरेन्द्रसिंह श्री प० शिवलाल जी (सदस्य सार्वदेशिक सभा) ने समाज मन्दिर के निर्माणार्थ अपनी ओर ७ हजार के वचन प्राप्त हुए। इसी अवसर पर श्री शिवलाल जी द्वारा समाज मन्दिर की आधार शिला रखी गई।

—आर्य समाज शाहपुरा (राजस्थान) का हीरक जयन्ती महोत्सव २६, ३० ३१ मई व १ जून ५६ को मनाया गया। २६ मई से १ जून तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ हुआ। २८ को महर्षि चित्रकला प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीमती महेन्द्र कुमारी जी द्वारा हुआ जिसे सहस्रों नर नारियों ने देखा। २६ मई को नगर मे एक विशाल नगरकीर्तन निकाला। उसी दिन रात्रि को श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का राज प्रासाद के चौक मे प्रभावशाली भाषण हुआ। ३० मई को श्री आनन्द स्वामी जी महाराज द्वारा उत्सव का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन का कार्य रेल्वे मन्त्री श्री माननीय जगजीवनराम जी द्वारा सम्पन्न होना था परन्तु ऋतु खराब होने के कारण वायुयान से यात्रा सभव न हो सकी और वे न आ सके। प्रारम्भ मे राजाधिराज श्री सुदर्शन देव जी का स्वागत भाषण हुआ। इस अवसर पर श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्री आचार्य विश्वश्रवा जी, श्री करण शारदा, श्री प० भगवत्स्वरूप जी, न्यायभूषण तथा श्री भगवती प्रसाद जी आदि २ आर्य विद्वानों व नेताओं के भाषण, एव उपदेश हुए। इस अवसर पर महिला सम्मेलन भी हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमती महारानी हर्षवन्त कुमारी जी शाहपुरा ने की तथा उद्घाटन मसूदा की महारानी जी द्वारा हुआ —रामस्वरूप सिद्धान्त शास्त्री मन्त्री

—श्रीयुत बाबू श्री धरदयालु जी रिटायर्ड आफिस सुपरि० उरई निवासी का ३ ५ ५६ को देहावसान हुआ। श्री बाबू जी ने वैदिक ग्रन्थों का अनुसधान करने के लिए ९० सहस्र रुपया दान देकर गुरुकुल वृन्दावन मे अनुसधान विभाग की स्थापना की थी। उनके निधन पर गुरुकुल वृन्दावन में शोक सभा हुई।

—आर्य समाज छोटी सादडी के पुराने एव कर्मठ सेवक श्री शकरलाल जी पुरोहित के आकस्मिक निधन पर २६ मई को रात्रि के ८॥ बजे श्री गणपतलाल जी अग्रवाल की अध्यक्षता में एक शोक सभा हुई जिसमे उनकी ३० वर्ष से अधिक काल तक की गई मूल्यवान सेवाओं की सराहना करते हुए हार्दिक श्रद्धाजलि प्रस्तुत की गई।

—आर्य समाज के पुरोहित और आन्ध्र प्रदेश के एक आर्य विद्वान श्री प० सूर्यदेव जी शास्त्री का २२ ४ ५६ को हृदय की गति बद हो जाने से देहान्त हो गया। समाज में शोक सभा हुई। प० जी, हिन्दी सस्कृत और तेलुगु के विद्वान् थे। —विश्वभर दयाल मन्त्री

—३ मई ५६ को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद का वार्षिक अधिवेशन श्री प० नरेन्द्र जी की अध्यक्षता में हुआ। आगामी वर्ष के लिए श्री प० विनायकराव जी विद्यालकार एम०पी०

प्रधान तथा श्रीमती सुशीलादेवी जी विद्यालङ्कृता मन्त्रिणी चुनी गईं।

शुद्धियां

भारतीय हिंदू शुद्धि सभा दिल्ली के तत्वावधान में १५-५ ५९ को ग्राम गुडगावा (बदायूं) में ४१, २०-५-५९ को ग्राम मठला (बदायूं) मे ५ २२-५-५९ को ग्राम खेड़ा जलालपुर (बदायूं) में ५ तथा २५-५ ५९ को ग्राम महमदपुर में १६ नव मुस्लिमों की शुद्धि हुई। —नारायणदास कपूर मन्त्री

—गुरुकुल श्री दयानन्द वेद विद्यालय युसुफ सराय नई दिल्ली से आठ वष में शास्त्री और मैट्रिक दोनो ही परीक्षाए उत्तीर्ण कराई जाती हैं। यह सब शिक्षा आर्ष पाठ विधि से दी जाती है। योग्य छात्रों के भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि शुल्क है?

—दयानन्द मठ रोहतक मे पजाब विश्व विद्यालय से स्वीकृत स्वतन्त्रानन्द देवनागरी महा विद्यालय सचालित हो रहा है जिसमे रत्न, भूषण प्रभाकर तथा प्रौढ़क्लासें चलती है। फीस अत्यन्त उचित ली जाती है। —सामानन्द (अध्यक्ष)

—११, १२, १३ मई को आर्य समाज देवास का ६ से ९ अप्रैल तक आय समाज आगरा नगर (सिटी) का, तथा ६ से ८ जून तक आर्य समाज उज्जैन का वार्षिकोत्सव मनाया गया।

—मई के सार्वदेशिक मे आय कुमार सभा झज्झर का वार्षिक निर्वाचन छपा है जिसमें भूल से आर्य कुमार सभा गुरुकुल झज्झर के स्थान पर आर्य कुमार सभा झज्झर लिख दिया गया है। पाठक सुधार कर पढ़े।

—सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर हरिद्वार का साधु सम्मेलन आषाढ शुक्ला चतुर्दशी पूर्णिमा सम्वत् २०१६ तदनुसार १९ और २० जुलाई वेद विद्यालय गुरुकुल घरौंडा (करनाल) में मनाया जायगा। जो सज्जन संन्यास वा वानप्रस्थ की दीक्षा लेना चाहें वे स्वामी अभयानन्द सरस्वती आर्य साधु आश्रम लाडवा (करनाल) से पत्र व्यवहार करें।

विद्यार्य सभा

जनवरी ५९ के सार्वदेशिक में प्रकाशित भाद्रपद स० २०१५ विक्रमी के परीक्षा फल में निम्न प्रकार संशोधन प्रकाशित किया जाता है —

रो० न० १०६ रामकृष्ण महेश्वरी तृतीय श्रेणी
,, ,, २६५ आशारानी अनुत्तीर्ण हैं
,, ,, २२९ देवरत्न तृतीय श्रेणी मे उत्तीर्ण

पुनः परीक्षा

केन्द्र लश्कर रो० न० ५५ रामचन्द्र आहूजा उत्तीर्ण तृतीय श्रेणी।

आगामी परीक्षाए दिनाक २३ तथा ३० अगस्त ५९ को होगी। नियमावली तथा पाठ विधि मे कोई परिवर्तन नहीं है। फार्म तथा परीक्षा शुल्क भेजने की अन्तिम तिथि २५ ७ ५९ है। आर्य समाजों तथा आर्य विद्यालयों को इन परीक्षाओं से यथेष्ट लाभ उठाना चाहिए।

—आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम ए॰ मन्त्री
सार्वदेशिक विद्यार्य सभा रायबरेली (उत्तरप्रदेश)

—विलोनिया सेवा केन्द्र (त्रिपुरा) मे विद्यालय तथा चिकित्सालय भवन निर्माण के लिए सार्वदेशिक सभा के उद्योग से भारत सरकार की ओर से २७५००) की सहायता आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल आसाम को प्राप्त हुई है। बगाल के मन्त्री कार्य आरम्भ कराने १७-६ ५९ को विलोनिया चले गए हैं।

शुभ निश्चय

—आर्य समाज सागर ने निश्चय किया है कि

बिना किसी जातिगत भेदभाव के हिन्दू, सिक्ख, जैन, मुसलमान ईसाई कोई भी सार्वदेशिकविद्यार्य सभा द्वारा सचालित धार्मिक परीक्षाओं में सागर केन्द्र से सम्मिलित हो सकते हैं। प्रत्येक परीक्षा में उत्तीर्ण प्रथम तीन छात्रों को छात्र वृत्तिया दी जायगी।

विवाह संस्कार

—श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त (पुनपुन) के सुपुत्र श्री ओमप्रकाश गुप्त का विवाह संस्कार गया के प्रसिद्ध व्यापारी श्री तुलसी शाह जी की सुपुत्री सावित्री देवी के साथ हुआ। संस्कार बिहार सभा के मन्त्री श्री रामनारायण जी शास्त्री ने कराया। ५१) आर्य प्रतिनिधि सभा को दान दिया गया।

गुरुकुल कांगड़ी हीरक जयन्ती

—गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का हीरक जयन्ती महोत्सव आगामी वर्ष मनाया जायगा।

निर्वाचन :—

नाम समाज	प्रधान	मन्त्री	निर्वाचन तिथि
१ सुजान गढ	श्री घनश्यामदत्त जी	श्री घनश्यामसिंह जी	१६-५-५९
२ रिवाली (राजस्थान)	श्री कुन्दनलाल	श्री सज्जनदेव	२६ ५-५९
३ कलकत्ता १६ कार्नवालीस स्ट्रीट	श्री गगाप्रसाद भौतिका	श्री ए० आर भारद्वाज	२४-५-५९
४ पहाड़गञ्ज दिल्ली	श्री त्रिलोकीनाथ वर्मा	श्री विद्यासागर	२४-५-५९
५ सिरोही	श्री पं० गौरीशकर जी	श्री खेतराम सुथार बी० ए० विद्यावाचस्पति	२५ ४-५९
६ नया बास दिल्ली	श्री क्षितीश कुमार जी	श्री देवी दयाल आर्य	
७ पहाड़गञ्ज दिल्ली	श्री रामनारायण जी सेठ	श्री गुमानसिह	
८ पानीपत	श्री जय भगवानदास जी	श्री योगेश्वरचन्द्र जी	१७ ५-५९
९ रेल्वेरोड गुड़गांव	श्री आत्मप्रकाश	श्री रामचन्द्र जी	?२-५-५९
१० सब्जीमंडीदिल्ली(आर्यपुरा)	श्री सुखलाल जी	श्री पन्नालाल जी	
११ दीवानहाल दिल्ली	श्री ला० रामगोपाल जी	श्री राजसिंहजी बी ए.एल एल बी.	
१२ अमृतपुरी दिल्ली	श्री चुन्नीलाल जी	श्री जगत नारायण जी	१७-५-५९
१३ बड़ा बाजार ६४ लोअर चितपुर रोड कलकत्ता	श्री सीताराम जी आर्य	श्री राजानन्द आर्य	९-५-५९
१४ सोहनगंज सब्जीमंडीदिल्ली	श्री प्रेमनाथ चड्ढा	श्री विश्वनाथ कोहली	१७-५-५९
१५ पूना	श्री बख्शी दुर्गादास जी	श्री वी० पी० सिंह	२६-४-५९
१६ लुध्यानारोड फिरोजपुरछावनी	शिवराम जी	श्री हीरालाल जी	२६-४-५९
१७ बिरला लाइन्स दिल्ली	श्रीमती विद्यावती जी	श्री देवीशरण जी	
१८ विनयनगर नई दिल्ली	श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री	श्री मनोहरलाल गुप्त	१४-६-५९

समाजों के नाम परिपत्र— ॥ ओ३म् ॥ कार्यालय—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन

श्रीयुत मन्त्री जी

आर्य समाज,

प्रत्येक आर्य और आर्य सभासद् को उस भयंकर खतरे का आभास होगा जो विदेशी ईसाई मिशन की प्रगतियों और उसके कुचक्रों ने आर्य (हिन्दू) संस्कृति और भारतीय राष्ट्रीयता के लिए उपस्थित किया हुआ है। उसकी योजना समस्त भारतीय राष्ट्र को ईसाई राष्ट्र में परिवर्तित करके उसपर यूरोप और अमेरिका की संस्कृति तथा राजकोष परवशता लादने की प्रतीत होती है। नागा और झारखण्ड आदि पृथक् राज्यों की मांग और उनके लिए संघर्षात्मक यत्न जिनके कारण देश की शान्ति कई बार भंग हो चुकी है और अब भी भंग होने का खतरा उपस्थित है हमारी आंखें खोल देने के लिए पर्याप्त है। सन् १२६१ में केवल १०० हिन्दू ईसाई बने थे और सन् ५१ तक यह संख्या ८१ लाख ५७ हजार १५ सौ ६५ तक पहुंच गई थी। इन १० वर्षों में यह संख्या और भी बहुत बढ़ गई है। आर्यसमाज अपने जन्म दिन से ही इस खतरे को अनुभव करता आ रहा है। वह कभी भी इस खतरे के प्रति असावधान न रहा है, न अब है और न आगे रहेगा। उसने इस खतरे का वीरता और सफलता के साथ डट कर सामना किया, भले ही उसके साधन अल्प और सीमित क्यों न रहे हों। ईसाई मिशन को ब्रिटिश काल में राज्य का प्रत्यक्ष संरक्षण और प्रोत्साहन प्राप्त था। इतना ही नहीं सेवा भावना से ओत प्रोत अच्छे सुयोग्य कार्यकर्ताओं की सेवाएं भी उसे प्राप्त रही हैं। विदेशी ईसाई राज्यों, सर्वसाधारण जनता और उद्योग संस्थानों से प्राप्त अपरिमित धनराशि भी उसके निर्बाध पर सदैव रही है।

भारत में विदेशी शासन का अन्त हो जाने पर ईसाई मिशन को प्रत्यक्ष सरकारी संरक्षण तो प्राप्त नहीं रहा है, परन्तु हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार की उदारता का विदेशी ईसाई मिशन अनुचित लाभ उठा रहा है, जिसके फलस्वरूप भोली भाली अपढ़ और निर्धन जनता के सामूहिक धर्म परिवर्तन की गति पहले से भी बहुत अधिक बढ़ गई है। अपार धनराशि इस कार्य के लिए विदेश से भारत में चली आ रही है। रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के आंकड़ों के अनुसार सन् ५० से ५४ तक २६ करोड़ २७ लाख रुपया विदेशी मिशनरियों को बाहर से प्राप्त हुआ। सरकारी आंकड़ों से पता लगा है कि लगभग १२ करोड़ रुपया प्रति वर्ष ईसाई प्रचार के लिए विदेश से आता है। विदेशी ईसाई मिशनरियों की संख्या भी गत ६-७ वर्ष में बढ़ गई है। सन् १६४७ में विदेशी पादरियों की संख्या २०६७ थी, परन्तु सन् १६५६ तक यह संख्या ४८७७ हो गई। छोटे बड़े ईसाई संस्थानों में काम करने वाले पादरियों की संख्या जोड़ दी जावे तो यह संख्या ८, १० हजार हो जाती है। ऐसा प्रतीत होने लगा है कि विदेशी ईसाई मिशन ने हर प्रकार से सुसज्जित होकर भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता पर प्रबल धावा बोला हुआ है।

इन प्रगतियों के निरोध और उनके निराकरण के प्रयत्नों पर ईसाई मिशन बौखला उठता है

और इनको निष्क्रिय बनाने के लिए गर्हित उपायों का आश्रय लेने में भी सकोच नहीं करता। जब निर्धनता से तग आकर सामाजिक परिपीडन से त्रस्त व अन्य प्रकार के प्रलोभनों से मस्त होकर ईसाई बने हुए भोले जन ईसाइयत का परित्याग करके पुन हिन्दू धम मे वापस आ जाते हैं तो उन्हें ईसाई मिशन के कार्यकर्ता बहुत तग करते तथा उन पर झूठे मुकदमे चलवाते हैं, जिससे वे पुन ईसाइयत में लौट जाए। मथुरा, मेरठ, हजारी बाग आदि आदि जिलों मे इस प्रकार की अनेक घटनाए घटित हुई और प्रतिदिन घटित हो रही हैं। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता ही मुख्य रूप से ईसाइयों के क्रोध का शिकार बनते हैं क्योंकि सिवा उनके कोई हिन्दू सस्था या उसके कार्यकर्त्ता इस प्रकार का साहस नहीं कर पाते। इस प्रकार ईसाई प्रचार निरोध कार्य मे आर्य समाज का दायित्व और कठिनाइयां बहुत बढ गई है, फिर भी आर्य समाज इस खतरे के निराकरण आर्य (हिन्दू) सस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के कार्य को सफलता प्राप्ति तक करने के लिए कृत सल्कप है।

आर्य समाज के अधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं को यह सदैव स्मरण रखना परमावश्यक है कि हमारा आन्दोलन प्रत्येक प्रकार से रचनात्मक होना चाहिए। केवल भाषणों द्वारा या ईसाइयों की निन्दा मात्र कर हम ईसाई समस्या का हल न कर सकेंगे। सब से बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हम उन स्थानों पर कार्य करें जहा ईसाई पादरियों ने अपना जाल बिछाया हुआ है। हमारे कार्यकर्त्ता सेवा से, त्याग से, ज्ञान और सत्य के बल पर एक एक केन्द्र में अपना कार्यक्षेत्र बना बैठें। वहीं रहें और लगातार कार्य कर उन लोगों की भावनाओं में परिवर्तन लाए जिन्हें ईसाई पादरियों ने छल बल से बहकाया हुआ है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी २५ और २६ जून १९५९ को हुई कार्यकारिणी की बैठकों में समस्त स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया तथा कार्य की सागोपाग योजना बनाई। योजना का आवश्यक भाग इस प्रकार है —

(१) पर्वतीय स्थानों तथा जन जातियो में जहा मुख्यत विदेशी मिशन अपना जाल बिछाए हुए है यथा छोटा नागपुर उडीसा राजस्थान आदि में सेवा सदनों की स्थापना और प्रत्येक सदन में एक अत्यत अनुभवी विश्वस्त और प्रबन्ध कुशल कार्यकर्त्ता बिठाकर कार्य सचालित करना।

(२) स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण क लिए प्रशिक्षण श्रेणियों की व्यवस्था करना। विद्यार्थी की योग्यता कम से कम मैट्रिक होगी। इनकी सर्विस की व्यवस्था सभा करेगी।

(३) छात्रावासों की व्यवस्था जिनमें स्कूल के छात्रों को रखकर उनके जीवन को धार्मिक एवम् पवित्र बनाने की चष्टा करना।

(४) साहित्य का प्रकाशन जिनमें छोटे छोटे ट्रैक्टों को प्रमुखता प्राप्त होगी।

(५) भोली भाली जनता को ईसाइयों के कपट जाल से परिचित करना और हिन्दू धम पर दृढ आस्था रखने में समथ बनाना।

इस योजना को सभा ने क्रियान्वित करना प्रारम्भ कर दिया है राजस्थान में सभा के एक उपमन्त्री की अध्यक्षता में एक केन्द्र खोला जा रहा है। इसी प्रकार छोटा नागपुर मे सभा के एक सुयोग्य कार्यकर्त्ता को जिन्हें उन क्षेत्रों की स्थिति का सम्यक् ज्ञान है और उनमें कार्य करने का अनुभव प्राप्त है, भेजा जा रहा है जिससे वहा केन्द्र खोलकर विधिवत् व्यवस्थित रूप से कार्य आरम्भ करदिया जाय। अन्य भी अनुभवी कार्य-कर्त्ताओं मुख्यत स्थानीय जनों की सेवाए प्राप्त

की जा रही हैं।

इस कार्य के सफल सचालन के लिए लाखों रुपयों की आवश्यकता है। आप अभी से धन समह के कार्य मे जुट जाए। अपने समाज की रसीदबही से अपने सदस्यों से, आर्यों से और धनीमानी ही नहीं वरन् प्रत्येक हिन्दू से हिन्दू रक्षा के इस आवश्यक कार्य के लि दान प्राप्त करने का यत्न करें। जिन गैर हिन्दुओं की आर्यसमाज के इस अभियान के प्रति सहानुभूति हो उनसे भी धन प्राप्त करने की चेष्टा की जाए। आपको अधिक से अधिक धन सीधे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजना चाहिए। बडी बडी आर्य समाजों से हमे बडी बडी राशियों की आशा है। उन्हें तो प्रति मास एक बडी राशि सभा को भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए।

एक बात की ओर आपका ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट करना आवश्यक समझा गया है और वह यह कि कहीं कहीं बडे बडे सम्भ्रान्त आर्यों के बच्चे ईसाइयों के स्कूलों में पढाये जाते हैं, यह एक क्रम अवाछनीय है। इससे हमारे कार्य को हानि पहुँचती है।

स्थानीय व प्रान्तीय सेवा सदनों के खोलने की अनुमति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से प्राप्त करना आवश्यक है जो समाज तथा प्रान्तीय सभा के परामर्श से स्थान आदि का निर्णय करेगी।

धन समह के साथ साथ यह भी अनिवार्य है कि --

(१) प्रत्येक ग्राम और नगर में आर्यसमाज के तत्त्वावधान में आर्यों और हिन्दुओं की सम्मिलित समिति बनाई जाय जो ईसाइयों की अवाञ्छनीय प्रगतियों की देखभाल और उनके निराकरण का उपाय करने के अतिरिक्त सेवा केन्द्रों के द्वारा सेवा सहायता और रक्षा का कार्य भी करे।

(२) ईसाई प्रचार निरोध के लिए देश भर में उत्तम से उत्तम आर्य प्रचारकों का जाल बिछ जाय और ईसाई प्रचार निरोध सम्बन्धी साहित्य प्रत्येक देशभक्त भारतवासी को पहुचाया जाय।

(३) हिन्दू धर्म के प्रति ईसाइयों के अनर्गल प्रचार का निराकरण और अस्पृश्यता का निवारण किया जाय।

(४) मुख्यतया वन जातियां पर्वतों आदि में निवास करनेवाली पिछडी कही जानेवाली जातियों में समाज सुधार शिक्षा प्रसार, सेवा सहायता का कार्य व्यवस्थित रूप से बडे पैमाने पर कियाजाय। निर्धन बच्चों को शिक्षा कार्य मे मुफ्त पुस्तके फीस की छूट इत्यादि की सहायता दी जाय। स्थान २ पर स्कूलों, अस्पतालों, अनाथालयों, छात्रावासों एव वनिता आश्रमों की व्यवस्था की जाय।

प्रत्येक प्रकार का धन बैंक ड्राफ्ट, ब्रिटिश पोस्टल आर्डर वा मनीआर्डर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम में सार्वदेशिक सभा में दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली १ के पते पर आना चाहिए।

मुझे पूर्ण आशा है कि आर्य (हिन्दू) जनता अपने धन और जन का पूरा २ सहयोग देकर सार्वदेशिक सभा के हाथ दृढ करेगी हिन्दू सस्कृति एव राष्ट्रीयता पर आयेहुए इस घोर सकट की यदि उपेक्षा की गयी तो न जाने कब तक हमें उसके घातक परिणाम भुगतने पडे। इस उपेक्षाके लिए निश्चय ही भावी सन्तान हमे क्षमा नहीं करेगी। इस सकट के निवारण के द्वारा हिन्दू जाति के इतिहास में एक उज्ज्वल अध्याय जोडना और उसका श्रेय आर्य समाज को प्राप्त करना हम सबका कर्तव्य है।

हम यह किसी भी अवस्था मे न भूलें कि हम पर आज भारतीय सस्कृति की महान् गौरव गरिमा

की रक्षा का उदात्त उत्तरदायित्व है। यह अग्नि परीक्षा है उन सब व्यक्तियों की, जो राम कृष्ण की पावन संस्कृति को ईसाई पादरियों के भयंकर षड्यन्त्रों से बचा, सत्य, न्याय और मानवता की रक्षा करना चाहते हैं। क्या यह हम सहन कर सकेंगे कि धन बल के आधार पर असत्य और अज्ञान के प्रतिनिधि राम कृष्ण की सन्तानों को बहका कर भारतीय राष्ट्र का विरोधी बनाते रहें? यदि नहीं तो निद्रा त्याग पूरी शक्ति के साथ अपने-अपने क्षेत्र में ईसाई पादरियों की राष्ट्र घातक गतिविधियों को समाप्त करने का संकल्प लीजिए, और लग जाइए ईसाई निरोध आंदोलन को सफल बनाने में—

आपको अपने-अपने क्षेत्र में जिस सहयोग की आवश्यकता हो उससे हमें सूचित कीजिए। हम सदैव आपकी समस्या का हल निकालने का यत्न करेंगे।

पूर्णचन्द्र
प्रधान

रघुवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री

आर्य कुमार सभा किंग्जवे देहली द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

नि० लि० पुस्तकें मन्त्री प्रकाशन विभाग आर्य कुमार सभा द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं। यह प्रकाशन सभा ने जनता में प्रचारार्थ-अत्यन्त सस्ता छापा है। दानी सज्जन सहस्रों की संख्या में मंगाकर बांटें।

नाम पुस्तक	नाम लेखक	मूल्य प्रति प्राप्ति	प्रतिशत
(१) मद्यनिषेध की आवश्यकता	(रघुनाथप्रसाद पाठक)	१८	६२५
(२) बलिदान का राष्ट्रीय महत्व	(ओम्प्रकाश पुरुषार्थी)	-१०	७००
(३) प्रार्थनालोक	(श्री जगदीश विद्यार्थी)	१२	१०-००
(४) श्रद्धा माता	(प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड)	-८	७-००
(५) गीता-उपदेश	(श्री जगदीश विद्यार्थी)	-१०	१५-००
(६) पीछे हटो	(,, ,,)	-६	५-००
(७) अनमोल मोती	(,, ,,)	-३५	५५-००
(८) मुक्तिसोपान	स्वा० श्रद्धानन्द जी	-३०	२५-००
(९) मधुगान	पं० देवकी नन्दन भजनोपदेशक	-६	५-००
(१०) आदर्श शिक्षा	श्री जगदीश विद्यार्थी	-६	५-००
(११) नभ के तारे	(रमेशकुमार जी)	-३५	२५-००

भवदीय
रमेशकुमार 'जी'

(पृष्ठ २२६ का शेष)

उनके निवास स्थान की व्यवस्था की उनके लिए मस्जिदें निर्माण कराई और इस प्रकार उन्हें मर क्षण प्रदान किया। इन अरब नाविकों की सन्तानें मोपला कहलाई। नायर प्रान्त की जनसख्या में पन्द्रह प्रतिशत बताए जाते हैं। ये वह लोग हैं जिन्हें नम्बूद्री ब्राह्मणों ने पतित और पिछड़े कह कर दबा रखा है। अब वह उठ रहे हैं, उनमें शिक्षा का प्रसार हो रहा है उनकी एक विशेष सभा है जो उनके लिए विद्यालय खोलती है और उनका प्रबन्ध करती है। उन्हें राजकीय सेवाओं में भी स्थान प्राप्त होने लगा है इसलिए अब वह पुराने नायर नहीं रहे जिन पर नायर नाना प्रकार के अत्याचार किया करते थे। किसी और भांति भी ईसाई जनता के समक्ष उत्तरदायी नहीं। अपने विस्तृत साधनों की सहायता से केरल में चर्च अपने मत के प्रचार के अनुरूप फसल काट रहा है। इसके अधीन कई विद्यालय हैं। जो कई प्रकार से नामान्वित हो रहे है। अनाथालय और औषधालय हैं। चर्च इस समय एक राजनैतिक शक्ति भी है। वह दिन प्रतिदिन की राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करता किन्तु जब देखता है कि इसके हितों पर आंच आ रही है तो अपनी पूर्ण शक्ति सहित प्रतिरोध के हेतु खड़ा हो जाता है। उस समय यह प्रचारक चर्च लड़ाकू चर्च मे परिणत हो जाता है जैसा कि इस समय कम्युनिस्ट मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध बन रहा है। इससे पूर्व इसने एक बार केरल के प्रधानमन्त्री श्री सी० पी० रामस्वामी अय्यर से टक्कर ली थी जब उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य कर दी थी। उस युद्ध में कम्युनिस्ट दल ने चर्च का साथ दिया था। कैथोलिक चर्च के दोनों भाग पहले २ पृथक रहे किन्तु अब यह अखिल केरल कैथोलिक कांग्रेस के नाम से संयुक्त हो गए हैं। जब उन्होंने देखा कि कांग्रेस में सम्मिलित होने में ही उनका हित है तो वे सामूहिक रूप से कांग्रेस में सम्मिलित हो गए हैं। एतदर्थ नायर सर्विस सोसाइटी ने इस पर इण्डियन नेशनल कांग्रेस को आल केरल कैथोलिक कांग्रेस का नाम दिया। जब केरल में प्रथम कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बना तो कांग्रेस दल के नेता पद हेतु एक ईसाई और एक हिंदू में प्रतिद्वन्दिता हुई। ईसाई की विजय हुई और वह ही केरल का प्रथम मुख्यमंत्री बना। तत्पश्चात् यह ईसाई मद्रास का राज्यपाल बना दिया गया जहां उसकी मृत्यु हो गई। हिंदुओं मे इसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि वे कम्युनिस्टों की ओर आकृष्ट हो गए। चाहे चर्च हो अथवा कम्युनिस्ट पार्टी दोनों ही हिंदू समाज के पिछड़े वर्ग का सिर मूंडते हैं। ईसाईयों को सफलता मुख्यतः इस कारण प्राप्त हुई क्योंकि हिंदुओं की परिगणित जातियों को मन्दिर प्रवेश अथवा देवदर्शन की आज्ञा न थी। इस कारण प्रायः समस्त मछियारे ईसाई हो गये। अब चर्च केरल में बहुत शक्तिशाली हो चुका है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सफेद बाल काला

खिज़ाब से नहीं। हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है, यह तेल दिमागी ताकत और आंखों की रोशनी को बढाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापिस की शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो तो ३॥)।

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों, औरों की भांति, मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ७ दिन के लेप से सफेदी का दाग पूरा आराम न हो तो मूल्य वापस। मूल्य लगाने का ३) खाने को ४) रु० है।

धनवन्तरि औषधालय नं० ११, पो० शेखपुरा, जिला मुंगेर (बिहार)

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मनी आर्डर और चैक इस प्रकार आने चाहिये।

मनी आर्डर

१—मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-१

२—मनी आर्डर सभा मन्त्री के नाम से नहीं आने चाहिये। इससे मनी आर्डर के मिलने मे कुछ विलम्ब हो जाने की आशंका रहती है।

३—मनी आर्डरों की कूपन पर भेजने वाले का नाम पता व राशि अनिवार्यतः अंकित होने चाहियें।

चैक व पोस्टल आर्डर

सार्वदेशिक सभा तथा सार्वदेशिक पत्र के लिये यदि कोई सभा को चैक या पोस्टल आर्डर भेजे तो वे केवल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम मे लिखे होने चाहिये। क्रास हों तो अच्छा है

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली १

सार्वदेशिक में विज्ञापन देकर लाभ उठावें

विज्ञापन के रेट्स

	एक बार	तीन बार	छः बार	बारह बार
१ पूरा पृष्ठ (२०×३०)	१५)	४०)	६०)	१००)
आधा " "	१०)	२५)	४०)	६०)
चौथाई "	६)	१५)	२५)	४०)
⅛ पेज	४)	१०)	१५)	२०)

विज्ञापन सहित पेशगी धन आने पर ही विज्ञापन छापा जाता है।

२ सम्पादक के निर्देशानुसार विज्ञापन को अस्वीकार करने, उसमें परिवर्तन करने और उसे बीच में बन्द कर देने का अधिकार 'सार्वदेशिक' को प्राप्त रहता है।

व्यवस्थापक—'सार्वदेशिक' पत्र, दयानन्द भवन, नई दिल्ली १

कांग्रेस सरकार का सिर दर्द
साम्प्रदायिकता और उसका इलाज

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने गहरे अध्ययन के पश्चात् लिखी है। इस पुस्तक का भारी संख्या मे प्रचार करने के लिए आज ही बड़ा आर्डर भेजें। मूल्य ॥)—२५ लेने पर ।≈) मे।

पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

(१) आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग ४)
" " द्वितीय भाग ५)
(२) वेद की इयत्ता(श्री स्वा०स्वतन्त्रानन्दजी)१॥)
(३) दयानन्द दिग्दर्शन(श्री स्वा० ब्रह्ममुनिजी) ॥।)
(४) इ जील के परस्पर विरोधी वचन ।≤)
(प० रामचन्द्र जी देहलवी)
(५) भक्ति कुसुमाञ्जलि (प० धर्मदेव वि० वा० ॥)
(६) धर्म का आदि स्रोत
(प० गगाप्रसाद जी एम ए) २)
(७) भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक
(श्री राजेन्द्र जी) ॥)
(८) भारत मे मूर्तिपूजा १≤)
(९) वेदान्त दर्शनम् (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ३)
(१०) सस्कार महत्व
(प० मदनमोहन विद्यासागर जी) ॥।)
(११) जनकल्याण का मूलमन्त्र , ॥)
(१२) वेदों की अन्त साक्षी का महत्व ॥-)
(१३) आर्य घोष ॥)
(१४) आर्य स्तोत्र ॥)
(१५) स्वाध्याय सदोह (स्वा० वेदानन्द तीर्थ) ४)
(१६) वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) ७)
(१७) सनातन धर्म ओर आर्य समाज
(प० गगाप्रसाद उपाध्याय) ।≤)

ENGLISH PUBLICATIONS

1 Introduction to the Commentary on Vedas 2/8/
2 Kenopanishat (Translation by Pt Ganga Prasad ji, M A /4/
3 Kathopanishat (Pt Ganga Prasad M A Rtd Chief Judge) 1/4/
4 Aryasamaj & International Aryan League Pt Ganga Prasad ji Upadhyaya M A /1/
5 Voice of Arya Varta (T L Vasvani) /2/
6 Truth & Vedas (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) /6/
7 Truth Bed Rocks of Aryan Culture (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) /8/
8 Vedic Culture (Pt Ganga Prasad Upadhyaya M A) 3/8/
9 Aryasamaj & Theosophical Society (Shiam Sunder Lal) /3/-
10 Wisdom of Rishis (Gurudatta M A.) 4/ /-
11 The Life of the Spirit (Gurudatta M A) 2/ /
12 A Case of Satyarth Prakash in Sind (S Chandra) 1/8/
13 In Defence of Satyarth Prakash (Prof Sudhakar M A) -/2/-
14 Universality of Satyarth Prakash /1/
15 Tributes to Rishi Dayanand & Satyarth Prakash (Pt Dharma Deva ji Vidyavachaspati) /8/
16 Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati) /8/-
17 Elementary Teachings of Hindusim /8/ (Ganga Prasad Upadhyaya M A)
18 Life after Death " 1/4/-
19 Philosophy of Dayanand ,, 10
20 Agnihotra Dr Satya Prakash) 2 8
21 Daily Prayer of An Arya /8/
22 The Constitution of Arya Samaj 40 n P
23 Light of Truth 7 80

नोट– (१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूपमें भेजे ।
(२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ २ लिखें ।
(३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा आना चाहिए ।

Regd No D 51

स्वाध्याय योग्य वैदिक साहित्य

(१) यमपितृ परिचय (पं० प्रियरत्न आर्ष) २)
(२) आर्य डाइरेक्टरी १।)
(३) सार्वदेशिक सभा का
सत्ताईस वर्षीय कार्य विवरण अ० २)
(४) स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार
(पं० धर्मदेव जी वि० वा०) १।)
(५) आर्य समाज के महाधन
(स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी) २॥)
(६) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण(पं०इन्द्रजी) ।=)
(७) आर्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या
(अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक) ।)
(८) आर्य मन्दिर चित्र (सार्व०सभा द्वारा स्वीकृत) ।)
(९) वैदिक ज्योतिष शास्त्र(पं०प्रियरत्नजी आर्ष) १॥)
(१० वैदिक राष्ट्रगीता (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।)
(११) मातृत्व की ओर (रघुनाथ प्रसाद पाठक) १।)
(१२) हमारी राष्ट्रभाषा (पं०धर्मदेवजी वि० वा०) ।-)
(१३) स्वराज्य दर्शन स०(पं०लक्ष्मीदत्तजीदीक्षित) १)
(१४) राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)
(१५) योग रहस्य (श्री नारायण स्वामी जी) १।)
(१६) मृत्यु और परलोक , १।)
(१७) विद्यार्थी जीवन रहस्य , ॥=)
(१८) प्राणायाम विधि ,, ≡)
(१९) उपनिषदें —

ईश	केन	कठ	प्रश्न
।=)	॥)	॥)	।=)
मुण्डक	माण्डूक्य	ऐतरेय	तैत्तिरीय
।≡)	।)	।)	१)

(२०) बृहदारण्यकोपनिषद् ४)
(२१) आर्यजीवनगृहस्थधर्म(पं०रघुनाथप्रसादपाठक)॥=)
(२२) कथामाला ,, ॥।)
(२३) सन्तति निग्रह १।)
(२४) नैतिक जीवन स० ,, २॥)
(२५) नया संसार ,, ≡)
(२६) इज़हारे हकीकत उर्दू
(ला० ज्ञानचन्द जी आर्य) ॥=)
(२७ वर्ण व्यवस्था का वैदिक स्वरूप ,, १॥)
(२८) धर्म और उसकी आवश्यकता ,, १)
(२९) भूमिका प्रकाश (पं० द्विजेन्द्रनाथजी शास्त्री) १।)
(३०) एशिया का वैनिस (स्वा० सदानन्द जी) ॥।)
(३१) वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां
(पं० प्रियरत्न जी आर्ष)
(३२) सिंधी सत्यार्थप्रकाश
(३३) कन्नड सत्यार्थप्रकाश
(३४) मराठी सत्यार्थप्रकाश
(३५) आर्योदयकाव्यम् पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध, १।),
(३६) हमारे घर (श्री निरंजनलाल जी गौतम
(३७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(३८) भजन भास्कर १॥।)
(३९) मुक्ति से पुनरावृत्ति(पं०गंगाप्रसाद उपाध्याय ।=)
(४०) वैदिक ईश वन्दना (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।=)॥
४१) वैदिक योगामृत ,, ॥=)
(४२) सनातन शुद्धि शास्त्र (गोविन्द प्रसाद शास्त्री) २)
(४३) आर्य वीर दल मनिक (श्री ओम्प्रकाश त्यागी)॥)
(४४) आत्म कथा श्री नारायण स्वामी जी २।)
(४५) वैदिक संस्कृति (पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय) १।)
(४६) वैदिक वन्दन (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ५।)
(४७) दार्शनिक आध्यात्मिक तत्व , ।)
(४८) कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द)७५
(४९) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका २)५०
(५०) सत्यार्थप्रकाश बढ़िया ५)
(५१) सत्यार्थप्रकाश १)३७
(५२) सामवेदभाष्य सजिल्द ३)
(५३) महर्षि दयानन्द)६२
(५४) बृहद विमानशास्त्र (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) १५)

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

सार्वदेशिक प्रेस, पाटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली—७ में छपकर रघुनाथ प्रसाद जी पाठक प्रिंटर और पब्लिशर के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित ।

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

सदाचार महिमा

आचार वैभव का उत्पादक कीर्ति और आयु का बढाने वाला और बुरे लक्षणों का नाश करने वाला है। सभी शास्त्रों मे आचार को ही श्रेष्ठ वस्तु मानने मे आया है। धर्म आचार से उत्पन्न होता है और धर्म पालन से आयुष्य बढता है। आचार पालन से मनुष्य को यह लोक तथा परलोक में आयुष्य कीर्ति और धन मिलता है। आचार पालन से आयु चाही सन्तान और पुष्कल सम्पत्ति मिलती है और बुरे लक्षणों का विनाश होता है। दुराचारी मनुष्य संसार में सब की निन्दा बटोरता है। हमेशा दुःखी रोग ग्रस्त और न्यून आयु वाला होता है।

(महर्षि दयानन्द के लेख का अवतरण—
मनुस्मृति पर आधारित)

विषय सूची

वैदिक धर्म प्रचारार्थ ट्रैक्ट

		मूल्य प्रति	सैकड़ा
१	आर्यसमाज के मन्तव्य	)०६ प्रति	५)
२	शंकासमाधान	)०३ ,,	३)
३	पूजा किसकी	)०३ ,,	२)५०
४	आर्यसमाज	)०३ ,,	२)५०
५	भारत का एक ऋषि	)०६ ,,	५)
६	ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा	)०६ ,,	५)
७	गो करुणानिधि	)०६ ,	४)
८	गोहत्या क्यों ?	)१२ ,,	१०)
९	चमड़े के लिये गोवध	)१८ ,,	१५)
१०	पंचमहायज्ञविधि	)२० ,,	१५)
११,	सन्ध्यापद्धति	)१२ ,,	१०)
१२	मांसाहार घोर पाप	)१२ ,,	१०)
१३	आर्य शब्द का महत्व	)०९ ,,	७)५०
१४	दशनियम व्याख्या	)०९ ,,	७)५०
१५	तीर्थ और मोक्ष	)०९ ,,	७)५०
१६	ग्रहण और दान	)०९ ,,	७)५०
१७	भारतवर्ष में जाति भेद	)०९ ,,	७)५०
१८	भारत में ईसाई षडयन्त्र	)२५ ,,	२०)
१९	ईसाईयों से सौ प्रश्न	)१२ ,,	१०)
२०	स्वतन्त्रता खतरे में	)०३ ,,	२)५०
२१	वैदिक राष्ट्र धर्म	)२० ,,	१५)
२२	प्रजापालन	)०५ ,,	३॥)
२३	नारायण स्वामीजी की संक्षिप्त जीवनी	)०६ ,,	५)
२४	सिनेमा मनोरंजन या सर्वनाश	)१२ ,,	१०)
२५,	सत्यार्थप्रकाश की रक्षा में	)०६ ,,	५)
२६	मुर्दों को क्यों जलाना चाहिए	)०९ ,,	७)५०
२७	आर्यसमाजों के सा स का कार्यक्रम	)०६ ,,	५)
२८	आर्य समाज के नियमोपनियम	)०९ ,,	७)५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन नई दिल्ली—१

अमरावती के सुप्रसिद्ध दानवीर

श्रीयुत भवानीलाल जी शर्मा



श्रीमती तिज्जोदेवी जी

(धर्मपत्नी श्रीयुत भवानीलाल जी शर्मा)



सार्वदेशिक पत्र को १०००) का दान

श्री भवानीलाल गजूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती [illegible] नोदेवी भवानीलाल शर्मा स्वर्गवास की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने सार्वदेशिक पत्र के हितार्थ [illegible] जी शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार कार्तिक [illegible] १ वि० नवम्बर १९५९ को प्रस्थापित की।

नियम—

१—इस मूलधन से प्राप्त वार्षिक ब्याज का आधा भाग पत्र को सहायता रूप में मिलता रहेगा। शेष आधा भाग इसी निधि में सम्मिलित होता रहेगा।

२—यदि किसी भी कारण वश पत्र बन्द हो जाय तो यह सहायता का मिलना भी बन्द हो जायगा और वार्षिक ब्याज की सम्पूर्ण रकम मूलधन में मिलती रहेगी।

३—पत्र यदि पुनः चालू हुआ तो उक्त सहायता प्राप्त करने के लिये वह पूर्ण अधिकारी होगा।

४—पत्र के चालू न होने की पूर्ण निराशा में सार्वदेशिक सभा उक्त योजना को सब प्रकार अपने हाथ किसी अन्य योग्य आर्य पत्र को दे सकती है।

५—सभा के निश्चयानुसार उपयुक्त सम्पूर्ण योजना सार्वदेशिक पत्र में [illegible] तीसरे मास प्रकाशित होती रहेगी।

सार्वदेशिक सभा की ७-१०-५९ की अन्तरंग [illegible] सम्बन्धी निश्चय—

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह ५[illegible]) का दान सधन्यवाद स्वीकार किया जाय और उक्त योजना भी स्वीकार की जाय। यह सभा श्री भवानीलाल जी शर्मा को यह आश्वासन देती है कि उपरोक्त योजना सदैव चलती रहेगी। [illegible] शर्मा जी [illegible]) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के अविलम्ब भेजें ताकि कार्य आरम्भ करने में विलम्ब न हो।

श्री शर्मा जी का सार्वदेशिक पत्र की सहायता ( ) का दान सभा को प्राप्त हो चुका [illegible] यह दान उनकी दानशीलता एवं आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा का सूचक है तथा सार्वदेशिक पत्र की लोकप्रियता का भी द्योतक है। इन्होंने आर्य नर नारियों के सम्मुख एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस सभा तथा सार्वदेशिक परिवार की ओर से हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। इस राशि की अर्द्ध आय सार्वदेशिक की उन्नति में व्यय की जाती रहेगी।

रामगोपाल
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली-६

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

(सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष ३५ { अगस्त १९५९ श्रावण २०१६ वि० दयानन्दाब्द १३५ } अङ्क ६

वैदिक प्रार्थना

मयादमिन्द्र इन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवा नः सचन्ताम् ।
अस्माकꣳ सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः ॥

यजुर्वेद अ० २ । मन्त्र १४ ॥

(मयीदमिन्द्र०) हे उत्तम ऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर ! आप अपनी कृपा से श्रोत्र आदि उत्तम इन्द्रिय और श्रेष्ठ स्वभाव वाले मन को मुझ में स्थिर कीजिये। अर्थात् हमको उत्तम गुण और पदार्थों के सहित सब दिन के लिये कीजिये। (अस्मान् रा०) हे परमधन वाले ईश्वर ! आप उत्तम राज्य आदि धनवाले हमको सदा के लिये कीजिये। (सचन्ताम्) मनुष्यों के लिये ईश्वर की यह आज्ञा है कि हे मनुष्यो ! तुम लोग सब काल में सब प्रकार से उत्तम गुणों का ग्रहण और उत्तम ही कर्मों का सेवन सदा करते रहो। (अस्माकꣳ स०) हे भगवन् ! आपकी कृपा से हम लोगों की सब इच्छा सर्वदा सत्य ही होती रहें, तथा सदा सत्य ही कर्म करने की इच्छा हो, किन्तु चक्रवर्ती राज्य आदि बड़े २ काम करने की योग्यता हमारे बीच में स्थिर कीजिये ॥

सम्पादकीय

दलाईलामा से भेंट

मैंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री के रूप में श्री दलाई लामा को जून मास में पत्र लिखा कि आर्य समाज का एक शिष्ट मण्डल आप को आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के विषय में बताने एवं तत्सम्बन्धी साहित्य भेंट करने के लिए आप से मिलना चाहता है। ७ जुलाई के साय काल सहसा मुझे उनके निजी सचिव का पत्र मिला जिसमें लिखा था कि आपकी मुलाकात का समय ९ जुलाई को प्रात १० बजे नियत किया गया। मैंने तुरन्त आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्त्तण्ड को मसूरी पहुचने के लिए तार दिया। भेंट करने वाले शिष्टमण्डल में मेरे अतिरिक्त ६ विद्वान् थे—श्री प० धमदेव जी, स्वामी ब्रह्ममुनि जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी, डा० स्वामी आनन्द देव जी तथा कविराज हरनाम दास जी बी० ए०।

दलाई लामा अ ग्रेजी भी नहीं जानते, एक सिक्किम वासी नवयुवक बीच में दुभाषिया का काम कर रहा था। हम उसे अ ग्रेजी में कहते और वह तिब्बत भाषा में दलाई लामा को कहता जाता था।

हमने आरम्भ में ही कहा कि हम आर्य समाजियों का विश्वास है कि मानव सृष्टि का मूल स्थान तिब्बत है और वहीं से आर्य लोग सारे ससार में फैले हैं अत तिब्बत का एक ऐतिहासिक विशेष महत्व है।

इसके पश्चात् हमने कहा कि "आर्य" शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, सदाचारी, व्यक्ति। महात्मा बुद्ध ने इसी कारण इस शब्द को अपनाते हुए 'आर्य सत्य" "आर्य अष्टांगिक मार्ग" आदि शब्दों का प्रयोग किया। हमारा विचार है कि वे एक आर्य सुधारक थे जिन्होंने प्राचीन आर्य धर्म के ऊपर अज्ञानवश आये आवरण को दूर करके विशुद्ध वैदिक सदाचार की स्थापना का कार्य किया। विशेष रूप से जाति भेद तथा यज्ञों में पशुबलि आदि की जो अवैदिक प्रथाए प्रचलित हो गई थीं, उनका उन्होंने प्रबल विरोध किया। वैदिक धर्म की शिक्षा प्राणीमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने की है अत आर्य समाज जातिभेद तथा अस्पृश्यता आदि का कट्टर विरोधी है। दलितोद्धार स्त्री शिक्षा, शिक्षा प्रसार तथा स्वतन्त्रता की भावना आदि आन्दोलनों का प्रारम्भ आर्य समाज ने ही किया जिसको पीछे अन्य नेताओं तथा सस्थाओं ने अपना लिया। ससार का उपकार करना आर्य-समाज का मुख्य उद्देश्य है। उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस देश में आर्य समाज तथा उसकी बहुविध सस्थाओं का जाल बिछा है। विदेशों में भी आर्य समाज की अनेक शाखाए तथा सस्थाए हैं।

मन्तव्यों का परिचय देते हुए उन्हें बताया गया कि आर्य समाज एक ईश्वर का उपासक है जो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् तथा सर्व व्यापक है। ईश्वर की सत्ता सम्बन्धी यही विश्वास मनुष्य को निष्पाप बनाता है। ससार में शान्ति तथा बन्धुता की स्थापना में भी यही विश्वास विशेष रूप से सहायक हो सकता है। हम सब एक परमेश्वर के पुत्र हैं और परस्पर भ्रातृवत प्रेममय व्यवहार हमें करना चाहिए। वेद के विषय में उन्हें बताया गया कि जिस प्रकार माता पिता बच्चों के कल्याण के लिए उन्हें अच्छी शिक्षाए देते हैं ठीक उसी प्रकार मगलमय भगवान ने सृष्टि के प्रारम्भ में वेदों के द्वारा उपदेश दिया जो कि सार्वभौम है। मैक्स-मूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है कि वेद मानव पुस्तकालय में प्राचीनतम ग्रन्थ है और उनके महत्व को भी अब पाश्चात्य विद्वान्

धीरे २ स्वीकार करने लगे हैं।

बुद्धमत तथा मांस भक्षण

अन्त में हमारी ओर से प्रश्न किया गया कि महात्मा बुद्ध ने अहिंसा को परम धर्म बताया है और उनका सारा मत अहिंसा पर ही खड़ा है तो फिर उनके अनुयायी मांस भक्षण करें, यह कहां तक संगत एवं उचित है?

उन्होंने कहा कि सिद्धान्त रूपेण यह बात ठीक है और तिब्बत में भी पशु रक्षा सम्बन्धी कानून बने हैं और जंगलों तक में पशुओं का मारना वर्जित है। इसी सिद्धान्त को मान कर बहुत से लोग नहीं खाते। उन्होंने यह भी कहा कि इस विषय में हीनयान तथा महायान सम्प्रदायों में मतभेद है। महायान वाले मांस खाना बुरा नहीं मानते। इस पर उन्हें महायान के प्रामाणिक ग्रन्थ "लंकावतार सूत्र" के मांस भोजन परिवर्त नामक प्रकरण से संस्कृत के अनेक उद्धरण अंग्रेजी अनुवाद सहित पढ़कर सुनाए गए जिनमें मांसाहार का प्रबल विरोध किया गया है। उन्होंने एक युक्ति यह दी कि हम स्वयं मारकर नहीं खाते अतः हिंसा के पाप से बच जाते हैं। इस पर भी उन्हें इसी ग्रन्थ के अन्य उद्धरण दिखाए गए जिनमें स्पष्ट लिखा है कि न केवल पशुओं की हिंसा करना ही पाप है, अपितु उनका मांस खाना भी पाप है क्योंकि हिंसा मांस खाने वालों के लिए ही की जाती है।

उन्होंने कहा कि लोग प्रेम से भेंट करते हैं तो हम खा लेते हैं। इस पर हमारी ओर से कहा गया कि जब लोगों को यह पता होगा कि भगवान् बुद्ध को इच्छा के विरुद्ध होने के कारण आप मांस नहीं खाते तो लोग इस प्रकार की भेंट न देंगे। मांस खाना तो हिंसा को प्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित करता है।

उद्धरण निम्नलिखित हैं —

लोभार्थं हन्यते प्राणी, मांसार्थं दीयते धनम्।
उभौ तौ पापकर्माणौ, पच्येते रौरवादिषु॥
वक्ष्यन्त्यनागते काले, मांसादा मोहवादिनः।
कल्पिकं निरवद्यं च मांसं बुद्धानुवर्णितम्॥
त्रिकोटिशुद्धं मांसं वै, अकल्पितमयाचितम्।
अचोदितं चनैवास्ति तस्मान्मांसं विवर्जयेत्॥

लङ्कावतार सूत्र अ० ८ मांसभक्षण परिवर्त।

अर्थ—जो व्यक्ति लोभवश प्राणी को मारता है या मांस खरीदने के लिये पैसा देता है, ये दोनों ही पापी हैं और रौरव नरक की प्रचण्ड अग्नि में पकते हैं।

आने वाले समय में कुछ अज्ञानी लोग यह कहेंगे कि महात्मा बुद्ध ने भी ऐसा मांस खाने की अनुमति दी है जिसको न देखा जा सके, न सुना जा सके और न कल्पना की जा सके। परन्तु ऐसे मांस की प्राप्ति असम्भव है, अतः मांस निषिद्ध है।

योऽतिक्रम्य मुनेर्वाक्यं, मांसं भक्षति दुर्मतिः।
लोकद्वयविनाशार्थं, दीक्षितः शाक्यशासने॥

अर्थ—शाक्य शासन में दीक्षित होकर भी जो दुर्बुद्धि मुनि (बुद्ध) के वचन का उल्लंघन करके मांस खाता है, वह अपने इस लोक तथा परलोक दोनों का नाश करता है।"

अनुज्ञातवानस्मि स्वयं वा परिभुक्तवानिति नेदं स्थानं विद्यते। न हि आयं श्रावका प्राकृतमनुष्याहारमाहरन्तिकुतः एवं मांसरुधिराहारमकल्प्यम्। तथागता धर्माहारस्थितयो न सर्वा मषाहारस्थितयः। अकल्प्यं मांसभोजनम्। सर्वसत्त्वैकपुत्रसंज्ञी कथमिव स्वपुत्रमांसमनुज्ञास्यामि परिभोक्तुम्।

लङ्कावतार सूत्र अ० ८

अर्थ—'यह सर्वथा मिथ्या है कि मैंने कभी मांस खाया है या दूसरों को मांस खाने की अनुमति दी है। आर्य गृहस्थ तो साधारण मनुष्यों के खाने की सब चीजों को भी नहीं खाते, तो फिर

मास या रुधिर खान की तो कल्पना भी नहीं करनी चाहिये। बुद्ध लोग धर्मानुमोदित भोजन करके जीते हैं, मास भोजन नहीं करते। मास भोजन सर्वथा निषिद्ध है। मैं जो सब प्राणियों को अपना पुत्र कह कर पुकारता हूँ, कैसे इस बात की अनुमति दे सकता हू कि लोग मेरे पुत्रों का मास खायें? अर्थात् किसी भी प्राणी के मास खाने की अनुमति देना ऐसा अनर्थ है मानों मैं अपने ही पुत्र का मास खाने का आदेश दे रहा हूं।"

उन्हें यह भी कहा गया कि आपके सम्बन्ध में यह विचार फैलाया जाता है कि बुद्ध का आत्मा आपमें निवास करता है और आप उसके प्रतिनिधि हैं बताइये कि यदि आपके स्थान पर स्वयं भगवान् बुद्ध होते तो क्या वे मास खाते? आप उनके आसन पर विराजमान हैं तो आपको भी वही आदर्श जनता के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए न स्वय आपको मास खाना चाहिए और यदि आपके अनुयायियों में से कोई खाए तो उसको उपदेश देकर रोकना चाहिए। उन्हें बताया गया कि भारत के लोगों के लिए तो यह बात बहुत आश्चर्यजनक है कि बौद्ध मत के प्रमुख मास खाते हैं।

अन्त मे उन्होंने इन सब बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया और हमने उन्हें "सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका," "महात्मा बुद्ध एक आर्य रिफार्मर" आदि संस्कृत हिन्दी एव अंग्रेजी के अनेक ग्रन्थ भेंट किए।

यह चर्चा लगभग सवा घंटे तक बहुत ही मधुर वातावरण में चली जो कि विशुद्ध धार्मिक थी। दलाई लामा बहुत प्रसन्न मुद्रा में थे और उनका व्यवहार अतीव शिष्ट था। कहा जा सकता है कि उन पर शिष्ट मण्डल की बातों की विशेष छाप पड़ी।

रघुवीरसिंह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

काया पलट

एक आर्य युवक लिखते हैं —

"मै वैश्य परिवार में उत्पन्न २१ २२ वर्षीय नवयुवक हू और अपने माता पिता की इक लौती सन्तान हू। मैं नवीं कक्षा अनुत्तीर्ण हू। मार्च १९५६ में लोक सहायक सेना में सैनिक शिक्षा प्राप्त की है और इसी वर्ष भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सिद्धान्त रत्न की परीक्षा द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुआ हू।'

लगभग २ वर्ष पूर्व गणेश जी के दर्शन करने गया था कि मन्दिर के सामने की दीवार पर लिखा देखा —

"वैदिक हमारा धर्म है, आर्य हमारा नाम
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा काम॥"

बस एक दम से न जाने क्या हुआ कि जिस मस्तिष्क मे सिनमा के गीत समाए रहते थे, फिल्मी साहित्य पठन की आदत थी, आत्मा मूर्तियों के दर्शन और फिल्मी अभिनेत्रियों के दर्शन मात्र से अपनी आंखों की सफलता मानती थी उस मन और मस्तिष्क मे एक विचित्र सी उथल पुथल मच गई। मैं सोचने लगा कि—'क्या यह वही विदेशी आर्य है जिनके विषय मे मैने तीसरी चौथी कक्षा में ईश्वरीप्रसाद द्वारा लिखित इतिहास मे पढा है, क्या यह लोग पुन सक्रिय हो रहे हैं? क्या यह उन्हीं के प्रचारकों ने लिखा है इत्यादि २।

मै दर्शन करके शीघ्रता से घर आया। मेरे घर के सामने एक कन्या रहती है जो उस समय चौथी कक्षा मे पढती थी। उससे मैने वह इतिहास मगाया और 'भारत में आर्यों का आगमन' नामक अध्याय पढा पढ़कर आर्यों से बड़ी घृणा हुई

किन्तु वेदों के विषय में अवश्य कुछ जिज्ञासा उत्पन्न हुई। दूसरे दिन इंटर में पढ़ने वाले एक मित्र से इस विषय पर बात हुई तो उन्होंने कहा 'इंटर के नागरिक शास्त्र के द्वितीय खंड में एक अध्याय है जिसमें सब धर्मों के विषय में लिखा है और उसी में आर्यों के विषय में भी लिखा है और एक कोई स्वामी दयानन्द सरस्वती हुए हैं उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' नामक एक पुस्तक लिखी है जिसमें वेदों के विषय में खूब समझाया है। यदि कहीं सत्यार्थप्रकाश मिले तो उसको पढ़ो।"

बस मैं सत्यार्थप्रकाश की खोज में निकल पड़ा। एक मित्र की सहायता से मुझे वह ग्रंथ मिल गया। सिनमा देखने वाली आंखें सत्यार्थ प्रकाश में डूब गईं। बड़े ध्यान से पूरा ग्रंथ पढ़ डाला और अंत में हृदय की आंखें खुल गईं बस फिर क्या था—वेद भाष्य को छोड़कर गुरुवर दयानन्द के समस्त ग्रंथ पढ़ डाले। स्वाध्याय में दिनरात एक कर दिया। महर्षि के जीवन की अनेक पुस्तकें पढ़ीं। कभी आनंद के अश्रु प्रवाहित होते थे और कभी जगद् गुरू के कष्टों और विष पान का वर्णन पढ़कर अत्यंत दुःखी होकर बिलख २ कर रोता था।

स्मृति रामायण आदि ग्रंथों का अध्ययन किया। निष्पक्षभाव से जैनी पुरानी, कुरानियों के ग्रंथ पढ़े। इस प्रकार पचासों ग्रंथ पढ़ डाले। अनेकों पुराणी, जैनी, कुरानी पंडितों से वाद विवाद किया, किन्तु कोई भी तर्क, युक्ति और प्रमाण ऐसा न मिला जो मुझे एक इंच भी वैदिक सत्यता से डिगाने में समर्थ होता।

एक दिन अपने माता पिता से मैंने स्पष्ट कह दिया "मैं हिंदू (पौराणिक) धर्म को नहीं मानता और यह पूजा पत्री कभी न करूंगा।" बस फिर क्या था घर में जैसे तूफान आ गया। मुझे कष्ट दिये जाने लगे। मैंने वैदिक धर्म का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। मैं संस्कृत नहीं जानता अत मुझे प्रथम किन्हीं वेद वेदांग और व्याकरण के प्रकांड विद्वान के पास विद्याऽध्ययन करना अनिवार्य है। मैं गुरु की खोज में हूं।"

वस्तुतः इस युवक की लगन तथा उसका साहस प्रशंसनीय हैं। वह प्रोत्साहन का अधिकारी है।

इस युवक की काया पलट को सही अर्थ में सत्यार्थप्रकाश का चमत्कार कह सकते हैं। खेद है सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन के प्रति आर्यों की अभिरुचि कम होती जा रही है। यदि हम सत्यार्थ प्रकाश का मनन पूर्वक एक बार नहीं अपितु अनेक बार अध्ययन करें तो हमारे ज्ञान में आशातीत वृद्धि होकर जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन सम्भव हो सकता और आर्य समाज के प्रति निष्ठा अटूट हो सकती है।

इस नवयुवक की जो भी सहायता सम्भव हो सकती है वह करने का यत्न किया जाना चाहिए।

उत्तम सुझाव

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की सबर्ग समिति के अध्यक्ष श्रीयुत प्रोफेसर शेरसिंह जी एम० एस० ए० (पंजाब) ने सार्वदेशिक सभा के मन्त्री को एक पत्र लिखकर सुझाव दिया है कि आगामी दिसम्बर मास में दिल्ली में वेद के विद्वानों को आमन्त्रित करके एक गोष्ठी की जाय जिसमें उन विद्वानों के वेद विषय पर व्याख्यान कराए जाय जिनका क्रम १५ दिन तक चले। व्याख्यानों के पश्चात् शंकासमाधान हुआ करे जिससे वेद का वास्तविक स्वरूप लोगों के सामने आ सके। उनका पत्र इस प्रकार है —

पिछले दिनों पंजाब की पदयात्रा करते समय सन्त विनोबा भावे जी ने आर्य समाजियों को एक मीठा सा उलाहना दिया जब कि उनको सत्यार्थ-प्रकाशादि कुछ ग्रन्थ भेंट किए गए, उन्होंने कहा कि "यह ग्रन्थ तो मुझे कम से कम दो सौ बार भेंट हो चुके हैं, और मैं आद्योपान्त पढ़ चुका हूं। क्या

अब आर्यसमाज ने सोचना और लिखना बन्द कर दिया है?"

आर्यसमाज में विद्वानों और विचारकों की कमी नहीं, परन्तु खेद है कि विद्वानों और विचारकों का वह सम्मान आर्यसमाज में नहीं जो कि होना चाहिए। इसीलिए अलग २ जो भी प्रयत्न उनकी ओर से होते हैं उनके लिए न तो उनको प्रोत्साहन मिलता है, न ही वे लोगों के सामने आ पाते हैं, इन सबका परिणाम यह है कि लोग यह समझने लगे हैं कि आर्यसमाज के पास विद्वानों और विचारकों की कमी होती जा रही है और वे अच्छा साहित्य प्रकाशित करने की योग्यता नहीं रखते। यह ठीक है कि विद्वानों का यथोचित सम्मान न होने के कारण आर्यसमाज मे विद्वानों की कमी होती जा रही है और जो चले जाते हैं उनकी स्थान पूर्ति नहीं होने पाती।

हमारा उद्देश्य तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' रहा है और आज भी है। परन्तु यह स्वरूप विश्व के सामने आ नहीं रहा क्योंकि हमारे सिद्धान्तों के प्रचार के लिए हमारे प्रयत्न बहुत ढीले हैं। आर्यसमाज की शिरोमणि सभा होने के नाते यह दायित्व सार्वदेशिक सभा पर ही है और उसे ही यह अपने हाथ में लेना चाहिए। इस दिशा में रचनात्मक पग उठाने के लिए बहुत से कार्यक्रम हो सकते हैं और उन पर विस्तार से विचार होना चाहिए। इस बारे में मेरा एक सुझाव है, और उस ओर शीघ्र ही सभा की ओर से पग उठाना चाहिए।

वेद को हम ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं और इसका पढ़ना पढ़ाना परम धर्म मानते हैं, इसलिए मेरा यह सुझाव है कि दिसम्बर मास में नई दिल्ली में वेद अनुसन्धान गोष्ठी का आयोजन किया जाए, सभी प्रतिनिधि सभाओं, समाजों द्वारा तथा दैनिक और दूसरे समाचार पत्रों द्वारा जिन विद्वानों ने वेद के विषय में जो कुछ अनुसन्धान किया है या वेद के विषय में लिखा है उन सबसे निवेदन किया जाय कि दीपावली से पहले २ वे अपनी पुस्तकें, निबन्ध, लेखादि सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में भेजें। पांच वेद के विद्वानों की एक उपसमिति बनाई जाए जो इन सबका निरीक्षण करे और फिर सभी विद्वानों को निमन्त्रण भेजकर दिसम्बर मास के आरम्भ में कम से कम १५ दिन के लिए दिल्ली में आमन्त्रित किया जाय। १५ दिन गोष्ठी दिल्ली में होती रहे और वेद के विषय में प्रमुख विद्वानों के सप्रू हाल जैसे किसी स्थान पर व्याख्यानों का विशेष आयोजन किया जाय। व्याख्यानों का रुपान्तर हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में भी किया जाय और उन व्याख्यानों में देश विदेश के सभी शिक्षित लोगों को निमन्त्रित किया जाये। इस प्रकार की व्याख्यान सभाओं की अध्यक्षताओं के लिए देश या विदेश के किसी विद्वान् से स्वीकृति प्राप्त की जाये। व्याख्यानों के पश्चात् प्रश्नोत्तर की व्यवस्था हो जिससे शंकासमाधान हो सके और वेद का वास्तविक स्वरूप लोगों के सामने आ सके। उस समय यदि सम्भव हो सके तो वेद के सम्बन्ध में अब तक जो भी लिखा गया है तथा जो उपलब्ध हो सके उसकी प्रदर्शनी का आयोजन किया जाय। वेद के सम्बन्ध में आर्य विद्वानों के अतिरिक्त दूसरे विद्वानों को और हो सके तो विदेशी विद्वानों को भी निमन्त्रित किया जाय। यदि आवश्यक समझें तो गोष्ठी की समाप्ति पर एक बड़ा वेद सम्मेलन भी हो जिसमें जन साधारण उपस्थित होकर विद्वानों के उपदेशों का श्रवण कर सकें और उस सम्मेलन में प्रस्ताव पास करके सरकार तथा जनता से अनुरोध किया जाये कि वेद के अनुसंधान के हेतु राष्ट्रिय भौतिक प्रयोग शाला (नेशनल फिजिकल लैबट्री) की भांति वेद अनुसंधान शाला के निर्माणार्थ आवश्यक धन सामग्री का प्रबन्ध करे।

मेरा यह निवेदन है कि यह सुझाव आप

सार्वदेशिक की अन्तरंग सभा की बैठक में रखें और इस सम्बन्ध में सभा से शीघ्र निश्चय करवाने की कृपा करें।

इस में सन्देह नहीं है कि इस आयोजन पर बीस या पच्चीस हजार रुपया व्यय करना पड़ेगा परन्तु जितना प्रचार इस प्रकार सत्तारूढ, विद्वानों, विदेशी दूतावासों के अधिकारियों के द्वारा देश में और बाहर होसकेगा उसके निमित्त इतना व्यय बहुत अधिक नहीं है, और यह करना वाञ्छनीय है। विशेष विद्वानों के निवास, भोजनादि का प्रबन्ध आर्य परिवारों में हो सकता है कुछ का आर्य समाज मन्दिरों और दूसरी आर्य संस्थाओं में हो सकता है। इस प्रकार हम शायद कुछ व्यय में कमी कर सकें परन्तु जितना आवश्यक है वह करना चाहिए और समस्त आर्य समाजों तथा धनिक आर्य पुरुषों के द्वारा वह धन शीघ्र एकत्रित किया जा सकेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

सन् १९३४ में सभा के तत्कालीन प्रधान स्व० श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के निर्देश पर सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में आर्य विद्वत् सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था जिसमें वेद के नियत विषयों पर आर्य विद्वानों द्वारा निबंध पढ़े गए थे और शंका समाधान हुआ था। बाद में ये निबंध 'आर्य सिद्धान्त विमर्श' नामक ग्रन्थ के नाम से सभा द्वारा प्रकाशित कर दिए गए थे। इसका समस्त व्यय स्व० श्रीयुत ला० ज्ञानचन्द जी ठेकेदार ने वहन किया था और वे ही इसके स्वागताध्यक्ष थे। श्री प्रोफेसर महोदय का उपर्युक्त प्रस्ताव आर्य समाज के वेद विषयक साहित्य के सृजन और प्रचार की दृष्टि से बड़ा उपयोगी है। यह प्रस्ताव अवश्य क्रियान्वित होना चाहिए। यदि इस वर्ष यह कार्य हो सका तो यह वर्ष की एक उल्लेखनीय सफलता होगी। इस गोष्ठी के आयोजन का समस्त व्यय अकेले एक ही धन सम्पन्न आर्य धर्म प्रेमी महानुभाव वहन कर सकते हैं। आशा है धनीमानी सज्जन इसका व्यय भार वहन करके सभा को निश्चिन्त करेंगे और पुण्य के भागी बनेंगे।

ईसाइयों की जन सेवा

रायपुर का २९ जून का समाचार है कि मध्य प्रदेश के राज्यपाल ने बिलासपुर से २२ मील दूर बेतूलपुर ग्राम के लगभग ३०० कुष्ठ रोगियों को आश्वासन दिया है कि वे ईसाई पादरियों के विरुद्ध उनकी इन शिकायतों की जांच पड़ताल करेंगे कि ईसाई पादरी उन्हें बलात् ईसाई बनाने की चेष्टा करते हैं।

बेतूलपुर ग्राम में अमेरिकन ईसाई मिशनरियों ने एक कुष्ठाश्रम खोला हुआ है।

इन रोगियों ने यह भी शिकायत की है कि ईसाई पादरी उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता में अवाञ्छनीय बाधाएं उपस्थित करते हैं और उन्होंने चिकित्सा विषयक सुविधाएं देना बन्द कर दिया है।

ईसाई पादरियों की जन सेवा का वास्तविक उद्देश्य पीड़ितों की विवशता का लाभ उठाकर उन्हें ईसाई बनाना बताया जाता है। इस प्रकार की घटनाओं से यह उद्देश्य भली भांति प्रमाणित हो जाता है। पता नहीं ईसाइयत को बदनाम करने वाला यह व्यापार कब तक चलता रहेगा?

गोवध देश के इतिहास की दृष्टि से अनुचित

प्रयाग उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री माथुर ने निगरानी के एक आवेदन पत्र को रद्द करते हुए कहा कि यह सच है कि गोवध निवारक अधिनियम के उद्देश्यों और कारणों में यह नहीं कहा गया है कि इस अधिनियम को पारित करने का एक यह भी कारण है कि इस देश के बहुमत वाले वर्ग के प्रति आदर दिखाया जाय परन्तु न्यायालय को इसका अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उस देश की दशा क्या है जहां न्याय किया जाता है। न्यायाधीश महोदय ने कहा न्यायालय

देश के पुरान इतिहास की उपेक्षा नहीं कर सकते। यह सब विदित है कि गोवध के कारण देश मे अनक बार साम्प्रदायिक दगे हुए हैं। आज भी गोवध होन से बडा द गा हो सकता है। अभियुक्त का अवैधकार्य ऐसा हो जिससे देश की शाति भ ग होने और जान माल को क्षति पहुचने की सम्भावना हो तो ऐसे मामलों मे न्यायालय को कुछ कठोरता का रुख ग्रहण करना चाहिए ताकि कोई शांति भ ग का दुस्साहस न कर सके। इस मामले में नाथू और अन्य ३ व्यक्तियों को उक्त अधिनियम के अन्तगत ११ वष का कारावास का द ड मिला था पर रामपुर के सेशन जज ने उसे घटाकर ६ मास का द ड कर दिया था। यह गोवध विषयक मामला था।

मुस्लिम स्कूल में संस्कृत

समाचार मिला है कि चदौसी (मुरादाबाद) 'मुस्लिम नवीन स्कूल' में सस्कृत विषय अनिवार्य घोषित कर दिया गया है। यह समाचार सस्कृत और आर्य सस्कृतिके प्रेमियों के लिए बडा आल्हाद प्रद है। वस्तुत मुस्लिम स्कूल का यह निश्चय बड़ा साहसपूर्ण एव अनुकरणीय है जिसके लिए वह बधाई का पात्र है। इस निश्चय की प्रतिक्रिया हिन्दू प्रजा में बहुत अच्छी होगी।

सौन्दर्य प्रतियोगिताए

ब्रह्मदेश के छात्र सगठनों के सघ ने अमरीका में होने वाली 'विश्वकुमारी' की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए किसी भी ब्रह्मदेशस्थ नवयुवती के विदेश भेजे जाने का तीव्र विरोध किया है। सघ की विज्ञप्ति में कहा गया है कि इस प्रकार की सौंदर्य प्रतियोगिताए स्वास्थ्य तथा शारीरिक उन्नति के लिए न होकर किन्हीं सस्थानों के व्याव सायिक हितों की पूर्ति के लिये हैं। ब्रह्मदेश के बौद्ध नेताओं ने भी अपने देश की बालाओं के नैतिक सरक्षण के विषय में चिन्ता प्रकट की है और मांग की है कि इस तरह की सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में लडकियों का भाग लेना उचित नहीं है। दूसरा समाचार दक्षिण पूर्वी एशिया के मलय राज्य का है। मलय देश के क्वालालम्पुर नगर में भी इसी प्रकार की सौन्दर्य प्रतियोगिता आयोजित की गई है मलय सास्कृतिक परिषद् ने प्रस्तावित प्रतियोगिता का तीव्र विरोध किया और घोषित किया है कि आज मलय प्रदेश मे पश्चिम के अन्धे अनुकरण की प्रवृत्ति घर कर रही है जो सर्वथा अनुचित है। परिषद् ने शासन से अनुरोध किया है कि उसे देश में स्वस्थ सास्कृतिक प्रवृत्तियों को (इनमें सौन्दर्य प्रतियोगिता न हो) प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे जनता की रुचि परिष्कृत हो सके।

इस प्रकार के अनैतिक कार्यों के विरुद्ध आवाज उठाना स्वागत योग्य है। सुन्दरता परमात्मा की देन होती है जिसमें महान कलाकार प्रभु की उत्कृष्ट कलाकृति के भव्य दर्शन होते हैं और हृदय दिव्य भावों से परिपूरित हो जाता है। रूप और सौन्दर्य को प्रदर्शन और व्यवसाय की वस्तु बनाना या बनने देना परमात्मा की देन का घोर तिरस्कार करना है।

शिष्टता, नैतिकता और नारी के गौरव की दृष्टि से ये प्रतियोगिताए घृणित और त्याज्य हैं। इन प्रतियोगिताओं मे नारी को जिन प्रक्रियाओं में से होकर गुजरना पड़ता है उन्हें देखकर मानव की शिष्ट भावना को बहुत ठेस लगती है। इनसे मनुष्य की वासनाए उद्दीप्त होकर उसके चारित्रिक पतन की सभावनाए बढ जाती हैं। नारी का शील और गौरव उसकी अमूल्य निधिया होती हैं। इन प्रतियोगिताओं में बिरली नारी ही इन निधियों की रक्षा करने में समर्थ होती है।

फिर सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी के चुनाव का क्षेत्र भी बडा परिमित होता है। किसी स्थान, प्रदेश और देशकी सब सुन्दरिया इस प्रकारके अनैतिक आयो-

(शेष पृष्ठ ३०१ पर)

अतिथि यज्ञ का महत्व

(लेखक—श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री)

इष्टं च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥१॥
पयश्च वा एष रस च ... ... ॥२॥
ऊर्जां च वा एष स्फातिं च ... ... ॥३॥
प्रजां च वा एष पशूंश्च ... ... ॥४॥
कीर्तिं च वा एष यशश्च ... ... ॥५॥
श्रियं च वा एष संविदं च ... ... ॥६॥
एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात् पूर्वो नाश्नीयात् ॥७॥
अशितवत्यतिथावश्नीयाद् यज्ञस्य सात्मत्वाय यज्ञस्याविच्छेदाय तद् व्रतम् ॥८॥
एतद् वा उ स्वादीयो यदधि गवं क्षीर वा मांसं वा तदेव नाश्नीयात् ॥९॥

अथर्व० काण्ड ९ । सूक्त ६ । (३) मन्त्र १ से ९ तक ॥

ऊपर के इन ९ मन्त्रों में भगवती अथर्व श्रुति ने कैसे मार्मिक शब्दों मे गृहस्थ को यह बताया है कि अतिथि के पहले उन्हे भोजन नहीं करना चाहिये।

यदि गृहस्थ अतिथि को भोजन कराने से पहले स्वयं भोजन कर लेता है तो वह अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाता है। वास्तव में अतिथि से पहले खा लेने वाला गृहस्थ अपने इष्ट और अपूर्त के पुण्यों को ही खा लेता है। इष्ट यज्ञों का नाम है और अपूर्त हैं कूप, तड़ाग, बागादि जो, अपने निर्माताओं के लिये पुण्य अर्जित करते हैं। यही नहीं वह गृहस्थ उन कूप, तड़ागों, यज्ञों में सञ्चित समस्त दुग्धादि रसों को ही मानों पी जाता है और वह सब शुष्क हो जाते हैं। इतना ही नहीं अतिथि के भोजन करने से पूर्व स्वय उदरपोषी गृहस्थ अन्नादि पदार्थों को ही खा जाता है जिससे प्रजा पशु सब का पालन अशक्य हो जाता है। अत वह गृहस्थ इस प्रकार अपनी प्रजा तथा पशु को ही खा लेता है और तब स्वाभाविक ही उसकी कीर्ति उसका यश धूल में मिल जाता है। लोग उस प्रजा पशु हीन को हतभाग्य कहने लगते हैं। अभागा नाम वह पा लेता है। इस प्रकार उसकी बुद्धि विवेक सब नष्ट हो जाता है। कारण कि अकीर्तिमान् यशस्वी को मानस चैन कहां? उसके चेहरे की कान्ति मिट जाती है, उसकी चेतना शक्ति क्षीण पड़ जाती है।

भगवती श्रुति ने ओजस्वी शब्दों में बताया कि गृहस्थ अतिथि के पहले खा ले तो मानो उसने अपने इष्ट अपूर्त खा लिये। उसने रस और पय खा लिया। उसने रस के अभाव में अन्नादि का भक्षण कर डाला। जब जल नहीं, रस नहीं तब अन्नादि कहा से होंगे। जब अन्नादि नहीं तब प्रजा पशु कैसे जियेंगे? जब एक गृहस्थ प्रजा पशु

हीन हो जाय तब वह हत भाग्य ही ठहरेगा। ऐसा हुआ तब उसकी काया कान्ति एव मानस सन्तुलन बिगड़ेगा ही। इस कारण गृहस्थ को पहले अतिथि को खिलाना चाहिये और उसके पश्चात् स्वय खाना चाहिये। इन वचनों से अतिथि सत्कार के महत्व को समझने के लिये भरपूर प्रेरणा मिलती है।

अब प्रश्न यह होता है कि अतिथि कौन है? इसका सुन्दर उत्तर इसी प्रसग में श्रुति ने दिया है—अर्थात् वही अतिथि है जो श्रोत्रिय है—श्रुतियों का ज्ञाता और श्रुति अनुसार आचरण करने वाला हो। जो ऐसा नहीं, वह बिना बुलाये, बिना सूचना दिये आ जाने वाला कोई भी आकस्मिक आगन्तुक अतिथि नहीं कहा जा सकता। यह ऋषि सम्मत अतिथि का अर्थ है। देखो! अतिथि ऋषि भाष्य में—भाग अविद्यमान तिथि १, १२८, ४। अभ्यागत इति वर्तमान ४, १, २०। अनियततिथि ४, ४०, ५। अविद्यमाननियततिथि ५, १ ८। अकस्मादागत ५, ४, ५। अविद्यमाना तिथिर्गमनागमनयोर्यस्य ७, ८, ४। यजु—अविद्यमाना तिथिर्यस्य १० २४। अविद्यमाना तिथिर्यस्य स राज्यरक्षणाय यथा समय भ्रमण कर्ता १२, १४। अविद्यमाना तिथिर्यस्य सम् ३, १। अतिथीन् अनियततिथीन् ५ ५०, ३। अतिथे अविद्यमानतिथे विदुष ५, १। निरुक्त ने भी ऐसा ही कहा है—अतिथि अभ्यतितो गृहान् भवति ४, ५। (राजेन्द्र—स०)

ऐसे अश्रोत्रिय आकस्मिक आगन्तुकों को बिना खिलाये खाने वाला गृहस्थ उपर्युक्त दण्डों का पात्र नहीं होता।

अब आगे यह समाधान भी किया गया है कि खाद्य का वह रूप क्या है जिसे अतिथि के पहले खाने से ऊपर बताये दण्ड गृहस्थ पर लगते हैं।

श्रुति बताती है—खाद्य प्रसग में वह है जो घृत दुग्ध पक्व परिपुष्ट भोजन सामग्री है। कुछ थोड़ा बहुत नाम मात्र का मुह मीठा करने वाला सामान उसमें नहीं आता। एक बिस्कुट या मठरी खाली तो इसके अपराध में यह ऊपर बताये गये दण्ड नहीं मिलते।

यज्ञ की एकात्मता के लिये यह व्रत है कि अतिथि को खिला ले तब खावे।

अथर्ववेद के इन पवित्र मन्त्रों की तर्कसगतता तथा सारगर्भिता पर जितना लिखा जाय उतना ही थोड़ा—इनसे यह बात प्रमाणित होती है कि वैदिक मर्यादा में अतिथि सत्कार का बड़ा महत्व है।

सोद्य स पापो जीवति य पचत्यात्मकारणात् वह पापी व्यर्थ जीता है जो केवल अपने लिये पकाता है। केवलादी विनश्यति—अकेले खाने वाला विनष्ट होता है इत्यादि वचन ऊपर लिखे मन्त्रों की पुनीत प्रेरणा के ही परिणाम हैं।

जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते तबतक उन्नति भी नहीं होती, उनके सब देशों में घूमने और सत्योपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्यमात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है। बिना अतिथियों के सन्देहनिवृत्ति नहीं होती, सन्देहनिवृत्ति के बिना दृढ निश्चय भी नहीं होता। निश्चय के बिना सुख कहां? (सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

सत्यार्थ दर्पण की समालोचना

(लेखक—श्री श्याम किशोर आर्य, सिद्धान्त शास्त्री)

(सत्यार्थ दर्पण जैनियों द्वारा प्रकाशित पुस्तक में सत्यार्थ प्रकाश की आलोचना है)

जैन—(पृष्ठ ४, पंक्ति १५) जैनधर्म को नास्तिक कहना बड़ी भूल है।

आर्य—बन्धु ! हम आपको नास्तिक नहीं कहेंगे परन्तु आप स्वामी दयानन्द जी के समय में या उस काल में अपने को नास्तिक कहते थे और आप ईश्वर को जगत् का कर्त्ता नहीं मानते थे इस कारण लोग आपको नास्तिक कहते थे। अब आप अपने को कहते हैं कि हम नास्तिक नहीं हैं तो हम आस्तिक मान लेंगे यदि आप ईश्वर का कर्तृत्व स्वीकार कर लें।

जैन—(पृष्ठ ५, पंक्ति ५) स्वामी दयानन्द जी ने ऐसी भारी भूल क्यों की कि जैन धर्म को उन्होंने नास्तिक लिख डाला।

आर्य—प्यारे बन्धु ! स्वामी दयानन्द जी ने तनिक भी भूल नहीं की वरन् आप ईश्वर को जगत का कर्ता और वेदों को न मानने के कारण अब भी नास्तिक की कोटि में आते हैं।

जैन—(पृष्ठ ८, पंक्ति १५) जिस सत्यार्थप्रकाश की नींव जमाने के लिये स्वामी जी ने साख्य दर्शन की सहायता ली है उस दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल जैन धर्म से भी चार पग आगे बढते हुए ईश्वर की भी सत्ता नहीं मानते हैं।

आर्य—मेरे प्यारे बन्धु ! स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश की नींव साख्य दर्शन पर नहीं अपितु वेदों पर रखी है और वे सांख्य दर्शन को इसलिये प्रामाणिक मानते हैं कि वह वेद और ईश्वर को मानता है। यह आपकी भूल है कि आप साख्य दर्शन के प्रणेता कपिल को अनीश्वरवादी कहते हैं। सुनिये, महर्षि दयानन्दजी ने (सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में) महर्षि कपिल को अनीश्वरवादी कहने वाले को क्या कहा है—‘ जो कोई कपिलाचार्य को अनीश्वरवादी कहे वह स्वय महान् नास्तिक है।”

प्रमाण स्वरूप देखिये —

महर्षि कपिल श्रुति (वेद) को प्रमाण मानते हैं —

परिच्छिन्नं न सर्वोपादानम् ॥

साख्य० १ । ७६ ॥

तदुत्पत्ति श्रुतेश्च ॥ साख्य० १ । ७७ ॥

यहा पर शका उठती है कि प्रकृति एक देशी है या व्यापक। इस पर महर्षि कपिल जी सूत्र में उत्तर देते हैं कि एक देशी और अनित्य पदार्थ सर्व जगत का उपादान कारण नहीं हो सकते क्योंकि अनित्य पदार्थ को कार्य होने से उसे स्वय कारण की आवश्यकता है ॥७६॥

इस पर पुन प्रश्न यह होता है कि एक देशी पदार्थ की उत्पत्ति मे क्या प्रमाण हैं। क्योंकि ऊपर के अनुसार अनित्य पदाथ कार्य होता है और कार्य का कारण होना चाहिये। इस पर महर्षि कपिल जी लिखते हैं कि—

उत्तर—अनित्य पदार्थ और एकदेशीय पदार्थों की उत्पत्ति श्रुति (वेदों) ने मानी है और जिसकी उत्पत्ति है उसका विनाश अवश्यमेव है।

‘तत्र प्राप्तविवेकस्यानावृत्ति श्रुतिः ॥

साख्य० १ । ८३ ॥

'उत्कर्षादपि मोक्षस्य सर्वोत्कर्षश्रुतेः ।'

साख्य० १ । ५ ॥

'न द्वैतश्रुतिविरोधो जाति-परत्वात् ॥'

साख्य० १ । १५४ ॥

इत्यादि सूत्रों में महर्षि कपिल श्रुति (वेद) को प्रमाण मानते हैं ॥

महर्षि कपिल ने ईश्वर की सत्ता स्वीकार की है

देखिये —

'अकार्यत्वेऽपि तद्योगः पारवश्यात ॥'

साख्य ३ । ५५ ॥

अर्थ—प्रश्न यह है कि प्रकृति को सृष्टि का उपादान कारण क्यों माना गया है ? इसका उत्तर इस सूत्र में दिया गया है । प्रकृति को सृष्टि का उपादान कारण इसलिये माना गया है क्योंकि वह परवश है और जो परवश होता है उसे ही काम करना पड़ता है इसलिये प्रकृति को ही सृष्टि करने का योग है ।

'स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता ॥'

साख्य० ३ । ५६ ॥

अर्थात् (स) वह परमेश्वर (हि) निश्चय से (सर्व वित्) सर्वज्ञ है (सर्व कर्त्ता) सब का कर्त्ता है । प्रकृति तो इस सृष्टि का उपादान कारण है और जो परमात्मा सर्वज्ञ है वह सब का नैमित्तिक कारण है ।

'ईदृशेश्वरसिद्धिः सिद्धा ॥ साख्य ३।५७॥

अर्थात् इस प्रकार के ईश्वर की सिद्धि सिद्ध है । इस प्रकार के सर्वज्ञ ईश्वर की सिद्धि स्पष्ट सिद्ध है जो इस सृष्टि का नैमित्तिक कारण है, वह सृष्टि का उपादान कारण नहीं ।

ईश्वर के स्वरूप का वर्णन

'व्यावृत्तोभयरूपः ॥' साख्य० १।१६०॥

अर्थात् वह ईश्वर प्रकृति और पुरुष (जीवात्मा) से भिन्न है ।

(नोट—कृपया जैन भाई बतावें कि जब यहांपर कपिल जी इस सूत्र में कह रहे हैं कि वह दोनों से भिन्न रूप वाला है तो प्रकृति और पुरुष को मानते ही है फिर यह दोनों से भिन्न वस्तु क्या है ।)

'साक्षात् सम्बन्धात् साक्षित्वम् ॥'

साख्य० १ । १६१ ॥

अर्थात् प्रकृति और जीवात्मा के साथ होने से सम्बन्ध होने से—ईश्वर उनका साक्षी है—वह उनके कार्यों का निरीक्षक है ।

नित्यमुक्तत्वम् ॥ साख्य १ । १६३ ॥

कपिल जी ने बताया है कि मोक्ष सब सुखों से परे है अर्थात् मोक्ष कौन चाहेगा या उस मोक्ष की प्राप्ति के लिये कौन कामना करेगा जो बन्धन या बन्ध में होगा, परन्तु "नित्य मुक्तत्वम्" अर्थात् वह नित्य मुक्त है, तो मोक्ष चाहने वाला तो नित्य मुक्त नहीं, अतः वह दूसरी वस्तु अलग है जो नित्य मुक्त है और वह परमात्मा है ।

'उपरागात् कर्तृत्वं चित्सान्निध्यात् चित्सान्निध्यात् ॥ साख्य १ । १६४ ॥

अर्थात् प्रकृति और जीवात्मा के साथ सम्बन्ध होने से उस परमात्मा की कर्तृत्व शक्ति का प्रसार दिखलाई देता है अर्थात् वह ईश्वर इस सृष्टि का कर्ता, पालक, पोषक और संहारक है ।

अतः बन्धु ! आपका कहना उचित नहीं ।

जैन—(पृष्ठ ६, पंक्ति २) 'वेद' शब्द का अर्थ ज्ञान है सो जैन धर्म ज्ञान की निन्दा नहीं करता प्रत्युत वह प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग इन चार वेदों को बड़े आदर से मानता है ।

आर्य—बन्धु ! जैन धर्म वेद 'ज्ञान' की निन्दा नहीं करता, परन्तु वह वेद जो सब ज्ञान की पुस्तक है उसकी तो निन्दा करता है, क्योंकि चारों वेद की पुस्तक में संसार की समस्त विद्याओं का मूल रूप से वर्णन है और आपके कथनानुसार प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग वेद है, तो आज के समय में वनस्पति शास्त्र, रसायन शास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र आदि वाले भी कहेंगे कि यह सभी एक २ वेद हैं तो ठीक नहीं होगा। अत वेद तो ऋक, यजु, साम और अथर्व ही हैं। जो कि ज्ञान, कर्म, उपासना तथा विज्ञान विषय का प्रतिपादन करते हैं।

जैन—(पृष्ठ ६, पंक्ति ५) यदि स्वामी जी ने वेद का अर्थ ऋक, यजु, साम और अथर्व ही माना है तो स्वामी जी ने अपना घर बिना देखे जैन धर्म को नास्तिक कह दिया, क्योंकि इस परिभाषा के अनुसार जितने भी वेदानुयायी हैं वे सभी नास्तिक हैं, क्योंकि वे सभी वेदों के महा निन्दक हैं एक वेदी लोग ऋग्वेद के सिवाय अन्य समस्त वेदों की, द्विवेदी लोग सामवेद, अथर्ववेद की और त्रिवेदी सम्प्रदाय वाले अथर्ववेद को अमान्य करके उसकी निन्दा करते हैं। स्वामी जी के सायण महीधर भाष्यानुयायियों की और तदनुयायी स्वामी जी के भाष्य की घोर निन्दा करते हैं।

आर्य—बन्धुवर ! स्वामी जी ने खूब अच्छी प्रकार से देख भाल और समझ कर प्रत्येक बातों को कहा है और आपने जो यह कहा है कि "एक वेदी ऋग्वेद के सिवाय अन्य वेदों की निन्दा करते हैं" यह बात आपने मेरे विचार से ठीक से समझ कर नहीं कही। यह उपाधि इनको इस कारण मिली कि ये लोग इन २ वेदों का विशेष अध्ययन करते थे। एक वेदी ऋग्वेद का विशेष अध्ययन करते थे परन्तु अन्य वेदों की निन्दा कदापि नहीं करते हैं। इसी प्रकार अन्य और स्वामी जी के अनुयायी महीधर और सायण के भाष्यों की निन्दा करते हैं और तदनुयायी स्वामी जी के भाष्य की, परन्तु वेदों की ये कदापि निन्दा नहीं करते, अत स्वामी जी ने बिल्कुल सत्य लिखा है 'वेद ऋक, यजु, साम और अथर्व ही हैं। इनको मानने वाले आस्तिक और न मानने वाले नास्तिक। क्योंकि वेदों को जो मानेगा वह अवश्यमेव वेद प्रतिपादित ईश्वर को मानेगा इसलिये "नास्तिको वेद निन्दक" के अनुसार स्वामी जी ने बिल्कुल ठीक ही लिखा है।

जैन—(पृष्ठ ६, पंक्ति १४) पारस्परिक वेदार्थ निन्दा का ही यह उदाहरण है कि वेदों की सैकड़ों हजारों शाखायें चल पड़ी, जिससे यह निर्णय करना असम्भव है कि किस सम्प्रदाय का कहना सत्य है और किसका गलत। जिन मदिरा पान, मांस भक्षण, गोवध, अश्ववध, नरवध, द्यूत क्रीड़ा, आदि बातों का विधान वेदों में पाया जाता है, जिसको कि स्वामी जी अपने भाष्य में अनेकत्र लिख गये हैं, मारण, मोहन, उच्चाटन, परस्त्री हरण आदि के मन्त्र वेदों में मौजूद हैं। क्या ऐसी बातों पर प्रकाश डालने वाले वेद बुद्धिमानों के लिये मान्य होने चाहिये।

आर्य—बन्धु ! क्या जैन धर्म में कई शाखायें नहीं चल पड़ी हैं श्वेताम्बर दिगम्बर आदि और प्रत्येक शाखा दूसरे का विरोध करती है जिससे यह निर्णय नहीं किया जा सकता कि वास्तव में जैन धर्म कौन है और कौन नहीं। आपने जो कहा कि गोवध, अश्ववध, नर वध, मदिरापान, मांस भक्षण, द्यूत क्रीड़ा आदि का विधान पाया जाता है सो यह बिल्कुल असत्य है और स्वामी जी ने अपने भाष्य में कहीं लिखा ही नहीं है वरन् उनका बड़े जोरदार शब्दों में खण्डन किया है ब्राह्मण ग्रन्थ तथा ऋषि प्रमाणों को देकर। वेदों की शाखायें परस्पर एक दूसरे के विरोध में नहीं लिखी गई, अपितु वेद के किसी एक विषय का विशेष

सृष्टि संवत में भारी भ्रम

[लेखक—श्री प० विश्वनाथ आर्योपदेशक]

भ्रम सवत् १९७२९४९०६०—यथार्थ सवत् १९६०८५३०५९

प्राय आर्यसमाज के पत्रों और पुस्तकों पर भ्रान्त सवत् ही लिखा रहता है। सावदेशिक मार्च ५९ में "समाज शास्त्र के मूलतत्व" नामक पुस्तक से इसी भ्रान्त सवत् को व्याख्या सहित उद्धृत किया है। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या ये महानुभाव महर्षि दयानन्द लिखित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को नहीं पढे ?

वस्तुत सब पढे हैं। परन्तु जैसा कि इस उद्धरण से प्रकट होता है इनके विचार में महर्षि लिखित सवत् मे सात सन्धियों के १२०९६ ००

रूप से प्रतिपादन करना ही उनका उद्देश्य था। जो शाखायें उनकी विरोधिनी हैं उनको वेद की शाखायें नहीं कहना चाहिये। जैसे आम के वृक्ष की कई शाखाएं एक दूसरे का विरोध नहीं करतीं और जिनमें विरोध पाया जाता है वह उस वृक्ष की शाखा नहीं है। यदि एक टहनी पर आम लगे और दूसरे पर नारंगी तो उन दोनों टहनियों को एक वृक्ष की शाखा नहीं कह सकते। यह ठीक है कि वेद का ज्ञान न रहने के कारण भिन्न सम्प्रदायों ने अलग २ पुस्तकें बना कर उनको वेद की शाखा प्रसिद्ध कर दिया था परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने तो इस भूल का ही सुधार किया है।

जैन— पृष्ठ १०, पंक्ति १) इस चराचर जगत में जो वेदों द्वारा बतलाई है, उस हिंसा को अहिंसा समझना चाहिये। क्योंकि धर्म वेद से ही प्रगट हुआ है।

आर्य—बन्धु ! यहा पर हिंसा के अर्थ प्राणियों को पीड़ा देना है। प्राणियों को पीड़ा दो अभिप्राय से दी जाती है एक तो द्वेष भाव से और दूसरे उसी प्राणी के हित के लिए। पहले प्रकार की हिंसा वेद विरुद्ध है इसलिए पाप है दूसरे प्रकार की हिंसा उसी प्राणी के हित के लिये है इसलिए वह वेद विहित है जैसे गुरु या माता पिता द्वारा पुत्र को दण्ड देना या राजा द्वारा चोर आदि को दण्ड देना। यह दण्ड पीड़ा अवश्य देता है परन्तु इससे पीड़ा पाने वाले का हित ही होता है, ऐसी हिंसा को हिंसा न कह कर अहिंसा कहा है क्योंकि वह वेद विहित है। बहुत से भ्रान्ति के कारण श्लोक का शुद्ध अर्थ न समझ कर ऐसा अर्थ करने लगे हैं कि वेद मन्त्र यज्ञ में पशुबलि को विहित समझते हैं और ऐसी हिंसा को "वैदिकी हिंसा" कहते हैं। इसीलिये कुछ लोगों ने यह उड़ा रक्खा है कि "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" वस्तुत पशुबलि 'वैदिकी हिंसा' ही नहीं है और न वह अहिंसा की कोटि में आती है। वैदिकी हिंसा का अर्थ तो वह पीड़ा है जो किसी प्राणि को उसी के हित के लिये विधि पूर्वक दी जाती है। डाक्टर का चीर फाड़ करना और रोगी को अच्छा करने के लिये उसको पीड़ा देना 'वैदिकी हिंसा' (Licensed Pain Giving) है इसी प्रकार माता यदि किसी अपराध पर बच्चे को दण्ड दें तो वह भी वैदिकी हिंसा है। राजा चोर को दण्ड दे तो यह भी 'वैदिकी हिंसा है। वैदिकी हिंसा कड़वी दवा है जो रोग निवारण के लिये दी जाती है। इसी लिये उसको अहिंसा कहा है।

अत आपने मनु के श्लोक का गलत अर्थ समझा।

—(क्रमश)

वर्ष जोड़ने से रह गये हैं। यदि ऐसा हो तो स्पष्ट लिख देना चाहिये। इससे महर्षि का आत्मा असन्तुष्ट न होगा। क्योंकि वे गुरुडम के घोर विरोधी थे। उनके विचार में समय २ पर परिवर्तन होता रहा और अपने ग्रन्थों की अशुद्धियों के सुधार की बात भी लिख गये। मेरे विचार मे तो इस दिशा मे एक पग भी नहीं उठाया गया यदि आर्य विद्वत्सभा इधर तनिक भी ध्यान दे तो विद्वानों में आर्य समाज का और भी गौरव बढ जावे।

मेरे विचार में इस सृष्टि सवत् के विषय में महर्षि से कोई भूल नहीं हुई। क्योंकि ( ) उपयुक्त यथार्थ सवत् न केवल ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है, प्रत्युत सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थों में भी यही दिया गया है। (२) ऐसा प्रतिभाशाली महानुभाव ऐसी साधारण भूल न कर सकता था। यदि मानलें तो भी अन्य ग्रन्थों के लिखते समय ही समझ में आ जाती (३) यदि यह भूल होती तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में स० १९३३ विक्रमी में जो सृष्टि सवत् १९६०८५२९७६ लिखा तो सृष्टि के शेष वर्ष २३३३२२७०२४ न लिखकर २३५९१ ४७९२४ लिखते क्योंकि आपने एक सहस्र चतुयुगी ४३२०००००० वर्षों का ब्रह्म दिन अर्थात् सृष्टि की आयु माना है।

भ्रान्त सृष्टि सवत् का कारण सूर्य सिद्धान्त का तत्त्वार्थ न जानना है। यथा

युगाना सप्तति सैका मन्वन्तर मिहोच्यते।
कृत प्रमाणा तस्यान्ते सन्धि प्रोक्ता जलप्लव ॥
सू० १२८

७१ चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है और प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में सतयुग के बराबर १७२८००० वर्ष की एक सन्धि जलप्लव के रूप में होती है। अर्थात् प्रत्येक मन्वन्तर के पीछे एक लघु प्रलय हो जाती है। पृथिवी पर सब जगह जल हो जाता है सब जीवजन्तु लुप्त हो जाते हैं। पुराणों में इस मन्वन्तर प्रलय का विस्तार से वर्णन मिलता है। बाइबल की नू (मनु) की प्रलय भी पौराणिक कथा का ही विकृत रूप है। अब विचार करने की बात है कि यदि सन्धि भी एक प्रलय का रूप है तो उसे सृष्टि में क्यों गिना जावे। इस प्रकार केवल मन्वन्तर की गणना से महर्षि दयानन्द लिखित यथार्थ सवत् ही रह जाता है।

विज्ञान सूर्यसिद्धान्त की जलविप्लव सन्धि का समर्थन नहीं करता। अत महर्षि ने इसकी उपेक्षा कर मनुस्मृति के प्रमाण से सृष्टि सवत् का निश्चय किया। तदनुसार मन्वन्तरों के सन्धियों का उल्लेख नहीं किया गया। इस प्रकार सन्धि रहित यथार्थ सवत् का निश्चय हुआ।

प्रश्न हो सकता है कि सन्धि रहित मन्वन्तर गणना से ९९४ युग ही रह जाते हैं शेष ६ युग का हिसाब कैसे पूरा होगा। उत्तर मनुष्योत्पत्ति से पूर्व वनस्पति ओषधि आदि उत्पत्ति होती है गौ घोड़ा आदि पशु भी पहले उत्पन्न होते हैं क्योंकि इनके बिना मानव जीवन स्थिर नहीं रह सकता है। वेद भगवान् ने यह अवधि तीन युग की बतलाई है।

या ओषधी पूर्व जाता देवेभ्यस्त्रियुग पुरा।
ऋ० १०-९७-१

ऐसे ही उपनिषद् में भी कहा—

पृथिवीभ्योऽन्न मन्नाद्र तो रेतस पुरुष।

जगदुत्पत्ति मनुष्य और वेद ज्ञान के प्रकाश के पश्चात् ही परिगणित होती है, अत सृष्टि सवत् की गणना भी वहीं से होनी चाहिये। इसी प्रकार विज्ञान के अनुसार प्रलय अवस्था मे भी समुद्र का जल पृथिवी के गर्भ में चला जाता है। वायु सूक्ष्म हो जाती है। भूमि मरुस्थल बन जाती है अत पशु पक्षी और औषधि आदि से पूर्व ही मानव वश का लोप हो जाता है। यह समय भी तीन युग का ही होता है। अत सृष्टि की आयु सहस्र युग अर्थात् चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष होते हुए भी सृष्टि सवत मानवोत्पत्ति से आरम्भ होकर मानव सहार तक ही चरितार्थ हो सकता है अतएव आर्यों के व्यवहार में वही यथार्थ सवत् ही आना चाहिये।

नोट —सार्वदेशिक धर्मार्य सभा को इस पर विचार कर घोषणा करनी चाहिए।

कालिदास की सूक्तियां *

[लेखक—श्री नरदेव स्नातक, ससद सदस्य]

कवि कालिदास के समस्त ग्रन्थ संभोग तथा विप्रलम्भ शृंगार से भरे पड़े हैं जिनका नवयुवक तथा नवयुवतियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अत ऋषि दयानन्द ने इन ग्रन्थों को वर्जित ठहराया है। अन्य मध्यकालीन काव्य ग्रन्थों के साथ कालिदास के ग्रन्थों की गणना जाल ग्रन्थों मे भी है। देखो—"काव्य में रघुवंश, माघ, किरातार्जुनीयादि "सब कपोल कल्पित मिथ्या ग्रन्थ है" सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास। फिर भी स्नातक जी ने बड़ा परिश्रम करके वर्जित सामग्री में से ग्राह्य सामग्री ले ली है। —सम्पादक

'अमृतेनेव संसिक्ता चन्दनेनेव चर्चिता।
चन्द्रांशुभि रिवोद्धृष्टा कालिदासस्य भारती॥'

कालिदास की भारती अमृतसे सींची हुई, चन्दन से चर्चित की हुई और मानो चन्द्रकिरण से घिसी हुई सी है। महाकवि ने अपने जन्म, कुल, वंश और जीवन के बारे में कुछ भी नहीं लिखा। अनेक विद्वानों ने महाकवि का जन्म, स्थान आदि अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार निश्चित किया है जो कि आज तक भी विवाद-ग्रस्त है।

महाकवि की अमर रचनायें रघुवंश, कुमार सम्भव, मेघदूत, ऋतुसंहार मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान शाकुन्तल आदि जगत् विख्यात् है। कालिदास पहले भारतीय मानव है और बाद में विश्वमानव। उनकी रचनाओं में भारत के भूगोल एवं इतिहास के दर्शन होते हैं। महाकवि ने भारतीय प्रकृति की समस्त सुषमा, रस, रूप रंग एवं सौरभ को अपनी कल्पना की तूलिका से उठाकर मानो चित्रपट पर फैला दिया है। कवि की रचनाओं में सर्वोत्कृष्ट शाकुन्तल है, उसमें भी चौथे अंक के चार श्लोक, जिसमें कवि ने शकुन्तला की विदाई का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।

'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।

शकुन्तला की याद में कण्व ऋषि प्रकृति को लक्ष्य कर कहते हैं।

'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वसिक्तेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रवृत्तिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥

कालिदास कहते हैं कि मनुष्य की कामनायें सख्यातीत हैं तथा मानव उन्हीं में उलझा रहता है और एक के बाद दूसरी का सिलसिला लगा रहता है, इस शाश्वत सत्यको कवि एक प्रसिद्ध सूक्ति में प्रकट करते हैं?

'मनोरथानामगतिर्न विद्यते'

कवि का कहना है कि मनोरथों को सफल बनाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है तथा नाना प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं परन्तु सफलता मिल जाने पर वे सब कष्ट भूलकर नव ज्योति का संचार करने वाले होते हैं —

'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते'

* आल इंडिया रेडियो के सौजन्य से प्राप्त।

कवि का कहना है कि दुनिया मे हमेशा कौन दुखी रहा है और कौन हमेशा सुखी रहा है। ससार मे सुख तथा दु ख का चक्र चलता रहता है जिस प्रकार रहट के पात्र कभी पानी से भरे होते है तो कभी खाली होते है। इस पूर्ण तथ्य को हृदय में धारण कर मनुष्य को कभी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिये।

'कस्यात्यन्त सुखमुपगत दुःखमेकान्ततो वा'
नीचेर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

गुण स्वय ढू ढे जाते है वे किसी को ढू ढते नहीं। गुणवान् व्यक्तियों की खोज की जाती है परन्तु गुणवान किसी की खोज नहीं करते हैं।

'न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्'

किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए सर्वाङ्ग सुन्दर स्वास्थ्य की परमावश्यकता होती है, बिना स्वास्थ्य के कितना ही बुद्धिमान व्यक्ति क्यों न हो वह ठीक कार्य नहीं कर सकता।

'शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्'

कुमार सम्भव मे रति विलाप करती हुई कहती है—चन्द्रमा के अस्त होने पर चांदनी भी अस्त हो जाती है। बादल के हट जाने पर विद्युत् भी नहीं चमकती। जब अचेतन वस्तुओं का भी अपने अपने पति का अनुगमन करना ही धर्म है, तो मै सचेतन होकर क्या न पतिका साथ दू।

शशिना सह याति कौमुदी सहमेघेन तडित्प्रलीयते।
प्रमदाःपतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्न हि विचेतनैरपि॥

निर्दोष होना प्राय असम्भव ही होता है। अधिक से अधिक गुणों का उपार्जन करने के लिए मनुष्य का पूरा प्रयत्न होना चाहिये। बहुत गुणों से सम्पन्न पुरुष में एक आध दोष स्वय ही छिप जाता है।

'एकोहि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांकः।

कोई आयु मे छोटा होता हुआ भी यदि धम आदि गुण विशेषों में वह बढा हुआ है तो केवल आयु मात्र से वृद्ध, गुणों मे हीन होने वाले मे वह पूज्य और सम्मान का पात्र होता है।

'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।

राज्य कितना भी बडा और विशाल हो। यदि वह समृद्धशाली न हो तो वह महान पद को प्राप्त नहीं हो सकता। परन्तु यदि छोटा भी राज्य समृद्धिशाली है तो वह महान पद के योग्य है।

ऋद्ध' हि राज्य' परमेन्द्रमाहुः

वास्तव मे वे ही पुरुष धीर कहलाते हैं जिनके मन विकारादि हेतु साधनों के सम्पन्न होने पर भी विकार को प्राप्त नहीं होते, राज्य लक्ष्मी को प्राप्त होकर भी दुर्मदादि गुण जिसमे उत्पन्न नहीं होते, प्रत्युत सद्गुण न्याय, दयादि विद्यमान रहते हैं वही धीर एव गम्भीर कहलाते हैं। इसी भाव को कवि किस सुन्दरता से प्रगट करते हैं।

'विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषा न चेतांसि त एव धीराः'।

सज्जन पुरुषो की सम्पत्ति का सचय करना दान के लिए होता है। दुर्जनों का सम्पत्ति का कमाना इसके विपरीत होता है। इसलिए कवि कहते हैं —

'आदानं हि विसर्गाय सता वारिमुचामिव'

बादल जल को सग्रह करता है और फिर कई गुना वर्षा रूप में प्रदान कर देता है। इससे कवि का सकेत है कि खूब कमाओ और खूब दो।

किसी विषय के सत्यासत्य के निर्णय करने में जहा और बहुत से बाध्य प्रमाण होते हुए भी निर्णय करना कठिन हो जाता है कि क्या सत्य है और

क्या असत्य है। यहां कवि का संकेत है कि इस प्रकार की जटिल समस्या का निर्णय करने में सज्जनों का अन्त करण भी एक महत्वपूर्ण साधन होता है।

'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाण-मन्तः करण प्रवृत्तयः।'

गुणवान् पुरुषों के द्वारा यदि कोई अभिलाषा न भी पूरी होती हो तो भी गौरव की बात है। परन्तु दुजन और अधम पुरुषों के द्वारा यदि पूर्ण भी होती हो तो वह वाञ्छनीय नहीं है।

'याचा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा'

सज्जन पुरुषों के प्रभाव से प्रभावित प्रजा में किस प्रकार से दुर्जनता का सचार हो सकता है। जैसे कि आकाश में मध्या ह कालीन सूर्य के तेज से चमकते हुए प्रकाश में अन्धकार का प्रसार असम्भव होता है।

'सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्राः।

वास्तव में गुण ही मनुष्य को पूज्य एव प्रतिष्ठित बनाते हैं। जो मनुष्य केवल पूजा और प्रतिष्ठा के ही इच्छुक रहते हैं और गुणों को उपार्जन नहीं करते वे सदा जीवन मे असफल रहते है। इस तथ्य को बतलाने के लिए ही कवि कहते हैं —

'गुणाः पूजास्थानं न च लिंगं न च वयः'

इसी बात को स्पष्ट करने के लिए कवि अन्यत्र भी इसी आशय को प्रकट करते हैं —

'पदहि सर्वत्र गुणैर्निधीयते'

प्राय मनुष्य भिन्न भिन्न रुचि के होते हैं। इसीलिए किसी सत्य का निर्णय करने के लिये अपनी अपनी रुचि के अनुसार विचारकों में बहुत बड़ा मतभेद हो जाता है और निर्णय करना कठिन हो जाता है। निम्न सूक्ति का ध्यान ऐसी स्थिति मे रखना परमावश्यक है।

'भिन्नरुचिर्हि लोकः

किसी कारण विशेष से यदि महापुरुष रुष्ट भी हो गये हों तो उनका आदर रखते हुए उनके सामने झुकने आदि से प्रसन्न हो जाते हैं।

'प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भोहि महात्मनाम्'

इस प्रकार कालिदास के साहित्य समुद्र में गोता लगाने पर अनेक उज्ज्वल एव देदीप्यमान रत्नों का कोष मिलेगा। इनमें से मैंने कतिपय सूक्तियां आपके दिग्दर्शन के लिए उपस्थित की हैं जिनसे कालिदास की काव्यकला, उनका प्रकृति चित्रण, अनन्यप्रसाद गुण, उनकी अपूर्व नाट्य कला, सर्वतोमुखी प्रतिभा और अकल्पनीय कल्पना का दिग्दर्शन होता है जिनके कारण कालिदास कविसम्राट् पद से विभूषित किये गये हैं। उनके विषय में युक्तियुक्त है —

पुरा कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिका-धिष्ठितकालिदासः अद्यापि तत्तुल्य कवेर-भावादनामिका सार्थवती बभूव।

कालिदास के महत्व को सिद्ध करने के लिए स्वय सरस्वती ने भी कालिदास को एक प्रसग पर सरस्वती के पद पर विभूषित किया है —

कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः
कोऽस्म्यहं तदारण्डे त्वंतु साक्षत् सरस्वती।

विद्वद् शिरोमणि महाटीकाकार श्री मल्लिनाथ ने स्वय टीका करते हुए कवि कालिदास के विषय में जो भाव प्रगट किये हैं वह अमूल्य हैं —

'कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखो अथवा साक्षाद् विदुर्नान्ये तु मादृशाः॥

यों तो कालिदास की असख्य सूक्तियां हैं

आर्य समाज की चिनगारियाँ

[लेखक—स्व० श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

श्री शादीराम जी पानीपत

आर्य समाज पानीपत में श्री शादीराम जी उत्तम कार्यकर्ता व्यक्ति थे। वह नगर में अरजी नवीसी का काम करते थे। उनकी लेखन शैली की बड़ा धाक थी। लिखवाने वाले उनकी प्रतीक्षा में घण्टों व्यतीत करते थे। आप आर्य पत्र में आर्य सिद्धान्तों पर लेख लिखते थे। उस समय के पत्र उठा कर देखें तो उनके अनेक लेख मिलेंगे। आर्य समाज के सिद्धान्तों पर शास्त्रार्थ भी किया करते थे। कभी कभी गल्प भी लिखा करते थे।

आर्य समाज के प्रचार में उनकी विशेष रुचि थी। मैं उनके जीवन काल में कई बार वहा गया। वह जब मिलते थे तो किसी न किसी सिद्धान्त पर अवश्य कुछ न कुछ पूछा वा कहा करते थे।

आपका प्रेम आर्य समाज से अगाध वा अटूट था कि जिसका पता निम्न घटना से मिलता है—

आप उस समय आर्य समाज के अधिकारी थे और श्रद्धा प्रेम से कार्य करते थे। उस समय उन्होंने किसी विशेष अवस्था वश अपनी सन्तान में से एक का विवाह छोटी आयु में कर दिया। इस पर उनका केस आर्य समाज की अन्तरग सभा में विचारार्थ उपस्थित किया गया। विचारान्तर अन्तरग सभा ने निश्चय किया कि इनको आर्य समाज के अधिकारी पद से पृथक कर दिया जाये और आगे को आर्य समाज के साधारण सदस्य रह सकते हैं।

यह निर्णय उनको भी सुनाया गया। उन्होंने इसे शिरोधार्य किया और जब अगला रविवार आया तब आपने समाज में जाकर झाड़ू लगाया और हवन कुड आदि साफ किया। सामग्री घृतादि वहा रखी उस समय किसी व्यक्ति ने आकर उनसे कहा—मैंने सुना है आपको आर्य समाज ने पृथक् कर दिया है आपने कहा हा कर दिया है। तब उसने कहा आप फिर आर्य समाज में यह काम क्यों कर रहे हैं। आपने उत्तर दिया आर्य समाज ने पृथक अवश्य कर दिया है परन्तु मुझे सेवा करने से नहीं रोका है इसलिए मैं सेवा कर रहा हू।

इससे पता लगता है आपका आर्य समाज से अगाध प्रेम था।

और कौनसा ऐसा सहृदय व्यक्ति है जो कि उनकी सूक्तियों को सुनकर मुग्ध न हो जाता हो।

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुर सान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

गद्य काव्य सम्राट बाणभट्ट ने कालिदास के विषय में लिखा है कि उनकी आम्र मञ्जरी की भांति सरस सुमधुर सूक्तियों को श्रवण कर किस सहृदय व्यक्ति का मन आनन्द विभोर नहीं होता?

वस्तुत कवि की ये अनुपम सूक्तिया व्यष्टि एवं समष्टि सभी का तो समान रूप से हित साधन करती ही हैं साथ ही संस्कृत साहित्य की बहुमूल्य निधि भी हैं। कवि की सूक्तियों मे वस्तुत 'गागर में सागर' वाली लोकोक्ति पूर्णत चरितार्थ होती है कवि के प्रत्येक पद सार्वजनिक एव विश्वजनीन मान्यता को लिए हुए है। कवि दिवाकर ने कालिदास की कविता का उचित मूल्यांकन किया है—

'रम्या श्लेषवती प्रसादमधुरा शृंगारसगोज्ज्वला
चाटूक्तेरखिलप्रिये रह रहस्सम्मोहयन्ती मनः।'
लीलान्यस्तपदप्रचार रचना सद्वर्णसशोभिता
भाति श्रीमती कालिदास कविता कांतेव कांतेरता॥

अनुसंधान के लिए बन्दरों का निर्यात

[एक मानवीय पहलू]

[लेखक—रघुनाथप्रसाद पाठक]

भारतवर्ष से इंग्लैंड और अमरीका आदि देशों को सहस्रों की सख्या मे बन्दर भेजे जा चुके हैं और यह क्रम निर्बाध गति से चल रहा है। बन्दरों के निर्यात से भारत-सरकार को विदेशी मुद्रा की पर्य्याप्त उपलब्धि होती है जिसकी इन दिनों उद्योग धन्धों के विस्तार के लिए बड़ी आवश्यकता बताई जाती है। जब भूतदया से प्रेरित जन भारत-सरकार से प्रश्न करते हैं कि इंग्लैंड और अमरीका आदि मे इन बन्दरों का क्या बनता है, तो भारत-सरकार यह विश्वास दिलाने का यत्न करती है कि 'चिकित्सा और विज्ञान के स्वीकृत अनुसंधानों और प्रयोगों में इनका प्रयोग होता है। १९५७ की शरद् ऋतु में जब श्रीकृष्ण मेनन को बन्दरों के निर्यात के विरुद्ध प्रतिवाद लिखकर भेजा गया तो केन्द्रीय सरकार के उद्योग और वाणिज्य मन्त्री के निजी सचिव ने बन्दरों के प्रति हित भावना की सराहना करते हुए लिखा कि 'बन्दर अनुसन्धान कार्य के लिए बाहर भेजे जाते हैं, चीरफाड़ के लिए नहीं।' ११ जून १९५७ को इंग्लैंड के भारत स्थित दूतावास से भी यही उत्तर मिला कि 'भारतवर्ष से इंग्लैंड को भेजे जानेवाले बन्दरों का प्रयोग एकमात्र लकवे का टीका बनाने, उसकी जाच-पड़ताल करने तथा अन्य स्वीकृत चिकित्सा विषयक अनुसन्धान कार्यों में होता है।' बड़े दुःख की बात है कि भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी इस बात से अनभिज्ञ है कि जहा तक पशुओं का सम्बन्ध है चिकित्सा-अनुसंधान और चीरफाड़ समानार्थक हैं। इन दोनों उत्तरों से उन लोगों को सन्तोष नहीं हो सकता जो बन्दरों के निर्यात का मानवीय भावनाओं से विरोध करते हैं अथवा जिन्हें स्वीकृत अनुसन्धानों का वास्तविक स्वरूप ज्ञात है।

अनुसंधान का स्वरूप

विविध प्रकार के टीके बनाने और सुरक्षा तथा शक्ति के टीकों का परीक्षण करने के लिए बन्दरों की पसली की हड्डिया निकाली जाती है। स्वीकृत अनुसन्धानों की प्रक्रिया में बन्दरों को असह्य यातनाएं सहन करनी पडती हैं। लकवे के विषाक्त तत्त्व के इंजेक्शन बन्दरों के स्नायु में, शिर में और रीढ की हड्डी की नाडी में लगाए जाते हैं जिनके कारण बन्दरों में लकवे के लक्षण उत्पन्न हो जाते है। आणविक विस्फोट के पश्चात रेडियो-सक्रियता के प्रभाव युद्ध मे प्रयुक्त विषैली गैसों के प्रयोग, एकमरे, पृथ्वीतल से २५ से २० मील ऊपर के बाह्य वातावरण मे उत्पन्न ब्रह्माड किरणे, मस्तिष्क के आपरेशन द्वारा मस्तिष्क की गति, क्षमता और शक्ति के निरूपण, मस्तिष्क में इंजेक्शन लगाने से उत्पन्न मृगी के आक्रमणों की उत्पत्ति, राकेट, सक्रामक जलोदर,आखों की रतौंधी, उदर के फोड़े, दाद, निमोनिया, गठिया, थकान, सर्दी या चोट के तीव्र प्रहार, लुओं तथा विविध आपरेशनो के द्वारा शरीर के अवयवों को इधर उधर हटा देने के प्रयत्न, मलेरिया, गजापन पागल कुत्ते के काटने से उत्पन्न विक्षिप्तता, उपदंश, पीला बुखार आदि के अनुसन्धानों के लिए बन्दर शिकार बनाए जाते हैं और ये सब 'स्वीकृत चिकित्सा अनुसंधान' के अन्तर्गत समझे जाते हैं।

भारत-सरकार के उत्तरदायित्वपूर्ण अधिकारियों द्वारा बारबार यह कहा जाता है कि आणविक युद्ध से सम्बद्ध अनुसन्धान और प्रयोग के लिए किए जाने वाले बन्दरों के निर्यात को वे बर्दाश्त नहीं करेंगे। पर जब बन्दर भारत से बाहर भेज दिये जाते हैं तब इस बात की क्या गारण्टी रह जाती है कि वे आणविक प्रयोगो में प्रयुक्त न होंगे? कोई देश इस प्रकार की प्रतिज्ञा पर क्योंकर ध्यान दे सकता है जब कि सुरक्षा के विचार से उन प्रयोगों के सम्बन्ध में जनता को बहुत कम जानकारी दी जाए। १५ नवम्बर ४८ को श्रीमती मेनिग ने इंग्लैड के हाउस आफ कामन्स में यह प्रश्न किया था कि आणविक युद्धसे सम्बद्ध प्रयोगों में किन पशुओ का प्रयोग किया जाता है? उन्होंने रसद विभागके मन्त्री से पूछा, "क्या माननीय मन्त्री को पता है कि उनके विभाग मे कलकत्ता से हवाई जहाज द्वारा २५० बन्दर लाए गए है, और वे उन पशुओं का क्या करेंगे? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए माननीय मन्त्री श्री जी आर स्ट्रासन ने कहा था, "सम्बद्ध पशुओं की अनुसन्धान कार्य के लिए आवश्यकता है जिसका स्वरूप सार्वजनिक सुरक्षा की दृष्टि से बताना उचित न होगा।"

दुःखजनक पीडा

इस विषय पर अमरीका के जनरल आव पैथालौजी एण्ड बेक्टियोलाजी वाल्यूम ७१,१९५६ के पृष्ठ २७७ पर एक बडा सूचनापूर्ण लेख छपा है, जिसमे जी. एम एडिंगटन आदि सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों द्वारा बन्दरों पर किये गये प्रयोगों का वर्णन अंकित है। उदाहरणार्थ—

'तीन बन्दरों पर आणविक अनुसधान का प्रयोग किया गया। दाहनी जाघ के थोडेसे स्थान के बालों को कैंची से काटा गया। इसके बाद ७० प्रतिशतक शक्ति रखने वाली स्प्रिट से खाल साफ की गई। बिना नशा सुंघाए एक शिकजे से जकडकर उसकी दाहनी जाघ में धीरे धीरे आणविक विस्फोट से सम्बद्ध तरल पदार्थ के इंजेक्शन लगाए गए। खून की जाच की गई। इस प्रक्रिया में रक्त-स्राव से एक बन्दर मर गया। जिन तीन बन्दरों पर प्रयोग किया गया वे १२ से ५६ दिन तक ही जीवित रह सके।'

मइटाइम्स (१५ ६ १९५७) क अनुसार कुछ जीवित बन्दर इंग्लैड के एटामिक इनर्जी रिसर्च एस्टेब्लिशमेंट (आणविक शक्ति अनुसधान सस्थान) में परीक्षणों क लिये लाए गए जहा धीरे-धीरे उनकी मृत्यु हो गई।'

यह ठीक है कि इस प्रकार के प्रयोगों में स्थलीय बन्दर ही अधिक उपयुक्त होते हैं, क्योंकि वे कम महगे सिद्ध होते हैं, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि भारत से भेजे जाने वाले बन्दर मृत्यु से बच जाते होंगे।

सन्तोष केवल इतना ही है कि वैज्ञानिक अनुसधानो में बदरों का खुलकर प्रयोग नहीं होता, क्योंकि ये प्रयोग बडे महगे पडते हैं।

बदर स्वभावत भीरु और भावुक होता है। स्वाभाविक निवासस्थान का बलात परित्याग, निर्यात की प्रक्रिया और पिजडो के बदीकरण से बदरों के हृदय में जिस भय और मानसिक कष्ट की उत्पत्ति होती है उसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। आपरेशन के लिए बेहोश करने की प्रक्रिया और आपरेशन के बाद होने वाली पीडा दुःखजनक होती है। अत भूतदया से प्रेरित लोगों को वैज्ञानिक उन्नति की प्रेरणा प्रभावित नहीं कर सकती।

(हिन्दुस्तान)

स्वाध्याय का पृष्ठ

अमावस्या पूर्णिमा को छुट्टी क्यों ?

प्राचीन काल में पूर्णिमा, अमावस्या तथा अष्टमी को छुट्टी रखने की प्रथा का आधार नितान्त वैज्ञानिक है ।

प्रोफेसर विलैन फोर्ड अपने जीव-विज्ञान भूगोल के पृष्ठ ४५ पर लिखते हैं "सबसे बड़ा और सबसे छोटा ज्वारभाटा पूर्णिमा और अमावस्या को अथवा इसके कुछ उपरान्त प्रकट होता है और बीच के ज्वारभाटे वे हैं जिनमें पानी का उभार तथा उतार सबसे कम हो ।

प्रथम प्रकार के २ कारणों से प्रकट होता है–

(१) जब सूर्य और चन्द्र दोनों पृथ्वी के एक ओर ही हों अर्थात् अमावस्या को ।

(२) जब सूर्य और चन्द्र विरुद्ध दशा में हों अर्थात् पूर्णिमा को और दूसरे प्रकार के ज्वारभाटे बार २ प्रकट तब होते हैं जब सूर्य और चन्द्रमा ९० अंश का कोण बनाते हों अर्थात् दोनों अष्टमियों को ।

सूर्य और चन्द्र का आकर्षण और प्रभाव आश्चर्यजनक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं । सारी पृथ्वी की नदियों, तालाबों, फलों और पशुओं के रक्त में भी उनके प्रभाव से इस अवसर पर मुख्य परिवर्तन होते हैं । रक्त में क्योंकि जल का भाग है इसलिए इन दिनों रक्त पर मुख्य रीति से प्रभाव पड़ता है । पुरुष और स्त्रियों के वीर्यादि धातु विषम हो जाते हैं । इसी कारण इन दिनों ऋतु-दान वर्जित है । इन पर्व तिथियों में रक्त की दशा विषम हो जाने से छुट्टी रखने का विधान किया गया था । अमावस्या और पूर्णिमा को विशेष हवन यज्ञ स्वास्थ्य रक्षा और जलवायु की शुद्धि के लिए किए जाते थे जिन्हें पक्षेष्टि यज्ञ कहते हैं । जिस प्रकार इन दिनों समुद्र की दशा विषम हो जाती है उसी प्रकार मनुष्य के रक्त की हो जाती है उसी विषमता को दूर करने के लिए हवन यज्ञ अत्यन्त लाभकारी हैं । इस अवसर पर इन यज्ञों के कारण ही ये दिन आज तक त्योहार बन रहे हैं ।

विद्यार्थियों को इन दिनों पढ़ने का निषेध है । दूकानदारों के लिए छुट्टियां हैं ।

पश्चिम के सारे विज्ञानवेत्ता सूर्य चन्द्रके जल पर प्रभाव को मानते थे परन्तु मनुष्य के शरीर पर इस के प्रभाव को ठीक २ अनुभव नहीं करते थे परन्तु वे अब मानने लगे और धीरे २ ऋषि सिद्धान्तों पर ठोकरें खाते हुए आ रहे हैं ।

त्योहारों के दिनांक क्यों बदलते हैं ?

मुसलमानों के ईद, मुहर्रम इत्यादि त्योहारों के दिनाक नित्य बदलते रहते हैं और वे त्योहार प्रत्येक ऋतु–सरदी, गरमी और वर्षा में पड़ते रहते हैं । हिन्दुओं के पर्वों के दिनाक भी प्रति वर्ष बदलते रहते हैं परन्तु वे इतने नहीं बदलते कि सरदी का त्योहार बसन्त ऋतु में पहुँच जाय और बसन्त का त्योहार गरमियों में आ पड़े । ईसाइयों के त्योहार ईस्टर का दिनांक भी कुछ बदलता रहता है । इन सब त्योहारों के दिनाकों के बदलने का मुख्य कारण यह है कि इनका सम्बन्ध चन्द्रमा के घटने बढ़ने से रहता है अर्थात् ये त्योहार तिथियों पर निर्भर हैं ।

चन्द्र वर्ष में ३५४.४ दिन और सौर वर्ष में ३६५.२५ दिन होते हैं । चन्द्र वर्ष, सौर वर्ष की अपेक्षा प्रतिवर्ष लगभग ११ दिन कम रहता है ।

यही कारण है कि मुसलमानों के त्योहार ईद इत्यादि जो केवल चन्द्र वर्ष के अनुसार होते हैं, प्रतिवर्ष उससे पहले वर्ष की अपेक्षा ११ दिन पूर्व पड़ते हैं और इस तरह वे वर्ष की प्रत्येक ऋतु में घूमते हुए कोई ३६ वर्षों में पूरा चक्कर लगा लेते हैं।

उदाहरण —

	१६५७	१६५८	१६५६
ईद	२ मई	२१ अप्रैल	१० अप्रैल
मुहर्रम	७ अगस्त	२८ जुलाई	१७ जुलाई

हिन्दुओं के पर्व भी चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार ही नियत होते है परन्तु ११ दिन प्रतिवर्ष के अन्तर के हिसाब से २॥, ३ वर्ष में कोई १ मास बढाकर यह अन्तर पूरा कर दिया जाता है। एसे मास को 'अधिक मास' या लौंद का महीना कहते हैं। १९५८ में श्रावण का मास अधिक मास लगाया गया था। अर्थात् श्रावण के २ मास रहे थे। इस प्रकार यह वर्ष १३ मास का था। इसका परिणाम यह होता है कि किसी भी पर्व की तारीख १६, २० दिन से अधिक इधर उधर नहीं होती और प्रत्येक पर्व उसी ऋतु में पड़ता रहता है।

उदाहरण —

	१६५७	१६५८	१६५६
जन्माष्टमी	१८ अगस्त	६ सितम्बर	२६ अगस्त
विजयदशमी	३ अक्टोबर	२२ अक्टोबर	११ अक्टोबर

हिन्दुओं के कुछ पर्व सौर वर्ष से भी निर्धारित होते हैं। उनके दिनांक इस कारण बदलते नहीं जैसा कि वैसाखी जो सदैव लगभग १३ अप्रैल को ही पड़ती है।

हिन्दुओं की पर्व गणना गणित पर निर्धारित है जो कुछ जटिल अवश्य है। परन्तु मुसलमानों के कलैंडर में हिसाब किताब कुछ नहीं होता वहा तो चाद दिखाई देने पर ही ईद का निश्चय होता है और यदि एक जगह किसी कारण चाद न दिखाई दे तो दूसरे स्थानों से चाद के दिखाई पड़ जाने के तार पहुच जाते हैं। कभी २ दुविधा में ईद के दिन का निश्चय करना कठिन हो जाता है परन्तु हिन्दुओं के कलैंडर में तो क्षण २ का हिसाब होता है और यदि किसी दिन सायकाल के पहले दूज लग जाती है तो चाद का दिखाई पड़ना निश्चित समझा जाता है।

ईसाइयों के मुख्य पर्व २ हैं—ईसामसीह का जन्म दिन जो प्रतिवर्ष २५ दिसम्बर को पड़ता है दूसरा ईस्टर। ईसा के सूली पर चढने से तीसरे दिन पुनरुत्थान का दिन। इसका दिनांक कोई ४ सप्ताहों की अवधि के भीतर बदलता रहता है परन्तु इसके बदलने का नियम भिन्न है।

२१ मार्च और २६ सितम्बर को सूय ठीक विषुवत रेखा के ऊपर होता है और इन दोनों दिन पृथ्वी के प्रत्येक भाग में दिन और रात बराबर होते हैं। इन दिनों को क्रमश बसत-सपात (Vernal equinox) और शरद सपात (Autumnal equinox) कहते हैं। ईस्टर रविवार को नियत करने का नियम इस प्रकार है —

बसन्त सपात अर्थात् २१ मार्च के दिन अथवा इसके पश्चात् जो पूर्णिमा आए उस पूर्णिमा के पश्चात आने वाले रविवार को 'ईस्टर रविवार' मनाया जाता है। यदि पूर्णिमा २१ मार्च के दिन अथवा इसके केवल दो एक दिन पश्चात् आजाय तो अगला रविवार मार्च के महीने में भी पड़ सकता है जैसा कि इस वर्ष यह रविवार २१ मार्च को ही पड़ा था। यदि पूर्णिमा २१ मार्च से केवल १-२ दिन पहले हो तो २१ मार्च के बाद कीपूर्णिमा और उसके आगे आने वाला रविवार अप्रैल मास के अन्तिम सप्ताह तक पहुँच सकता है।

(विश्व ज्योति
जुलाई १६५६ व १७,१८)

* * *

गोरक्षा पर वेद, शास्त्र तथा महापुरुषों के वचन

ओ३म् यज्ञपदीराक्षीरा स्वधाप्राणा महीलुका।
वशा पर्जन्यपत्नी देवान् अप्येति ब्रह्मणा॥

अथर्व० १०।१०।६ (वेद)

गौ यज्ञशाला मे रखने योग्य तथा यज्ञ के लिये अनिवाय है। दूध जैसा सात्विक भोजन देती है। आत्म निर्भरता का बल देने वाली है। पृथ्वी को उपजाऊ बनाने वाली और वर्षा से उत्पन्न घास वनस्पति खाकर जीने वाली तथा ससार का उपकार करने वाली है। वह अपने गुणों से महत्व को प्राप्त होती है।

गवा सेवापरो यस्तु नस्यश्रीवर्धतेऽचिरात्॥

(पुराण)

जो गौ की सेवा करता है उसकी धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य सदा बढता है।

'ब्राह्मण धम्मिय सुत्त।' (भगवान् बुद्ध)

'गोहत्या नीच कर्म है' जो गौमास खाते हैं वे अपनी माता का मास खाते हैं। (लोकनीति)

'एक एक व्रज में दस दस हजार गौओं की रक्षा करना आवश्यक है' उपासक दशाग सूत्र।

(भगवान् महावीर)

यही देहु आज्ञा तुर्क को खपाऊ,
गो घात का दु ख जगत से हटाऊ।
आस पूरन करो तुम हमारी,
मिटै कष्ट गौअन छुटै खेद भारी॥

[गुरु गोविन्दसिंह]

जा को दूध धाइ कर पीजै,
ता माता का वध क्यों कीजै।
दिन भर रोजा राखि के, रात काटते गाय।
एक खून एक बन्दगी, कैसे खुशी खुदाय॥

[महात्मा कबीर]

गो दुग्ध खाओ गायी तोमार माता।
वृष अन्न उपजाय ताते ते हो पिता॥
पिता माता मारि खाओ एवा कोन धर्म।
कोन बोले करो तुम एमन विकर्म्म॥

[महाप्रभु चैतन्य]

(१) "गाय का दूध और घी तुम्हारी तन्दुरुस्ती के लिये बहुत जरूरी है। उसका गोश्त नुकसानदेह है।" —नासियाव हादी

(२) खुदा तुम्हारी कुर्बानी मे जानवर का गोश्त और लहू नहीं चाहता। वह सिर्फ तुम्हारी पवित्रता चाहता है। —सूरतये हज

(पैगम्बर मुहम्मद साहब)

एक गाय के दूध से और उसकी सन्तान द्वारा उत्पन्न अन्न से ४,१०,४४० मनुष्यों का एक बार पेट भर सकता है। किन्तु उसके मास से केवल ८० आदमियों का ही पेट भर सकता है।

(महर्षि दयानन्द)

मुझे कोई पूछे कि हिन्दू धर्म का सब से बड़ा बाह्य स्वरूप क्या है तो मैं गोरक्षा ही बताऊगा। गोरक्षा हिन्दू धर्म की दुनिया को दी हुई बख्शीश है और हिन्दू धर्म भी तब तक रहेगा जब तक गाय की रक्षा करने वाले हिन्दू हैं। मेरे ख्याल से गोरक्षा का सवाल स्वराज्य के सवाल से छोटा नहीं है। कई बातों में तो मे स्वराज्य से भी बड़ा सवाल मानता हू। (महात्मा गाधी)

गोरक्षा इस देश के नर नारियों का सब से बड़ा कर्त्तव्य है। (ला० लाजपतराय)

चौबीस करोड आदमी गौ को पवित्र मानते हैं। अंग्रेज इस भावना के अस्तित्व और गहराई की उपेक्षा नहीं कर सकते।

(जोज़ेफ बैप्टिस्टा)

'मुझे चाहे मार डालो पर गौ पर हाथ न उठाओ।' (लोकमान्य तिलक)

'मुझे ले लो। अगर चाहो तो मेरे प्राण ले लो, पर गाय को छोड दो। उसने आपके एक बालक को भी धक्का नहीं पहुचाया है।'

(प० मदनमोहन मालवीय)

भारतीय स्वतन्त्र गणतन्त्र के संविधान का ४८ वां अनुच्छेद

'उपयोगी पशुओं गाय और बछड़ों का वध न करना भारतीय राष्ट्र की नीति होगी।'

इतने प्रबल लोक मत, शास्त्र मत, विविध सम्प्रदायों की सहमति तथा सविधान की आज्ञा होते हुए भी आज गोवध जारी है।

*

महिला जगत

पांडित्य की प्रति मूर्ति—'भारती'

जिसने एक बार जगद्गुरु शंकराचार्य को भी निरुत्तर कर दिया

(ले —श्री भगवानदेव शर्मा, गुरुकुलीय सिद्धांत शास्त्री, पाटण)

नारी कभी गौरव, आदर श्रद्धा, स्नेह और ममता की साकार प्रतिमा थी। मनु भगवान् ने भी अपनी स्मृति मे नारी को पूज्य दृष्टि से देखते हुए लिखा है —

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया॥

परन्तु आज वह नारी दिव्य गुणों को विस्मृत कर विलासिता, फैशन, स्वेच्छाचार और आराम की कामना मे पड़ खिलवाड़ का साधन बनती जा रही है। कोई समय था पुरुष उसकी आराधना करता था और अब उसे खिलौना समझ, मनोरंजन का साधन मात्र समझते है। यह प्रवाह और परिवर्तन विश्व मे पतन, अन्धकार और अशान्ति का कारण है। नारी कैसे अपने पूर्वपद को प्राप्त करे और मानव की निर्मात्री, प्रेरणा और जीवन शक्ति बने? किसी कवि ने उसके उत्तर मे ठीक लिखा है —

पावन जीवनियों को पढ कर,
पा सकते हैं हम उद्धार।
और उन्ही के चरणचिन्हों पर चल
कर सकते हैं बेडा पार॥

तो आज आइये हम ८वीं शताब्दि की एक आर्यपुत्री 'भारती' के जीवन का अवलोकन करें।

जगद् गुरु शंकराचार्य के प्रादुर्भाव के समय, भारतीय महिला इतिहास को उज्ज्वल करने वाली, अलौकिक मेधा और प्रतिभा सम्पन्न 'भारती' नामक एक विदुषी और मनस्विनी युवती हुई है। इतिहासकारों के मत मे शंकराचार्य का काल ८वीं शताब्दि मे है। वही समय इस भारती का होना युक्ति संगत हो सकता है—क्योंकि शंकराचार्य का भारती के साथ शास्त्रार्थ करना जग प्रसिद्ध है।

पटना के पास शोण नदी के तीर पर किसी गाव में एक विष्णु मित्र नामक ब्राह्मण रहते थे। इन्हीं के यहा देवी भारती का जन्म हुआ। बचपन में इनका नाम 'सरस्वती' था। सरस्वती के बाह्य शारीरिक चिन्हों को तथा तेजोमय आकृति देख कर पुराण पन्थी कहा करते थे कि सरस्वती ने ही इस देह में प्रवेश किया है। सरस्वती की प्रखर प्रतिभा को देखकर विष्णु-मित्र ने उनके पढने लिखने के लिये योग्य गुरु की व्यवस्था कर दी। सरस्वती ने थोडे ही दिनों मे वेद वेदाग, इतिहास और गणित एवं अन्य कई विविध विषयों के शास्त्र पढ डाले। शंकर दिग्विजय' मे लिखा है कि "ऐसा कोई शास्त्र नहीं जिसका सरस्वती ने स्वाध्याय न किया हो।" थोडे ही समय मे सरस्वती के रूप और गुणों की चर्चा समस्त देश में फैल गई। रूप और गुणों में समानता देख कर लोग उसे 'उभय भारती' कहने लगे और सरस्वती 'भारती' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

उस समय भारत में बौद्ध धर्म के अनुयायियों का बोल बाला था। वैदिक धर्म के प्रति महती अश्रद्धा सर्व साधारण के हृदय में स्थान पा रही थी। इस समय वैदिक शास्त्रों के अद्वितीय ज्ञाता और शास्त्रादि में प्रचण्ड तर्क और युक्तियों तथा प्रमाणों का समावेश कर प्रतिवादियों को परास्त कर देने वाले विश्वरूप' नामक ब्राह्मण हुए। प्रखर प्रतिभा और अपूर्व विद्वत्ता को देख कर लोगों ने उनका नाम 'मण्डनमिश्र' रखा। पण्डित मण्डन मिश्र जी जैसे थे प्रतिभाशाली विद्वान् वैसे ही धन सम्पन्न भी थे। वे भिक्षा-वृत्ति नहीं करते थे। वे द्वैतवादी पण्डित थे उन्हीं के साथ लेख नायिका भारती का विवाह सम्बन्ध हुआ।

एक दिन शकराचार्य जी दिग्विजय प्रसग से इनके यहा माहिष्मती नगरी में पधारे और मण्डन मिश्र जी से शास्त्रार्थ भिक्षा मांगी। दो शास्त्रार्थ महारथियों को मध्यस्थ के लिए एक प्रामाणिक निष्पक्ष विद्वान् की आवश्यकता पड़ी। कोई दिग्गज विद्वान् दृष्टिगोचर न हुआ शास्त्रज्ञ भारती (मण्डनमिश्र की पत्नी) को ही मध्यस्थ के लिए योग्य समझा गया भारती ने उनका मध्यस्थ पद अलकृत किया। १६ दिनों तक "द्वैतवाद और अद्वैतवाद' पर शास्त्राथ होता रहा। अन्तिम शास्त्राथ के दिन भारती को किसी गृह कार्यवश जाना पड़ा। जाते समय उसने आचार्य शकर और मिश्र जी के गले मे फूल मालायें डाल दी और कहा कि मेरा प्रतिनिध्य यह मालायें करेंगी। जनता को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि मालायें कैसे प्रतिनिधित्व करेंगी। उनको विश्वास न हुआ। परन्तु भारती यह कह कर गम्भीर मुद्रा से चली गई।

शास्त्रार्थ चलता रहा। कार्य समाप्ति पर भारती लौट आई। दोनों मालाओं का परीक्षण किया। खेद और लज्जा के साथ अपने पति (मिश्र जी) की पराजय उद्घोषित कर दी।

उपस्थित लोग भारती की इस न्यायप्रियता पर चकित थे। श्रद्धा और भक्ति से उपस्थित जनों ने पूछा—देवी भारती! आपने अपनी अनुपस्थिति में हार और जीत का वृत्तान्त कैसे जान लिया?

देवी भारती बोली, शास्त्रार्थ में मनुष्य को क्रोध उसी समय आता है जब घबराहट होती है और घबराहट पक्ष की निर्बलता पर होती है। मिश्र जी क्रोधित हैं—उनकी माला कुम्हलाई हुई है। जब कि आचार्य शकर शा त चित्त बैठे हुए हैं और माला उनके गले में पूर्व रूप खिली हुई है।

उपस्थित सज्जनोंने भारती के इस साधुवाद पर ध्वनि लगाई। और 'भारती जय' से भवन गूंज उठा।

देवी भारती ने मिश्रजी के पराजय की घोषणा तो कर दी, परन्तु उनकी अर्धांगिनी होने के कारण उनसे रहा न गया। उन्होंने आचार्य शकर को मिश्र जी की अर्धांगिनी होने के नाते शास्त्रार्थ के लिये ललकारा।

शास्त्रार्थ चलते चलते काम शास्त्र पर शास्त्रार्थ चला। जिसमें देवी भारती ने दिग्विजयी होने वाले शकराचार्य को निरुत्तर कर दिया। परन्तु अपनी उदारता से भारती देवी ने शकराचार्य जी को उत्तर देने के लिये एक वर्ष की अवधि दी। धन्य है भारती देवी! तू धन्य है। क्या भारतीय देविया भी तेरे गुणों एव पाण्डित्य का अनुसरण करेंगी।

एक वर्ष पश्चात् आचार्य शकर की ओर से उत्तर मिलने पर मिश्र जी और उनकी पत्नी भारती देवी ने अपना बाकी जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में लगाते हुए अपनी जीवन लीला समाप्त की।

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि सभाओ आय समाजो एव अन्य संस्कृत प्रचारक

संस्थाओ के नाम परिपत्र।

कार्यालय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

दयानन्द भवन, नई दिल्ली १।

दिनाङ्क २६-७-१९५६

संस्कृत-आयोग का प्रतिवेदन

श्रीयुत मन्त्री जी।

नमस्ते!

१—आपको सभवत यह ज्ञात ही होगा कि भारत सरकार ने वर्तमान विश्व विद्यालयों एव अन्य शिक्षणालयों में संस्कृत की स्थिति के विषय में सर्वेक्षण करने एव उनमें संस्कृत प्रसार सम्बन्धी अपने सुझाव देने के लिये एक अक्टूबर १९५६ को एक संस्कृत आयोग नियुक्त किया था।※

२—संस्कृत आयोग ने इस विषय मे एक प्रश्नावली बनाकर अनेक विद्वानों को भेजी थी। यह हर्ष का विषय है कि १२०० उत्तरों में से ४७० उत्तर संस्कृत भाषा में ही थे। आयोग ने भारत के प्राय सभी विद्वानों, विचारकों, जननायकों आदि की साक्षी ली और प्राय सभी स्थानों का भ्रमण करके गम्भीर विचार के पश्चात् ३० नवम्बर १९५७ को अपना सर्व सम्मत विस्तृत प्रतिवेदन शिक्षा मन्त्रालय को दिया। आयोग ने प्रतिवेदन मे संस्कृत प्रसार के लिये केन्द्रिय सरकार से अनेक सिफारिशे की है। कहीं कहीं इस विषय मे मतभेद भी हो सकता है तथापि सिफारिशें ऐसी हैं, जिनके विषय में प्रत्येक संस्कृत प्रेमी यह चाहेगा कि वे तुरन्त स्वीकार की जानी चाहिये। आयोग ने स्वय लिखा है, संस्कृत प्रसार के लिये हमने ये ऐसे सुझाव दिये हैं जो वर्तमान परिस्थिति में न्यूनतम होने के साथ साथ व्यवहार्य हैं और इन्हें क्रियात्मक रूप दिया ही जाना चाहिये।"

३—आयोग की मुख्य २ सिफारिशें निम्न प्रकार हैं—

(१) माध्यमिक स्कूलों में न्यून से न्यून ५ वर्ष तक संस्कृत अनिवार्य रूप मे पढ़ाई जाने की व्यवस्था हो। इस विषय में अर्थ की कमी आदि की बात न उठाई जावे इस निमित्त शिक्षा के त्रिभाषा फार्मूले में आवश्यक परिवर्तन किया जावे।

※आयोग के सदस्य थे—डा० सुनीति कुमार चटरजी, चेयर मैन वैस्ट बगाल लेजिसलेटिव कौनसिल, २ श्री जे एच दवे-डायरेक्टर विद्या भवन, ३ प्रो एम के डि संस्कृत कालिज कलकत्ता, ४ प्रो० टी आर वी मूर्ति बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी, ५ प्रो० वि. राघवन, मद्रास युनिवर्सिटी, ६ पण्डितराज वि एस रामचन्द्र शास्त्री शंकरमठ बगलौर, ७ प्रो० विश्वबन्धु शास्त्री, होशियारपुर ८ आर एन. दण्डेकर पूना, ९ श्री के सुन्दरराम शर्मा, नई देहली।

(२) माध्यमिक स्कूलों में सामाजिक ज्ञान के पाठ्य विषय मे सस्कृत साहित्य में उपलब्ध विचारधारा तथा सस्कृति आदि का अवश्य समावेश होना चाहिये।

(३) परम्परागत ढग की स स्कृत पाठशालाओं को उसी रूप मे सरक्षण दिया जाये और उन्हें एक स्वीकृत शिक्षा प्रणाली के रूप मे उसी भान्ति मान्यता दी जाए जिस प्रकार अ य स्कूल कालिजों की शिक्षा को दी जा रही है।

(४) इन सस्कृत पाठशालाओं मे एव महाविद्यालयों में सस्कृत के साथ साथ कुछ आधुनिक विषय भी पढाये जावें कि तु मुख्य जोर सस्कृत पर ही हो। ऐसी पाठशालाओं एव महाविद्यालय के छात्रों को सरकारी नौकरी तथा उच्च शिक्षण आदि के लिये अ य हाई स्कूलों एव कालिजों के छात्रों के समान ही अधिकार एव सुविधाय मिलना चाहियें।

(५) भारत सरकार को एक सस्कृत विश्व विद्यालय की स्थापना करनी चाहिये।

(६) सस्कृत पण्डितों एव अ य विषयों के अध्यापकों के वेतन आदि समान होने चाहियें। विश्व विद्यालयों की समितियों मे सस्कृत पण्डितों को अ य अध्यापकों के समान अवसर मिलना चाहिए।

(७) जिन विश्व विद्यालयों में सस्कृत के विभाग न हों, वहा तुरन्त खोले जावें।

(८) भारतीय भाषाओं में स्नातक एव स्नातकोत्तर डिग्रियों के पाठ्य क्रम में न्यून से न्यून एक पूरा प्रश्नपत्र सस्कृत का होना चाहिए।

(९) शिक्षा क्रम में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि प्रत्येक विश्वविद्यालय मे प्रत्येक स्नातक को सस्कृत निहित सस्कृति साहित्य विचारधारा, धर्म, दर्शन कला आदि का क्रमिक ज्ञान हो सके।

(१०) सस्कृत में अनुसधान कार्य के लिए छात्रवृत्तिया भी जायें।

(११) निर्धन कि तु विद्वान सस्कृत पण्डितों को आर्थिक सहायता दी जावे। सस्कृत पण्डितों का राज्य की ओर से मान हो।

(१२) सस्कृत के सास्कृतिक महत्व एव उसके अखिल भारतीय स्वरूप को दृष्टि में रखते हुए तथा भाषाभेद ज य सकीर्णता एव वैमनस्य—जो कि भारतीय अखण्डता को चुनौती दे रहा हो—को रोकने के लिए सस्कृत जो कि भारतीय सविधान द्वारा स्वीकृत भाषाओं मे से एक है—को अतिरिक्त राजकीय भाषा (Add tional offic al La guage) के रूप में घोषित किया जावे।

(१३) वैज्ञानिक विषयो के लिए यथा सम्भव सस्कृत साहित्य से ही शब्दावली ली जावे। सस्कृत साहित्य मे वैज्ञानिक शब्दावली खोज निकालने के लिए आवश्यक समितियां नियुक्त की जावें।

(१४) उच्च सरकारी पदों एव विदेशों में काम करने वाले सरकारी कर्मचारियों को विशेष व्याख्यान मालाओं द्वारा सस्कृत विचार धारा एव सस्कृति का बोध कराया जावे जिससे कि वे भारत का ठीक ठीक प्रतिनिधित्व कर सकें।

(१५) वेदों को कण्ठस्थ कराए जाने के लिए उचित प्रोत्साहन दिया जावे। उनके सस्वर उच्चारण का बोध कराने के लिए रेडियो आदि का उपयोग किया जावे।

(१६) राजकीय स्वास्थ्य प्रबन्ध में आयुर्वेद को प्रोत्साहन दिया जावे। इसके शुद्ध स्वरूप को यथासम्भव सुरक्षित रखा जावे। इसका अध्ययन संस्कृत में ही हो।

(१७) जमींदारी प्रथा का अन्त होने से जहा जहा संस्कृत प्रचार में क्षति पहुची है, सरकार उसकी पूर्ति करे।

यह अधिक अच्छा होगा कि आप इस विषय में अधिक विवरण जानने के लिए संस्कृत कमीशन की ५६ ५७ की रिपोर्ट लेकर पढ जो किसी भी सरकारी पुस्तक विक्रेता से सवा पाच रुपये में मिल सकती है। यह मैनजर आफ पब्लिकेशन्स, सिविल लाइन्स, देहली से डाक द्वारा भी मगाई जा सकती है।

४—संस्कृत आयोग की रिपोर्ट पर लोक सभा में ५, ६, तथा ७ मई को बहस हुई थी। अनेक सदस्यों ने सिफारिशों को स्वीकार किये जाने पर बल दिया, किन्तु कुछ सदस्यों ने संस्कृत के अनिवार्य रूप से पढाये जान के विरुद्ध भी भाषण दिये। इसी बीच लोक सभा की बैठक स्थगित हो गयी। अब इस विषय में अगस्त मास में पुन विचार होने की सभावना है।

आयोग की सिफारिशों को स्वीकार कराये जाने केलिए यह आवश्यक है कि सतत गहन प्रचार द्वारा ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जाये जिससे कि ससद में उक्त सिफारिशें स्वीकार की जा सकें।

५—उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये आप निम्न कार्य क्रम अपनाये —

(१) १८ अगस्त ५९ को श्रावणी पर्व है, पर्व वेदादि के स्वाध्याय के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह दिवस भारत भर में 'संस्कृत दिवस' के रूप में मनाया जाए।

(२) अपने अपने क्षेत्र में विशाल सार्वजनिक सभाये करे। उनकी सूचना पहले ही समाचार पत्रों को दे दे।

(३) सभाओं में यथा सभव सभी संस्कृत प्रेमी संस्थाओं एव नेताओं का सहयोग लिया जावे।

(४) सभा में भारत सरकार द्वारा आयोग की सिफारिशें स्वीकार कराए जाने सम्बन्धी प्रस्ताव किए जावे।

(५) प्रस्तावों की प्रतिया निम्न स्थानों पर भेजी जावे —

क समाचार पत्र

ख भारत सरकार का शिक्षा मन्त्रालय

ग अध्यक्ष लोक सभा

घ अध्यक्ष राज्य सभा

ङ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

च अपने क्षेत्र से निर्वाचित लोक सभा तथा राज्य सभा के सदस्यों को

(६) १८ अगस्त से पूर्व नगर के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में सभायें आयोजित की जाये ।

(७) अपने नगर के प्रमुख प्रमुख व्यक्तियों को लेकर शिष्ट मण्डल के रूप में अपने २ क्षेत्र के पार्लियामेण्ट सदस्यों से मिलें और उनसे आयोग की उक्त सिफारिशों के पक्ष में मत देने का अनुरोध करे ।

६-हमें आशा है कि आप इस विषय की गम्भीरता एवं महत्ता का अनुभव करेंगे। यह अवसर है जब कि संस्कृत के लिये कुछ किया जा सकता है। अत सभी संस्कृत प्रेमियों को अपना कर्तव्य पहचान कर इस दिशा मे पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए।

प्रस्ताव का प्रारूप

"इस सभा की सम्मति है कि भारत की राष्ट्रीय एकता, सदाचार, संस्कृति तथा ज्ञान-विज्ञान की सुरक्षा केलिये संस्कृत भाषा का अधिकतम प्रचार एवं प्रसार होना चाहिये। अत यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि संस्कृत आयोग ने अपने प्रतिवेदन में जो सिफारिशें की हैं उन्हें स्वीकार करने एवं क्रियान्वित करने के लिये आवश्यक पग उठाये जावें। यह विषय भारतीय संसद के समक्ष प्रस्तुत है, अत यह सभा सभी संसत्सदस्यों से भी प्रार्थना करती है कि अपने बहुमूल्य मत का इस प्रतिवेदन को स्वीकार कराने के लिये उपयोग करें।"

पूर्णचन्द्र
प्रधान

रघुवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री

स्थूलाक्षरी सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण

अगस्त मास में छप कर तय्यार हो जावेगा और सितम्बर मास में ग्राहकों को भेजना शुरू हो जावेगा। अतः जिन बहिन भाइयों के जिम्मे मूल्य की रकमें बाकी हैं वह कृपया शीघ्रातिशीघ्र पैकिंग व्यय तथा रेलवे रसीद भेजने के लिये १।) रु० साथ भेज दें। नए ग्राहक १५) मूल्य तथा १।) खर्चा भेज कर शीघ्र अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

स्वामी आनन्ददेव, कोषाध्यक्ष,
विरजानन्द वैदिक संस्थान, गाजियाबाद

॥ ओ३म् ॥

कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान)
नई दिल्ली—१

सत्याग्रह बलिदान-स्मारक दिवस

मंगलवार १८ अगस्त १९५९ को मनाइये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के दिनांक १३-१०-४ के स्थायी निश्चयानुसार हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति मे श्रावण शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार शुक्रवार १८ अगस्त १९५९ का आर्यसमाज मन्दिरों मे सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस मनाया जायगा। इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। इसका कार्यक्रम आर्य पर्व पद्धति के अनुसार श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलाकर निम्न प्रकार किया जाय —

प्रात ८॥ बजे आर्यसमाज मन्दिरों मे सभाए की जाय जिनमें उपाकर्म की कार्यवाही के पश्चात् सब उपस्थित भद्र पुरुष तथा देवियां मिलकर निम्न पाठ करें।

१—ओ३म् ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विष ।
तेषां व सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नर स्याम ये च सूरय ॥ऋग्वेद ७। ६६। १३॥

२—ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि तच्छकेय तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ यजुर्वेद १। ५॥

३—ओ३म् इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अरावण ॥ ऋ० ९। ६३। ५॥

४—ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्य सन्तु पृथिवि प्रसूता ।
दीर्घं न आयु प्रतिबुध्यमाना वय तुभ्य बलिहृत स्याम्॥ अथर्ववेद १२। १। ६२॥

आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मन्त्रों का तात्पर्य इन शब्दों मे पढ कर प्रार्थना करायें —

१—जो विद्वान् सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृद्धि और असत्य के विरोध मे तत्पर रहते है, उनके सुखदायक उत्तम आश्रय में हम सब सदा रहें तथा हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२—हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम सकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर! हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसके पूर्ण करने की शक्ति आप हमे प्रदान करें ताकि उस व्रत के ग्रहण से हमारी सब तरह से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य की ही शरण में आते हैं। आप हमे शक्ति दें कि हम अपने जीवनों को पूर्ण सत्यमय बना सके।

३—हे मनुष्यो! तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढाते हुए श्रमशील बन कर उन्नति मे बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी, धर्मात्मा बनाओ।

४—हे प्रिय मातृ भूमे! हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियां तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। सर्वथा नीरोग, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए हम दीर्घायु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिये आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की बलि देने को भी तैयार रहें।

इसके पश्चात् मिलकर निम्नलिखित कविता का गान किया जावे —

❀ धर्मवीरों के प्रति श्रद्धाञ्जलि ❀

श्रद्धाजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान॥
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने॥
ऐसे सभी धर्म वीरों के, आगे सीस झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुण गण को हम निज जीवन में लाते हैं॥
अमर रहेगा नाम जगत् में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर, वीर जाति को निश्चय से॥
करे कृपा प्रभु आर्य जाति मे, कोटि कोटि हों वीर।
धर्म देश हित जो कि खुशी से, प्राणों की आहुति दें वीर।
जगदीश को साक्षी जान कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिन्ह पर, चलने का व्रत करते हैं॥
सर्व शक्ति दें बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निशि दिन, शुभ गुण धारी आर्य बनें॥

(ध० दे०)

❀ धर्मवीर नामावली ❀

श्यामलाल जी महादेव जी राम जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाण्डुरग श्री शान्ति प्रकाश॥
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनहरा वेंकट राव।
भक्त अरडा मातुराम जो नन्हूसिंह श्री गोविन्दराव॥
बदनसिंह जी रतीराम जी मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द॥
माणिकराव श्री भीमराव जी महादेव जी अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण वैजनाथ ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह॥
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन, सबही वीरों धीरों का॥

रघुवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

शंका समाधान

शंका समाधान

मौलवी अब्दुर्रहमान और श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के उदयपुर में प्रश्नोत्तर

प्रश्न—क्या भूमण्डल के सारे मनुष्य एक ही कुल के हैं ?

उत्तर—भिन्न २ कुलों के। आदि सृष्टि में उतने ही जीव मनुष्य शरीर धारण करते हैं जितने गर्भ सृष्टि में शरीर धारण करने के योग्य होते हैं। वे जीव असंख्य होते हैं।

प्रश्न- इस पर कोई युक्ति दीजिये।

उत्तर—अब भी सब अनेक मां बाप की सन्तान हैं।

प्रश्न—जो आकृतियां मनुष्यों की हैं क्या उनके शरीर भी एक ही प्रकार के बने थे ?

उत्तर—आदि में मनुष्यों में रंग और लम्बाई चौड़ाई आदि का भेद अवश्य था।

प्रश्न—आप किसी मत के नियमों का पालन करते हैं या नहीं ?

उत्तर—जो धर्म ज्ञानानुकूल हैं मैं उसके सारे नियमों का पालन करता हूं।

प्रश्न क्या उपादान कारण अनादि है, आप कितने पदार्थों को अनादि मानते हैं।

उत्तर—उपादान कारण अनादि हैं। जीवात्मा परमात्मा और प्रकृति ये तीन पदार्थ अनादि हैं। इनका परस्पर संयोग वियोग कर्म और कर्मों का फल भोग प्रवाह से अनादि है।

प्रश्न—जो वस्तु हमारी बुद्धि की सीमा से बाहर है हम उसे अनादि कैसे मान लें ?

उत्तर—जो वस्तुएं नहीं हैं वे कभी भी नहीं हो सकतीं। जो हैं वे पहले भी थीं और आगे को भी बनी रहेंगी

प्रश्न—वेद यदि ईश्वर का बनाया हुआ होता तो सूर्यादि की भांति सारे संसार के सब मनुष्यों को इससे लाभ पहुंचता।

उत्तर—वेद सूर्यादि पदार्थों की तरह ही सब को लाभ पहुंचाता है। सारे धर्मों के ग्रन्थों और विद्या की पुस्तकों का कारण वेद ही है। यह सब से पहले है, इसलिए जितने शुभ विचार और ज्ञान की वार्त्ताएं दूसरे ग्रन्थों में पाई जाती हैं वे सब वेद से ली गई हैं। हानिकारक कथाएं उन ग्रन्थों के कर्त्ताओं की अपनी मन घडन्त हैं। वेद में किसी का खण्डन मण्डन नहीं पाया जाता, इस लिए वह पक्षपात रहित है। जैसे सृष्टि विद्या वाले सूर्यादि से अधिक लाभ लेते हैं ऐसे ही वेद का अनुशीलन करने वाले वेद से अधिकाधिक उपकार प्राप्त करते हैं।

* श्रीकृष्ण *

(रचयिता—श्री शिवनारायण द्विवेदी)

(१)

हे कृष्ण प्यारे ! कौन जन, जिसको न तेरा ध्यान है ?
वह कौन मन, जिसमे न तेरा शेष अब मान है ?
है कौन शूर-समाज, जो गाता न तेरा गान है ?
हे प्रिय हमारे ! शक्ति तेरी का न किसको ज्ञान है ?

(२)

ब्रज के सघन घन ओट मे वह मधुर वंशी की ध्वनि,
यमुना नदी के तीर वाली गोपगण की मण्डली।
हे कृष्ण ! हम भूले नही है आप की वे सब छटा,
चाहे हमारे चित्त पर हो दुख की दारुण घटा ॥

(३)

उस सरस बसी की ध्वनि का राग अद्भुत रस सना,
वर प्रेम से पूरा, तथा सुख शांति का घर सा बना।
ब्रज भूमि के जल, पवन, वृक्षों मे सुनाई दे रहे,
श्री कृष्ण प्यारे नाम से दुख शोक सब का हर रहे ॥

(४)

नीतिज्ञता सुविवेकता तेरी न किस पर ज्ञात है ?
वात्सल्यता अनुरागता तेरी न किस पर ज्ञात है ?
वर वीरता की छाप प्यारे है लगी तेरी यहा
श्रीकृष्ण ! आप समान जग मे और जन होगे कहा ?

(५)

जो, कृष्ण प्यारे ! सत्य का अवलम्ब तुम लेते नहीं,
तो सत्य ही ससार का इतिहास होता कुछ कहीं।
कर्त्तव्य में रत फिर न होते सत्य उज्ज्वल जानिये,
सत्याश से भी सत्य का उठना ही निश्चय मानिये ॥

(६)

शिक्षा हमें यह आप बिन मिलती न कुछ ससार मे,
कर्त्तव्य पथ पर निज रुधिर गिरता न हमसे ताप में।
हे कृष्ण ! गीता बिन हमारा धैर्य बधता ही नहीं,
जो कर्म योग अलभ्य पत्र है, आप बिन मिलता नहीं ॥

(७)

उपदेश जो श्रीकृष्ण ने है,
ग्रन्थ "गीता" में दिये।
है पाठ्य वे बालक युवा—
वृद्धादि सब ही के लिए ॥

(८)

यह महाभारत युद्ध मे,
दिखला दिया है कृष्ण ने।
"डिगना न चाहिए सत्य से"
सर्वस्व बिगड़े या बने ॥

(९)

उपदेश जो श्रीकृष्ण का,
यह सर्वथा ही ग्राह्य है।
भारत प्रजाओं के लिए,
सब भाव से निर्वाह्य है ॥

(१०)

प्यारे हमारे हेतु-जो आदर्श तुम हो रख गए,
इस पुण्य पावन-देश की जो कीर्ति प्यारे कर गए।
सौभाग्य गुण की लालिमा का रत्न जो तुमने दिया,
उसने हमारे देश में आलोक है फैला दिया ॥

(११)

श्रीकृष्ण यश है छा रहा,
सर्वत्र भारत वर्ष में।
"श्रीकृष्णाष्टमी" "जन्माष्टमी"
हैं कह रहे सब हर्ष में ॥

श्रावणी, श्रवणाकर्म और उत्सर्जन पर्व का प्राचीन और नवीन स्वरूप

(लेखक —आचार्य विश्वश्रवा मन्त्री सार्वदेशिक धर्मार्य सभा देहली

श्रावणी पर्व के नाम

इस पर्व के अनेक नाम है—

अध्यायोपाकर्म उपाकर्म, उपाकरण, श्रावणी। श्रवणाकर्म एक अन्य पर्व है जिसका समय श्रावणी का समय ही है। श्रवण कर्म पर्व के सम्बन्ध मे आगे लिखेंगे।

अध्यायोपाकर्म शब्द का अर्थ है अध्याय अर्थात् अध्ययन का उपाकर्म=प्रारम्भ। उपाकर्म यह आधा नाम है जैसे बोर्डिंग हाउस को बोर्डिंग कह देना। उपाकर्म और उपाकरण का एक ही अर्थ है। श्रावणी का अर्थ है वेदशास्त्र के सुनने का पर्व या श्रवण नक्षत्र मे होने वाला पर्व। इसी को आज कल रक्षाबन्धन भी कहते हैं उसका कारण आगे कहेंगे।

श्रावणी का समय

१—आश्वलायन गृह्य सूत्र में-श्रावण मास की पूर्णिमा या हस्तनक्षत्र पञ्चमी, श्रावणी का समय माना गया है।

२—गोभिलगृह्य सूत्र मे-भाद्र मास की कोई भी तिथि हो पर हस्तनक्षत्र अवश्य हो यह श्रावणी का समय है।

३—ऋग्वेदियों का श्रावणी का समय श्रवण नक्षत्र पूर्णिमा या पञ्चमी अथवा हस्तनक्षत्र।

४—यजुर्वेदियों का श्रावणीसमय पूर्णिमा ही शाखा भेद से किसी का भाद्रमास किसी का आषाढमास।

५—सामवेदियों का भाद्रमास शुक्लपक्ष हस्तनक्षत्र

६—धर्मसिन्धु के मत मे परिवर्तन भी हो सकता है परन्तु इस बात में सब सम्मत है कि श्रावणी और होली भद्रा मे नहीं होती।

७—निर्णयसिन्धु में भी काल विवेचन है।

८—उत्सर्जन पर्व का समय मनु ने माघ मास लिखा है और श्रावणी का श्रावण या भाद्रमास देखो मनु ४ ९५, ९६।

श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वा ऽप्युपाकृत्य यथाविधि।
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान्।
पुष्ये तु छन्दसां कुर्याद् बहिरुत्सर्जनं द्विजः।
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्णे प्रथमेऽहनि॥

श्रावणी और उत्सर्जन का स्वरूप

प्राचीन काल मे विद्यालयों गुरुकुलों के प्रारम्भ होने के समय का नाम श्रावणी और अवकाश के समय का नाम उत्सर्जन विधि था पर वह अवकाश विद्यार्थियों के घर चले जाने का नाम नहीं था क्योंकि उस समय छात्र स्नातक बिना हुए घर जा ही नहीं सकते थे। अत पुस्तकों के अध्ययन काल का नाम विद्यालय काल और उसके अनन्तर अनुभव काल अर्थात् पुस्तक की पढाई के अतिरिक्त शिक्षा काल इस पर्व का विशेष सम्बन्ध गुरु और शिष्यो से है पठन पाठन से है और यह शास्त्राध्ययन का कार्य किसी भी आश्रम में समाप्त नहीं होता। वानप्रस्थ और संन्यास मे ब्रह्मचर्य के समान अध्ययन प्रस्तुत रहता ही है पर गृहाश्रम में भी स्वाध्याय पर विशेष बल दिया गया है जैसा लिखा है कि—

प्रजनश्च स्वाध्याय-प्रवचने

अर्थात्-गृहाश्रम मे भी पठन और पाठन करते रहना चाहिये इसी का नाम ऋषि तर्पण है जैसा मनु ने लिखा है—

स्वाध्यायेनार्चयेदृ ऋषीन्

अर्थात्-स्वाध्याय करना ही ऋषि तर्पण है।

इसके बिना पञ्चयज्ञ पूरे नहीं होते यह पितृयज्ञ का पर अङ्ग है।

अत यह श्रावणी पर्व सबको विशेष रूप से मनाना चाहिये। यह आर्यों का अवश्य कर्तव्य पुनीत पर्व है। वेदाध्ययन करने की विशेष प्रतिज्ञा और वेदाध्ययन का प्रारम्भ इस पर्व के दिन से करना चाहिये।

श्रावणी और उत्सर्जन पर्व के वास्तविक स्वरूप को भूल गये और जब त्यौहार मात्र मनाने लगे तब से श्रावणी और उत्सर्जन को एक ही समय करने लग गये, वस्तुत इनके पृथक २ समय थे जैसा पूर्व लिखा जा चुका है धर्मसिन्धु में लिखा है कि—

उत्सर्जन--कालस्तु नेह प्रपच्यते सर्व-शिष्टानामिदानीमुपाकर्म-दिन एवोत्सर्जन-कर्मानुष्ठानाचारेण तन्निर्णयस्यानुपयोगात्।

अर्थात्-जिस प्रकार श्रावणी के समय के सम्बन्ध में विवेचन किया गया है उस प्रकार उत्सर्जन पर्व किस दिन करना चाहिये इस पर विवेचन नहीं किया गया क्योंकि सब लोग श्रावणी के दिन ही उत्सर्जन करने लग गये है अत उसका कोई उपयोग नहीं है।

श्रावणी और उत्सर्जन का वर्तमान स्वरूप

एक बार बरेली नगर में प० अखिलानन्द जी कविरत्न पौराणिकों के साथ श्रावणी पर्व मनाने रामगङ्गा पर गए क्योंकि पौराणिक लोग नदी तट पर श्रावणी करते है और घर पर आकर मन्दिर आदि में उत्सर्जन करते हैं। मैं भी प० अखिलानद के साथ उनके पर्व को देखने रामगङ्गा पर चला गया। ये लोग नदी पर जाकर श्रावणी प्रारम्भ करने लगे उनका प्रकार यह है—

१—पञ्चगव्यपान।

२—बार २ शरीर पर मृत्तिका लगा कर मन्त्र पढ़ते हुए नदी में गोता लगाते और बहुत देर जल के अन्दर रहते। प० अखिलानन्द जी को न अभ्यास था और न इस विधि पर श्रद्धा क्योंकि वे दुराग्रहवश पौराणिक हो गये थे अत अखिलानन्द जी बार २ जल के अन्दर से उठ कर देख लेते थे कि अभी सब निकले या नहीं फिर जल मे मुह कर लेते थे।

३—उसके अनन्तर कुशाएं हाथ में लेकर जल ताडन करते जल को ऊपर उछालते थे।

४—जल की स्तुति करते।

केवल पावनार्थाय मादृशामकृतात्मनाम्। कृतस्थिते त्वयि स्नामि प्रसीद च पुनीहि मा॥

यह उनका उपाकर्म था।

नवीन उत्सर्जन पर्व

इसके अनन्तर वे सब लोग घर पर आये और हमारे मुहल्ला साहूकारा बजरिया मोतीलाल में जहां इतने अधिक मन्दिर हैं कि मकानों की सख्या और मन्दिरों की सख्या बराबर ही है वहा ही सनातन धर्म सभा भी है वहा एक मन्दिर मे जो गोटे वालों का कहाता है उसमें अरुन्धती और सप्तर्षि पूजन किया और खीलों का होम, गायत्री का जाप और यज्ञोपवीत धारण किया।

दक्षिण देश में

दक्षिण देश में इस पर्व का नाम पौवती पूर्णिमा है वहा प्रकार यह है कि पवित्रा बनाकर शिव, विष्णु, गणेश आदि की मूर्तियों को धारण कराते हैं और स्वय भी धारण करते हैं।

बम्बई में

बम्बई में इसको नारली पूर्णिमा कहते हैं वहां प्रकार यह है कि वरुण देवता की प्रसन्नता के लिए समुद्र का पूजन करते हैं और नारियल तथा यज्ञो-

पवीत को समुद्र में छोड़ते हैं। इस समय समुद्र में कुछ शान्ति आती है समुद्र यात्रा प्रारम्भ का यह समय प्रतीत होता है। धर्मसिन्धु में भी समुद्र में इस समय नारियल चढ़ाने का विधान है। इस समय तक समुद्र पार यात्रा का निषेध नहीं था आर्य लोग समुद्र पार जाते और सम्बन्ध स्थापित करते। व्यापार देश देशान्तर से करते थे। सुमित्रा सीलोन आदि द्वीपों में आर्यों की बसती रही है यह राजतरङ्गिणी आदि मे प्रसिद्ध है।

मर्यादा पुरुषोत्तम महाराज रामचन्द्रजी को लका से लौटने पर कोई प्रायश्चित्त नहीं कराया गया। कुरुक्षेत्र युद्ध में द्वीप द्वीपान्तर के राजगण आये। वेद में समुद्र पार यात्रा का विधान है —

समुद्रं न सचरणे सनिष्यवः ॥
ऋ० १।५६।२॥

व्यवहार मयूख, निर्णयसिन्धु बृहन्नारायणीय पुराण आदि ग्रन्थों ने समुद्र यात्रा का निषेध लिखना प्रारम्भ किया।

श्रावणी पर्व के काल भेद का कारण

श्रावणी और उत्सर्जन विधि के ऊपर बताये स्वरूप आधुनिक हैं। सत्य प्राचीन स्वरूप पहले बताये जा चुके हैं कि विद्यालयों के प्रारम्भ होने के समय का नाम श्रावणी और अवकाश काल का नाम उत्सर्जन पर्व है। ऋग्वेदी यजुर्वेदी आदि भेद से श्रावणी पर्व के भिन्न २ समय जो ऊपर बताये हैं उसका कारण यह है कि समस्त भारतवर्ष में विद्यालयों का प्रारम्भ का समय एक नहीं था और न आज कल एक है जैसे उत्तर प्रदेश आदि में विद्यालयों के खुलने का समय जौलाई का प्रथम सप्ताह है और मई जून अवकाश रहता है पर पञ्जाबमे जौलाईअगस्त अवकाश का समय रहा और १५ सितम्बर के बाद विद्यालय खुलते रहे हैं। यही स्थिति प्राचीन काल में थी और वेदों के अध्ययन का बटवारा था। किसी प्रदेश में ऋग्वेद पढाया जाता और कहीं यजुर्वेद का या अन्य वेद का प्रचार था जैसा कि बताया गया है —

माध्यन्दिनी शाङ्खायनी
कौथुमी शौनकी तथा।
नर्मदोत्तर भागे च
यज्ञ कन्या विभागिनः॥
आन्ध्रादि दक्षिणाग्नेयी,
गोदा सागर आवधि।
यजुर्वेदस्तु तैत्तिर्य
आपस्तम्बा प्रतिष्ठिता।
अङ्गवङ्ग कलिङ्गश्च
कानीनो गुर्जरस्तथा।
वाजसनेयी शाखा च
माध्यन्दिनी प्रतिष्ठिता।
उत्तरे गुर्जरे देशे
वेदो बह्वृच ईरितः।
कौषीतकि ब्राह्मण च
शाखा शाङ्खायनी स्थिता॥

श्रवणा-कर्म पर्व

श्रावणी से अतिरिक्त एक श्रवणा कर्म पर्व है जो श्रावणी के दिन ही किया जाता है उसकी विधि इस प्रकार है —

१—पर्जन्य सूक्तों का पाठ, वर्षार्थ ईश्वर से प्रार्थना।

२—सर्प सूक्त का व्याख्यान और अनुशीलन।

३—सर्प बलि और सर्प देवजनों (सपेरों) को भोजन दान।

४—ओषधि मिश्रित जल का घरों में प्रक्षेप।

५—आहुति द्रव्य का शूर्प में तथा कुशाओं में रखना।

वर्षा ऋतु मे सापों के निकलने का भय रहता है अत सपेरे जो सापों को पकडते हैं उनका इन दिनों नगरों में आना आवश्यक है अत इस ऋतु में उनका भोजनादि से सत्कार करना चाहिये ठीक वर्षा होने के लिये भगवान् से प्रार्थना भी करना चाहिये क्योंकि अतिवृष्टि और अनावृष्टि और कुवृष्टि (कुसमय वृष्टि) सब ही हानिकर हैं। ओषधि मिश्रित जल के प्रक्षेप से उतने स्थान पर साप नहीं आवेगा। उन ओषधि ों का वर्णन अथर्व वेद में है। उन सर्प सूक्तों का विशेष अनुशीलन करना चाहिये। आश्वलायन में 'सर्पदेव जनेभ्य स्वाहा" आहुति को यज्ञ कुण्ड मे डालना नहीं लिखा है प्रत्युत सपेरों को देना लिखा है। कुशाओं में आहुति के रखने का अभिप्राय है कि साप कुशाओं पर आवें और उनकेमुख क्षत होकर विष की थैली फट जावे।

इस काल में भ्राष्ट्र (भाड) में भुने अन्न का खाना भी लिखा है और दधिभक्षण भी जिसका अभिप्राय है कि इससे पूर्व के मास में दधि नहीं खाना चाहिये। जैसे अन्न प्राशन सस्कार का अभिप्राय है कि उससे पूर्व अन्न बच्चे को नहीं देना और निष्क्रमण सस्कार मे सूर्य दर्शन का प्रयोजन है कि उस सस्कार से पूव बच्चे की आंख पर सूर्य की किरण न पड़ने देना। इस प्रकार ऋषियों के प्रयोजन हुआ करते हैं। दधि और भाड़ में भुने अन्न के खाने से वर्षा जन्य रोगों की निवृत्ति और कफ दोष का दूर होना आयुर्वेद के ग्रन्थों में प्रसिद्ध है।

पद्धति

श्रावणी की पद्धति हमारे यहा से प्रकाशित आर्य पर्व पद्धति में दी हुई है। उसमें इतना सशोधन कर लेना चाहिये कि जहा चारों वेदों के आदि भागों और अन्त भागों का पाठ छापा है वहा अथर्व वेद का आदि मन्त्र "शन्नो देवी-" छपा हुआ है उसके स्थान पर --

ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पति र्बला तेषा तन्वो अद्य दधातु मे ॥

अथर्व के इस प्रथम मन्त्र का पाठ करना चाहिये। शन्नो देवी ' मन्त्र पैप्पलाद शाखा का प्रथम मन्त्र है अथववेद का नहीं।

राखी

इसी दिन राखी का त्योहार भी चल पडा है। वर्तमान महाभारत में युधिष्ठिर कृष्ण सवाद से एक कथा दी है कि—

असुरों से पराजित होकर जब इन्द्र लौट आया तब इन्द्राणी ने इन्द्र के हाथ मे रक्षा बन्धन करके भेजा तब इन्द्र विजयी हुआ। कहीं यह राखी बाधने की प्रथा मामा भाजे में है कहीं अन्य प्रकार पर विशेष प्रसिद्ध यह भाई बहिन मे है।

कोई भी महिला यदि किसी अन्य को भी भाई मान कर राखी भेज देती है तो वह उसको जीवन पयन्त बहिन मानता है। भारतीय सभ्यता का यह एक अग बन गया है।

दो लडते हुए राजाओं में यदि किसी एक की पुत्री या बहिन शत्रु राजा को राखी भेज दे तो युद्ध समाप्त हो जाता था। जैसे—

चित्तोड की महारानी कर्णवती ने मुगल राजा हुमायू के पास राखी भेज कर यह रक्षा चाही कि गुजरात का बहादुर शाह जो उसके देश पर आक्रमण कर रहा है उससे रक्षा करे। हुमायू ने वैसा ही किया। अत यह शुभ दिन हमारा अनेक पर्वों का दिन है और नाम भी अनेक हैं --

अध्यायोपाकर्म, उपाकर्म, उपाकरण, श्रावणी, ऋषि तर्पणी, श्रवण कर्म, रक्षा बन्धन, नारिकेल पूर्णिमा, पौवती पूर्णिमा इत्यादि।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक सभा की धार्मिक परीक्षाएं

आर्य समाज एक जीती जागती संस्था है, कम से कम प्रत्येक आर्य इस बात को अभिमान से कहता है परन्तु समझ में नहीं आता कि आर्य जनता की उन कार्यों के प्रति उपेक्षा क्यों रहती है जो वैदिक धर्म प्रचार के ठोस साधन है और वह साधन सरल भी हैं। सार्वदेशिक सभा ने जो धार्मिक परीक्षायें युवकों के हितार्थ अभी थोडे दिन हुए आरम्भ की है उन पर मैने पहले भी हर्ष प्रकट किया था और सार्वदेशिक पत्र में उन परीक्षाओं का फल प्रकाशित हुआ देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। परन्तु परीक्षार्थियों की अल्पसंख्या को देख कर मुझे ऐसा लगा कि न तो जनता ने उसका कुछ विशेष स्वागत किया न सभा के अधिकारियों ने ही प्रयत्न किया यद्यपि यह परीक्षायें यदि योजना बनाकर चलाई जाय तो प्रचार के जितने साधन इस समय प्रचलित है उनमे सब से अधिक उपयोगी यही हैं। यह कहने की आवश्यकता नही कि आर्य समाज की एक मात्र शिरोमणी सभा सार्वदेशिक सभा ही है। इसके दिये हुए प्रमाण पत्रों का मान भी अपूर्व महत्त्व रखता है और इस पर व्यय भी अधिक नहीं होता। आर्य समाज के सैकडो विद्यालय है जिनमे लाखों विद्यार्थी पढते हैं और उनमें से पचास चालीस हजार तो प्रतिवर्ष इन परीक्षाओं मे बैठ सकते हैं। इससे उन विद्यालयों के ऊपर से कलंक भी दूर हो सकता है कि यह विद्यालय कुछ प्रचार के काम मे सहायक नहीं हैं। मै प्रयाग की संस्थाओं को जानता हू। एक महिला विद्यापीठ और दूसरी हिन्दी साहित्य सम्मेलन। यह दोनों संस्थाएं बिना किसी भारी रकम के स्वयं ही स्वावलम्बी बन गई। परीक्षाओं का व्यय तो शुल्क से चल सकता है केवल योजना की आवश्यकता है। आपको केवल परीक्षाओं का ही प्रबन्ध करना है। यह कोई कठिन काम नहीं है। भारी अपीलें करने की भी आवश्यकता नही है। यदि सार्वदेशिक सभा के मन्त्री और प्रधान थोड़ा सा भी प्रोत्साहन देंगे तो काम बहुत हो जायगा। समझ में नहीं आया कि इस उपेक्षा का क्या कारण है? जो काम सुगम हो उनको क्यों न किया जाय?

'सार्वदेशिक सभा के अधिकारी इस ओर से उदासीन नहीं है।" --सम्पादक

मुझे आशा है कि आगामी श्रावणी २३ अगस्त ५६ पर होने वाली इन धार्मिक परीक्षाओं में अधिक से अधिक परीक्षार्थियों को सम्मिलित कराने का प्रयत्न आर्य जगत् की ओर से किया जायगा।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए. प्रयाग

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं। हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है, यह तेल दिमागी ताकत और आंखो की रोशनी को बढाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापिस की शर्तें लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो तो ३॥)।

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों, औरों की भांति, मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ७ दिन के लेप से सफेदी का दाग पूरा आराम न हो तो मूल्य वापस। मूल्य लगाने का ३) खाने का ४) रु० है।

धनवन्तरि औषधालय नं० ११, पो० शेखपुरा, जिला मुंगेर (बिहार)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की

धार्मिक परीक्षाएं

प्रत्येक आर्य समाज तथा प्रत्येक आर्य विद्यालय को अपने यहां अनिवार्य रूप से केन्द्र स्थापित करना चाहिए और पूरा यत्न करना चाहिए कि प्रत्येक आर्य सदस्य तथा प्रायमरी से ऊपर की कक्षाओं के छात्र और छात्रायें इनमें से किसी न किसी परीक्षा में अवश्य सम्मिलित हों। ये परीक्षायें गत दो वर्ष से प्रचलित हैं। इस वर्ष परीक्षा शुल्क में कमी करदी गई है।

स० २०१६ की पहली परीक्षा श्रावणी पर २३ अगस्त १९५९ को दिन में १० बजे से १ बजे तक होगी और इस वर्ष की दूसरी परीक्षा वसन्तपचमी पर होगी जिसके लिए फार्म और शुल्क उससे १ मास पूर्व आ जाने चाहिए। नियमावली को अपने पास सभाल कर रखिये और सलग्न पत्र भर कर भेजिये।

निवेदक—

पूर्णचन्द्र एडवोकेट प्रधान — वीरेन्द्र शास्त्री, एम० ए० मंत्री

सार्वदेशिक विद्याय सभा देहली। कार्यालय-रायबरेली (उ०प्र०)

नियमावली

[सन् १९५९ से पुन परिवर्तन पर्यन्त]

१—किसी भी परीक्षा में कोई भी व्यक्ति बैठ सकता है किन्तु मुख्यतया ये परीक्षायें छात्र और छात्राओं एवम् आर्य सदस्यों के लिये हैं।

२—कम से कम ५ परीक्षार्थी होने पर किसी विद्यालय के आचार्य या आर्य समाज के प्रधान की अध्यक्षता में केन्द्र स्थापित किया जा सकता है।

३—परीक्षायें प्रतिवर्ष श्रावणी पूर्णिमा तथा वसन्तपचमी पर ली जावेगी आवेदन पत्र शुल्क सहित साधारणत एक मास पूर्व भेजना चाहिये।

४—परीक्षायें आर्य सिद्धान्त विषय में होंगी। परीक्षाओं की उपाधि तथा शुल्क आदि का विवरण निम्नलिखित है।

नाम उपाधि	शुल्क	प्रश्न-पत्र
(१) आर्य सिद्धान्त विशारद	५० नये पैसे	१
(२) आर्य सिद्धान्त भूषण	१ रु०	२
(३) आर्य सिद्धान्त रत्न	२ रु०	३

५—उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि तथा प्रमाण पत्र सभा की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रधान के हस्ताक्षरों से युक्त प्रदान किये जायेंगे। सर्व प्रथम परीक्षार्थी को विशेष पुरस्कार के अतिरिक्त प्रत्येक केन्द्र के सर्वोत्तम परीक्षार्थी को भी विशेष पुरस्कार दिया जायेगा।

६—प्रत्येक प्रश्न पत्र का पूर्णाङ्क १००, उत्तीर्णाङ्क तृतीय श्रेणी मे ३३ से ४४ तक, द्वितीय श्रेणी मे ४५ से ५९ तक, प्रथम श्रेणी में ६० से १०० अङ्क तक प्रतिशत होंगे।

७—परीक्षा का माध्यम हिन्दी होगा। आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं के लिए विशेष अनुमति लेनी चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के

(महत्त्वपूर्ण निश्चय)

स्थापना दिवस

१—आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के लिए प्रत्येक आर्य परिवार से कम से कम २) प्राप्त किया जाया करे।

२—इस दान को ऐच्छिक न समझा जाय अपितु प्रत्येक नर नारी का यह धर्म समझा जाय कि वह इसे धर्म रक्षार्थ 'कर' समझकर सार्वदेशिक सभा की धर्म रक्षा निधि में समर्पित करे।"

(अन्तरंग सभा ७ १० ५६)

प्रान्तीय सभाओं का प्रतिनिधित्व नियम संशोधन

समस्त प्रदेशीय सभाओं के लिए उनसे सम्बद्ध आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की स्वीकृति विषयक एक जैसा नियम निर्धारित करने का विषय प्रस्तुत होकर सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओं के प्रचलित नियम पढ़ गये। बहुसम्मति से निश्चय हुआ कि ६ आर्य सभासदों पर १ और उसके बाद प्रत्येक २० पर एक प्रतिनिधि लिया जाया करे।

(अन्तरंग ७ १० ५६)

मांस विक्रेता भी आर्यसमाज के सभासद् नहीं बन सकते ?

क्या मांस (गो बकरा, बकरी, मुर्गा, मुर्गी मछली आदि किसी का भी) बेचने वाला आर्य समाज का सदस्य बन सकता है ? और क्या अंडा खाने वाला व्यक्ति आर्य समाज का सदस्य बन सकता है ?

निश्चय हुआ कि यह विषय निर्णयार्थ धर्म्मार्य सभाको भेजा जाय।

धर्म्मार्य सभा की व्यवस्था

मांस विक्रेता और अंडा भक्षक आर्य समाज का आर्य सभासद् नहीं हो सकता।

(अन्तरंग सभा ७ १० ५६)

पाठ-विधि

१—आर्य सिद्धान्त विशारद (१ प्रश्नपत्र, पूर्णाङ्क १००)

[१] पंचमहायज्ञविधि (सन्ध्या अर्थ सहित तथा हवन मंत्र दैनिक)
[२] आर्योद्देश्यरत्नमाला [३] व्यवहारभानु
[४] महर्षि का स्वकथित जीवन चरित्र

२—आर्य सिद्धान्त भूषण (२ प्रश्न पत्र पूर्णाङ्क २००)

प्रथम प्रश्न पत्र—सत्यार्थ प्रकाश (पूर्वार्ध-१ से १० समुल्लास)
द्वितीय ,, ,,—संस्कार विधि

३—आर्य सिद्धान्त रत्न (३ प्रश्न पत्र, पूर्णाङ्क ३००)

प्रथम प्रश्नपत्र ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका
द्वितीय ,, ,—सत्यार्थ प्रकाश (उत्तरार्ध-११ से १४ वे समुल्लास तक)
तृतीय ,, ,,—आर्य सिद्धान्त पर निबन्ध

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०, आचार्य,
मन्त्री, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, कार्यालय रायबरेली (उ० प्र०)

साहित्य समालोचना

नेहरू जी की आर्य विचार धारा

(उन्हीं के शब्दों मे)

लेखक व प्रकाशक—चतुरसेन गुप्त
सार्वदेशिक प्रेस,
पाटोदी हाउस दरियागज दिल्ली-७
मूल्य—२५) सैंकडा

यह पुस्तक प्रधान मन्त्री माननीय श्रीयुत प० जवाहरलाल जी नेहरू के पत्रों तथा लेखों के उद्धरणों का सग्रह है जिनमे आर्य धम, आर्य सस्कृति और आर्य राजनीति के सम्बन्ध मे बडे प्रशसात्मक उद्गार प्रकट किये गये है और जिनमें बडा उत्तम ऐतिहासिक ज्ञान भरा हुआ है। ये उद्धरण प्राय उन पत्रों से लिए गये हैं जो माननीय पण्डित जी ने सन २८, २६ में नैनी सेण्ट्रल जेल प्रयाग से अपनी पुत्री को लिखे थे और जो 'विश्व इतिहास की झलक' के नाम से पुस्तक के रूप मे छपे थे।

सग्रहकर्ता का उद्देश्य वह महान् एव आश्चर्य जनक अन्तर दिखाना प्रतीत होता है जो उस समय और इस समय के नेहरू जी की विचार धारा में व्याप्त है और जिससे प्रभावित राजनीति भारतीय परम्पराओं और आदर्शों के लिए आर्य सभ्यता के प्रेमियों को खतरा बनी देख पड रही है।

सग्रहकर्ता महोदय ने स्थान २ पर शिष्ट भाषा इस अन्तर को दिखा कर माननीय प्रधान मन्त्री के विचार के लिए अनेक सुझाव भी दिये हैं जिनके क्रियान्वित होने से स्वतन्त्र भारत, धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक दृष्टि से उसी उच्चता के मार्ग पर पड सकता है जिस पर अन्य देश वासियों के साथ श्री प० जी को गर्व है और जिसकी उन्होंने मुक्त कण्ठ से प्रशसा की है। सग्रह उपादेय है।

नभ के तारे

लेखक—रमेशकुमार ला, सभारत्न विद्यावाचस्पति
भूमिका—श्री स्वामी अभेदानन्द जी सरस्वती
प्रकाशक—आर्य कुमार सभा किंग्ज्वे दिल्ली

$\frac{२० \times ३०}{१६}$ पृ० स० ६४

यह पुस्तिका कहानियों का सग्रह है जिसमे महर्षि दयानन्द, महात्मा गाधी, स्वामी रामतीर्थ, गोपाल कृष्ण गोखले, महामना मालवीय भीष्म पितामह, सुभाषचन्द्र बोस, प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, गुरु तेगबहादुर, महारानी अहिल्या बाई, दुर्गादास, भगवानराम और कृष्ण आदि २ के जीवन की शिक्षाप्रद घटनाओं का वर्णन अ कित है। बालकों विद्यार्थियों और सभी को इन कहानियों से प्रेरणा प्राप्त हो इस बात को लक्ष्य मे रखकर ही यह सग्रह प्रकाशित किया गया प्रतीत होता है। पुस्तक के अन्त में शुद्धिपत्र जोडा गया है। प्रयत्न स्तुत्य है।

कटापुर गोरक्षा बलिदानकांड

लेखक—श्रीयुत लाला हरदेवसहाय
प्रकाशक—मन्त्री गोहत्या निरोध समिति
३ सदर थाना रोड दिल्ली ६

$\frac{२० \times ३०}{१६}$ ४८ पृ० मूल्य १२ नया पैसा

गोरक्षा के इतिहास मे कटारपुर (ज्वालापुर, हरिद्वार) ग्राम की घटना विशेष स्थान रखती है।

आक्षेप का निराकरण

(ले०—श्री महेश्वरप्रसाद जी वाग्मी विद्यामार्तण्ड,
गुरुकुल श्री दयानन्द वेद विद्यालय, युसुफसराय नई देहली)

उपर्युक्त शीर्षक से सार्वदेशिक जून १६५६ के पृष्ठ १६३ पर सम्पादकीय टिप्पणियों मे लिखा गया है —महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय मे योरुप के विज्ञान वेत्ता ६४ भौतिक तत्व मानते थे। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश मे ५ महाभूत ही सत्य माने जिनकी सत्यता का आधार वैदिक ऋषियों की योग दृष्टि है ”

वस्तुत पाठक जी ने हमे ऋषि के यह शब्द लिख कर वेदाध्ययन की ओर प्रवृत्त किया है और हमको यह अनुसन्धान करने के लिए आवश्यक प्रोत्साहन प्रदान किया है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढना पढाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

इसी दृष्टिकोण से महर्षि ने वेद भाष्य का समारम्भ किया था और भौतिक तत्वों की ऊहापोह उन्होंने अपने योग बल से वेद भाष्य के अनेक स्थलो पर की है। वेद वैजयन्ती को हस्त लिखित पुस्तक मे श्री प० ब्रह्मशरण जी प्रणत वेदवाचस्पति ने इस विषय पर इस प्रकार लिखा है महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य का उद्धरण दिया है—

“कालोऽनन्तोऽपरिणामी विभुश्च वर्तते नैव तस्य कदाचिदुत्पत्तिर्नाशोवाऽस्ति। एतज्जगतः कारणे विशत्युत्तराणि यानि सप्तशतानि तत्त्वानि सन्ति तानि मिलित्वा स्थूलानीश्वर नियोगेन जातानि सन्ति। एषा कारणमज नित्य च वर्त्तते यावद्भिन्नान्ये-तानि तत्त्वानि प्रत्यक्षत या न जानीयात् तावद्विद्यावृद्धये मनुष्य प्रयतेत ।

अर्थात् काल अनन्त परिणामी और विभु वर्तमान है न उसकी कभी उत्पत्ति है और न कभी नाश है। इस जगत के कारण मे सात सौ बीस जो तत्व हैं वे मिल करके स्थूल (स्थूल स्वरूप मे) ईश्वर के निर्माण किये हुए योग से उत्पन्न हुए हैं, इनका कारण अज और नित्य है। जब तक अलग अलग इन तत्वों को पृथक् मे न जाने तब तक विद्या की वृद्धि के लिये मनुष्य यत्न किया करे।”

ये शब्द महर्षि दयानन्द जी के हैं। इनसे योरोप के ६४ स्थूल तत्वों की अल्पज्ञता का बोध ऋषि दयानन्द ने वेदभाष्य द्वारा कराया। हम इस विषय पर अधिकाधिक ऊहापोह यथा समय करेंगे। पाठक जी से सआग्रह निवेदन है कि इस प्रकार की ऋषि चर्चा के लिए अपने स्तम्भों मे विद्वानों से सहयोग अवश्य लेते रहें।

जबकि १६२८ में बकरईद पर्व के अवसर पर मुसलमानों ने हिन्दुओं की धार्मिक भावना तथा प्रबल विरोध को चुनौती देते हुए खुले खजाने गोहत्या के अपने अवैध अधिकार की प्रतिष्ठा के लिए गोवध करना चाहा था। हिन्दुओं ने गऊओं की रक्षा तो करली थी परन्तु इस प्रसग मे उस ग्राम में भयकर हिन्दू मुस्लिम बलवा हो गया था। इस बलवे के आरोप मे अनेक निर्दोष हिन्दू पकड गए और अन्याय पूर्वक उन्हें दंडित किया गया था। ६ व्यक्तियों को फासी १२५ को कालापानी एक हिन्दू थानेदार तथा म्यूनिसिपल बोर्ड मायापुर के मन्त्री को ७ ७वर्ष का कारावास दड दिया गयाथा।

इस पुस्तिका मे इस काड का सविस्तार वर्णन उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त गोरक्षा के लिए हिन्दुओं और सिखों के विविध बलिदानो की भी चर्चा की गई है। जिन मुस्लिम शासकों यथा, बाबर, अकबर हैदरअली आदि २ ने भारत की हिन्दू प्रजा का प्रेम प्राप्त करने के लिए अपने शासनकाल में गोवध निषिध कर दिया था उनकी प्रशसा करते हुए, दिखाया गया है कि अग्रेजो ने जान बूझकर हिन्दुओ और मुसलमानों मे खाई बनाये रखने तथा गोमास, गोचर्म आदि २ को आर्थिक लाभ का साधन बनाने के उद्देश्य से गोवध को प्रोत्साहित किया। पुस्तिका मे महात्मा गाधी के गोवध निषेध विषयक विचारों तथा स्थापनाओं का उल्लेख किया जाकर वर्तमान स्वतत्र राज्य के गांधी जी के नाम की दुहाई देने वाले कर्णधारों की आलोचना की गई है। जिनकी नीतिया गोवध को बहुत बढावा देनेवाली सिद्ध हो रही है

सार्वदेशिक सभा के लिये ऋषि दयानन्द सरस्वतीकृत ग्रन्थों के पुराने संस्करणों की

आवश्यकता

आर्य समाजों के अधिकारियो का विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया जाता है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कृत सत्यार्थप्रकाश संस्कार विधि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पञ्चमहायज्ञविधि आदि ग्रन्थो के पुराने संस्करण प्रथम संस्करण तथा अन्य संस्करण जहां होवे सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय मे भेजकर उन्हे सुरक्षित करदे।

महर्षि के आरम्भ के लिखे कुछ ऐसे ग्रन्थ हैं जो अब कहीं भी प्राप्त नहीं होते उनकी रक्षा का कोई प्रबन्ध उस आरम्भ के युग मे नहीं किया था अन्यथा वे नष्ट न होते। इसी समय इस बात की आवश्यकता है कि ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के लिखे ग्रन्थो के जितने संस्करण वैदिक यन्त्रालय आदि से निकले हैं उन सब संस्करणों की एक एक प्रति सुरक्षित करली जावे और इस संग्रह के लिये सार्वदेशिक सभा का पुस्तकालय उपयुक्त स्थान हो सकता है।

सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के प्रथम और द्वितीय आदि आरम्भ के संस्करणो की सभा को शीघ्र आवश्यकता है। सभा ऋषि के ग्रन्थों पर अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ कर रही है अतः आर्य समाजों को चाहिये कि जहां संस्करण हो सार्वदेशिक सभा को शीघ्र भेज देवे।

निवेदक —

आचार्य विश्वश्रवाः पुस्तकाध्यक्ष

सार्वदेशिक सभा रामलीला मैदान,

नई देहली-१

विविध समाचार—

निर्वाचन

	समाज	प्रधान	मन्त्री	दिनांक
१	आर्य समाज मसूरी	श्री कविराज हरनामदास बी.ए	श्री परमात्माशरण	२१ ६ ५६
२	आर्य समाज गया	श्री बुलाकीचन्द राय आर्य	श्री डा बालमुकन्दसहाय	१२-७ ५६

—गुरुकुल गदपुरी मे आर्य सिद्धान्त की पढाई के साथ २ प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री, रत्न, भूषण, प्रभाकर की पढाई निःशुल्क होती है। यह गुरुकुल पंजाब विश्व विद्यालय से स्वीकृत है। गुरुकुल की रजिस्टर्ड कार्यकारिणी है। एक औषधालय है जिसे श्री ला० जगन्नाथ जी दिल्ली निवासी अपने भाई कुन्दन लाल की स्मृति में चला रहे हैं। यहा ७ से १२ वर्ष तक का साक्षर निरोग छात्र प्रविष्ट किया जाता है। भोजन शुल्क केवल ८) मासिक है। १०) प्रवेशशुल्क है। गुरुकुल जी० टी० रोड पर दिल्ली से २८ मील पलवल बल्लभगढ के मध्य स्थित है।

—आर्य समाज बैरगनिया के तत्वावधान मे दयानन्द विद्यालय ब्रह्मचर्याश्रम नाम की एक शिक्षण संस्था की स्थापना की गई है। इसमे गुरुकुलीय कार्यक्रम के अतिरिक्त छात्रों को मैट्रिक और मध्यमा की परीक्षाएं दिलाई जाती हैं। संचालन समिति के प्रधान श्री आनन्दचित्तराम आर्य तथा मन्त्री श्री गोपाल प्रसाद आर्य हैं।

❀

(पृष्ठ २६४ का शेष)

जनों में भाग नहीं लेतीं। थोडो बहुत ही सुन्दरियां लज्जा का परित्याग करके इनमें भाग लेने के लिए आगे आती हैं। इनमें से चुनी हुई किसी एक सुन्दरी को स्थान देश वा विश्व की सुन्दरी की सञ्ज्ञा का दिया जाना अशुद्ध है। इन चुनी हुई सुन्दरियों का बनता क्या है ? ये सुन्दरियां छवि गृहों की शोभा बढाने वा सिनेमाओं की अभिनेत्रियां बनाने आदि के कार्यों में प्रयुक्त की जाती हैं इन्हे पारितोषिक या मोटी नौकरियां प्रदान की जाती हैं।

भारत वर्ष में भी कुछ वर्ष हुए विश्व सुन्दरी की प्रतियोगिता मे विदेश भेजने के लिये कुछ सुन्दरियां का चुनाव हुआ था जिसका प्रबल विरोध हुआ था क्योंकि इस प्रकार के आयोजन भारतीय आदर्शों और परम्पराओं के सर्वथा प्रतिकूल हैं सीता और सावित्री के इस देश मे हमारी देवियां को स्वभावत इस प्रकार के आयोजनों से घृणा है। अवश्य आधुनिकता के रंग मे रंगी हुई कुछ देवियां 'मिस मसूरी' और 'मिस शिमला' जैसी अनैतिक और निर्लज्ज प्रतियोगिताओं के कपट जाल मे फस जाने की भूल कर बैठती हैं। इसके लिये भारत के समूचे नारी समाज को दोष नहीं दिया जा सकता। आज के गन्दे वातावरण और सामाजिक विषमताओं मे भी वे हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं और अपनी शालीनता के ध्वज को ऊंचा उठाए हुए हैं। फिर भी समाज और राज्य का कर्त्तव्य है कि वे इस प्रकार के आयोजनों के प्रति उदासीन न बनें जो हमारा चारित्रिक पतन करने और हमारे राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक गौरव को घटाने वाले हों।

पाश्चात्य देशों में इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के विरुद्ध वैसी प्रबल भावना नहीं है जैसी भारतवर्ष मे है। इसका मुख्य कारण यह है कि वहां की संस्कृति भोग प्रधान और हमारी संस्कृति अध्यात्म प्रधान है। हमारी संस्कृति दारुण से दारुण कष्ट सह कर और प्राणों की बाजी लगाकर भी अपनी लज्जा और शील की रक्षा करने का स्त्रियों को पाठ पढाती है। भगवती सीता ने रावण की कैद से छूट कर हनुमान की पीठ पर बैठ कर भगवान् राम के पास पहुँच जाना इसलिए स्वीकार न किया था कि इससे उनके शरीर का पर पुरुष से स्पर्श होता था। भगवती सीता हमारी इसी संस्कृति की देन थी। इसकी रक्षा करना हमारा और हमारी देवियों का पुनीत कर्त्तव्य है।

निराशाजनक स्थिति

अभी कुछ दिन हुए न्यूयार्क में उपराष्ट्रपति सर्व पल्ली श्रीयुत राधाकृष्णन के स्वागतार्थ भारतीयों की ओर से एक आयोजन किया गया था। समाचार मिला है कि उस स्वागत समारोह मे उपस्थित जब ३० भारतीय लडकियों को नाचने और गाने के लिए उपराष्ट्रपति द्वारा कहा गया तो उन्होंने निषेध कर दिया। सर्वपल्ली महोदय ने उनकी नारी सुलभ लज्जा शीलता और भारतीय गौरव गरिमा को बढाने वाले उस निषेध का आदर न करते हुए उनसे नाचने एवं गाने का अनुरोध किया तथा नाच और गान को धार्मिक कृत्य की सञ्ज्ञा देकर धर्म के नाम पर अपील भी की परन्तु उनमे से कोई भी युवती उस सार्वजनिक समारोह मे निर्लज्जता का परिचय देने के लिए उद्यत न हुई। कहा जाता है कुछ लडकियों ने गाना गाना अंगीकार किया। यदि यह समाचार ठीक रूप मे प्रसारित हुआ है तो भारतीय प्रजा का वह भाग जिसे अपनी संस्कृति से प्रेम है, सर्वपल्ली महोदय के इस आचरण पर क्षुब्ध हुए बिना नहीं रह सकता। वह उनसे माग कर सकता है कि उन्हे भारतीय युवतियों को उस समारोह मे नाचने के लिए विवश करने का यत्न करने का क्या अधिकार था ? क्या उन युवतियों के नाचने और गाने से ही देश के गौरव की रक्षा हो सकती थी ? देश के

गौरव की रक्षा तो उनके निषेध से ही हुई है। उनकी लज्जा शीलता भले ही उस प्रसग मे अव गुण समझी गई हो परतु उस अवगुण ने भारतीयों मुख्यतया नारी समाज का मस्तक ऊ चा कर दिया है। उनका यह साहसपूर्ण आचरण उन लोगों के मर्म पर करारी चोट है जो नाच गान के अशिष्ट सार्वजनिक प्रदर्शनो को सांस्कृतिक कार्य क्रमो की सज्ञा देकर सस्कृति का उपहास करते नहीं लजाते।

सर्वपल्ली महोदय भारत की विशिष्ट हस्ती हैं, उन्हे भारत की प्रजा का आदर और स्नेह प्राप्त है। उन्हे तो इस प्रकार के कार्यक्रमों का खण्डन करके स्वस्थ मार्ग प्रदर्शन करना चाहिये। इन कार्यक्रमों का उनके द्वारा प्रोत्साहित किया जाना उचित नहीं है। इससे तो लोगों के हृदय में यही भाव उत्पन्न हो सकता है कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से हमारी सरकार जिस गन्दगी के प्रसार का कारण बन रही है उसे सर्वपल्ली जैसे विद्वान् और चरित्र वान् महान् व्यक्ति का प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त है। निश्चय ही यह स्थिति निराशाजनक है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

राजाधिराज शाहपुराधीश



श्रीमान् सुदर्शनदेव जी

(जिनके नेतृत्व मे अभी हाल मे आर्यसमाज शाहपुरा का हीरक जयन्ती महोत्सव सफलतापूर्वक मनाया गया।)

वर की आवश्यकता

एक सुन्दर सुयोग्य गुजराती मेहता कन्या आयु १६ वर्ष के विवाह के लिए एक कमाऊ युवक की आवश्यकता है। जात पात का कोई बन्धन नहीं। पत्र व्यवहार का पता —

मन्त्री
आर्यसमाज मुरादाबाद

वर की आवश्यकता

मैट्रिक ट्रेन्ड, साहित्य रत्न (प्रथम खड) आर्य कन्या के लिए रोजगार में लगे हुए एक आर्य ब्राह्मण वर की आवश्यकता है। कन्या अध्यापन कार्य कर रही है आयु २० वर्ष की है। शिक्षा क्षेत्र में सर्विस में लगे हुए को प्रमुखता दी जायगी।

मन्त्री
आर्यसमाज अलवर

(१) आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग ४)
" , द्वितीय भाग ५)
(२) वेद की इयत्ता(श्री स्वा०स्वतन्त्रानन्दजी)१॥)
(३) दयानन्द दिग्दर्शन(श्री स्वा० ब्रह्ममुनिजी) ॥।)
(४) इ जील के परस्पर विरोधी वचन ।=)
(प० रामचन्द्र जी देहलवी)
(५) भक्ति कुसुमाञ्जलि (प० धर्मदेव वि० वा० ॥)
(६) सत्यार्थप्रकाश (वैदिक यन्त्रालय प्रकाशन) २।)
(७) भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक
(श्री राजेन्द्र जी) ॥)
(८) आर्य समाज और साम्प्रदायिकता -)
(श्री ओम्प्रकाश त्यागी)

(९) वेदान्त दर्शनम् (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ३)
(१०) संस्कार महत्व
(प० मदनमोहन विद्यासागर जी) ॥)
(११) जनकल्याण का मूलमन्त्र ॥)
(१२) वेदों की अन्त साक्षी का महत्व ॥-)
(१३) आर्य घोष ॥)
(१४) आर्य स्तोत्र ॥)
(१५) स्वाध्याय सदोह (स्वा० वेदानन्द तीर्थ) ४)
(१६) वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) ७)
(१७) सनातन धर्म और आर्य समाज
(प० गंगाप्रसाद उपाध्याय) ।-)

ENGLISH PUBLICATIONS

1 Introdu tion to the Commentary on Vedas 2/8/
2 Kenopanishat (Translation by Pt Ganga Prasad ji, M A /4/
3 Kathopanishat (Pt Ganga Prasad M A Rtd Chief Judge) 1/4/
4 Aryasamaj & International Aryan League Pt Ganga Prasad ji Upadhyaya M A /1/
5 Voice of Arya Varta (T L Vasvani) /2/
6 Truth & Vedas (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) /6/
7 Truth Bed Rocks of Aryan Culture (Ra Sahib Thakur Datt Dhawan) /8/
8 Vedic Culture (Pt Ganga Prasad Upadhyaya M A) 3/8/
9 Aryasamaj & Theosophical Society (Shiam Sunder Lal) /3/
10 Wisdom of Rishis (Gurudatta M A) 4/ /
11 The Life of the Spirit (Gurudatta M A) 2/ /-
12 A Case of Satyarth Prakash in Sind (S Chandra) 1/8/
13 In Defence of Satyarth Prakash (Prof Sudhakar M A) -/2/-
14 Universality of Satyarth Prakash /1/
15 Tributes to Rishi Dayanand & Satyarth Prakash (Pt Dharma Deva ji Vidyavachaspati) /8/
16 Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati) /8/-
17 Elementary Teachings of Hindusim /8/ (Ganga Prasad Upadhyaya M A)
18 Life after Death 1/4/
19 Philosophy of Dayanand, 10
20 Agnihotra (Dr Satya Prakash) 2 8
21 Daily Prayer of An Arya /8
22 The Constitution of Arya Samaj 0 n P
23 Light of Truth 7 8 0

नोट- (१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूपमें भेजें।
(२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ २ लिखें।
(३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा आना चाहिए।

सम्पादक मण्डल

१—श्री प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री वेदवाचस्पति

प्रधानमन्त्री सार्वदेशिक आ प्र० नि० सभा

२ श्री राजपण्डित म० म० आचार्य विश्वश्रवाः 'व्यास'

प्रधानमन्त्री सार्वदेशिक धर्मार्यसभा

तथा पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आ० प्र० नि० सभा

३—श्री आचार्य राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री

स० मन्त्री सार्वदेशिक धर्मार्यसभा

स० मन्त्री अनुसन्धान समिति सार्वदेशिक आ० प्र नि० सभा

४—श्री प० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक

कार्यालयाध्यक्ष सार्वदेशिक आ० प्र० नि० सभा

वार्षिक मूल्य ५) विशेषाङ्क का मूल्य १।।)

ग्राहकों को बिना मूल्य

कार्यालय

"सार्वदेशिक" (सचित्र मासिक)

दयानन्द भवन, नई देहली-१

श्रीमन् मन्त्री महोदय,

आर्य समाज,

नमस्ते !

सार्वदेशिक सभा मथुरा दीक्षा-शताब्दी के अवसर पर 'सार्वदेशिक' सचित्र मासिक पत्र का विशेषाङ्क 'दयानन्द दीक्षाङ्क' नाम से निकालने जा रही है।

यह विशेषाङ्क आर्य समाज का स्थायी साहित्य होगा। यह आप इसकी विषय सूची से ही अनुमान कर सकेंगे। विषय सूची इसी लिये साथ मे छापी जा रही है।

इस अङ्क मे आर्य जगत के विश्व विद्यालयो के और विदेश के विद्वानो और अनुसन्धान कर्त्ताओ के, विदेश यात्रियो के, विदेश प्रचारकों के, सम्पादको और समालोचकों के खोजपूर्ण लेख मगाये जा रहे हैं।

आपका समाज यदि इस समय तक सार्वदेशिक' सचित्र मासिक का ग्राहक नहीं बना है तो शीघ्र ५) रु० भेज कर अपने समाज को ग्राहक बनाइये। तब यह विशेषाङ्क बिना मूल्य ही मिल जायगा। और आगामी वर्ष के विशेषाङ्क भी बिना मूल्य मिलेगे।

आपका समाज यदि ग्राहक है तो सूचना दे कि इस विशेषाङ्क की कितनी प्रतिया आप अपनी समाज के सदस्यो के लिये सुरक्षित कराना चाहते हैं। यह अङ्क महर्षि के सिद्धान्तो का नये प्रमाणों, नये तर्कों, नई युक्तियो से समर्थन करेगा। प्रसिद्ध २ दिग्गज विद्वानो के लेख होंगे। निराले आपकी कल्पना से बाहर के रगीन चित्र होंगे।

विदेशी भाषाओ मे उन्हीं की लिपि मे हिन्दी अनुवाद सहित विदेशी विद्वानो की श्रद्धाञ्जलिया तथा लेख होगे। और साथ ही विदेश के पुरातत्त्व से प्राप्त वैदिक तथा भारतीय संस्कृति के अश्रुतपूर्व, दर्शनीय फोटो चित्र भी कथञ्चित् प्राप्त कर मुद्रित किये जायेंगे।

इस विशेषाङ्क को आप तथा आपके समाज का प्रत्येक सदस्य अपने पास रखने की इच्छा करेगा। अत आप लिखें कि कितनी प्रतिया आपके लिये सुरक्षित की जायें। प्रचारार्थ आप इस अङ्क को वितरण करें। यह अङ्क आर्य समाज की धाक बिठा सकेगा।

अपने निर्णय से शीघ्र सूचित करे कहीं ऐसा न हो कि अङ्क समाप्त हो जाये। और आपको निराश करना पडे।

कल्याण और धर्मयुग के विस्तार के समान 'सार्वदेशिक' का विस्तार हो। ऐसा हम लोगो का सङ्कल्प है। आशा है आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

विनीत

सम्पादक मण्डल सार्वदेशिक

नोट —५० प्रतिया एक साथ प्रचारार्थ लेने पर मूल्य १) रु० प्रति
२५ " " " " १।) "
१ प्रति का मूल्य १॥) रु० है।

'सार्वदेशिक दयानन्द दीक्षाङ्क'

के

प्रस्तावित विषयों की झांकी

१ संसारके कल्याणार्थ दयानन्दका दीक्षाके लिये
 — तप,
 — त्याग,
 — अध्ययन,
 — योग,
 — देशाटन,
 — पर्वतारोहण।

२ दयानन्द की दीक्षा पर — प्रतिज्ञा,
 — गुरु दक्षिणा,
 — जीवनाहुति।

३ दयानन्द की दीक्षा के गुरु।

४ गुरु वर विरजानन्द का दीक्षान्त भाषण।

५ दीक्षा का — दयानन्द पर प्रभाव।

६ दयानन्द की लेखनी पर प्रभाव।

६ दयानन्द — दीक्षा का वेद पर प्रभाव।

७. — ब्राह्मण ग्रन्थों पर प्रभाव।

८ — दर्शनों पर प्रभाव।

९ — इतिहास पर प्रभाव।

१० — शिक्षा क्षेत्र पर प्रभाव।

११ — वर्ण व्यवस्था पर प्रभाव।

१२ — आश्रम व्यवस्था पर प्रभाव।

१३. — ब्राह्मणों पर प्रभाव।

१४ — क्षत्रियों पर प्रभाव।

१५ — वैश्यों पर प्रभाव।

१६ — शूद्रों पर प्रभाव।

१७ — ब्रह्मचर्याश्रम पर प्रभाव।

१८ — गृहस्थाश्रम पर प्रभाव।

१९ — वानप्रस्थाश्रमपर प्रभाव।

२० — सन्यासाश्रम पर प्रभाव।

२१ — राजनीति पर प्रभाव।

२२ दयानन्द का दीक्षा — ईसाई मत पर प्रभाव।

२३ — इस्लाम मत पर प्रभाव।

२४ — जैन मत पर प्रभाव।

२५ — सिख मत पर प्रभाव।

२६ — प्रभु भक्ति पर।

२७ — बालशिक्षा पर।

२८ — विवाह संस्कार पर।

२९. — अन्य संस्कारों पर।

३० — पठन पाठन विधि पर।

३१ — आश्रम दिनचर्या पर।

३२ — भोजनाच्छादन रहन सहन पर।

३३ — भारत पर प्रभाव।

३४ — विदेश पर प्रभाव।

३५ — भारत के नेताओं पर।

(गान्धी, तिलक, गोखले, बैंकिम, टैगोर आदियों पर)

३६ — हिन्दी साहित्य पर।

३७ — दयानन्द की दीक्षा पर बलिदान —
 — पुरुषों के
 — महात्माओं के
 — महिलाओं के
 — उपदेशकों के

३८ दयानन्द — दीक्षा के पथिक —

३९ (भटके हुए या डटे हुए?) — उपदेशक।

४० — ब्राह्मण।

४१ — भजनोपदेशक।

४२ — सन्यासी।

४३ — पुरोहित।

४४ — समाएं।

—•—

* विशेषाङ्क की अन्य विशेषताएं *

१ भारतीय नेताओं की श्रद्धाञ्जलि।
२ मतमतान्तरों की श्रद्धाञ्जलि।
३. विदेशी भाइयों की श्रद्धाञ्जलि।
४. विदेशी विद्वानों की श्रद्धाञ्जलि।
५. विदेशी भाषाओं की लिपि में लेख हिन्दी अनुवाद सहित।

'सार्वदेशिक' प्रत्येक परिवार में

बालकों के लिये मनोहर कहानिया, अभिनय, जानकारी महिलाओ के लिये
मनोरम इतिहास, गाथा, नाराशसी, युवकों के लिये नयी शकायें,
नये समाधान, नई ऊहा, नया तर्क। प्रौढों के लिये
परिमार्जित प्रौढ विचार शास्त्रानुशीलन
वर्तमान कालिक समस्यायें।

सभी होगा आज ही ग्राहक बनिये।

मूल्य केवल ५) रु०

वर्ष भर के विशेषाङ्क साथ में

प्रथम	दूसरा	तीसरा
दयानन्द दीक्षाङ्क	वेदाङ्क	सार्वदेशिक जयन्ती अङ्क

माननीय महाशय कृष्ण और श्री विद्यानन्द विदेह

[ले० आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री, मन्त्री अनुसन्धान समिति सार्वदेशिक आ० प्र० स०]

दिल्ली के दैनिक पत्र 'वीर अर्जुन' १५ जून १६५६ के अङ्क मे यह समाचार पढकर आर्य जगत को अत्यन्त आश्चर्य हुआ होगा कि जिन श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह की ऋषि दयानन्द विरोधी गति विधि के कारण सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज की वेदी बन्द की। उन विद्यानन्द विदेह के आश्रम का उद्घाटन आर्य जगत् के पुराने नेता परोपकारिणी के वर्तमान प्रधान महाशय कृष्ण जी ने १४ जून को राजोरी गार्डन मे किया।

सम्भव है कि महाशय जी को सभा के निर्णयो का ध्यान न रहा हो। अत श्री महाशय जी की जानकारी के लिये स्वामी विद्यानन्द जी विदेह के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा के निर्णयो का उल्लेख करना आवश्यक है —

१. विद्यानन्दजी विदेह के ऋषि विरोधी कार्य

१ "बधाई के गीतों द्वारा सन्तान पैदा होने का प्रचार करना।

२ विदेह जी का—अपने को ऋषि मानना।

३ ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म की जय लगाना साम्प्रदायिक बताना है।

४ मुर्दों का आज कल लकड़ी के अभाव मे बिजली से जला दिया जाना उचित बताना।

५ परमात्मा को निराकार और साकार दोनों मानना और ऐसा ही प्रचार करना।

६ यह कहना कि 'उनकी रग रग मे वैराग्य भरा हुआ है परन्तु उनकी धर्म पत्नी सन्यास ग्रहण करने की आज्ञा नहीं देती।' पूरा वैराग्य हो जाने पर भी बिना स्त्री की आज्ञा के सन्यास न लेने का प्रचार करना और वैदिक बताना।

कान के ऊपर टटोल कर कुछ प्वाइन्ट अर्थात् व्यक्ति के भूत भविष्यत् तथा वर्तमान की स्वाभाविक घटनाओं को बताना।

८ आर्य समाज के तीसरे नियम को अपूर्ण बताना।"

सार्वदेशिक सभा की
'श्री विद्यानन्द विदेह की वेदी बन्द'
विज्ञप्ति से

२ विदेह जी अवतार हैं !

विदेह जी की मासिक पत्रिका 'सविता'–जिस के वे स्वय सम्पादक है—अगस्त १६५६ के 'योज-नाङ्क' के कुछ उद्धरण भी महाशय जी के अवलोक-नार्थ उद्धृत करना आवश्यक है —

१ "भगवान् समय २ पर लोकोद्धार के लिए एक युग नेता अवश्य भेजते हैं। मेरी समझ मे तो लुप्त हो रही वेद विद्या तथा योग-विद्या के प्रसार के लिये आप (अर्थात् श्री विद्यानन्द जी विदेह) का अवतरण हुआ।
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम् ॥"
(सविता पृ० १६१)

२ "ऋषिवर स्वामी दयानन्द जी जिस महान् उद्देश्य को लेकर कार्य क्षेत्र मे उत्तीर्ण हुए, जिसे पूर्ण न कर पाने की अन्त पीड़ा लिए हुए उन्होंने इहलौकिक यात्रा पूर्ण कर दी थी, उसी उद्देश्य की पूर्त्यर्थ आचार्य विदेह जी को मानो परमात्मा ने ससार मे भेजा है।"
(सविता पृ० १६२)

विदेह जी ऋषि हैं।

३ "आचार्य विद्यानन्द विदेह विप्र ऋषि दिव्य द्रष्टा।" (सविता)

प्राचीन भाष्यकार वेदार्थ नहीं जानते !

सार्वदेशिक सभा ने बहुत लम्बे समय तक विदेह जी को समझाने का यत्न किया। समस्त भारत के उच्चकोटि के विद्वानों को बुला कर उनके मध्य विदेह जी को बैठा कर समझाने का यत्न किया। परिणाम कुछ न निकला। विदेह जी यहा तक कहने पर उतारू हो गये कि पिछले "प्राचीन समस्त (क्या ऋषि दयानन्द भी ले०) वेदार्थ नहीं जानते थे। वेदों का अर्थ करने के लिये वेदों के स्वर, देवता, छन्द, ऋषि सब व्यर्थ है और वेदार्थ करने मे व्याकरण निरुक्त, दर्शन आदि किसी की भी आवश्यकता नहीं। अत इनके आधार पर वेदार्थ किये जाने का परिणाम है कि वेद स्पष्ट नहीं हो रहा, न ही उसकी पूर्वापर सगति बैठती है।"

विदेह जी की योग्यता

हमारे सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में विदेह जी ने अपने हस्ताक्षरों सहित यह लिख कर दिया हुआ है कि —

"मुझे (विदेह को) व्याकरण-निरुक्त-दर्शन आदि शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। वेदों के स्वर को भी नहीं जानता। और नहीं सस्कृत भाषा का ही अच्छा ज्ञान है।"

इन परिस्थितियों मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की २८-८-५५ की अन्तरङ्ग ने निम्नाङ्कित निश्चय किया—

"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओरसे आर्य समाजों को इस आशय का आदेश दिया जाये कि क्योंकि विदेहजी ने अनेक बार ध्यान खींचे जाने और आश्वासन देकर भी वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध प्रचार बन्द नहीं किया है इस कारण—

१ आर्य समाज की वेदी पर से उनके व्याख्यान न कराये जायें।

२ उनके ग्रन्थ आर्य समाजों के पुस्तकालयों मे न रखे जायें।

३ उनके ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये अथवा अन्य किसी कार्य के लिए आर्थिक सहायता न दी जाये।

इस निश्चय को क्रियान्वित करना प्रत्येक आर्य, आर्य समाज और आर्य सस्था का परम कर्तव्य है ।"

दयानन्द के किये सम्पूर्ण यजुर्वेदभाष्य और ऋग्वेद के सात मण्डलो के भाष्य की विद्यमानता मे ऋषि भाष्य के विरुद्व ऋषि की मान्यताओं के प्रतिकूल—नैरुक्तप्रक्रिया—दर्शन ब्राह्मण तथा अन्य वेदाङ्गों, तथा वेद के ऋषि देवता-छन्द-स्वर आदि ऋषि दयानन्द प्रदर्शित मान्यताओं को ठुकरा कर अवहेलना करके नहीं नहीं खण्डन करके किया हुआ विदेह जी का वेदभाष्य परोपकारिणी के प्रधान से कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है ? क्या ऋषि के कार्य को पूरा करने की यही रीति है ?

"कोई भाष्यकार नहीं हुए"—यह कहते हुए आपने प्राचीन भाष्यकारों को कैसे भुला दिया। *समस्त भारतीय परम्परा तथा शास्त्रों को तिलाञ्जली* देने वाले भाष्यकार का समर्थन, एव आश्रम का उद्घाटन आप कैसे कर सके ? क्या आपके इस कार्य से परोपकारिणी से प्रकाशित ऋषि भाष्य का समर्थन या प्रचार हुआ है ?

महाशय जी !

साधारणतया विश्वास नहीं होता कि आप जैसा वयोवृद्ध आर्य नेता यह उद्घाटन या समर्थन सारी परिस्थिति को जानते हुए करे। अत उचित है कि आप स्वय स्थिति का स्पष्टीकरण करके उत्पन्न हुई भ्रान्ति का निराकरण कर दें। अन्यथा आर्य जगत् में यह धारणा बलवती होगी कि आपकी इस चेष्टा से न केवल आर्य समाज के अनुशासन को ही आघात पहुचा है, अपितु सिद्धान्त हीनता को भी प्रोत्साहन मिला है।

ईसाई धर्म प्रचार निरोध आन्दोलन

ईसाई प्रचार निरोध कार्य में प्रत्येक आर्य (हिन्दू) अपना योग दे ।

अमेरिका आदि पश्चिमी देशो से करोडो रुपये प्रति मास प्राप्त कर विदेशी ईसाई मिश्नरी देश भर मे मुख्यतया अशिक्षित हरिजनो तथा पर्वतीय जातियो को लक्ष्य बनाकर धन, और बल का प्रयोग कर भारत मे हमारे धार्मिक सास्कृतिक, सामाजिक ही नही वरन् राजनैतिक ढाचे को किस प्रकार नष्ट भ्रष्ट कर देने का षढयन्त्र रच रहे हैं इसका प्रमाण मध्य प्रदेश, तथा मध्य भारत की सरकारो द्वारा नियुक्त नियोगी तथा रेगी कमेटी की रिपोर्टें है। इस बढते हुए कुचक्र को देखकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभान श्रद्धानन्द ट्रस्ट आर्य धर्म सेवासघ तथा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को मिलाकर एक समिति का निर्माण किया है जिसका नाम "अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध समिति" रखा गया है। इसके प्रधान लाला हसराजजी गुप्त तथा मन्त्री श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री हैं। इसमे छोटा नागपुर, मध्य प्रदेश, तथा बासवाडा (राजस्थान) आध्र, उडीसा तथा आसाम, दिल्ली तथा उत्तरप्रदेश में कार्य प्रारभकर दिया है। इस समिति के तत्वावधान मे दिल्ली नगर की समस्त समाजो की एक बैठक ता० ३० ८-५९ को दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) मे हुई जहा प्रतिनिधियो ने एक मत से इस कुचक्र को नष्ट करने के प्रति अपनी आस्था प्रकट की तथा अधिक से अधिक धन जन की सहायता देने का आश्वासन दिया और मिलकर काम करने का संकल्प किया।

आशा है कि देश का प्रत्येक आर्य समाज प्रत्येक सस्था, प्रत्येक व्यक्ति जिसके हृदय में अपनी मातृभूमि, धर्म, सस्कृति के प्रति प्रेम है वह दिल्ली की आर्य समाजों का अनुकरण करेगा। तथा विदेशी ईसाई मिशनरियो के षढयन्त्रों को नष्ट करने के लिए जो भी सहायता तथा, धन, कपडे, सूखी मिठाइया जो भी दे सकते हैं मन्त्री अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समिति, दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई देहली १ के पते पर भेजने का कष्ट करें। चैक वा ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नाम में भेजने की कृपा करे।

इस पुण्य कार्य मे जो दान अब तक प्राप्त हुआ है उसका विवरण इस प्रकार है—

दान अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध प्रचार

१००) आर्य समाज करौल बाग नई दिल्ली
२५०) श्री डी० डी० पुरी जी नई दिल्ली
२५) आर्य समाज अमृतपुरी दिल्ली
१००) ,, चादपुर (बिजनौर)
२५) ,, अमृतपुरी दिल्ली
७) ,, लोरिया (चम्पारन)
२५) ,, झज्झर रोड रोहतक
५) ,, महाशय जी रोहतक
१०) आर्य स्त्री समाज गाबरा रोहतक
१०) आर्य स्त्री समाज झज्झर रोड रोहतक
१०) आ० स० कालिज विभाग रोहतक
१५) श्री सोहनलाल जी पहाडगज नई दिल्ली
१५) ,, बशीलाल जी ,,
५) आर्य समाज रोहताश नगर शाहदरा
१००) वैदिक धर्म प्रचार समिति कोत्तागुडा (आन्ध्र) सभा प्रधान जी द्वारा
१००) आर्य समाज सोहन गज सब्जी मडी दिल्ली
५१) आ० स० शाहदरा दिल्ली
१०१) ,, दरियागज दिल्ली

११) आर्य समाज नवीकरीम दिल्ली
१००) „ लोदी रोड नई दिल्ली
१०१) „ गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका, सब्जी मन्डी, दिल्ली
५००) आ० स० करौलबाग, नई दिल्ली सभा प्रधान जी द्वारा
१०) श्री डा० विनोद कुमार जी ० ० आ० स० करौलबाग, नई दिल्ली सभा प्रधान जी द्वारा
२५) श्री पृथ्वीचन्द जी आर्य, ठाकुर भ्राता लोअर बाजार, शिमला
३) विविध सज्जनो से

१७०४) योग

नोट —दिल्ली की आर्य समाजो ने मासिक सहायता देने की व्यवस्था की हुई है उसी सहायता की पहली किस्त तथा विशेष दान उपरोक्त सूची मे अंकित है।

दान दाताओ को धन्यवाद—

रघुवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री, अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध समिति
(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली १)

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दान आर्य समाज स्थापना दिवस

४) २५आर्य समाज कोसी कला (मथुरा)
१००) श्री बिहारीलाल सुखदेवा बल्देवाजी शोलापुर (बम्बई)
१०) आर्य समाज, सदर, मेरठ
११) आर्य समाज कटनी
५) आर्य समाज मोरीगेट पटना
८०) आर्य समाज थाना भवन (मुजफ्फर नगर)
२५) आर्य समाज निजामाबाद (आन्ध्र)
१५) आर्य समाज कोसली (गुडगाव)
१०) आर्य समाज औराद पो० गु जीटी (बम्बई)
५) आर्य समाज गढवा (पलामू) बिहार
२५) आर्य समाज लातुर
२५) आर्य समाज कलम (उस्मानाबाद)
४५) आर्य समाज लश्कर (म० भा०)
३५) आर्य समाज रामचूर
३१) आर्य समाज छीपा बड़ौद (कोटा)
२०) आर्य समाज फलावदा (मेरठ)
१५) आर्य समाज अबोहर
१०१) आर्य समाज बैंकौक (श्याम)
१५) आर्य समाज राजकोट
५१) आर्य समाज काकरिया रोड, अहमदाबाद
३४) आर्य समाज जौनपुर
५१) आर्य महिला समाज मुजफ्फरपुर
२५) आर्य समाज बिहार शरीफ (पटना)
१०१) आर्य समाज जजीबार (ब्रि० ई० अफ्रीका)
१०१) आर्य समाज दारेस्लाम „

९४०)२५ योग

दान वेद प्रचारार्थ

५) श्री रघुवीरसिंह जी नेगी गुनावव वढमेर
२५) आर्य समाज मोडल टाउन करनाल श्री स्वामी अभेदानन्द जी द्वारा
२६) श्री डा० दत्त जी करनाल „ „
१५) आर्य समाज खतौली (मुजफ्फर नगर)
५) श्री प० बाबूराम जी शर्मा दिल्ली शाहदरा अपनी सुपुत्री के विवाह सस्कार के उपलक्ष मे
१०) श्री गोपालराम जी आर्य श्रीगगानगर
४) विविध सज्जनों से

९०) योग

दान हुतात्मा परिवार सहायता

३०) आ० स० खण्डवा (म० प्र०)
(९)२० „ हिंगोली
१५) „ सोलापुर
१२) „ अकोला
११) श्री रामस्वरूप जी द्वारा
१०) आर्य समाज

९७)२० योग

दान दाताओ को धन्यवाद—

रघुवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हमारे 'सार्वदेशिक' पत्र मे जो पुस्तक-विक्रेताओं के विज्ञापन छपते हैं उन ग्रन्थों की प्रामाणिकता का उत्तरदायित्व हम पर नही है। —सभा मन्त्री

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रदायक

महात्मा आनन्द स्वामी कृत पुस्तकें

प्रभुदर्शन	२।।)
तत्वज्ञान	३)
प्रभुभक्ति	१।।)
आनन्द गायत्री कथा	।।=)
आनन्द भगवत् कथा अर्थात् सत्यनारायण कथा	।।=)
एक ही रास्ता	।।।)
शंकर और दयानन्द	।।)
मानव जीवन गाथा	१)
भक्त और भगवान	प्रेस में

स्वाध्याय योग्य उपयोगी पुस्तकें

उपनिषद् भाष्य–आर्य मुनि	६)
वाल्मीकि रामायण संशोधित	६)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह (महर्षि की २० पुस्तकों का संग्रह)	४।।)
दयानन्द ग्रन्थ संग्रह दो भाग	५)
वैदिक गृहस्थाश्रम (विश्वनाथ विद्यालङ्कार) (३०० वेद मन्त्रों के प्रमाणों सहित)	५)
ऋषि गाथा महाकाव्य रियायती मूल्य	४)
संस्कृत महाभारतम्–राजेन्द्रनाथ शास्त्री	३)
ओंकार निर्णय (शिवशंकर काव्यतीर्थ)	१।।)
वैदिक प्रार्थना	१।।)
योगासन (गणेशदत्त इन्द्र)	१।।)
बहनों की बातें (सिद्धगोपाल)	१)
विवाह और विवाहित जीवन (गंगाप्रसाद उपाध्याय)	२।।)

तीन महान् विभूतियों के वृहदाकार चित्र



१ महर्षि दयानन्द
२ स्वामी श्रद्धानन्द
३ महात्मा हंसराज

चित्रों का साइज २० × ३० है। प्रत्येक चित्र बहुत ही सुन्दर छपे हुए हैं। मूल्य प्रत्येक का १) रुपया। तीनों चित्र एकसाथ मंगाने पर १) डाक खर्च आता है। डाकसे भेजने का उत्तम प्रबन्ध है। आज ही अपने घर तथा समाजो को सजाने के लिए चित्र मंगालें। १२ चित्रों का १२) रुपया अग्रिम भेजने पर डाकखर्च माफ।

महर्षि दयानन्द का १६६० का कलैन्डर

१४ × २० साइज के बढ़िया कागज पर १६६० का कलैन्डर तैयार कराया गयाहै। एक का मूल्य ।।), १०० का ४०)। १०० लेने पर आपका नाम छाप दिया जावेगा।

रजिस्ट्री डाकखर्च के लिए ।।।) के टिकट आ जाने पर नमूना भेज दिया जावेगा।

सभी प्रकार का आर्य साहित्य हमसे मंगाइये

गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क देहली

स्वाध्याय योग्य वैदिक साहित्य

(१) यमपितृ परिचय (प० प्रियरत्न आर्य) २)
(२) आर्य डाइरेक्टरी १।)
(३) सार्वदेशिक सभा का
सत्ताईस वर्षीय कार्य विवरण प० २)
(४) स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार
(प० धर्मदेव जी वि० वा०) १।)
(५) आर्य समाज के महाधन
(स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी) २॥)
(६) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण (प० इन्द्रजी) ।=)
(७) आर्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या
(अनुवादक प० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक) ।)
(८) आर्य मन्दिर चित्र (सार्व० सभा द्वारा स्वीकृत) ।)
(९) वैदिक ज्योतिष शास्त्र (प० प्रियरत्नजी आर्य) १॥)
(१०) वैदिक राष्ट्रीयता (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।)
(११) मातृत्व की ओर (रघुनाथ प्रसाद पाठक) १।)
(१२) हमारी राष्ट्रभाषा (प० धर्मदेवजी वि० वा०) ।-)
(१३) स्वराज्य दर्शन स० (प० लक्ष्मीदत्तजी दीक्षित) १)
(१४) राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)
(१५) योग रहस्य (श्री नारायण स्वामी जी) १।)
(१६) मृत्यु और परलोक ,, १।)
(१७) विद्यार्थी जीवन रहस्य ॥=)
(१८) प्राणायाम विधि ,, ≡)
(१९) उपनिषदें —

ईश	केन	कठ	प्रश्न
।=)	॥)	॥)	।=)
मुण्डक	माण्डूक्य	ऐतरेय	तैत्तिरीय
।≡)	।)	।)	१)

(२०) बृहदारण्यकोपनिषद् ४)
(२१) आर्यजीवनगृहस्थधर्म (प० रघुनाथप्रसादपाठक) ॥=)
(२२) कथामाला ,, ॥)
(२३) सन्तति निग्रह ,, १।)
(२४) नैतिक जीवन स० ,, २॥)
(२५) नया संसार ,, ≡)
(२६) हकीकत राय उर्दू
(डा० ज्ञानचन्द जी आर्य) ॥=)
(२७) वर्ण व्यवस्था का वैदिक स्वरूप ,, १॥)
(२८) धर्म और उसकी आवश्यकता ,, १)
(२९) भूमिका प्रकाश (प० द्विजेन्द्रनाथजी शास्त्री) १।।)
(३०) एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द जी) ॥)
(३१) वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां
(प० प्रियरत्न जी आर्य) ।।।)
(३२) सिन्धी सत्यार्थप्रकाश २)
(३३) कन्नड सत्यार्थप्रकाश ३।)
(३४) मराठी सत्यार्थप्रकाश १।=)
(३५) आर्योदयकाव्यम् पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध १।।), १॥)
(३६) हमारे घर (श्री निरंजनलाल जी गौतम ॥=)
(३७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १।।)
(३८) भजन भास्कर १।।।)
(३९) मुक्ति से पुनरावृत्ति (प० गंगाप्रसाद उपाध्याय =)
(४०) वैदिक ईश वन्दना (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ।=)॥
(४१) वैदिक योगामृत ,, ॥=)
(४२) सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रसाद शास्त्री) २)
(४३) आर्य वीर दल सैनिक (श्री ओम्प्रकाश त्यागी) ॥)
(४४) आत्म कथा श्री नारायण स्वामी जी २।)
(४५) वैदिक संस्कृति (प० गंगाप्रसाद उपाध्याय) १।)
(४६) वैदिक वन्दन (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) ५।।)
(४७) दार्शनिक आध्यात्मिक तत्व ,, १।।)
(४८) कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द)७५
(४९) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका २)५०
(५०) सत्यार्थप्रकाश बढ़िया ५)
(५१) सत्यार्थप्रकाश १)२७
(५२) संस्कारविधि ।।।=)
(५३) महर्षि दयानन्द)६२
(५४) बृहद् विमानशास्त्र (स्वा० ब्रह्ममुनि जी) १०)
(५५) पञ्चमहायज्ञविधिभाष्यम् (पृष्ठ स० ५००)
(ले०—आचार्य विश्वश्रवा) ५)

प्राप्ति स्थान—**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१**

सार्वदेशिक प्रेस, पाटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली—७ में छपकर रघुनाथ प्रसाद जी पाठक प्रिंटर और पब्लिशर के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।